॥ श्री ॥

विचारचन्द्रोदय

ब्रह्मनिष्ठ पण्डित श्री पीताम्बर जी कृत

उनके जीवनचरित्र और सटीक

श्रुतिषड्लिंगसंग्रहसहित

नवीनरूढ़ियुक्त

सत्रहवीं आवृत्ति ।

प्रकाशक—

पं० वृजवल्लभ हरीप्रसाद बम्बई वालों की

आज्ञा से

पुस्तक मन्दिर मथुरा ।

तावद्गर्जन्ति शास्त्राणि जम्बुका विपिने यथा
न गर्जति महाशक्तिर्यावद्वेदान्तकेसरी ॥१॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मणे नमः

प्रस्तावना

सर्वमत शिरोमणि श्रीवेदान्त सिद्धान्त है। ताके जानने वास्ते कनिष्ठ श्रो मध्यम आदिक अधिकारिन के अर्थ अनेक संस्कृत श्रो प्राकृत ग्रन्थ हैं। परन्तु जाकी बुद्धि में विशेष शंका होवै नहीं ऐसा मन्दमतिमान्, परमआस्तिक, शुद्ध चित्तवाला जो उत्तम अधिकारी है, ताके अर्थ सरल, श्रेष्ठ, अल्प और विख्यात वेदान्तप्रक्रिया का ग्रन्थ कोउ नहीं है, याते मैंने यह विचारचन्द्रोदय नामक वेदान्तप्रक्रिया का प्रश्नोत्तररूप ग्रन्थ किया है यामें षोडश प्रकरण हैं। तिनका "कला" ऐसा नाम धरया है। एक एक कलाविषै एक एक विलक्षण प्रक्रिया धरी है मुमुक्षूकूं ब्रह्मसाक्षात्कारविषै अवश्य उपयोगी जे प्रक्रिया है वे सर्व संक्षेपते यामें हैं। अन्त की षोडशवीं कलाविषै अनेक वेदान्तपदार्थन के नाम रखे हैं। वे धारनसे अन्य बृहद्ग्रन्थन के श्रवणविषै उपयोगी होवेंगे॥ या ग्रन्थकूं ब्रह्मनिष्ठ गुरु के मुख से जो मुमुक्षु श्रवण करैगा वा याके अर्थ कूं बुद्धि में

धारण करेगा, वाके चित्तरूप आकाश में अवश्य ज्ञानरूप युवा अवस्थाकूं धारनैवा .। विचाररूप चन्द्रमा उदय होवैगा और संशय अरु भ्रान्तिसहित अज्ञानरूप अन्धकारकूं दूरी करैगा, याही तें याका नाम विचारचन्द्रोदय है । याका विषयनीचे धरी अनुक्रमणिकाविषै स्पष्ट लिख्या है। तहां देख लेना । (या ग्रन्थ के विशेषज्ञान-विषै उपयोगी श्रीसटीकबालबोध हमने किया है। ताकी २१० टिप्पणी अरु मूलटीकागत वृद्धि सहित द्वितीय आवृत्ति अभी छपी है । जाकूं इच्छा होवे सो देखे) विशेष विज्ञप्ति यह है कि-यह ग्रन्थ ब्रह्म निष्ठ गुरु के मुखसैंही श्रद्धा-पूर्वक पढ़ना। स्वतन्त्र नहीं। काहेतें गुरु बिना सिद्धान्त के रहस्य का ज्ञान होता नहीं और गुरु मुखसें सकल अभिप्राय जान्या जावै है । यातें गुरुके मुखसेंही पढ़ना चाहिए।

लि० पंडितपीताम्बरजी

श्रीविचारचन्द्रोदय।

अष्टमावृत्ति की प्रस्तावना।

संवत् १९७०—सन् १९१४ में शरीफ साले महम्मद नूरानीकी प्रकाशित की हुई सप्तमावृत्तिको प्रतिसे यह अष्टमावृत्तिका संस्करण हमने यथाप्रति ज्योंका त्यों प्रकाशित किया है। किसी प्रकारका परिवर्तन अथवा न्यूनाधिक भाव नहीं किया है। क्योंकि शरीफ सालेमहम्मद नूरानीके सुयोग्यपुत्र दाऊदभाई और अलादीनभाई इन बन्धुद्वय के पाससे सब प्रकार के रजिस्टरी हक सहित इसे हमने ले लिया है। अतः वेदान्तानुरागी मुमुक्षु जनोंसे सविनय प्रार्थना है कि इसका सदाकी भांति सादर संग्रह करने में अग्रसर हों।

ब्रजवल्लभ हरिप्रसाद बम्बई

॥ ॐ गुरुदेवाय नमः ॥

* श्रीविचारचंद्रोदय *

॥ अथ सप्तमावृत्तिकी प्रस्तावना ॥

यह ग्रन्थ वेदान्तविद्याकी प्रथमपोथीरूप होनेतें मुमुक्षुजनोंकूं अत्यन्त उपयोगी भयाहै । तातें यह सप्तमावृत्ति इस ग्रन्थकी आजपर्यंत अनुमान १५००० प्रति छापी गई है ॥

इस ग्रन्थके कर्त्ता ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांबरजी महाराज पूर्वावस्थाका फोटोग्राफ पूर्वआवृत्तियोंमें रखाहै और इस आवृत्ति में

तिनोंका उत्तरावस्थाका फोटोग्राफ तिनों के जीवन चरित्रके आरम्भमें रक्खा है ॥

और यह आवृत्तिविषं श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह नामके लघुग्रन्थकूं प्रविष्ट करिके षष्ठावृत्तितैं नवीनता करी है। तातें इस आवृत्तिमें ८५ पृष्ठकी अधिकता भई है ॥

श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह । हमारे परमपूज्य गुरु पंडित श्रीपीतांबरजी महाराजने श्रीबृहदारण्यक-उपनिषद् छाप्याहै। तिसपरसे लिया है। तथापि हमने मुद्रणशैलिविषं भिन्नप्रकार की रचना करीके प्रत्येकस्थलमें ६ लिंगोंकूं प्रत्यक्ष दृश्यमान किये हैं। तातें प्रमुमुक्षुजनोंकूं अभ्यासविषै अत्यन्त सुलभता होवेगी ॥ यह श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह इस ग्रन्थविषै मुद्रांकित करनेमैं ऐसा हेतु रखा है कि:—आजकल वेदांतविद्याविषै मुमुक्षुजनोंकी

प्रवृत्ति अधिकाधिक होती जाती हैं तातें श्रीविचार-चन्द्रोदय के अभ्यास किये पीछे । वेदांतके मूल रूप कितनेक उपनिषद् हैं ॥ ताके तात्पर्यसें ज्ञात होना आवश्यक है ।। वे उपनिषदोंके ऊपर रामानुजआदिक द्वैतवादिओं ने जो भाष्य किये हैं, तिनमें "वेदका अभिप्राय द्वैतविषैंही है" ऐसे प्रतिपादक करनेका परिश्रम किया है परन्तु वे परिश्रम निष्फलहो हैं। कारण कि जगत्विषैं द्वैत तो विचारसें विना सिद्धही पडा है। यातें ऐस विषयकूं सिद्ध करनेविषै वेदका अभिप्राय संभवित नहीं है । "एक परमात्मतत्वविना अन्य जो कछु प्रतीत होवे है । सो सर्व मायाकृत भ्रांतिकरिहीं प्रतीत होवै है" । ऐसें प्रतिपादन करने का वेदका अभिप्राय जगद्गुरु श्रीमच्छकराचार्यनें उपनिषदों के भाष्यसें सिद्ध किया है ।। कोइवी ग्रन्थके तात्पर्य शोधनअर्थं ताके षडलिंग-

नकूं अवलोकन किये चाहिये ॥ इस कारणतें प्रत्येक उपनिषद्के ६ लिंग श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रह-विषै दिखाये हैं । यह लिंगोंका श्रवण कोई महात्मा मुखद्वाराही करना उचित है । काहेतें कि तैसें करनतें वेदान्तविद्याकी महात्ताका भान होवैगा औ तदनंतर वे उपनिषदोंका भाष्य-सहित अभ्यास करनेकी जिज्ञासा बी उत्पन्न होवैगो ॥

इस ग्रन्थका का कोईबी अन्यशस्त्रका अभ्यास करनेकी रीतिविषै हमारा आधीन अभिप्राय एक दृष्टांत सें प्रथम स्फुट करै हैः—

दृष्टांतः—एक जोहरी का पुत्र अपने मृतपि-ताके मित्रसमीप एकछोटीसी मुद्रांकितमजूषा लेके गया औ कहने लगा किः—मेरे पिताने अपने अंतकालसमय यह मंजूषा मेरे स्वाधीन करी है और कहा है कि तिसमें एक अमूल्य हीरा है । सो

मेरे मित्र के पास तूं लेजाना तो वे मित्र बड़ी कीमत से वेच देवगा । वे जौहरी की आज्ञा से तिसने मंजूस खोलके देखो तो एक बड़ा प्रकाशित हीरा देखने में आया ॥ हीरेसहित वह मंजूष पुनः बन्ध कीन्ही औ तिनकूं प्रथमकी न्यांई मुद्रित-करीके वे मित्रने कहा कि यह हीरा बहुत-मूल्यक है । जब कोई योग्य दाम देनेवाला ग्राहक मिलेगा तब बेचंगे । याते अब इस मजूषकूं रख छोड़ो ॥ जौहरीने उस पुत्रकूं अपनी दुकानपर बिठाया औ हीरे माणिक्य आदिक की परीक्षा करनेकूं सिखाया जब प्रवीण भया तब वे मित्रने तिसकूं कहा कि हे पुत्र ? वह हीरेकी मंजूष लेआवे तब वह उक्तमंजूसकूं ले आया औ खोलके हस्त में लेके परीक्षा करी तब ज्ञात हुआ कि वह हीरा नहीं परन्तु कासका तुकड़ा है ॥

सिद्धांतः-जैसे उक्त जौहरी का पुत्र काचकूं हीरा मानिके सिद्धद्वारा धनाढ्य होनेकी मिथ्या आशाकूं रखताभया। तैसे मनुष्य बी बालपनसैंहि जगत्के पदार्थोंकूं क्षण औ नाशवान देखते हुये बी यथार्थज्ञानके अभावतें तिनविषै सत्यताकी बुद्धिकूं धारणकरिके सुखकी मिथ्या-आशा रखते हैं औ अनेक तौ "यह जगत् के पदार्थोंसे बिना अन्य कछुबी सत्य नहीं है" ऐसे मानते हैं॥

उपरि कहा तैसे मनुष्यमात्र मायाकरि भ्रांति विषैभ्रमण करी रहे हैं तिनमेंसे क्वचित कोईकूंही "मैं कौन हूं"। "जगत् क्या है"। "मेरा औ जगत्का अवसान क्या है" इत्यादि अनेकानेक प्रश्न उद्भवै हैं॥ जैसे कोई कंटकके जंगलविषै फसाहुवा दुःखकूं पावता है। तैसे संशय औ शङ्कारूप कंटकसमूहसे जे पीड़ित हैं। वे

मात्र तो दुःखसें मुक्त होनेकी इच्छा करते हैं ॥ परीक्षित राजाकूं जन्मेजयने जो उपदेश किया-सो सहस्रनमनुष्योंने श्रवण किया परन्तु मोक्ष-प्राप्ति मात्र परीक्षित राजाकूं भई । कारण कि तिसका मृत्यु सप्तम दिन निश्चित भया था ॥ आज अन्य श्रोताओंकूं तैसा कोई भय नहीं था । आज बी वही श्रीमद्भागवतकी सप्ताह परायण असंख्य जन श्रवण करते हैं ॥

आधुनिक समयसें कोई कोई अंग्रेजीभाषाज्ञानविषै कुशल पुरुष गुरुगम्य उपनिषद् आदिक महत्ग्रन्थोंका स्वतन्त्र अवलोकन करै हैं औ तद-नन्तर आपकूं वेदांतसिद्धांतके वेत्ता मानिके अन्य-जनोंकूं वेदांतका बोध देनेवास्ते इंग्रेजीमें ग्रन्थ लिखते हैं वा मासिक अंकनविषै लेख प्रकट करते हैं । परन्तु वे लेख मैं मुख्यकरिके द्वैतप्रपंचक प्रतिपादनमात्र देखनेमैं आता है ॥ तैसें थीयोसाधि

नामक मंडलके नेता बी वेदांतसिद्धांतकूं कछुक स्वतन्त्र देखिके मुख्य द्वैतकाही वर्णन करे हैं औ अदृश्य महात्माओंकी सहायतासे असंख्यवर्षों के पीछे मुक्त होने को आशा रखते हैं। ऐसे होनेका प्रधानकारण वेदांतविद्याका स्वतन्त्रअभ्यास है॥ इसविषै श्रीविचारसागर में सम्यक् कहा है कि—

—दोहा—

वेद अब्धि बिनगुरु लखै लागै लौन समान।
बादरगुरुमुखद्वार है अमृततैं अधिकान॥

पुरातनकालसे प्रचलित हुई रुढि अनुसार अनेक स्थलविषै जो वेदान्त की कथा होती है। तामें कोई एक शास्त्रका पठनकरिके तिसपर कोइ महात्मा पुरुष विवेचन करे है। तातैं यद्यपि श्रोताजनोंकूं लाभ होवे है तथापि शास्त्राभ्यासकी पद्धति तौ विलक्षणही है॥

जैसे दृष्टांतगत जौहरीका पुत्र जौहरीकी सहायतासे हीरे की परीक्षा करने में कुशल भया। तैसे ब्रह्मविद्याका अभ्यास बी कोइ ब्रह्मश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुद्वाराकरने में आवे। तबीहीं तामैं कुशलता प्राप्त होवै।

अब वेदांतशास्त्रका अभ्यास कोइ महात्मा के समीप किस रीतिसे करना आवश्यक है सो नीचे वर्णन करे हैं:—

श्रीविचारचन्द्रोदय ग्रंथ वेदांतकी प्रथमपोथीरूप है ॥ यह ग्रंथ प्रश्नोत्तररूप होनेते प्रथम मुमुक्षुताका व्याख्यासहित प्रतिदिन श्रवण करे औ ताके पीछे जहांपर्यंत अभ्यास किया होवे। तहांपर्यंत क्रमसे विना पूछने में आवे तिनके उत्तर मुमुक्षु देवें ॥ इस रीतिसे ग्रन्थ पूर्ण करिके पीछे श्रुतिषड्लिंगसंग्रहका मात्र श्रवण करे। तदनंतर—

मुमुक्षु श्रीविचारसागरका श्रवण करै औ जितने भागका अभ्यास पक्व हुवाहोवे । तितने भागगत मुख्य पारिभाषिक शब्द । प्रक्रिया । व प्रसंगके प्रश्न महात्मा उत्पन्नकरिके पूछे ताके उत्तर वह मुमुक्षु देवे । यह ग्रन्थकी समाप्ती पीछे श्रीपंचदशीग्रन्थका बी तिसीही रीतिसे दृढ़ अभ्यास करे औ श्रीविचारसागर के छन्दनमैं से तथा श्रीपंचदशी के श्लोकनसैं जितने कंठ करनेकी महात्मा आज्ञा करे तितने मुमुक्षु कंठ करे । गत अभ्यासकी वारवार पुनरावृत्ति करनी बी अत्यन्त आवश्यक है ॥

उपरोक्तरीतिसे उक्त ग्रन्थका अथवा अन्य-वेदांत ग्रंथनका खंत औ श्रद्धापूर्वक मुमुक्षु अभ्यास करे तो ब्रह्मविद्याविषै कुशल होवे यामैं शंका नहीं । तथापि ब्रह्मनिष्ठ होना तो अत्यन्त विकट है । काहे ते कि जगत विषै सत्यताकी बुद्धिकूं

दूरीकरि के असत्यता की बुद्धि दृढ करनी होवे है औ अपनेविषे शुद्ध निर्विकार ब्रह्मस्वरूपकी बुद्धिकूं स्थापित करना होवे है ॥ इस प्रकारकी बुद्धि हुई है वा नहीं सो आपहीं कपने आंतरभ पूछने से उत्तर मिलता है ॥ यह ज्ञान स्वसवद्यही है ।

ब्रह्मनीष्ठपने की दुर्लभताविषे श्रीमद्भगवद्गीतामें कहा है कि:—

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये । ययतामपि सिद्धाना कश्चिन्मां वेत्ति तत्वत: ॥७।३॥

ऊपर कहे अनुक्रमसे अभ्यासकी पूर्णता हुवे पीछे कोई महात्माद्वारा श्रीमच्छंकराचार्यकृत उपनिषद् भाष्य। सूत्र भाष्य। औ गीता भाष्यका अवलोकन करसे आनन्दसहित ब्रह्मनिष्ठाकी

दृढ़तामैं अधिकता होवेगी ॥ तदनन्तर इच्छा होवे तो श्रीयोगवासिष्ठादिक अनेक वेदान्त के ग्रन्थ हैं सो बी देखना ॥ संक्षेप मैं इतना ही कहना है कि जगत् व्यवहारोपयोगी अनेक विषयन का जैसें आदर औ दृढतापूर्वक आधुनिक शालाओं विषै विद्यार्थीजन अभ्यास करते हैं। तैसैं दीर्घ अभ्यास-विना वास्तविक लाभ होनेका नहीं ॥ बहुत ग्रन्थनके पठनसैंही ब्रह्मज्ञान होवे ऐसा नियम नहीं ॥ उत्तम अधिकारी मात्र एक श्रीविचार-सागर अथवा श्रीपंचदशी श्रद्धापूर्वक गुरुद्वारा विचारिके नियमित विचारपूर्वक अभ्यास करै तौ ब्रह्मज्ञानकी प्राप्ति अवश्य होवे ।

जिसकूं आधुनिककालसम्बन्धि अनेक शङ्का उद्भव होती होवैं। सो शास्त्रअभ्यास के पीछे इग्रे-जीमें फिलसुफीसे औ सायन्सके अनेक ग्रन्थ हैं वे देखें तौ तातें बुद्धिका क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत

होवैगा औ जगत् मायिकता आदिक अत्यंत स्पष्ट होवैगी ऐसा स्वानुभव है ॥

थोड़े समयसे हमनैं कुलनाम "नूरानी" का हमारी संज्ञाके अन्त में प्रवेश किया है ॥ इति ॥

था. सा. नू. ॥

* ॐ गुरुदेवाय नमः *

॥ श्रीविचारचंद्रोदय ॥

अथ षष्ठावृत्तिकी प्रस्तावना

—()*()—

इस ग्रंथ की पंचमावृत्ति में पूर्व की आवृत्तिनसें नवीनता करीथी तैसें इस आवृत्तिविषे वी जो नवीनता औ अधिकता करी है। सो नीचे दिखाये हैं:-

१ इस ग्रन्थके कर्त्ता ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांवरजी महाराजने मुमुक्षुनके उपरि अत्यंत अनुग्रह करीके इस आवृत्ति के लिए ग्रन्थभाग औ टिप्पण भागका पुनः संशोधन किया है। तथा टिप्पणीविषै कहिं कहिं अधिकता करीके गहन अर्थ की विस्पष्टता करी है ॥

२ पूर्वमीमांसा। उत्तरमीमांसा (वेदान्त)। न्याय आदिक षट्दर्शनोंविषै जीव। जगत। बंध।

मोक्ष आदिक मुख्य पदार्थों का कैसे भिन्न भिन्न लक्षण किये हैं। औ लक्षणविषै उत्तरोत्तर कैसी समानताअसमानता है सो दृष्टपात मात्रसें ज्ञात होवै ऐसा "षट्दर्शनसारदर्शकपत्रक" श्रीपंचदशी सटीका सभाषा का द्वितीयावृत्ति औ श्रीविचार-सागरकी चतुर्थाविषै हमनें दिया है। तैसाही पत्रक इस ग्रन्थ के अभ्यासीनके अवलोकनअर्थ इस आवृत्ति मे अंतविषै छाप्या है ॥

३ इस आवृत्ति मैं ग्रन्थारंभविषै बहुतखर्चके योगसे चार चित्र दिये गये हैं। तिनविषै ॥

(१) प्रथमचित्र पूजाविषैस्थितहुयेद्विजका है ॥

(२) दूसरा चित्र राजा का है ॥

(३) तीसरा व्यापारीका है। औ

(४) चतुर्थ चित्र घट बनानैंविषै प्रवृत्त भये कुलालका है ॥

इसरीतिसें यद्यपि ब्राह्मण। क्षत्रिय। वैश्य औ शूद्र। यह चारिजाति दृश्यमान होवै हैं। तथापि

तिन च्यारिचित्रनविषैस्थित जो पुरुष है तिसकी मुखाकृति क्षपूर्वक अवलोकन करनेसें ज्ञान होवैगा कि वे च्यारिचित्र एकहीं पुरुषके हैं। मात्र तिनोंकी भिन्नभिन्न वस्त्र औ सामाग्रीरूप उपाधिके भेदसें एक हीं पुरुष भिन्नाभिन्नच्यारिवर्णका प्रतीत होवै है! अर्थात् तिनोंकी उपाधिके बाध कियेतें वे च्यारिपुरुषन का परस्पर केवल अभेद है।

जीवब्रह्मका भेद सत्य नहीं किन्तु मात्र उपाधिकृतही है। ऐसा सर्वमतशिरोमणि वेदांतमतका जो महान् औ अबाधित सिद्धांत है औ जो इस ग्रन्थ की "तत्वंपदार्थैक्यनिरूपण" नामक ११ वीं कलाविषै अनेकदृष्टांतसें निरूपण किया है। तिसकूं यथास्थित समझनमैं औ तदनुसार दृढनिश्चय करनै में मुमुक्षुनकूं सहायभूत होवैंगे। इतनाहीं परन्तु दृष्टिगोचरहोतेही वे महान् सिद्धांतकूं स्मरण करावैंगे। ऐसें मानिके उक्त चित्रनकूं छापे हैं॥

इस ग्रंथ के कर्त्ता ब्रह्मनिष्ठपंडित श्रीपीतांबरजी महाराज। जिनोंका जीवनचरित्र इस आवृत्तिविषै बी छाप्या है औ जिनोंने मुमुक्षनके कल्याणा-

अर्थ हीं जन्म धारण किया था ऐसें कहिये तो तामें किंचित बी अतिशयोक्ति नहीं है। औ जिनोंने अत्यंतदयातें अनेक ग्रन्थनकूं रचिके तथा श्री पञ्चदशी। श्रीमद्भगवद्गीता औ वेदांतके मुख्यदशोपनिषद्आदिकमहद्ग्रन्थों का भाषाटीका करीके मुमुक्षु जनोंकूं ज्ञानमार्ग सुलभ औ सुगम किया है। वे महात्मा श्रीकच्छदेशगतगढसोमा ग्रामविषै सम्वत् १९६१ के वैसाख कृष्णपक्ष ७ गुरुवारके दिन इस क्षणभंगुर जगत् का त्याग करीके विदेह मुक्त भये हैं।। तिनोंमें तिसी वर्षके चैत्र कृष्णपक्ष १३ भौमवार के रोज संन्यास ग्रहण करीके परमानन्दसरस्वती नाम धारण किया था ॥

शरीफ सालेमहंमद ॥

॥ ॐ गुरुदेवाय नमः ॥

* श्रीविचारचंद्रोदय *

॥ अथ पञ्चमावृत्तिकी प्रस्तावना ॥

यह ग्रन्थ ब्रह्मनिष्ठपंडित श्रीपीतांबरजी महाराजकरि स्वतंत्र रचित है। यामें षोडशप्रकाररूप षोडशकला है। औ नम्रर येक कलाविषै एकाएक विलक्षणप्रक्रिया धरीहै। यद्यपि ये सर्वप्रक्रिया संक्षिप्ताकारसैं धरीहैंतथापि मुमुक्षुनकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्ति करनेमें सहायकारिणी होवै हैं ॥ यह ग्रन्थ आदिसैं अंतपर्यन्त प्रश्नोत्तररूप होनेतें औ श्रेष्ठ अल्प औ विख्यात वेदान्त प्रक्रियाकरि युक्त होनेतें। औ सर्व शास्त्रशिरोमणि वेदांन्तशास्त्रके अभ्यासके आरंभकालमें जो जो अवश्यज्ञातव्य है सो सर्व इस लघुग्रन्थविषै समाविष्टकिया

होनतें। वेदान्त अभ्यासविषै नवीनजनोंकूं तो यह ग्रन्थ वेदान्तकी प्रथम पोथीरूप है ॥

ग्रन्थकारमहात्माने इसका सारभूत पद्यात्मक 'वेदांत पदावली' नामक लघुग्रन्थ किया है। सो 'वेदांत-विनोद' के प्रथमग्रंकरूपसे प्रसिद्ध है ॥ काव्य। कंठ करतेमें सुगम औ व्याख्यान किये विस्तृतग्रंथकास्मारक होवै है। इसवास्ते मुमुक्षुनकूं उपयोगी जानिके वेदांतपदावलीगत वे छन्द इस ग्रन्थविषै प्रत्येक कला आरम्भमें छापे हैं ॥

अंतकी षोडशवी कलाविषै ३०० से अधिक वेदांत-पारिभाषिकशब्दन के अर्थ धरे है। वे बी ग्रन्थकर्त्ता महाराजकी करुणाकाही फल है ॥ यह लघुवेदांतकोश अन्यमहद्ग्रन्थनके श्रवणविषै अत्यंत सहायभूत होवेहै॥ याके आरम्भमें बड़ी अकारादि अनुक्रमणिका धरी है। तिसकरि वांछितविषयका पृष्ठांक विनाश्रम प्राप्त होवै है ॥ इस अनुक्रमणिकाविषै लघुवेदांतकोशगत शब्दनकूं बी प्रविष्ट किये हैं ॥

अंकयुक्त पारेग्राफनकी जो नवीनमुद्रणशैलि हमारे छापे हुवे श्रीपंचदशी सटीकासभाषा द्वितीयावृत्तिश्री श्रीविचारसागरचतुर्थावृत्ति के ग्रन्थोंमें प्रविष्ट करीहै। तैसीहीरूढिसें इस ग्रन्थकी यह पंचमावृत्ति छापी है॥ इस रूढिसें अभ्यासीनकूं अत्यंत सुलभता होवै हैं ॥ कारण कि ग्रन्थके भिन्नभिन्न विषयोंकासमानासमानपना । उत्तरोत्तरक्रम।तद्गत शंकासमाधान।दृष्टांत सिद्धांत औ विकल्प । दृष्टिपातमात्रसेंही ज्ञात होवैहैं॥ इस रूढिसें ग्रन्थकूं छाप ने आदिकतें इस आवृत्तिका विस्तार गतआवृत्तिसें अनुमान १०० पृष्ठों का अधिक हुवा है और कागज बी उत्तम लगाया है ॥

ग्रन्थकारमहात्मा ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीपीतांबरजी महाराज । जिनोंने अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ रचिके । श्री पंचदशी औ दशोपनिषद आदिक सद्ग्रन्थोंके भाषांतर करीके । औ विचारसागरादिक अनेक ग्रन्थ परटिप्पण करके । अखिल मुमुक्षुसमुदायउपरि महान् अनुग्रह

किया है। तिनोंके जीवन चरित्रके लियेअनेक मुमुक्षुनकी तीव्रआकांक्षाकूं देखिके। सोजीवनचरित्र इस आवृत्ति विषै विस्तारसैं छाप्या है।। तदुपरि दर्शन करनं योग्य पूज्य महाराजश्रीकी कल्याणकारी यथा स्थितचित्रित मूर्ति तिनोंके हस्ताक्षरसहित ग्रन्थारम्भ में स्थापित करी है।।

ग्रन्थ विषै मुमुक्षुनकी प्रवृत्तिमें मनोरंजक ग्रन्थकी सुन्दरता बी सहायक है। ऐसैं मानिके इमग्रन्थकेपूंठे सुन्दर किये हैं। परन्तु सुन्दरता केसाथिसिद्धांन्तका स्मरणरूप लाभ होवै इस पंचमावृत्तिके पूंठे अति-खर्च करीके विलायतसैं मंगवायेहैं औ रुपेरी आदिक रंग सैं चित्ताकर्षक किये है।। पूंठे ऊपर जे भाँति-आदिक चित्र छापे गये हैं तिनके अर्थका विवेचन नीचे करेहैं :--

निर्गुणउपासनाचक्र:—हमारे छपाये श्रीवि-चारसागरविषै निर्गुणउपासना चक्र धर्‍या है। ति-सका एक —

संक्षिप्तचित्र या पूंठेके मुखभाग पर रखा है ॥ इसमें प्रत्येक पदार्थनके आदि के अक्षरमात्र तिन पदार्थनकी स्मृतिके लिये रखेहैं। सुगमताका अर्थ स्पष्टता करियेहैं:–

अ—अकार) वि—विराट्) वि—विश्व)	॥ १ ॥ इन तीनउपाधिवानकी एकता चिन्तनीय है ॥
उ—उकार) हि—हिरण्यगर्भ) तै—तैजस)	॥२॥ इन तीनउपाधिवान् की एकता चिन्तनीय है ॥
म—मकार) ई—ईश्वर) प्र—प्राज्ञ)	॥ ३ ॥ इन तीनउपाधिवान् की एकता चिन्तनीय है ॥
अ—अमात्र) ब्र—ब्रह्म) तु—तुरीय)	॥ ४ ॥ इन तीनशुद्धनकी एकता चिन्तनीय है ॥

प्रथमत्रिपुटीकी द्वितीयके साथि औ तिसकी तृतीयके साथि औ तिसकी चतुर्थके साथि एकता चितनीय है ॥ उक्तअर्थ श्रीविचारसागरकी चतुर्थआवृत्तिके २८१ में ३०२ अङ्कपर्यंन्त ग्रंथकर्त्तानैं विस्तारसैं दिखाया है ॥

दो सीधीरेषायुक्त आकृतिः—जिल्द के मुख-भागउपरि चंद्राकारादिष ग्रन्थका नाम छाप्या है। ताके नीचे दो सीधीरेषावाली एक आकृति है ॥ ये दोनूं



रेषा दक्षिणदिशाकीतरफसंकोचितओवामदिशातरफ विकासित हुई भासती हैं। परन्तु वास्तविक तैसे नहीं है किंतु सर्वस्थलमें वे समान अन्तर वालीही हैं। यहवार्ता दोनूं रेषाओंके आदिभागकूं अंतभागके साथि लक्ष्यकरिके देखनसैं निर्विवाद सिद्ध होवै है ॥

परिमाणभ्रांतिदर्शक दो आकृतिः—जिल्दकी पीठविषै वर्तुलाकार में "शरीफ, नाम है। ताके ऊपर उक्त दो-आकृतियां छापी हैं। सो नीचे दिखावे हैं:—



उभयचित्रोंकी दोनूं सीधीमध्यरेषा यद्यपि समान परिमाणकीहैं। तथापि तिसके अग्रभागविषै धरीहुई तिर्यक्‌रेषारूप उपाधिकेवलसे भ्रांतिद्वारा बामचित्रकी मध्यरेषा दक्षिणचित्रकी मध्यरेषासैं वड़ी प्रतीतहोवेहै॥

दीर्घरेषायुक्त दो आकृतिः—पूंठनके पृष्टभागपर। मध्य में षट्‌चक्राकार औ उपरि तथा नीचे दीर्घरेषा युक्त। ऐसै तीन आकृति रखी हैं। तिनमेंसे दीर्घरेषा-युक्त आकृतिनका वर्णन करे हैं:—

पूंठेके पृष्ठभागके उपरिकी दो दीर्घरेषा। नीचे

प्रथमआकृतिसमान दृष्ट आवती हैं:—

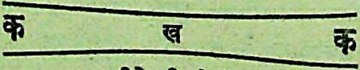
१ प्रथम आकृति.



उपरि की दो रेखा

आदि अन्त में दोनों दीर्घरेखा का क क भाग संकोचित तथा मध्य का ख भाग विकासित दृष्ट आवता है। याते वे रेखा च क्राकार हैं। ऐसे प्रतीत होवे है। पूंठ के पृष्ट के नीचे की दो रेखा दीर्घरेखा। नीचे की दूसरी आकृतिसदृश भासती है—

२ दूसरी आकृति.



नीचे की दो रेखा

आदिअन्तमें दोनूं दीर्घरेखाका क क भाग विकासित तथा मध्यका ख भाग संकोचित देखने में आवता है। अर्थात् प्रथम आकृतिसें विपरीत वक्रक्षाकार प्रतीत होवे है॥

तथापि पूंठके पृष्ठभागके उपरिकी और नीचेकी दो दीर्घरेखा। प्रथम औ दूसरी आकृतिके समानवक्र नहीं हैं। सीधी हो हैं। मात्र भ्रांतिसें वक्ररेखाकार प्रतीत होवे हैं। यह वार्त्ता प्रत्यक्षरूप चाक्षुषप्रमाणसें जैसें सिद्ध होवै हैं तैसें स्पष्ट करे हैं:—

जैसे कोई बाणकूं छोड़नेंके समयपर बाणकूं लक्षके साथि दृष्टिसे साधता है। तैसें उक्त नीचे ऊपर की दोनूं रेखाओं आदिके साथि अन्तकूं लक्ष्य करिके देखनेसे वे दोनूं रेखा। बाजू की तीसरी आकृति समान सीधीही दृष्ट आवेगी।



३ तीसरी आकृति.

यातें पूंठके पृष्ठभागपर उक्त प्रथमाकृतिसदृश ख भाग विस्तृत। तथा दूसरी आकृति सदृश ख भाग संकोचित दृष्ट आवते हैं सो भ्रांतिकरिकेही भासते हैं। यह सहज ही सिद्ध होवै हैं॥

भ्रांतिका कारण:—प्रत्येक दोर्घरेखाक ऊपर तथा नीचेसे अनुमान १८ वा २० छोटी टेढीरेषा है वे इहां उपाधिरूप हैं औ वे उपाधिरूप रेखाहीं इस चित्रित दृष्टांतविषै भ्रांतिको कारण हैं ॥

जैसें मरुभूमिविषै मृगजलका भान भ्रांतिरूपहै। तैसें इहां चित्रितदृष्टांतविषै (१) प्रथम तथा (२) दूसरी आकृतिगत ख भागके विकासित औ संकोचितपनै का भान वी भ्रांतिरूप है ॥

जैसें मरुभूमिविषै 'व्यावहारिक जल नहीं है। प्रातिभासिकही है" ऐसें निश्चित भये पीछे बी ऊपर भूमि के साथि सर्यकिरणके संबधरूप उपाधिकेबलसैं जलकी प्रतीत दूरि नहीं होवैहै। तैसें इहाँ दोरेषारूप चित्रितदृष्टांतविषै वी प्रथम तथा दूसरीआकृतिगत'ख भाग विकासितऔ संकोचित नहीं है किन्तुआदिअंतपर्यंत समानहीं है' ऐसें निश्चित भये पीछे वी छोटो टेढीरेखाके संबंधरूप उपाधिके वलसैं (१) प्रथम तथा (२) दूसरी आकृत्तिकी न्यांई ख भाग के विकासऔ संकोचकी प्रतीत दूरी नहीं होवै है ॥

सिन्द्धान्त.–श्रुतिः–"पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्" अर्थः—स्वयम्भू (परमात्मा) इन्द्रियनको बहिर्मुख रचता भया। याते देवतिर्यग्मनुष्यादिक। बाह्यवस्तुओं को देखते हैं। अन्तरात्माको नहीं।" टीका-यद्यपि इस सृष्टिविषे सर्वप्राणी बहिर्मुखही वर्तते हैं। काहेते जाते तिनों की इन्द्रियों की रचना स्वयम्भू ने तिस प्रकार की ही करी है। इन्द्रियों की तृप्ति करने विषेही सर्वजीवों की प्रवृत्ति होवे है और याहीते मनुष्यों से बिना अन्य प्राणी तो ता प्रवाह के रोकनविषे सर्वथा बहिर्मुखप्रबल प्रवृत्तिप्रवाह के बल से हत भये असमर्थ हैं। वे अन्तरात्मा को देख सकते नहीं। कहिये अपने आपको अपरोक्ष निश्चय कर सकते नहीं। यह स्पष्ट ही है। काहेते तिन शरीरोंविषे अन्तर्मुखतारूप विरोधीप्रवाह करने के वास्ते समर्थबुद्धिरूप साधन है नहीं। तथापि केवलमनुष्य शरीरविषे ही यह सर्वोत्तम साधन भी स्वयम्भूपरमात्माने रखा है। याते स्वरूप ज्ञान के अधिकारी मनुष्यों विषे केईक कदाचित गुरुकृपा से बहिर्मुख प्रवृत्तिप्रवाह के विरोधी अन्तर्मुखप्रवाह के साधन

विचारादिक को सम्पादन करे हैं और अन्तरआत्मा को ब्रह्मस्वरूप अपना आपकरिके निश्चय करे हैं। ऐसे मुक्तमनुष्य। जे पूर्व स्वम्भूरचित इन्द्रियों से प्रथम अज्ञानदशाविषे केवल रूपरस आदिक को ही देखते थे। वे गुरुकृपा से ज्ञान भये पीछे जीवन्मो-क्षदशाविषे दो दीर्घ रेखारूप चित्रित भ्रांत के दृष्टां-त की न्यांई। सर्वस्वरूपरसआदिक को देखते हुये भी अन्तमुखप्रवाह के बल से "सर्वरसरूपादिक मिथ्या ही है।" ऐसे भ्रांति को बांधकरिके तिस भ्रान्ति के अधिष्ठान ब्रह्मस्वरूप आत्मा को अप रोक्ष निश्चय करे हैं।

षटचक्रयुक्तआकृतिः—पूंठे के पृष्ठ भागपर मध्यविषे पट्चक्रनकरि युक्त जो आकृति है। तिसका उपयोग अब दिखावे हैं:—ग्रन्थ को दक्षिण हस्त-विषै सन्मुख धरिके। वाम से दक्षिणकी तरफ त्वरा से लघुचक्राकार फेरने पर पटचक्र है वे दक्षिण की तरफ फिरते दृष्टि पड़ेंगे और इसी आकृतिके मध्य-विषे दन्तयुक्तचक्र हैं सो पट्चक्रनसैं विपरीत कहिये वाम की तरफ फिरता देखनें में आवेगा। यह भी भ्रांतिविषै चित्रितदृष्टान्त है।

रंगितपट और स्याही का दृष्टान्त

इस ग्रन्थ के पूंठे के मुख और पृष्ठ भागविषे जितनी आकृति दृष्ट आवतां है। तिन सर्वविषे रङ्गितअक्षररेखा आदिक देखने में आवते हैं वे भ्रांतिकरिही भासते हैं। कारण कि:— स्याहीरूप उपाधि से रंगितपटविषे रंगितनक्षरआदिक को कल्पना होवे है॥ स्याही रूप उपाधि के बाध किये "वास्तविक कोई अक्षररेखादि है नहीं परन्तु सब रंगित पट ही हैं।" तैसे सिद्धान्त में। परमात्मतत्वविषे यह जो जगत भासता है सो केवलभ्रांतिकरिही भासता है। कारण कि:—मायारूप अज्ञानउपाधिसे परमतत्वविषे जगत की कल्पना होवे है। ताते तिस मायारूप अज्ञान उपाधि को गुरुमुखद्वारा बोध करके "वास्तविक जगत कछु भी है नहीं किन्त सर्व आत्मा ही है" ऐसा निश्चयरूप मोक्ष साधन जो तत्वज्ञान सो उक्तचित्रितदृष्टांतों के दर्शन स्मरणकरि मुमुक्षों को होहू॥

शरीफ सालेमहंमद॥

॥ ओ३म् ॥

* मंगलाचरणम् *

ब्रह्मविष्ठ पण्डित श्री पीताम्बर जी कृतम् ।

* वाराचवृत्तम् *

कल कलक कज्जलं तमो निवारि सज्जलं ।
गतातिचञ्चलाचलं सुशान्तिशीलमुज्जवलम् ॥
सदा सुखादिकन्दलं त्रितापपापशामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥ १ ॥

समानदानदायकं भवाबवाक्यसायकं ।
सुशुद्ध धीविधायकं मुनीन्द्रमौलिनायकम् ॥
स्वसंगगीतगायकं वयकं लिशोकरामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सवापुरामनामकम् ॥ २ ॥

शमक्षमादिलक्षणं प्रतिक्षणं स्वशिक्षणं ।
मुमुक्षुरक्षणे क्षमंक्षमेषु वै विलक्ष णम्॥

सुलक्ष्य लक्ष्य संशयं हरं गुरु हि मामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥ ३ ॥

कलेशलेषवेशशून्यदेशके प्रवेशकं ।
गताविशेषशेषकं ह्यशेषवेषदेशकम् ॥
परेशकं भवेशकं समस्तभूपभामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥४॥

सकालकालिजालभालभेदिभानभल्लकं ।
प्रभिन्नखिन्ननुन्नभाविजन्ममत्तसल्लकम् ॥
सभेदखेदछेदवेदवाक्ययूथयामकं -
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥५॥

भवाष्टकष्टपाशदासभावभासनाशकं ।
सुशुद्धसत्वबुद्धतत्वब्रह्मतत्वभासकम् ।
स्वंलोकशोकशोषकं वितोपदोषवामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥६॥

सबंधुजन्मसिंधुपारकारिकर्णधारकं ।
सलोभशोभकोपगोपरूपमारमारकम् ॥

खबालकालवारकं समाप्तसर्वकामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥७॥
स्वलक्ष्यदक्षचक्षुषं स्वरूपसौख्यसंजुषं ।
कृतार्थचेतवायुषं गतार्थगामितस्थुषम् ।
विभोग्यजातदुर्विषं मुषं गुणातिदामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥८॥
भवाटवीविहारकारि जीवपांथपारदं ।
सुयुक्तिमुक्तिहारसारद सुबुद्धिशारदम् ॥
सतीतपादकांवरो ब्रवीति तं स्वरामकं ।
नमामि ब्रह्मधामकं सबापुरामनामकम् ॥९॥

श्रीमन्मंगलमूर्तिपूर्तिसुयशःस्वानदवायुं ल्लसत् ।
सौभाग्यैकसरित्पतिं प्रतिहतप्रोद्भूततापत्रयम् ॥
संसारसूतिलग्नमग्नमनसामुद्धारकं क्वागतं ।
प्रत्यकतत्त्वसुचित्स्वरूपसुगुरुं रामंभजेऽहंमुदा ॥१॥
(श्रीपदार्थमंजूषागत)

* श्रीसद्गुरुभ्यो नमः *

अथ ब्रह्मनिष्ठ

पण्डित श्रीपीताम्बरजी का

जीवनचरित्र ।

❀ उपोद्घात ❀

* श्लोक *

पीतांबराह्वविदुषश्चरितं विचित्रम्
यद्वै वरिष्ठनरपद्गुणरत्नयुग्मम् ॥
ज्ञानादिसद्गुणगणैर्ग्रथितं स्वकीय
ज्ञानान्मुमुक्षमतिशुद्धिकरं च वक्ष्ये ॥१॥

टीका:—

पीताम्बर है नाम जिनका ऐसे जे

४० पण्डितश्रीपीताम्बरजीका जीवनचरित्र (विचार पंडितजी तिनकाचरित्र कहिये जीवनचरित्र। अर्थ यह जोः—जन्मसे आरम्भ करिके अद्य-पर्यंन्त जीवत् अवस्थाविषै तिनौंका आचरण! ताकूं मैं कहूं ॥

१ सो चरित्र कैसा है ? विचित्र है कहिये अद्भुत (आश्चर्यरूप) है॥

२ फेर कैसाहै?जो प्रसिद्ध अत्यंत श्रेष्ठपुरुषों के सद्गुणरूप रत्नोंकरि युक्त है ॥

३ फेरकैसाहै?ज्ञानादिसद्गुणोंकेगणों (समूहों) कर गुन्थित है॥

अर्थ यह जो—जिस चरित्रविषै पंडितजीके और तिनसेसंबन्धवाले सत्पुरुषनकेनामों से स्मारितज्ञान भक्ति वैराग्य उपरतिआदिक-गुणों का वर्णन किया।

४ फेर कैसा ? जो चरित्र पवै अज्ञानते

स्वअन्तर्गत पुन्योत्पादक और स्वजातीय-गुणोत्पादक महात्माओंके गुणोंकेविज्ञापन-द्वारा याके विचारनेवाले मुमुक्षुनी बुद्धि की शुद्धिका करनेवाला है।

इस श्लोकविषै आरंभ में।

१ "पीतांबर,, शब्दकरिकेब्रह्मनिष्ठसद्गुरु श्री पीतांबरजी का और।

२ पीत है अम्बर नाम वस्त्र जिसका। ऐसे विष्णुरूप सगुणब्रह्मका। और

३ पीत कहिये स्वसत्तासे कवलित किया है अम्बर कहिये आकाशादि प्रपंचरूपगर्भसहित अव्याकृत (माया) रूप आकाश जिसने ऐसे सर्वाधिष्ठान निर्गुणपरब्रह्मका स्मरण-रूप तीनमंगलोंके आचारणपूर्वक इसजीवन-चरित्ररूप ग्रन्थके आरम्भकी प्रतिज्ञा करी॥१

अब द्वितीयश्लोक विषे इस वर्णन करने योग्य महात्मा के विशेषणभूत "पंडित" शब्द के अर्थ को हेतु सहित कहे हैं—

॥ श्लोक ॥

वंशावटंकनिमागमशालिबुद्धि
विज्ञानशालिमतियुक्ततया हि लोके ॥
यः पंडितात्मकविशेषणयुक्तनाम्ना
पीतांबरेति प्रथितः पुरुषुण्यपुंजः ॥२॥

टीका:—

१ स्वकुल के "पण्डित" ऐसे अवटंककरि। अरु
२ वेदशास्त्र की बुद्धरूप ज्ञानकरि। अरु
३ ब्रह्मात्मैक्यनिष्ठारूप विज्ञानकरि
विशिष्टमतियुक्त हानेकरि जो लोकविषे "पण्डित" रूप विशेषणयुक्त "नाम से पीतांवर" ऐसे प्रसिद्ध वहुपुण्य के पुंज रूप हैं ॥

इहाँ "पण्डित" पद के उक्तत्रिविध अर्थनके मध्य प्रथम अरु द्वितीय अर्थ गौण हैं और तृतीयअर्थ मुख्य है काहेते

"यस्य सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः ॥
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितंबुधाः ॥१॥

अस्यार्थ— जिसके लौकिकवैदिकसमारंभकामना अरु संकल्प से वर्जित हैं। याहीते ज्ञानरूप अग्निकरि दग्ध भये हैं संचित अरु क्रियमाणरूप कर्म जिसके। ऐसा जो पुरुष है ताकूं बुधजन "पण्डित" कहते हैं, इस गीता स्मृतिते ज्ञाननिष्ठपुरुषविषै ही "पण्डित" पदकी वाच्यताके निश्चयते ॥ २ ॥

—:—:—

❀ कुलपरंपरा ❀

कच्छदेशविषै अंजरनाम नगर है। तामें राजपूज्य महाज्योतिषीपण्डित "नरेडय" भयेथे जिनकी विद्वताके महात्म्यसे कृपा से ताका सारा वंश "पण्डित, इस अवटंक-करि युक्त भया है। तिनके चारि पुत्र थे। तिनमें से

१ एक भुजनगरमें रहिके श्रीमहाराजाओंका दानाध्यक्ष भया।

२ द्वितीयपुत्र नारायणसरोवरतीर्थका पुरोहित भया।

३ तृतीयपुत्र अंजारनगरमेंही ज्योतिषीपंडित पदकूं पाया। और

४ ताका चतुर्थ अवरजपुत्र चागला भया। सो आसंबीया नामक ग्राममें ग्रामाधीश के अति आदर से निवास करता भया।

एक समयमें गढसीसाग्रामनिवासी सारस्वत गंगाधरशर्माथा । सो कोडायग्राममेंपाठशाला पढ़ावताहुयारात्रिको अश्वारूढ होयके चारको शपर आसबियाग्राममेंपंडितजीकेपासज्योतिष-शास्त्र पढ़ने निमित्त प्रतिदिन जाता था। सो गुरुचरणोंको गोदमें लेके मुखसेपढ़ताथा। एकदिन पंडितजीको निद्रा आगई और गङ्गाधरजी गुरुआज्ञाबिनाचरणोंको नछोड़िकेबैठा रहा।सवेरमें सो देखिके उनको वरदियाकि:— "तेरेकोसरस्वती मुहूर्तप्रश्नकर्णमेंकहैगी,,ऐसे प्रसादितसरस्वतीवाले वेचागलानामक पंडित थे। तिनकेपुत्रदामोदरजी परमज्योतिषी भये। तिनके१लीलाधर२प्रेमजीओर३गोवर्धनथेतीन पुत्रथे। तिनमें लीलाधरजी परमज्योतिषीओर भगवद्भक्तथे । वे आसंवियाग्राम से कदाचित् मंजलग्राममें पर्यटन करने जातेथे तहां ग्रामाधीशोंकोमुहूर्त प्रश्नोंके प्रसंगसेबड़ी भविष्यत-

चमत्कृति दिखाई थी । तिस करिके तीनों मैं सत्कारपूर्वक गृह अरुजमीन देके तिनको मंजलग्राममैं स्थापित किये । वे वार्धक्यमैं तीर्थयात्रा करनेको गये । सो पीछे लौटे नही । लीलाधरजी के पुत्र १—गोपालजी तथा २-अमरसिंहजी थे । तिनमैं गोपालजीके पुत्र पण्डित् १ लद्धाराम २ पुरुषोत्तमजी तथा ३ पारपेया । ये तीनथे । तिनमें पुरुषोत्तमजीजितेन्द्रिय निष्कपट जपतपसयुक्त अरु मुहूर्तप्रश्न में वाक्सिद्धिवान्के तुल्य थे ।

❀ जन्मवृत्तान्त ❀

पंडितश्रीपुरुषोत्तमजीकेपुत्रपण्डित१मूलराज तथा२पीतांबरजीतथा ३ लालजी ! येतीनभये तिनकी माताका नाम (वीरवती) था । सोभी वेदान्तशास्त्र तें जानत विवेकवती थी

सूरजके जन्मके अनन्तर । सप्तभगिनियां ।८ भइयीं । अनन्तर पंडित पीतांबरजी का जन्म विक्रम् संवत् १९०३ के ज्येष्ठशुध्द १० रूपगङ्गा जयंतीकेदिन भया है । तिनकेजन्मदिनमें माता पिता कोऔर भगिनियोंकोऔर सुहृदलोकनकूं "भगवत्का जन्मभया" ऐसा उत्साह भया था॥यथाशास्त्र जातकर्मपुन्यदानादिक्रियागया॥ वेगर्भंव समैंथे तबमाताको नारायणसरआदिक तीर्थयात्रा भई थी और वेदान्तश्रवण अरुअन वच्छिन्नसत्संग भयाथा तिस हेतुसेवे बाल्या-वस्थासेहि वेदान्तशास्त्रमेंरुचिवाले भये॥वृध्द कहते हैं कि:-षट्मासके गर्भकिहुए जोमाताको सत्शास्त्रकाश्रवण होतारहेतो पुत्रभी शास्त्र-संस्कारवान् होता है । यह वार्ता-प्रह्लादअष्टा-वक्रादिनमें प्रसिध्द है ।

कौमार और पौगण्डसे लेके किशोरवयका वृत्तान्त।

पंडितपीतांबरकेजन्मअनन्तर तिनके पिता की दिनदिन भाग्यवृद्धि होती गई ॥ ऐसेतिनके लालनपालन पोषण करते हुए तिनविषै मातपिताकी प्रीतिपढ़ती गई । पांचवर्ष अनन्तरलघुवयविषै तिनकेपिता सुभाषितप्रकीर्ण श्लोकादि मुखपाठ पढ़ादेते दे सोधारण करते रहे तदनन्तर पिताद्वाराही देवनागरी लिपि का ज्ञान भया । तदनन्तर मंदिरादिक जाते आते सन्यासी साधु ब्राह्मणोके पास भी स्तोत्रपाठाकी शिक्षालेतेभये और औरतिनोंसेतीर्थादिकको गार्ता और प्राचीनइतिहाससुनते रहे । अनन्तर अष्टवर्षकी अवस्था मैं इनका विधिपूर्वक उपवीत भया था ।

फेर श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठसद्गुरु श्रीबापुमहाराजब्रह्मचारीजी दशवर्ष से रामगुरु की आज्ञा करि सतसंगीजनोंकी भक्तिपूर्वक प्रार्थना से मंजलग्राम में रहते थे। तिनोंको पास अचरवाचनकी परिपक्वता अरु संध्यावन्दन उपनिषद् पाठ गीतापाठ अरुरुद्राध्यादिवेदकेप्रकरणों का पठन दो वर्षतक करते भये। तिनके साथ अन्य भी सहाध्यायी थे। परन्तु इनके सदृश किसी की धारणाशक्ति नहीं थी। सो देखिके तिनके उपरि गुरुकी पूर्ण कृपा रहती थी। याहिते तिनकी बुद्धि में ब्रह्मविद्या के संस्कार डालते रहते थे। तबही "मैंदेहेन्द्रियादिसघात से भिन्न साक्षीरूप हौं,,। यह निश्चय दृढ़ हो रहा था अरु तिन महात्माविर्षेतिनकी गुरुनिष्टा भी दृढ़तर हो रहीथी। तबकौपीनधारण गुरुसमीपवास गुरुसुश्रूषा इत्यादि। ब्रह्मचारी के

धर्म संपूर्ण पालन करिके रहते थे। आधुनिक रूढ़िसे तिनका उद्धार १० वर्षके अनंतर भया था। तदनंतर श्रीसद्गुरुकावटपतनमें निर्गमन भया ॥ तिनके वियोगसे समय में प्रेमपूर्वक गद्गद्कंठादिप्रेमके चिन्हभी होते रहे और श्री गुरु के साथ ही अध्ययन के निमित्त जान के बहुत आग्रह भया था। परन्तु मातापितानेबहुत हठ लेके निवारण किया ॥

यज्ञोपवीतके अनन्तर सोमप्रदोप एकादशीआदि शास्त्रोक्तव्रतअनवच्छिन्नकरते रहेऔर व्रतके दिनमें योग्यदेवकापूजन और प्रतिदिन स्वपिताके पचायतनपूजाकास्वीकार आपने ही किया था ॥ तिस तिस स्तोत्रादिकके पठनरूप भजनमें काल व्यतीत करते थे। प्रासादिक लघुस्तवस्तोत्रका पाठ प्रतिदिन नियम से करते थे और महाराजश्रीकेनिर्गमन भये पीछे श्री

रामगुरुकी चरणपादुका मञ्जलग्राममें महाराजकेहीस्थानमेंस्थापितथी उसकी पूजाअर्चादि वहीं करते रहे। तिस वय में स्वमित्रों के पास "चलो हम स्वगृह छोड़िकेतीर्थयात्रादिककरें वा विद्याध्ययन करें वा सत्समागम करें।" ऐसी शुभवासना तिनोंके चित्तमें उदय होती रही। परन्तु वे मित्र सलाह देते नहीं थे। महाराज के गमनांतर तिनोंकेही स्थान में कोई देशांतरवासी रामचरण नामक वेदांतसंस्कारयुक्त विरक्त साधु रहते थे। तिनके साथ बहुत परिचय रखतेही रहे॥ पीछे सो साधु रामगुरु की पादुका का पूजन भी करतेथे और प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्त में स्नानादिक्रिया तथा सम्पूर्णगीतापाठ और अनुक्षण रामनामका भजन करते थे और रामायण भागवत वेदांतकेप्रकरणग्रंथोंकी कथा करते थे।

पण्डितजीने कितनेककाल गढसीसाग्रामके स्वस्वसापति देवचन्द्रनामक ज्योतिर्विद के पास मुहूर्त ज्योतिष आदिक का कछुक अभ्यास किया था। तिस प्रसंग में तहाँसे सन्निकृष्टएक प्रतिष्ठित बिल्वेश्वर नामक महादेव का बिल्लन विषै प्राचीन धामहै तहां पूजनको गयेथे और श्रावण मासमें बहुत देश भरके विद्वान ब्राह्मण पूजननिमित्त आतेहैं। तिन्होंसे अनेकशास्त्रप्रसङ्ग और वार्तालाप किया था।

तदनंतर मंजलग्राममें एक व्याकरणआदिकविद्याविषै कुशललब्धिविजयनामक यतिवर थे तिनके पासपिताकी आज्ञासे व्याकरणाभ्यास करते रहे। कदाचित तहां देशांतरपर्यटनशील परमविरक्त क्षमा दया धैर्य मौनतितिक्षा आदिक अनेकसद्गुणरत्नाकर पद्मविजय-

जी नामक यतिवरिष्ठ आये थे। तिनके पास व्याकरणाभ्यासनिमित्तजातेआतेरहे ॥ इनोंकी सुशीलतादिकशुभगुण देखि के तिनों की भी परम प्रीति भई थी॥ परस्परचित्त बहुत मिलता रहा ॥ फेर कितनेक कालपर्यंत वह पिता की आज्ञासे तिनके साथ विचरते रहे और व्याकरणाभ्यास करते रहे ॥ अन्त में कितनेक काल भुजनगर में तिनके साथ रहते थे ॥ जितना कुछ प्रतिदिन पाठ लेतेथे तितना कंठहुं करलेतेथे ॥ बहुतसा व्याकरणाभ्यास वहां पूर्ण भया ॥ फेर तिस महात्माकीदेशांतरविषैतीर्थ यात्राके निमित्त जिज्ञासा भई तिनके साथ ही पिता की आज्ञा से पंडितजी निगमन करते भये। परन्तु माताकेअतिस्नेहसे दूतद्वारामध्यसे बुलाये गये ॥

❀ मध्यवयोवृतान्त ❀

फेर साधु श्रीरामचरणदासजी के साथ रामायणादिग्रंथन का विचार करते रहे। कदाचित् काकतालीयन्यायकरि कोइक ब्रह्मनिष्ठ परमहंस स्वगृहमें आपके रहे थे तिनोंने वेदांत के संस्कार उज्जीवन किया। फेर पिताजी के साथ नौकाद्वारा श्रीवम्बई नगरविषै गमन किया। तहाँ नाशिकनगरनिवासी संसारोपरत श्रीनारायणशास्त्री के विद्यार्थी श्रीसूर्यरामशास्त्री के पास काव्यकोष व्याकरण भागवतादि शास्त्रन का अध्ययन करिके संस्कृतवाणीविषै व्युत्पन्नमतिवालेभये॥ फेर वेदांततीर्थकी जिज्ञासाकरिके स्वामीश्रीरामगिरीजी के पास पंचदशीका अभ्यास करते रहे॥

तावत् पूर्वपुण्यपुंजपरिपाकके वशतें सद्गुरु

श्रीबापुमहाराजजी अकस्मात बम्बई में पधारे। तिनों के पास विधिपूर्वक गमन करिके पंचदशी आदिकग्रंथनका अध्ययन तथा श्रवणकरते हुए श्रीगुरुके साथ नासिक क्षेत्र में जाय आयके नौकाद्वारा श्रीकच्छदेशविषै आयके स्वकीयश्री मञ्जलग्राममें पधारे॥ तहाँ स्वतंत्रवेदांतग्रंथनका अध्यन तथा अनेक मुमुक्षुजन के साथ अध्यन और श्रवण करते रहे॥ तब श्रीसद्गुरु जहां जहां सत्संगीजनोंके ग्रामोंमें विचरते थे। तहाँ तहां सहचारी होयके अध्ययन और श्रवण करतेरहे। दोवर्षपर्यन्त श्रीगुरुकच्छदेशमें विचरिके फेर जब वटपत्तन [वडोदरानगर] के प्रति पधारे तब श्रीभुजनगरपर्यन्त बहुत सतसंगीजनसहित श्रीगुरुके साथ आयके फेर तिनों की आज्ञाके अनुसार मञ्जलग्राममेंआवतेभये।

तहां कछुककालस्वगुरुभ्राता रामचैतन्य शर्मा ब्रह्मचारी और बुद्धिशालि यदुवंशीबापुजी वर्मा क्षत्रिय आदिसत्सगजनोंको पंचदशी उपदेशसहस्री नैष्कर्म्यसिद्धि तत्त्वानुसंधान विचारसागरआदिक प्रकरणग्रंथोंका श्रवण करावते थे ॥

फेर सवत् १६२४ की शालमें तिनों के गृहमें देवकृष्णशर्मा पुत्रका जन्मभया ॥ तदनन्तर मासत्रय पीछे तिनोंकेपिता परम पदको पाये ॥ पीछे त्वरितहीं आप बम्बई में पधारे ॥ परमपुण्यके वशते श्रीविष्णुदासजी उदासीन तब परमहंस के शिष्य और पंडित श्रीनिश्चलदासजीके विद्यार्थी और कविराज परमअवधूत महात्मा श्रीगिरिधरकविजी के साधक सकलसाधुगुणसम्पन्न स्वामीश्रीत्रिलोकरामजी स्वमंडलीसहित श्रीबम्बईमें पधारे॥ तहां संतन के

दास साह नारायणीजी त्रिविक्रमजी आदिक सत्संगीजनोंकी प्रार्थनासे एकोनविंशति (१६) मासपर्यन्त श्रीमुम्बईमें निवास करते भये। तब श्रीवृत्तिप्रभाकर तथा श्रीचारसागर इन दो ग्रन्थनका सम्यक्श्रवण होता रहा औरअहर्निश तिन महात्माके पास एकांतवासविषै रहि के तत्कृपापूर्वक अनेकवेदांतके पदार्थनका शंका-समाधानपूर्वक निर्णय करते रहे औरतिनमहात्माके मुखसे सुनिके अरुदेखिके अनेककल्याणकारी सद्गुणोंका स्वचित्त मैं अध्ययन करते भये। वीचमें अवकाश देखिके पंडितश्रीजयकृष्णजीमहात्माकेपास श्रीआत्मपुराणआदिक ग्रंथनका भी श्रवण करते रहे। और भट्टाचार्य श्रीभिक्षुशास्त्रीके विद्यार्थी श्रीभीमाचार्यशर्मा नैयायिक के पास न्यायग्रन्थनका अभ्यास भी करतेरहे और तहां आयके प्राप्त भये निर्मल

साधु श्रीगंगासंगजी के पास वेदांत के प्रकरण देखते रहे ॥

किसी दिन स्वामीराघवानंदजी ने पण्डितन की सभा करवाईथी तहां पण्डितजीने वेदांत विषयक पूर्वपक्ष किया था ताका समाधान आशुकविश्रीगट्टूलालोपनामक गोवर्धनेशजी ने किया था औरथं प्रबुद्धि देखिके प्रसन्न होयके कहाकि हमारे यहां कुछ अध्ययन करने को आतेरहो॥तब तिनोंके पास शांकर उपनिषद् भाष्यका अध्ययन करते रहे ॥

फेर संवत् १९२६ के वर्ष में कर्मंदी मंडलीसहित स्वामीश्रीत्रिलोकरामजी के साथ श्रीप्रयागराज के कुम्भ पर जाय के कल्पवास किया । तहां पंडितश्रीकाकारामजीके विद्यार्थी प्रयागवासी महोपराम सतोपरूप खगधारी महात्मा श्रीब्रह्म विज्ञानजी, तथा तिनके शिष्य

उत्तमपरमहंस श्रीकाशीवाले अमरनाथजी। कनखलवाले अमरदासजी। बड़े आत्मस्वरूप जी। महापंडित ज्योतिःस्वरूपजी। तथा मंडलेश्वर आदित्यगिरजी। आदित्य पुरीजी फणीन्द्रयति। ब्रह्मानंदजी। महंतहरिप्रसाद-जी। सुमेरगिरिजी। बलदेवानन्दजी आदिक अनेकमहात्माओंका समागम भया॥ तहाँ किसी प्रसंगसे महात्मा काशीवाले अमरदास जी के पास पण्डितजी ने प्रश्न किया—

१ (१) प्रश्न–किं विदुषो लक्षणं ?
(२) उत्तर–रागादिदोषराहित्यम्॥

२ (१) प्रश्न– रागाद्यभावेसतिइष्टानिष्टयोः प्रवृत्तिनिवृत्त्यनुपपत्ते विदुषःप्रारब्ध-भोगो न स्यात् ?
(२) उत्तर–अदृढरागादित्वं विदुषो लक्षणम्॥

३ (२) प्रश्न—अदृढ़रागादेः किं लक्षणम् ?

(२) उत्तर—नैरतर्येण रागाद्यभावत्वं (विचारनिवर्त्यरागादित्वं) अदृढ़ रागादि त्वं ॥

४ (१) प्रश्न—सुषुप्तौ सर्वप्राणिनां रागाद्यभावेन नेरंतर्येण रागाद्यभावात् अज्ञेष्वपि तज्ज्ञलक्षणस्याति व्याप्तिः सेत्स्यति ?

(२) उत्तर—यद्यपि सुषुप्तौ अन्तःकरणभावात्त्विवमस्तु तथापि जाग्रदादावंत करणसबधे सति नैरतर्येण रागाद्यभावत्वमदृढरागादित्वंइति तुनातिव्याप्तिः

५ (१) प्रश्न—सुषुप्तौ संस्काररूपेणांतःकरण सद्भावेनांतःकरणसंबधसत्वादुक्तलक्षणस्याज्ञेष्वतिव्याप्तिः ?

(२) उत्तर — स्थूलांतःकरणसंबधे सति इति स्थूलपदस्य निवेशे कृते नातिव्याप्तिः ।

६ (१) प्रश्न—कृष्यादिकर्मणि सलग्नस्याज्ञस्यापि स्थूलांतःकरणसम्बधे सत्यपि रागाद्य भावादुक्तलक्षणस्याज्ञेऽव्यतिव्याप्तिः ?

(२) उत्तर—स्त्रीशत्रुप्रभृत्यनुकूलप्रतिकूल—पदार्थसान्निध्ये स्थूलांतःकरणसंबंधे च सति नैरंतर्येण रागाद्यभावत्वं अदृढ रागादित्वं तदेव विदुषो लक्षणम् ।

७ (१) प्रश्न—षष्ठसप्तमभूम्योस्तु सर्वथा रागाद्य भावेनादृढरागाद्यभावादुक्तलक्षणस्य तत्राव्याप्तिः ।

(२) उत्तर—दृढरागादिराहित्यं विदुषां लक्षण सिद्धमिति वाच्यम् ।

इस रीति से प्रयाग में प्रश्नोत्तर भया ॥

वर्षरोज की तीर्थयात्रा के मिष करि आगे से निर्गत और तहाँहीं प्राप्तभयें श्रीगुरुका दर्शन करिके तिनोंकीआज्ञासे श्रीकाशीपुरी में पधारे। तहाँ गंगाघाटपर स्थित अपूर्वपरमोपपरम स्त्रीदर्शनादिरहित एकांतवासी समाहित प्राकृतालाप रहित किंचित्‌संस्कृतालापी श्रीरामनिरंजनोप नामक पदवाक्यप्रमाणज्ञस्वामीश्रीमहादेवाश्रम जीके पास जाते आते रहे। तिनोंके पास जो कुछ प्रश्नोत्तर भया सो, पंडितजीकृत प्रश्नोत्तरकदम्ब नामक ग्रथमें प्रसिद्ध है।

तहाँ दर्शनस्पर्शन करिके श्रीगयाश्राद्धकरि आये तब श्रीकाशीराजके मंत्रीनेमिलनेकीइच्छा विज्ञापन करीथी। अनवकाशते मिलापननभया फेर तहाँ से गोकुल मथुरा आदि व्रजमडल की यात्रा करिके पुनः मुम्बई पधारे। तहाँ पुनः श्रीगुरुका कुछुकदिन समागम भया।

फेर तदाज्ञापूर्वक कच्छदेश में आयके स्वानुजलालजीका विवाह किया ॥ पीछे रामबाई नामक स्वकन्या जन्म भया हीथा । तदनन्तर गार्हस्थ्यसुखभोगविषै उदासीन हुए पादोनद्विवर्षपर्यंत कर्णपुर नामक ग्रामाधीशों के गृह में पूज्य होयके स्थित एकान्तभजतशीलताआदिक अनेकसद्गुणलंकृतदेश प्रतिष्ठित महात्मासाधु श्रीमान्ईश्वरदासजीकोश्रीवृत्तिप्रभाकर रूपभाषा ग्रंथऔर श्रीपंचदशी आदिक संस्कृतग्रथन का अध्ययन करातेहुएरहेथे । वे महात्मा पंडित जीविषै देदांतपर्यन्त कृतघ्नतनाशक गुरुबुद्धि धारते थे । ताके मध्यकोटकी महादेवपुरी विषै स्थित श्रीमान्अर्जुनश्रेष्ठ नामक महात्मा को मिलने गयेथे । तहाँतिनोंकी इच्छासे सार्धद्वि मासपर्यन्त रहिकेसानन्दगिर श्रीगीता भाष्यका परस्पर विचार करते भये ॥

फेर यहाँ कच्छदेश में द्वितीयावार श्रीगुरु का आगमन भया। तव तिनोंके साथि विचरते हुए श्रवणाध्यन करते रहे। तव तिनों के साथिही शंखोद्धार (भेंट) और द्वारिकाक्षेत्र में जायके स्वदेश में आये॥ फेर गुरुआज्ञापूर्वक बम्बई पधारे तव उत्तमसंस्कारवान उत्तमाधिकारी रा.रा. श्रेष्ठशरीफ भाई सालेमहंमद तथा परमविद्वानसुसुहृत उत्तमाधिकारी रा.रा. मनःसुखराम सूर्यरामभाई त्रिपाठी इन दो अधिकारिनकूं श्रवणाध्ययन कराते रहे॥ तव प्रसंगप्राप्ततैलंगदेशीय पदवाक्यप्रमाणज्ञ याज्ञिकशु ब्रह्मण्यमखींद्रशर्माशास्त्रीजी तहाँ विराजे थे तिनोंके पास शारीरभाष्यसहित ब्रह्मसूत्रनका शांतिपाठपूर्वक श्रवण करते रहे। तवश्रीस्वामी स्वरूपानदजी सहाध्यायी थे॥

अनन्तर शरीफभाई आदिक की प्रार्थना से श्रीपचदशीकी भाषाटीकातथा श्रीविचारसागर के मङ्गल के पचदोहाकीटीकापूर्वक टिप्पणि का तथा श्रीसुन्दरविलासकेविंशतितमेंविषयक नामक अङ्गकी टीकासहित टिप्पणि का तथा श्रीविचारचन्द्रोदय । वृत्तिरत्नावली । सटीक बालबोध । संस्कृत श्रुतिषड्लिंग संग्रह । श्री वेदस्तुतिकी टीका । स्वामीश्रीत्रिलोकरामजी–कृत मनोहरमालाकीटिप्पणिकासहित सर्वात्म, भावप्रदीप आदिकग्रंथनको रचतेभये ॥उक्त ॥ सर्व ग्रंथ छपेहैं और श्रीवेदांतकोश । बोधरत्नाकर । प्रमादमुग्दुर, प्रश्नोत्तरकदंब । षट्दर्शन सारावलि । मोहजित्कथा । सदाचारदर्पण । ज्ञानागस्ति । भूमिभाग्योदय रूपकादर्श और संशयसुदर्शनआदिकग्रंथ किंचित् अपूर्णहोनेसे छपे नहीं हैं । पूर्ण होयके छपेंगे ॥

संवत् १९३० की शालमें आप वड़ौदा में पधारे थे। सार्धमासपर्यन्तरहे ॥ वहांसेंबंबई पधारे पीछे श्रीगुरु परब्रह्मसमरस भावको प्राप्त भये। जब पंडितजी महोत्सवपर पधारेथे और संवत् १९३२ की शालमें भावनगरके महाराजा तख्तसिंहजी तथा महामंत्री गौरीशंकर उदयशंकर तथा उपमंत्री श्यामलदासभाई परमानन्ददास बम्बई विषे और तिसी वर्ष में स्वज्येष्ठभ्राता मूलराज अरु धर्मपत्नीकादेहांत हुआऔर जूनागढ़के महामंत्री ब्रह्मनिष्ठ श्री गोकलदासजी झालामुम्बई गत चीनाबागमिले तहां प्रथमआज्ञातहुए पीछेकिसीस्वामीके वाक्य से विदित भये यासे वीतरागताकरिउपमितजये त्रिपाठी रा. रा. मनःसुखराम सूर्यराम शर्मांकी श्रीकच्छमहाराजाओंकी आज्ञापूर्वक रावबहादुर दिवानबहादुर महामंत्री आमादि

भाई यशभाईद्वारा पूर्ण सहायता प्रदानपूर्वक प्रार्थनासे तथा श्रीभावनगर के महाराज तथा श्रीवढवाणके महाराज तथा श्रेष्ठ हरसुखराय खेतसीदास तथा श्रेष्ठप्रयागजी मूलजीआदिक सद्गृहस्थनकी सहायताप्रदानपूर्वक इच्छा से ईशाकेन कठवल्ली प्रश्नमुंडक मांडूक्यतैत्तिरीय और ऐतरेय इन अष्टउपनिषद् का सटीक श्रीशंकरभाष्यके व्याख्यानसहित व्याख्यान- करिके छपवाया है ॥

तदनन्तर संवत् १६३६ के शाल भाव- नगर जायके तहां राज्यादिकसेयोग्यसत्कार- को पायके श्रीप्रयाग के कुम्भ पर द्वितीयबार पधारे ॥ तहां महात्मास्वामी श्री त्रिलोकराम- जी तथा श्रीमद्अमरदासजी तथा खेरपुरकेमहंत जन्मसे वाक्सिद्धिवान् साधुश्रीगुरुपतिजी ताके शिष्य संगतिदासजी तथा माधवेलाके महंत

श्रीहरिप्रसादजी तथा श्रीत्रिलोकरामजी के शिष्य पंडितअनतानंदजी तथा पंडित केशवानंदजीतथा पडित भोलारामजी तथा पडितस्वरूप दासजीतथा परमविरक्त मंडलेश्वर साधुश्री--ब्रह्मानन्दजी तथा साधुश्रीदयालदासजी तथा श्रीमयारामजीआदिक अवधूतमंडल इत्यादि अनेक महात्माओंका दर्शनसंभापण किया ॥

फेर श्रीकाशीजी में आये ॥ तहाँ स्वामी त्रिलोकरामजीकी मंडलीकेसाथिहीपंचकोशी-की यात्राकरी और ब्रह्मनिष्ठ महात्मा पंडित अमरदासजी तथा श्रीद्वितीयतुलसीदासजी के शिष्य वरणानदीपर विराजित साधु श्रीलाल दासजीका दर्शनभाषण किया। तथा अवधूत दंडीस्वामी श्रीभास्करानन्दजीका तथा दण्डी-स्वामी पंडित श्रीविशुद्धानंदजी का तथा स्वामी श्रीतारकारामजीका तथा द्रुवेश्वरमठाधीशस्वामी

श्रीरामगिरिजीका तथा तिनके शिष्य योगिराज श्रीरुद्रानन्दजी का तथा त्रिशूलयति के मठ में स्थित स्वामी श्रीचीरगिरिजीकाऔर भरूचवासी स्वामी श्रीअद्वैतानंदजीआदिकका दर्शन संभाषण किया ॥ पीछे स्वामी श्रीत्रिलोकरामजी की आज्ञा से श्रीअयोध्या के प्रतिपधारे। सर्वदा स्वकन्या रामाबाई तथा भ्रातृपुत्री लीला बाई साथि रही ॥ तहाँ भगवन्मदिरोंकेदर्शनपूर्वक सिद्ध श्रीरघुनाथदासजी तथा सिद्ध श्री माधवदासजीके दर्शन तथा सरयू स्नान करिके श्री नैमिषारण्यविषै पर्यटन करिके व्रजमंडल में विचरिके श्रीपुष्करराज तथा सिद्धपुरके सन्निध सरस्वतीका स्नानादिकरिके श्रीडाकोरनाथ का तथा वडोदानगरगत ज्ञानमठमें श्रीराम गुरुकी तथा श्रीसद्गुरुबापुसरस्वती की समाधिके तथा चरणपादुकाके दर्शन पूवक मंत्रीवर श्रीमणि

भाई यशभाईका मिलाप करिके फेर बंबई में पधारे ॥ तहां से श्रीकच्छदेशविषै आये तहां मणिभाई मन्त्रीसहित श्रीकच्छमहात्माओं का मिलाप भया ॥

फेर संवत् १९४० की शाल में महाराजाधिराजश्री ५ मत्हथुआधीशकृष्णप्रतापसाहब श्री बहादुरशर्माका प्रेमपत्र आया सो बांचिके बड़ा हर्ष भया ॥ फेर श्रीहथुआसे कास्मीरी पंडित जनार्दनजीको दर्शनकेनिमित्त मंजल ग्राम में भेजाथा। अनन्तर बहुत मुमुक्षुजनोंकी जिज्ञासापूर्वक प्रार्थनासे यजुर्वेदीय श्रीबृहदारण्यकोपनिषद् के हिन्दीभाषा में व्याख्यानके लिखानेका स्वपुत्रकेहस्तसे ही आरम्भ करिके पांच वर्षोंसे ताकी समाप्ति करी। बीचमें श्री कच्छमहाराजाओंकी आज्ञासे श्रीसिहशीशगढ ग्राममें मकान बनायके निवास किया। अबा

तत्काल में ही श्रीहथुआमहाराजकीतीव्रजिज्ञासासें आकर्षित हुये स्वानुज लालजी सहित श्रीकाशीपुरी प्रति जिज्ञापा करिके बम्बई में आये ॥ तहां तीन दिनके अनन्तर महाराजके भेजे पण्डित जनार्दनजी सामने लेनेको आये श्रीपुरीमें पहुँचे तब श्रीहथुआमहाराज सम्मुख पधारे और दण्डवत् प्रणामकियाऔरदुर्गा घाट पर महाराज श्रीडुमरावोकेबगीचेमेंश्रेष्ठ सत्कार पूर्वक निवास करवाया था। तहां प्रतिदिवस आप मुखचर्चाश्रवणअर्थ पधारते थे। फिर पंडितके साथिही स्वसद्गुरुदन्डी स्वामी श्री माधवाश्रमजीकी सन्निधिमेंचैतन्यमठविषेराजा पधारते थे। तहां भी परमानन्दकारी प्रश्नोत्तर रूपवचनविलास होता रहा तिस प्रसंग में अनेक महात्माओंके दर्शनअर्थ महाराजकेसहचारी ब्राह्मणोंके सहित प्रतिदिन पण्डितजीप-

धारते थे ॥ फिर महाराज की आज्ञा से बम्बई पर्यान्त पंडितजनार्दनजीरूप सार्थवाहकसहित पधारे ॥ मध्यमें जाके हस्तसे निवेदित अन्नको साक्षात हरि भोगते हैं ऐसी सुभक्ता शिष्या हीराबाई ब्राह्मणीकोदर्शन देने के अर्थ से भरी ग्राममें ७ दिनबसिके बम्बई द्वाराफिर श्रीकच्छ देश में स्वानुजसहित आयके उक्त व्याख्यान समाप्त किया ॥

कछुक काल स्वदेशगत सत्संगी जनों के ग्रामों में विचरते रहे । फिर संवत् १९४७ की शालमें श्रीहरिद्वारके कुम्भपर गमनअर्थ साधु श्रीईश्वरदासजीके शिष्य प्रेमदास सहित श्री कराचीनगर में पधारे । तहाँ पडित स्थाणु-रामकेअनुजपंडित श्रीविजयकृष्णजीआदिकअनेक सत्संगी जन वाहनों से संमुख आयके ले गये । तहाँ दशदिन कथा श्रवण भया तब हैदराबाद

के कितने सत्संगी लेने को आये तिसकरि के तहाँ पधारे। तब पंडित जयकृष्णजी साथ ही रहे ॥ फेर कोटडीमें आयके ताकी सन्निधि में स्थितगोधुमलकेटंडे में पंडितस्थाणुरामजी के गृहमें एक रात्रि रहे। सवेरमें सिंघदफतरदार साहेबका अवलकारकुन मिस्टरतनुमल चोइथ राम, विष्णुराम, केवलराम और छत्तूमल ये गृहस्थ अश्वशकटिकासे लेनेको आये तब तदा-रूढ हो एक शहर हैदराबादकीशोभा देखतेहुए नगरसे बाहिर छत्तूमलके शिवालय में चार दिवस निवास किया। तहाँ अहर्निश ईश्वर भजनपरायण मौनी दुग्धाहारी एक अपूर्व ब्रह्मचारीका दर्शन भया और नगरमें एक पर-मोरत ज्ञानादिगुण संपन्न कलाचंदनामक भक्त का दर्शन भया, और केई उत्तम भक्तजनों के स्थानदेखे। स्वनिवासस्थान में सत्संगीजन

प्रतिदिन श्रवणअर्थ आने थे अरु दर्शननिमित्त नरनारीका प्रवाहप्रचलित भया था ॥ वहांसे चलनेके दिनमें पडित युक्तिरामनामक संतने स्वस्थानमें आग्रहपूर्वक बुलायके पूजा सत्कार किया॥ वहांसे ले आने वालेगृहस्थही रेलतलक छोड़नेको आये। फेर तहांसे शिखर सहर में आयके एक रात्रि रहे॥ साधवेला नामक सन्तनके स्थानदर्शन किया और रोडीग्राममें जायके उदासीनपरमहंस पण्डित केशवानन्दजी जो अमूलकदासजी महात्मा के शिष्यथे उनको मिले और परमार्थी वसणभक्तको भी मिले॥

फेर वहांसे मुलतान तथा लाहोरके मार्गसे अमृतसर में आये। तहाँ शेठ तारा चन्द चेलारामकी दुकानपर एक रात्रि रहे॥ वहां महाराज श्रीकृष्ण प्रतापसाहिबहादुर शर्मा का प्रेमपत्रक आया था वांचिके प्रसन्न भये॥

प्रातःकालमें श्रीगुरुनानकजी के दरबार का सरोवरकेमध्यदर्शन भया ॥ फेर वहाँ से श्री-हरिद्वारपुरीमें पधारे । तहाँलीलधारापर महात्मा श्री त्रिलोकरामजी की मंडली का निवास था । वहाँ वसति करी ॥ ब्रह्मकुण्डका स्नान महज्जनों का दर्शन सम्भाषण भया ॥ फेर वहां से उक्त मन्डली के साथ ही हृषीकेश पधारे । वहां परोपकारक कमली वाले महात्मा श्रीविशुद्धानन्दजी मिले और गंगातीर निवासी तपस्वी श्रीगुरुमुखदासजी मयारामजी अवधूतआदिक अनेक उत्तमसन्तोंकादर्शन भया । वहांसे लौटिके श्रीअयोध्यापुरीमेंआये । वहाँ से रेलमें बैठिके श्री इथुआनगरमें जानेअर्थ अलीगढ़में आये । तहां अश्वशकटिकासहित महाराजका पंडित सामने लेने को आया था सो श्रीइथुवानगरमें लेगया ॥ उसी दिन में महा-

राजकीमुलाक़ात भई प्रतिदिनमहाराजका समागम होतारहा। बीचमेंश्रीशालिग्रामजीनारायण जीगंडगीनामकमहानदीपरस्वारीआदिकसामग्री सहित स्नान करि आये और स्थावापुरवासिनी देवी का दर्शन भी किया। फेर वहाँ से महाराज की आज्ञा से गयाजी गये। तहाँ श्राद्ध करिके गंगातीरवर्ति दिगाघाट पर महाराज के स्थानमें पधारे। उसी दिन में सकेंत से महाराजा धिराज श्रीकृष्णप्रतापसाहिबहादुर शर्मा भी तहाँ पधारे अक्षय तृतीया तहाँ भई और तीन दिन महाराज का समागम होता रहा॥ फेर वहाँ से धानापुर आयके धूम्रशकटिका में महाराज के साथही बैठि के श्रीवाराणसी में आये। तहाँ पिशाचमोचनपर स्थित हथुआधीशके बगीचेमें तीनदिन निवास भया। गंगा

स्नानऔरमहात्माओंकादर्शन संभाषण भया ॥

फेर वहाँसे महाराजाकी तरफसे मिलित भेट और पोशाक स्वीकार करिके तदाज्ञापूर्वक श्रीप्रयाग चित्रकूटपुण्डरीकपुरऔरपुन्यनगरके मार्ग से श्रीवम्बईमें आयके शेठ श्रीयादवजी जयरामके स्थानमें चातुर्मास्यपर्यन्तवसिके ब्रह्म सत्रकी सामग्री संपादन करिके रेल के रस्ते स्वदेशविषै आयके संवत् १९४८ के आश्विन शुद्ध १० से आरभिके भगवन्महोत्सव नामक ब्रह्मसत्र किया। तहां कंई अपूर्व सन्यासी समाज एकत्र भया था। सभा संभाषणादि अद्भुत आन्हाद भया था। सो समाप्त करिके श्रीमुम्बई आयके भापाटीकाका युक्त श्रीबृहदारण्यक तथा छाँदोग्य ये दो उपनिषद् साथ द्विवर्षमें छपवाये ॥

फेर श्रीप्रयागराज के कुम्भ पर जाय के स्वामि श्रीत्रिलोक रामजी का गङ्गा पर स्थित मंडली में कल्पवास किया ॥ वहां हथुआधीशके मनुष्य आये थे तिनके साथ राजाने पत्रसहित रोप्यशतक भेज्या था सो स्वामीजी के समक्ष तिनों की आज्ञासे गंगातीरस्थ पण्डितनकेअर्थ यथा योग्य विभक्त किया गया ॥

फेरवहाँ से मंडली सहित श्रीकाशीपुरी में पधारे ॥ स्वामीजी दुर्गाघाटपररहे । पंडितजी पिशाच मोचन पर स्थिर महाराज के बगीचे २५ दिन रहे । प्रति दिन महाराज समागम होता रहा ॥ चारवजे बाद नित्य अश्वशकटि कासे महाराजा के सहचारियोंकरिसहित भिन्न भिन्न स्थानमें महात्माओंकेदर्शनकोजाते थे। स्वामी माधवाश्रमजी । स्वामी श्रीविशुद्धा

नन्दजी । स्वामी श्रीभास्करानन्दजी स्वामी श्रीपूर्णनन्दजी।महात्माश्रीअमरदासजी ॥ पंडित श्रीरामदत्तजी महान्त श्रीपवारिजी । साधु श्रीविक्रमदासजी आदिक अनेक उपरतिशील महात्माओंका दर्शन भाषण भया महाराज की यज्ञशाला कभी इष्टिसहित दर्शन भया ॥ फेर चलनेके पहिले दिन सायंकाल में पंडित शिवकुमारजी । राखलदासन्यायरत्न भट्टाचार्य कैलाशचन्द्रभट्टाचार्य आदिक उत्तमपंडितनकी सभा करवाई थी । तिन विद्वानोंका दर्शन संभाषण भया । पंडितनके विदा हुए पीछे स्वकृतआशीर्वचनरूपश्लोक महाराज के समक्ष अर्थसहित उच्चारया ॥

॥श्लोक॥

श्रीमत्कृष्णप्रतापतुल्यनृपति-
लोंकेऽधुना दुर्लभः
श्रीमद्रामसमोऽस्त्यसौ शुभगुणैः
सद्धर्मसत्सेतुकृत् ।
स्वज्ञानेकक्रुराण य कहरो
मुष्ट्येकलंमासुजित्
शांतिश्रीजनकात्मजाप्तिसहितो
भूयात्स्वधामैंकराट् ॥ १ ॥

सो चतुर्थी अर्थसहित सुनिके पंडित सभासहित नृपति परम प्रसन्न भये ॥ उत्थान करिके अभिवंदन किया । आनन्द से आलिंगिन होयके मिले भेटे और पोशाक समर्पिके विदा करी । प्रातःकालमेंवहां से प्रयाग करिके पंडितजी श्रीबम्बई में पधारे ॥ पीछे श्रीकच्छ

देश में पधारे। फेर संवत् १९५१ के वर्ष प्रभासादियात्राकी जिज्ञासा करिकेगृहसेंनिर्गत हुए अगनबोट [धूमनौका]से वेरावल पधारे। तहां राजवहादुर जूनागढ़केदीवानजीसाहेब श्री हरिदास विहारीदास जालीबोटमें बिठाय के बंदरपर लेगये॥ वहां शेठ शरीफ सालेमहंमदादि सद्गृहस्थोंका मिलाप भया॥ तिनकी भावनासे २५ रोजतक श्रीजूनागढ़ सरकारके मकानमें निवास भया॥ मध्यमें प्रभास और प्राचीननामक तीर्थकी यात्रा करि आये॥ फेर धूम्रशकटिकाद्वारा श्रीजूनागढ़पधारे। तहांश्री दिवानसाहेबकी आज्ञासे शकटिकामें छापेखानेंका मैंनेजर महादेवभाई सामने आयके ले॰ गया॥ और नायबदिवानसाहेव श्रीपुरुषोत्तमरायके नवीन गृहमें निवास करवाया॥ यहां एक मासभर रहे। वहां श्रीवरसिंहमेहता,

दामोदरकुंड, मुचुकुंदगुफाऔरशहरके सुन्दर स्थानोंका प्रदर्शन भया औररेवताचल गिरि-नारपर्वत)की यात्रा भई। एकत्र भई सभाके मध्य श्रीदिवानसाहेबके गृह मैं पंडितजीका वेदांतविषयक संभाषण भया॥ फेर वहांसे विदा होयके वेरावल आये॥ तहां वेवठदार-साहेब और व्यापाराधिकारी शेठ शरीफ भाई रेलपर सामने आयके निवासस्थानमैं लेगये॥

फेर वहांसे धूम्र नौकाद्वारा श्रीबम्बई मैं आगमन भया। तहां महाराज श्रीजयकृष्णजी तथा साधु श्री संगतिदास जी और परमसुहृत श्रीमन्‌सुखराम सूर्यरामजीआदिक सज्जनोंका समागम भया॥ स्वकीय दो पौत्रन के बौंजीबंधनकेप्रसंगसे चारि यज्ञकी चिकीर्षाके लिएसर्वसामिग्रीसम्पादनकरिकेस्वदेशमैंपधारे।

संवत् १९५२ के वैसाख कृष्णद्वितीया द्वादशीपर्यंत श्रीगायत्रीपुरश्चरण । श्रीमहारुद्रयज्ञ । विष्णुयज्ञ औरशतचंडीये चारयज्ञ किये तहां स्वामी श्रीआत्मानन्दजी और कंई संत और सत्समागमियोंकाभी आगमन भया था । अनन्तर संवत् १९५४ सालसे आरम्भकरिके गढसीसासैंसार्द्धककोशपर पूर्वदिशामें प्र.चीन विल्ववनविषैप्राचीनकालमैंआविर्भूतदेश प्रतिष्ठित स्वयंभू श्रीविल्वेश्वर नानक महादेवका मंदिर स्वल्पहोनेसे श्रावणमासमें वहुत पूजक ब्राह्मणोंके समावेश के अयोग्य जानिके और तहां जन्माष्टमीकेदिनहोतेमेलामें विष्णु दर्शन का अलाभ अरु दर्शनार्थीजनोंको मार्गकाकष्ट जानिके कच्छदेशमें पर्यटन करिके राज्यादिकसे प्राप्त द्रव्यसे विस्तीर्ण सुन्दर शिवालय

 (विचार तथा विष्णुमंदिर तथा वहां गढशीसा तक सड़क करवाते भये ॥

अभी संवत १६५६ के वर्ष में आप स्वदेश में ही जीवमुक्तिके विलक्षणआनंदअर्थ अल्पायासयुक्त हुए स्थित भये हैं।

उक्तप्रकारके सत्कर्मोंके करने की इच्छा इनको सर्वदारहती है। ये महात्माराग, द्वेष मत्सर, वैर विषमता, निन्दा असूया--आदि दुर्गुणोंसे रहित हैं। और अमानित्व, अदंभित्व, अहिंसा, क्षमा सौशील्य, सौजन्य, अक्रोध शांति, धैर्य मोह, शोक रहित आस्तिक्य, भक्ति वैराग्य, ज्ञान अरु उपरति आदिक अनेक सद्गुणोंकरि अलंकृत हैं।

॥ इति

ॐ

श्रीविचारचन्द्रोदय ।

॥ नवमआवृत्तिकी अनुक्रमणिका

—०—

॥ षोडशकला प्रथमविभागः ॥

॥ श्रीश्रुतिषड्लिङ्गसंग्रहकी अनुक्रमणिका ॥

विषय पृष्ठांक

ॐ

❀ श्रीविचार चन्द्रोदय ❀

नवमाआवृत्तिकी आकारादिअनुक्रमणिका।

टि:—टिप्पणांकनकूं सूचन करै है।
अन्य सर्व अंग पृष्ठांकन को सूचन करै है।

—※—

* ॐ गुरुपरमात्मने नमः *

श्रीविचारचंदोदयः ।

अथ प्रथमकलाप्रारम्भः ॥१॥

१

❀ उपोद्घातवर्णन ❀

२

* मनहर छन्द *

पुरुषइच्छाविषय पुरुषार्थं जोई सोई ।
दुःखनाश सुखप्राप्तिरूप मोक्ष मानहु ॥
हेतु ताको ब्रह्मज्ञान सो परोक्ष अपरोक्ष ।
तामैं अपरोक्ष दृढ़ अदृढ़ दो मानहु ॥
मोक्षको साक्षात्हेतु दृढ़अपरोक्षज्ञान ।
हेतु ता ३विचार जीवब्रह्मजग जानहु ॥
तीनवस्तुरूप जड़ चेतनदो जड़ मिथ्या-
माया ब्रह्मचित् 'सो मैं पीताम्बर स्यानहु १

* १ प्रश्नः—पुरुषार्थ सो क्या है ?

उत्तरः-सर्वपुरुषनकी इच्छा का जो विषय। सो पुरुषार्थ[५] है ॥

* २ प्रश्नः—सर्वपुरुषनको किसकी इच्छा होवे है ?

उत्तरः-सर्वपुरुषनको सर्वदुःखकी निवृत्ति और परमानन्दकी प्राप्तिकी इच्छा होवे है ॥

* ३ प्रश्नः—सर्वदुःखनकी निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति सो क्या है ?

उत्तरः-सर्वदुखनकी[६] निवृत्ति[७] और परमानंद[८] की[९] प्राप्ति। यह मोक्षका स्वरूप है[१०] ॥

॥१॥ प्रतिपादन करने योग्य-अर्थको मनमें राखिके तिसके अर्थ अन्यअर्थका प्रतिपादन उपोद्घात है ॥ जैसे किसी को दूसरे के गृहसे छाछ लेनेकी होवे। तब वह बात मनमें राखिके तिसके अर्थ "तुम्हारी गौ दुग्ध देतीहैवा नहीं?" इत्यादिरूप अन्यावार्ताकाकथन उपोद्घात है। तैसे इहां प्रतिपादन कहने योग्य जो

विचार। ताको मनमें राखि के तिसके आरंभअर्थअन्य मोक्ष आदिकपदार्थनका कथन उपोद्घात है ॥

॥२॥ कोईभी रागके ध्रुवपद में गाया जावे है॥

॥३॥ अव्ययः—ता (दृढअपरोक्षज्ञानका) हेतु विचार है ॥

॥४॥ ऐसे निश्चय करो ॥

॥५॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चारों का नाम पुरुषार्थ है ॥ तिनमें प्रथम के तीन गौण हैं। तिनको छोड़िके इहाँ अन्तके मुख्य पुरुषार्थ का ग्रहण है ॥

॥६॥अज्ञानसहित जन्ममरणादिकदुःख कहियेहै।

॥७॥मिथ्यापनका निश्चयरूप बाध निवृत्ति है॥

॥८॥ परमप्रेमका विषय परमानन्द है ॥

॥९॥ इहां कंठभूषण की न्यांई नित्यप्राप्त की प्राप्ति मानी है ॥

॥१०॥कर्त्ताभोक्तापनेआदिअन्यथाभावकोछोड़िके स्वरूपमें स्थितिही मोक्ष है ॥ कितनेक लोक त स्वर्ग वैकुण्ठ गोलोक ब्रह्मलोक आदिककी प्राप्ति को मोक्ष

* ४ प्रश्न— मोक्ष किससे होवे है ?

११

उत्तरः—मोक्ष ब्रह्मज्ञानसे होवे है ॥

१२

* ५ प्रश्न · ब्रह्मज्ञान सो क्या ?

उत्तरः—ब्रह्मज्ञान । सो ब्रह्मरूपको यथार्थ जानना ॥

* ६ प्रश्न—ब्रह्मज्ञान कितने प्रकार का है ?

उत्तरः—ब्रह्मज्ञान । परोक्ष और अपरोक्ष भेदते दो प्रकार है ।

* ७ प्रश्न—परोक्षब्रह्मज्ञान सो क्यों है ?

उत्तरः—(१ परोक्षब्रह्मज्ञान का स्वरूप)

जानते हैं । सो वेदसे विरुद्ध है । ऊपर कहा मोक्षका स्वरूप वेदअनुसारी है ॥

॥११॥ कर्म और उपासना से चितकी शुद्धि और एकाग्रतारूप ज्ञानके साधन होवे हैं । मोक्ष नहीं ॥

॥१२॥ ब्रह्मसे अभिन्न आत्माका ज्ञान । मोक्ष का हेतु है ।

"सच्चिदानन्दरूप ब्रह्म है,, ऐसा जो जानना।
१३
सो परोक्ष ब्रह्म ज्ञान हैं॥

* ८ प्रश्न;—परोक्षब्रह्मज्ञान किससे होवे है?

उत्तरः-(२परोक्षब्रह्मज्ञानका हेतु)
सद्गुरु और सत्शास्त्रके वचनमैं विस्वासके रखनेसे परोक्षब्रह्मज्ञान होवे है॥

* ९ प्रश्न;—परोक्षब्रह्मज्ञान से क्या होवे है?

उत्तरः-(३ परोक्षब्रह्मज्ञान का फल)
१४
असत्त्वापादक आवरणकी निवृत्ति होवे है॥

* १० प्रश्नः—परोक्षब्रह्मज्ञान कब पूर्ण होवे है?

॥ १३ ॥ परोक्षज्ञान। "तत्वमसि" महावाक्यगत 'तत्,, पदके अर्थको जनावत । या सो अपरो अद्वैतज्ञानविषै उपयोगी है॥

॥ १४ ॥ "ब्रह्म नहीं है" इसरीतिसे ब्रह्मके असद्भानका आपादक कहि संपादक आवरण। आसत्वपादकआवरण है॥

उत्तरः- (४ परोक्षब्रह्मज्ञानकी अवधि)
परोक्षब्रह्मज्ञान। ब्रह्मनिष्ठगुरु और वेदांत शास्त्रके अनुसार ब्रह्मस्वरूपके निर्धार किये पूर्ण होवेहै ॥

* ११ प्रश्न;— अपरोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है ?
उत्तर :—"सच्चिदानंदरूप ब्रह्म मैं हूँ,, ऐसा जो जनाना। सो अपरोक्षब्रह्मज्ञान है ॥

* १२ प्रश्नः—अपरोक्षब्रह्म ज्ञान किससे होवे है ?
उत्तर :—गुरुकेमुखसे "तत्त्वमसि" आदिक महावाक्यके श्रवणसेअपरोक्षब्रह्मज्ञान होवेहै।

* १३ अपरोक्षब्रह्मज्ञान कितने प्रकारका है ?
उत्तरः—अपरोक्षब्रह्मज्ञान अदृढ और दृढ़ इसभेदते दोप्रकारका है ॥

* १४ प्रश्न;—अदृढ अपरोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है ?
उत्तरः—

(१ अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका स्वरूप)

१५ १६
असंभावना और विपरीतभावनासहित जो ब्रह्मआत्मा एकता का निश्चय होवे । सो अदृढअपरोक्षज्ञान है ॥

* १५ प्रश्न:—अदृढअपरोक्षज्ञान किससे होवे है ?

उत्तर:—

(२ अदृढअपरोक्षज्ञानका हेतु)

॥१५

१ 'वेदांतविषै जो ब्रह्मका भेद प्रतिपादन किया है किंवा अभेद ?" यह प्रमाणगतसंशय है । और
२ "जीवब्रह्मज्ञान भेद सत्य है वा अभेद सत्य है ?" यह प्रमेयगतसंशय है ॥
यह दोनों प्रकार संशय असम्भावना कहिये है ॥

॥१६॥ "जीवब्रह्मका भेद सत्य है और देहादि-प्रपंच सत्य है,, ऐसा जो विपरीतनिश्चय । सो विपरीतभावना है ॥

१ कछुक मलविक्षेपदोषके होते श्रुतिनानारव-का ज्ञान । और
२ ब्रह्मकी अद्वैततामैं असंभवका ज्ञान और
३ भेदवादी अरु पामरपुरुषनकेसंगके संस्कार।
इनकरि सहित पुरुषकों गुरुमुखद्वारा महावाक्यके श्रवणसेअदृढअपरोक्षब्रम्हज्ञान होवेहै॥

* १६ प्रश्न:—अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानसे क्या होवे है?

उत्तर:—

(अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका फल)

अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान से
१ उत्तमलोककी प्राप्ति होवे है । और
२ पवित्रश्रीमान्कुलविषैंजन्महोवेहै । अथवा निष्कामताके हुये ज्ञानी पुरुषनके कुलविषैं जन्म होवे है ॥

* १७ प्रश्न:— अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान कबपूर्ण होवेहै?

उत्तर:—

(४ अदृढअपरोक्षब्रम्हज्ञानकी अवधि)

सत्—चित्—आनन्द आदिक ब्रम्हके विशेषणनके अपरोक्षभान हुए भी संशय[१७] और विपरीति[१८] भावनाका सद्भाव होवे तब अदृढअपरोक्ष ब्रम्हज्ञान पूर्ण होवे है ॥

* १८ प्रश्नः—दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान सो क्या है ?

उत्तर:—

(अदृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका स्वरूप

असंभावना और बिपरीत भावनासे रहित जो ब्रम्हआत्मा की एकताका निश्चय होवे। सो दृढअपरोक्षब्रम्हज्ञान है ॥

* १९ प्रश्न:— दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान किससे होवे है ?

॥१७॥ दोकोटिवाला ज्ञान संशय कहिये है ॥

॥१८॥ विपरीतिनिश्चयकोविपरीति भावना कहें हैं॥

उत्तर:—

(दृढ़अपरोक्षज्ञान का हेतु)

१९

गुरुमुखसे महावाक्यके अर्थके श्रवण मनन और निदिध्यासनरूप विचारके किये से दृढ अपरोक्षब्रह्मज्ञान होवेहैं ॥

२० प्रश्नः—दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानसे क्या होवे है?

उत्तर —

(३ दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानका फल)

२० २१

अभानापदकआवरण और विक्षेपरूप कार्य

॥१९॥ जीवब्रह्मकी एकताके बोधक वाक्य । महावाक्य कहिये हैं ॥

॥२०॥ "ब्रह्मभासता नहीं" इसीरीति से अभान जो ब्रह्मकी अप्रतीति । ताका आपादक कहिये संपादन करने वाला आवरण । अभानापादक आवरण है।

॥२१॥ स्थूलसूक्ष्मशरीरसहित चिदाभास और ताके धर्म कर्त्तापना भोक्तापना जन्ममरण आदिका विक्षेप है ।

सहित अविद्याकी कहिये अज्ञानकी निवृत्ति होयके ब्रह्मकी प्राप्तिरूपमोक्ष होवे है ॥

* २१ प्रश्न:--दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान कब पूर्ण होवेहै ?

उत्तर :--

(४ दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञानकी अवधि)

देहविषैंअहंपनेकेज्ञानकी न्यांई । इसज्ञानका बोधकरिके ब्रह्मसे अभिन्नआत्माविषैंजबज्ञान का होवे । तब दृढअपरोक्षब्रह्मज्ञान पूर्ण होवे है।

* २२ प्रश्न: - विचार सो क्या है ।

उत्तर:--(विचारका स्वरूप)

आत्मा औरअनात्माको भिन्नकरिके जानना सो विचार है ।

* २३ प्रश्न:—यह विचार किससे है ?

उत्तर:--(२ विचारका हेतु)

यह विचार। ईश्वर । वेद गुरु और अपना
२२
अन्तःकरण । इन चारोंकी कृपासे होवे है ॥

* २४ प्रश्नः—इस विचार से क्या होवे है ?

उत्तरः—(३ विचारका फल)

इस विचारसे दृढ अपरोक्षब्रम्हज्ञान होवे है॥

* २५ प्रश्नः—यह विचार कब पूर्ण होवे है ?

उत्तरः—(४ विचारको अवधि)

॥२२॥
१ सद्गुरुआदिकज्ञान सामग्रीकी प्राप्ति ईश्वरकी कृपा है ॥
२ शास्त्रअर्थके धारणकी शक्ति वेद कृपा है।
३ शास्त्र और स्वअनुभवके अनुसार यथार्थ उपदेशका करना गुरु कृपा है॥ और
४ शास्त्रगुरुके वचनानुसार साधनोंका संपादन करना अपने अन्तःकरण की कृपा है।

यह विचार दृढअपरोक्षब्रम्हज्ञान के भये पूर्ण होवे है ॥

* २६ प्रश्नः—विचार किसका करना ?

उत्तरः—(१ विचार का विषय)

मैं कौन हूँ ? २ ब्रम्ह कौन है ? और ३ प्रपञ्च क्या है ? इन तीनवस्तुनका विचार करना ॥

* २७ प्रश्नः-इनतीनवस्तुका साधारणरूप क्या है ?

उत्तरः—

१—२ "मैं और ब्रम्ह" सो चैतन्य है। और
२३
३ प्रपञ्च सो जड़ है ॥

* २८ प्रश्न :— चैतन्य सो क्या है ?

उत्तरः—

(१) जो ज्ञानरूप है । और

॥२३॥ समष्टिव्यष्टिस्थूलसूक्ष्मकारणदेह औरतिनके अवस्था अरु धर्म । प्रपंच कहिये है ॥

(२) सर्वंघटादिकप्रपंचको जानता है और
(३) जिसको अन्न मनइन्द्रियआदिक कोई जानि सकते नहीं ।

सो चैतन्य है ॥

* २९ प्रश्नः—जड़ सो क्या है ?

उत्तर :—

[१] जो आपको न जाने । और
[२] दूसरेको भी न जाने

ऐसे जो अज्ञान[२४] और तिनके कार्य भूत[२५] भौतिक[२६] पदार्थ है सो जड़ हैं ।

॥२४॥ "नहीं जानताहूं" ऐसे व्यवहार हेतु आवरणविक्षेपशक्तिवाला अनादिभावरूप अज्ञान पदार्थ है ।

॥२५॥ आकाशादिकपांचभूत ।

॥२६॥ भूतनके कार्य पिंडब्रह्मांडादिक भौतिक है ।

* ३० प्रश्नः—पर कहे ऊतीन वस्तु के विचारक किस्तरीति से उपयोग है ?

उत्तरः—(६ विचारका उपयोग)

१ "तत्वमसि,, महावाक्यमें स्थित "त्वं" पद[२७] और 'तत्" पदका वाच्यअर्थजो जीव और[२८] ईश्वर[२९]। तिनकी उपाधिरूप जो प्रपंच। तिसको जेवरीमें सर्पकी न्यांई और ठौंठमें पुरुपकीन्यांईऔर मरुभूमिमेंमृगजलकीन्यांई। बिचारकरि मिथ्या जानिके त्याग करना। यह प्रपंचके विचारका उपयोग है ॥

॥२७॥ चिदाभासयुक्त अन्तःकरणसहित कूटस्थ चैतन्य। सो जीव है ॥

॥२८॥ चिदाभासयुक्त मायासहित ब्रह्मचैतन्य। सो ईश्वर है ॥

॥२९॥ समिष्ट ओरव्यष्टि तीनशरीर। पंचकोश तीन अवस्थाआदिकनामरूप। प्रपंच कहिये है ॥

२ "मैं जो ('त्वं' पदका लक्ष्यार्थ) आत्मा। सो ('तत्' पदका लक्ष्यार्थ) ब्रम्ह हूँ।" इस रीतिसे ब्रम्हआत्माकी एकताको विचारकरि सत्य जानिके अवशेष रखना। यह "मैं कौन हूँ", और "ब्रम्ह कौन है" इस विचार का उपयोग (फल) है॥

* ३१ प्रश्न:—इस विचारका अधिकारी कौन है और सो क्या करे ?

उत्तर:—(७ विचारका अधिकारी)

१ इस विचारका अधिकारी उत्तमजिज्ञासु[३०] है।
२ सो अधिकारी सद्गुरुको कृपासेउपोद्घात

॥३०॥ विवेक वैराग्य षट्संपत्ति और मुमुक्षुता इन चारोंसाधनकरि सहित होवे और ब्रह्मवित्गुरु और वेदांतशास्त्रके वचनविषैं परमविश्वासी होवे। कुतर्ककदाचित् करे नहीं। ऐसा जो स्वरूपके जानने की तीव्रइच्छा वाला अधिकारी सो उत्तमजिज्ञासु है।

३१
आदिककी प्रक्रियाको विचारिके "मैंहीं आप ब्रम्ह हूँ„ इसरीतिसे ब्रम्हआत्माको अपरोक्ष जानै ॥

* ३२ प्रश्न:—तिन प्रक्रियाके नाम कौन है ?

उत्तर:—

[१] उपोद्घात
[२] प्रपंचका आरोप और अपवाद।
[३] देह तीनका मैं द्रष्टा हूँ ॥
[४] मैं पंचकोशतीन हूँ ॥
[५] तीन अवस्थाका मैं साक्षी हूँ ॥
(६) प्रपंचका मिथ्यापना।
(७) आत्माके विशेषण ॥
(८) सच्चिदानंदविशेषवर्णन।
(९) अवाच्यासिद्धांतवर्णन ॥

॥३१॥ अद्वैदके बोध करनेका ॥ कोई भी प्रकार सो प्रक्रिया है।

(१०) सामान्यचैतन्य औरविशेषचैतन्य ॥
(११) "त्वं" पद और "तत्" पदका वाच्तअर्थ और लक्ष्यअर्थ अरु दोनों के लक्ष्यअर्थ की एकता ॥
(१२) ज्ञानीके कर्मकी निवृत्ति ॥
(१३) सप्तज्ञानभूमिका ॥
(१४) जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति ॥
(१५) श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रहः ॥
(१६) वेदांतप्रमेय ॥

३२

ये तिन प्रक्रियाके नाम हैं ॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदये उपोद्घात वर्णननामिका प्रथमकला समाप्ता ॥ १ ॥
॥ ३२ ॥

---

१ प्रपंच काविचार प्रथम द्वितीय पष्ठ द्वादश और त्रयोदशवीं प्रक्रियाविषे किया है। और

२ "प्रपंचसहित मैं कौन हूं ?" याका विचार तृतीय चतुर्थ और पंचम प्रक्रियाविषय किया है। और

३ परमात्मा कौन है ? याका विचार दशम प्रक्रियाविषै किया है। और

४ ब्रह्म आत्मा दोनों के स्वरूप का विचार सप्तम अष्ठम नवम एकादश और चतुर्दशवीं प्रक्रियाविषै किया है। और

५ प्रपंच और ब्रह्मआत्माके स्वरूप का विचार पंचदशवीं प्रक्रियाविषै किया है ॥

सर्वप्रक्रियाका "तत्" "त्वं" पदार्थका शोधन और तिनकी एकता का निश्चय प्रयोजन है ॥

॥ अथ द्वितीयकलाप्रारम्भः ॥२०॥

॥ प्रपंचारोपापवाद ॥

॥ मनहर छन्द ॥

प्रपंचारोपापवाद करि निष्प्रपंच वस्तु
ब्रम्हजानिके अवस्तु=मायादिक भानिये ॥
ब्रम्ह माया संबंध रु जीवईश भेद तिन।
षट् ये अनादि तामैं ब्रम्हानंद मानिये ॥
३३
वस्तुमैं अवस्तु कर कथन आरोप बाधि·
अवस्तु वस्तुकथन अपवाद जानिये ॥
गुरुके प्रसाद यह युक्ति जानि पीतांबर
३४
तज तमका रज भारज निज जानिये ॥ ॥

॥३३॥ अन्वयः—अवस्तु बाधि वस्तुकथन अपवाद जानिये ॥

॥३४॥ अन्वयः—हे आरज कहिये विवेकी तमका रज तज ॥ निज (स्वरूप) जानिये ॥

३५
* ३३ प्रश्नः—शुद्धब्रह्मविषै प्रपंचका आरोप कैसे हुआ है ?

३६
उत्तरः—अनादिशुद्धब्रह्मकेविषै अनादि-
३७
कल्पितप्रकृति है। तिस प्रकृतिका ब्रम्हके साथ अनादिकल्पिततादात्म्यसंबंध हैकहिये कल्पित-भेदसहित वास्तवअभेदरूप संबध है।

सो प्रकृति १ मायाऔर २अविद्याऔर ३तमः-

॥३५॥ ब्रह्मरूप वस्तुविषै अज्ञानतत्कार्य रूप अवस्तुकाकथन आरोप है ॥ याहीको अध्यारोप भी कहैं ॥

॥३६॥ उत्पत्तिरहित वस्तु। स्वरूप अनादि है ॥ ऐसे शुद्धब्रह्म। कृति। तिनका संबंध। ईश्वर। जीव और .तनका भेद। ये षट् हैं अरु प्रवाहरूप से प्रपंच भी अनादि है।

॥३७॥ जो होवे नहीं और स्वप्नपदार्थकी न्याई भ्रांतिसे भासे सो कल्पित है ॥

प्रधानप्रकृतिरूपकरिविभागकोपावती है तिनमैं

३८
१ जो शुद्धसत्वगुणयुक्त सो माया है। और

३९
२ जो मलिनसत्वगुणयुक्त सोअविद्या है। और

३ जो तमोगुणकी मुख्यताकरि युक्त है। सो तमःप्रधान प्रकृति है॥

१ मायाविषै जो ब्रह्मका प्रतिबिंब है सो

४०
अधिष्ठान [ब्रह्म] और मायासहित जगत्कर्त्ता सर्वज्ञईश्वर कहिये है और

२ अविद्याविषै जो ब्रह्मका प्रतिबिंब है। सो अधिष्ठान [कूटस्थ] और अविद्यासहित भोक्ता अल्पज्ञजीव कहिये है।

१ सो ईश्वर और जीव भी अनादि कल्पित हैं॥ तिनमैं ईश्वरकी उपाधि माया एक है और आपेक्षिकव्यापक है। तिसमैं ईश्वर भी एक है और व्यापक है। और

॥३८॥ क्षत्रिय और शुद्ररूप मंत्रीनसे ब्राह्मण राजाकी न्यांई जो रजतमसे दबे नहीं। किंतु रजतमको आपदबावै। ऐसा सत्वगुण शुद्धसत्वगुण है।

॥३९॥ जो रजतमको दबावै नहीं किंतु शूद्ररूप दोनोंराजकुमारनसे ब्राह्मणरूप एक मन्त्री की न्यांई रजतमसे आप दबै ऐसा सत्वगुण। मलिनसत्वगुण है॥

॥४०॥ यहाँ माया शब्दकरि मायाऔर तम:प्रधान प्रकृति इन दोनों ईश्वरकी उपाधिनका ग्रहणहै तिनमें

१ मायाउपाधिनको लेके ईश्वर। कुलाली न्यांई जगत्का निमित्ताकारण है और

२ तम:प्रधानप्रकृतिको लेके ईश्वर। मृतिकाकी न्यांई जगत्का उपादानकारण है।

॥४१॥ जो किसीकी अपेक्षा से व्यापक होवे और किसीकी अपेक्षासे परिच्छिन्न होवे। सो आपेक्षिक व्यापक कहिये है। जैसे गृह जो है। सो घटादिकको अपेक्षासे व्यापक है और ग्रामकी अपेक्षासे

२ जीवकी उपाधि अविद्या नाना हैं और परिच्छिन्न हैं। तिसमैं जोव भी नाना हैं और परिच्छिन्न हैं ॥

तिन जीवईश्वरका अनादिकल्पितभेद है ॥

१ सृष्टिसे पूर्व सो जीवनकी उपाधि अविद्या। जोवनके कर्मसहितहीमायाविषै लीन होयके रहती हैं। सो माया सुषुप्तिविषै अविद्याकी न्यांई ब्रह्मसे भिन्न प्रतीत नाम सिद्ध होवे नहीं याते सृष्टिसे पहिले सजातीय विजातीय स्वगत भेदरहित एकही अद्वितीय सच्चिदानन्द रूप ब्रम्ह था।

परिच्छिन्न है। याते आपेक्षिकव्यापक है। जैसे माया भी पृथ्वीआदिककी अपेक्षासे व्यापक कहिये अधिक-देशवती है और ब्रह्मकी अपेक्षासे परिच्छिन्न है। याते आपेक्षिकव्यापक है ॥

२ तिस ब्रम्हको सृष्टिके आरंभविषैं जीवनके परिपक्व भये कर्मरूप निमित्तसे "मैं एक हूँ सो बहुरूप होऊँ" ऐसी इच्छा भयी ॥

३ तिस इच्छासे ब्रम्ह की उपाधि मायाविषैं क्षोभ होयके क्रमते आकाश वायु तेज जल और पृथ्वी । ये पंचमहाभूत उत्पन्न भये ॥

४ तिनकापंचीकरणनहीं भयाथा । तबअपंची कृतथे । तिनते समष्टिव्यष्टिरूपसूक्ष्मसृष्टिरूप होयके । पीछे ईश्वरकी इच्छा सेजब जिनका पंचीकरण भया । तब सोभूत पंचीकृतभये । तिनतेसमष्ठिव्यष्टि रूप स्थूलसृष्टिभयी ॥

५ तिनमैंसमष्टिस्थूलसूक्ष्मकारणप्रपंचकाअभिमानीजीवकी दृष्टिसे ईश्वर है और व्यष्टि-स्थूलसूक्ष्मकारण प्रपंचका अभिमानी जीव-

है तिनमें ईश्वर सर्वज्ञ होनेसे नित्यमुक्त है और जीव अल्पज्ञ होनेसे वद्ध है ॥
इस रीतिसे शुद्धब्रह्मविषै प्रपंच का आरोप हुआ है ॥

* ३४ प्रश्नः—यह आरोप सत्य है वा मिथ्या है?
उत्तरः—यह आरोप जेवरीविषै सर्पकी न्यांई और साक्षीविषै स्वप्नकी न्यांईऔर दर्पणविषै नगरके प्रतिबिंबकी न्यांई मिथ्या है।
* ३५ प्रश्नः—यह आरोप किससे होवे है?
उत्तर—यह आरोप अज्ञानसे होवे है ॥
* ३६ प्रश्नः—यह आरोप कबका और काहे को हुआ होवेगा। यह कैसे होवे?
उत्तर-जैसे कोई पुरुष के वस्त्र ऊपर तैलका दाग लग्याहोवे। तिसकोजानिकेताकोमिटावने का उपाय करनाचाहिये और "यहदाग कबका

काहेकोलग्याहोवेगा ?" इसविचारकाकुछप्रयोजननहीं है ॥ तैसे 'यह प्रपंच का आरोप कबका और काहेको हुआ होवेगा ?" इस विचारकाभाकुछ प्रयोजन नहींहै परन्तु इसकी निवृत्तिका उपाय करना योग्य है ॥

* ३७ प्रश्न:—इस सर्वआरोपकी निवृत्ति किस-रीति से होवे है ?

उत्तर:—

१ ब्रह्मज्ञानसे माया और अविद्याकी निवृत्ति होवे हैं ?

२ तिससे कार्यसहित प्रकृतिकी निवृत्ति होवे है

३ तिससे प्रकृति और ब्रह्म के सम्बन्ध की निवृत्ति होवे है ।

४ तिससे जीवभाव और ईश्वरभावकी निवृत्ति होवे है ।

५ तिसते जीवईश्वरके भेदकी निवृत्तिहोवेहै ॥

६ तिसते बंधकी निवृत्त होयके मोक्ष सिद्ध होवे है ।

इसरीतिसे एककालविषै ही सर्व आरोप की ४२ निवृत्तिरूप अपवाद होवे है ?

* ३८ प्रश्न:—यह ब्रह्मज्ञान किससे होवे है ?

उत्तर:—यहब्रम्हज्ञान आगे कहियेगा जो विचार । तिससे होवे है ॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदय प्रपंचारोपापवादवर्णननामिका द्वितीयकला समाप्ता ॥२॥

॥४२॥ सर्पका और ताके ज्ञानका बोधकरिके रज्जुरूप अधिष्ठानके अवशेषकी न्यांई । प्रपंच और ताके ज्ञानका बोधकरिकेअधिष्ठानरूप शुद्धब्रह्मका जो अवशेष सो अपवाद है ॥

|| अथ तृतीयकलाप्रारम्भः || ३ ||

|| देह तीनका मैं द्रष्टा हूँ ||

|| मनोहर छन्द ||

द्रष्टा तीन देह को मैं स्थूल सूक्ष्म कारण ये
तीनदे दृश्य अरु अनातमा मानियो ||
पंचीकृतपंचभूतके पचीसतत्त्वनको
स्थूलदेह एक भोगआयतन गानियो ||
अपंचीकृतभूतके सप्तदशतत्त्वनको
सूक्ष्मदेह होई भोगसाधन प्रमानियो ||
अज्ञान कारणदेह घटवत दृश्य यह
पीताम्बर द्रष्टा आप जानि दृश्य मानियो ३

* ३६ प्रश्न:—पहिली प्रक्रिया। "देह तीन का मैं द्रष्टा हूं", || देह तीन कौनसे है ?

उत्तर:—स्थूलदेह सूक्ष्मदेह और कारण देह। ये देह तीन हैं ॥

॥ १ ॥ स्थूलदेह का मैं द्रष्टा हूँ ॥

* ४० प्रश्न:—स्थूलदेह सो क्या है ?

उत्तर:—पंचीकृतपंचमहाभूतके पचीसतत्वन का स्थूलदेह है ।

* ४१ प्रश्न:—पंचमहाभूत कौनसे हैं ?

उत्तर:—आकाश, वायु, तेज जल और पृथ्वी । ये पंचमहाभूत हैं ।

* ४२ प्रश्न:–पंचमहा भूत के पचीसतत्व नाम पदार्थ कौनसे हैं ?

उत्तर:—

१–५ आकाशके पांचतत्व:—काम-[४३] क्रोध शोक, मोह[४४] और भय ॥

॥४३॥ कोई भी भोग की इच्छा काम कहिये है ॥
॥४४॥ अहंताममतारूप बुद्धि । सो मोह हैं ॥

६--१० वायुके पांचतत्व:--चलन, वलन, धावन, प्रसारण और आकुञ्चन॥

११--१५ तेज के पांचतत्व:--क्षुधा, तृषा अलष्य, निद्रा और कांति॥

१६—२० जलके पांचतत्व:—शुक्र कहिये वीर्य। शोणित नाम रुधिर। लाल मूत्र और स्वेद कहिये पसीना।

२०--२५ पृथ्वोके पांचतत्व:—अस्थि नाम हाड़, मांस, नाड़ी, त्वचा और रोम॥

ये पञ्चमहाभूतके पचीसतत्वनके नाम हैं॥

* ४३ प्रश्न:—पंचीकृत पंचमहाभूत कौनको कहिये?

४५

उत्तर:—जिन भूतनका पञ्चीकरण भयाहै तिन भूतनको पञ्चीकृतपञ्चमहाभूत कहिये हैं॥

॥४५॥ प्रथम पंचीकृतपंचमहाभूत थे। तिनका ईश्वरकी इच्छासे स्थूलसृष्टिद्वारा जीवनके भोग अर्थ परस्पर मिलापरूप पंचीकरण भया है॥

* प्रश्नः—पंचीकरण सो क्या है ?

उत्तरः--पञ्चभूतनमैंसे एकएकके दोदो भाग किये। सो भये दश।। तिनमैंसे पहिले पांच भाग रहनेदियेऔरदूसरेपांचभागनमैंसे एकएक भागके चारचारभाग किये ।। सो चार चार भाग। आकाशादिक भूतनका आपकाजोअर्धअर्धमुख्यभागरहनेदिया है तिसविषै न मिलायके आपआपसे भिन्न चारों भूतनके अर्धअर्धभागनविषै मिले। सो पंचीकरण कहिये है ।।

* ४५ प्रश्नः—पांचभूतका परस्पर मिलाप किसरीतिसे है ?

उत्तरः—दृष्टांतः—जैसे कोईके पांचमित्र। आंबकेलाआदिकएकएक फलको इकट्ठे खानेलागे ।। तब सपं आपआपकेफलके दोदोभाग करके अर्धअर्धभाग आपके वास्ते रखे और

अवशेष अर्धअर्ध भागमैं से चारचार भाग करके चारोंमिश्रनको विभाग करदेवें। तब पांचफलनका परस्परमिलाप होंवे है। तैसे

सिद्धांतः—

१ आकाश के दो भाग किये। तिनमैंसे
　(१) एक भाग रहने दिया। और
　(२) दूसरे भागके चारभाग किये।
　　तिनमैंसे आकाशविषैंन मिले। और
　　(१) एक वायुविषै मिले।
　　(२) एक तेजविषै मिले।
　　(३) एक जलविषै मिले। और
　　(४) एक पृथ्वीविषै मिले।
२ ऐसेही वायुके दो भाग किये। तिनमैंसे
　(१) एक भाग रहने दिया। और

[२] दूसरे भाग के चार भाग किये।
तिनमेंसे वायुविषै न मिले। और
[१] एक आकाशविषै मिले।
[२] एक तेजविषै मिले।
[३] एक जलविषै मिले। और
[४] एक पृथ्वीविषै मिले।

३ ऐसेही तेजके दो भाग किये। तिनमेंसे
[१] एक भाग रहनेदिया और
[२] दूसरेभाग के चार भाग किये।
तिनमैंसंतेजसे तेजविषै न मिले। और
[१] एक आकाशविषै मिले।
[२] एक वायुविषै मिले।
[३] एक जलविषै मिले। और
[४] एक पृथ्वीविषै मिले।

४ ऐसेही जलके दोभाग किये हैं। तिनमैंसे

[१] एक भाग रहनेदिया और

[२] दूसरेभागके चारभाग किये।

तिनमैं जलविषै न मिले । और

[१] एक आकाशविष मिले।

[३] एक वायुविषै मिले ।

[२] एक तेजविषै मिले। और

[४] एक पृथ्वीविषै मिले।

५ ऐसेही पृथ्वीके दो भाग किये । तिनमैंसे

[१] एकभाग रहने दिया। और

]२] दूसरे भागके चारभाग किये।

तिनमैंसे पृथ्वी विषै न मिले। और

[१] एक आकाशविषै मिले।

[२] एक वायुविषै मिले ।

[३] एक तेजविषै मिले ।

[४] एक जलविषै मिले ।

इसरीतिसेपचीसतत्व होयके पञ्चमहाभूतनका परस्परमिलाप है।

* ४६ प्रश्नः—पंचमहाभूतनके पचीसतत्व कैसे भये ?

उत्तरः—सर्वभूतनका आपका एकएक मुख्य भागहै और अमुख्यचारभाग अन्यभूतन के मिलेहैं ॥ तिससे एकएकभूतके पांचपाँचतत्व भये। सो सर्वमिलिके पचीसतत्व भये ॥

* ४७ प्रश्नः—स्थूलदेहविषै ये पचीसतत्व कैसे भये ?

उत्तरः—

४६

१—५ आकाशके पांचतत्वः—(१) शोक (२) काम (३) क्रोध (४) मोह और (५) भय। तिनमैंसे

॥४६॥ कोई ग्रन्थविषै शिरकंठहृदय उदर कटिदेश गत आकाश। ये आकाश के पाँचतत्व हैं॥ तिनमें

१ शिरोदेशगतआकाश आकाश का मुख्य भाग है। अनाहतशब्दका आश्रम होने ते ॥

२ कंठदेशगतआकाश वायु का भाग है श्वासप्रश्वास का आश्रम होने ते ॥

३ हृदयदेशगतआकाश तेज का भाग है। पित्तका आश्रम होने ते ॥

४ उदरदेशगतआकाश जलका भाग है। पान किये जयका आश्रय होने ते ॥

५ कटिदेशगतआकाश पृथ्वी का भाग है। गन्ध का आश्रय होने ते ॥

इसरीतिसे कामक्रोधादिक स्थूलदेहके तत्व नहीं। किन्तु लिंगदेह॥ धर्महैं औंर अन्यग्रन्थको रीतिसेतो कामादिक लिंगदेहके मुख्यधर्म हैं औरस्थूलदेहविषै घटमैं जल की शीतलताके आवेशकी न्यॉई इनका आवेश होवैहै- यातें स्थूलदेहके भी गौणधर्म कहिये हैं ।

४७
(१) शोक:-आकाश का मुख्य भाग है॥ काहेते शोक उत्पन्नहोवैतब शरीरशून्य जैसा होवैहै और आकाशभी शून्यजैसा है। याते यह आकाश का मुख्य भाग है॥

४८
(२) काम:-आकाशविषै वायुका भाग

॥४७॥ यद्यपि वायुआदिकभूतनके भागनविषे भी आकाशके अन्यच्यारीभागनमेंसे एकएकभाग मिलाहै। सो आकाशका मुख्यभाग नहीं कहियेहै। तथापिशोक और आकाशकी अतिशयतुल्यता है। याते शोक अकाशका मुख्य भाग है।

क्योंकि लोभभी आकाशकी न्यांई पदार्थकी प्राप्तिकर अपूर्ण होनेते आकाश मुख्यभाग कहा है।

इसरीति से अन्य भूतनविषै भी मान लेना॥

॥४८॥ पिताके तुल्य पुत्रकी न्यांई। काम। वायु के तुल्य है ताते वायु का भाग है। ऐसे अन्यतत्वनविषै भी जानि लेना॥

मिला है। काहेते कामनारूपवृत्ति चंचल है और वायु भी चंचल है। याते यह वायुका भाग है ॥

(३) क्रोधः-आकाशविषै तेजका भाग मिला है। काहे ते क्रोध आवता है तब शरीर तपायमान होता है और तेज भी तपायमानहै।याते यह तेजका भाग है ॥

(४) मोहः—आकाशविषै जल का भाग मिला है। काहेते मोह पुत्रादिकविषै प्रसारता।है और जलका विंदुभी प्रसारता है। याते यह जलका भाग है ॥

(५) भयः-आकाशविषै पृथ्वी का भाग मिला है। काहेते भय होवै तब शरीर जड़ कहिये अक्रिय होय के रहता है और पृथ्वी भी जड़तास्वभाववाली है। याते यह पृथ्वीका भाग है ॥

६-१० वायुकेपांचतत्त्वः-[६ [प्रसारण [७] धावन [८] वलन [९] चलन और [१०] आकुंचन। तिनमैं से

[६] प्रसारणः– वायुविषै आकाश का भाग मिला है। काहेते प्रसारण नाम प्रसरने का है और आकाश भी प्रसरया हुआ है।याते यह आकाश का भाग हैं।

[७] धावनः—वायु का मुख्य भाग है॥ काहेते धावन नाम दौड़ने का है और वायु भी दौड़ता है। याते यह वायु का मुख्य भाग है॥

[८] वलनः—वायुविषै तेज का भाग मिला है काहेते वलन नाम अङ्गके वालने का हैं और तेज का प्रकाश भी वलता है। याते यह तेज का भाग है।

(९) चलना:-वायुविषै जल का भाग मिला है। काहेते चलननाम चलने का है और जल भी चलना है याते यह जलका भाग है ॥

(१०) आकुंचन:-वायुविषै पृथ्वी का भाग मिला है। काहेते आकुंचननाम संकोच करनेका है और पृथ्वीभी संकोचकोपायी हुयी है याते यह पृथ्वी का भाग है ॥

११-१५ तेज के पांचतत्व:-(११) निद्रा (१२) तृषा (१३) क्षुधा (१४) कांति और(१५) आलस्य। तिनमें से

[११] निद्रा:—तेजविषै आकाश का भी मिला है। काहेते निद्रा आये तब शरीर शून्य होवेहै और आकाश भी शून्यता-वाला है। याते यह आकाशका भाग है

(१२) तृषा: तेजविषै वायुका भाग मिला है। काहेते तृषा कंठकूं शोषण करै है और वायु भी गालेवस्त्रादिककूं सुकावै है याते यह वायु का भाग है ॥

(१३) क्षुधातेजका मुख्य भाग है। काहेते क्षुधा लगे तब जो खावै सो भस्महोवै है और अग्निविषै भी जो डरैं सोभस्म होवे है। याते यह तेजका मुख्यभाग है ॥

(१४) कांति:-तेजविषै जलका भाग मिला है। काहेतेकांति धूप घटै हैं और जलभी धूपसे घटैहै।याते यह जलका भाग है।

(१५) आलस्य -तेजविषै पृथ्वीका भाग मिला है।काहेते आलस्य आवैतब शरीर जड़ होय जावैहै और पृथ्वीभी जड़स्व भाववालीहै याते यहपृथ्वीका भाग है॥

१३—२० जल के पांच तत्व:-[१६] लाल (१७) स्वेद (१८) मूत्र (१६) शुक्र और (२०) शोणित। तिनमैं से

[१६]लाल:-जलविषै आकाश का भाग मिला है॥ काहेते लाल ऊंचा नीचा होवै है और आकाशभी ऊंचा नीचा हे। याते यह आकाश का भाग है।

[१७]स्वेद:-जलविषै वायुका भागमिल्या—है। काहेते पसोना श्रमकरनेसे होवे है औरवायुभीपंखाआदिकसेश्रम करने त होवै है याते यह वायुका भाग हैं।

[१८] मूत्र:-जलविषैतेजका भागमिला—है। काहेते घर्म है और तेजभी घर्म है। याते यह तेजका भाग है॥

[१६]शुक्र:-जलका मुख्यभाग है। काहेते

शुक्र श्वेत वर्णहै औरगर्भकाहेतु है अरु जलभी श्वेतवर्ण है और वृक्ष का हेतु है। याते यह जलका मुख्यभाग है।

(२०) शोणित:-जल विषं पृथ्वी का भाग मिला है। काहेते शोणित रक्तवर्ण है और पृथ्वीभी कहीं२रक्त वर्ण है। याते यह पृथ्वीका भाग है॥

२१-२५ पृथ्वी के पांच तत्व:-(२१) रोम (२२) त्वचा (२३) नाड़ी (२४) मांस। और (२५) अस्थि। तिनमैं से ४९

(२१) रोम:-पृथ्वीविषं आकाश का भाग मिला है। काहेते रोम शून्य है। काट नेस पोड़ा होवै नहीं और आका भी शून्य है यातेयह आकाशका भाग है॥

॥ ४९ ॥ केश जो मस्तकके वाल । ताका रोमनाम शरीर के वालविषं अन्तर्भाव है।

[२२] त्वचा:— पृथ्वी वायु का भाग मिला है। काहेते त्वचांसे शीत उष्ण कठिन कोमल स्पर्शकी मालुम होवे है और वायु भी स्पर्शगुणवाला है। याते यह वायु का है ॥

[२३] नाड़ी:—पृथ्वी तेजका भाग मिला है। काहेते नड़ी से ताप की परीक्ष होवे है। और तेज भी तापरूप है याते यह तेजका भाग है ॥

५०

[२४ [मांस:—पृथ्वीविषै जलका भाग मिला है। काहेते मांस गीलाहै औरजड़ भी गीला है। ताते यह जलका भाग है

[२५] अस्ति:—पृथ्वीका मुख्य भाग है।

॥ ५० ॥ नख और दन्तनकी हड्डीमें अन्तर्भाव है॥

काहे तो कठिन है और पीतवर्णहैऔरपृथ्वी भीकठिंन है औरकहो कही पीतरङ्गवाली है। याते यह पृथ्वी का मुख्यभाग है। इसरीतिसे स्थूलदेहविषैं पचीसतत्व रहते हैं।

*४७ प्रश्न:"पचीसतत्व छाननेका क्या प्रयोजन है?

उत्तरः—

१ पचीसतत्व मैं नहीं और

२ ये पचीसतत्व मेरे नहीं।

३ ये पचीसतत्व पंचीकृतपंचमहाभूतके हैं॥

४ इन पचीसतत्वका जाननेहारा मैं द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनतें न्यारा हूं।

ऐसा निश्चय कराना। यह पचीसतत्व जाननेका प्रयोजन है।

* ४८ प्रश्नः—'पचीसतत्व मैं नहीं और ये मेरे नहीं" सो किसरीतिसे जानना?

उत्तरः—

१-५ आकाशके पांचतत्वविषैः–

१ [१] शोक होवे तबभी मैं जानता हूं। और

[२] शोक न होवे तब तिसके अभावको भी मैं जानता हूँ। याते

[१] यह शोक मैं नहीं। और

[२] यह शोक मेरा नहीं।

[३] यह शोक आकाशका है।

[४] मैं इस शोक का जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इससे न्यारा हूं॥

ऐसे शोकमैंनहीं और मेरानहीं यह जानना॥

२ [१] काम होवे तब भी मैं जानता हूँ।

५१

[२] काम न होवे तब सितके अभावको भी मैं जानता हूं।

॥५६॥

१ कार्यकी उत्पत्तिसे पूर्व जो अभाव। सो प्रागभाग है

याते

(१) यह काम मैं नहीं । और
(२) यह काम मेरा नहीं ।
(३) यह काम आकाश का है ।
(४) मैं इस काम का जाननेहारा द्रष्टः घटद्रष्टा की न्यांई इससे न्यारा हूं ।।

ऐसेकाममैं नहीं और मेरा नहीं यह जानना ।

३ (१) क्रोधहोवे तब भी मैं जानता हूं और
(२) क्रोध न होवे तब तिसके अभावको भी मैं जानता हूं ।

याते

---

२ नाश के अनन्तर जो अभाव सो प्रध्वंसाभाव है ।।

३ तीनकालमें जो अभाव सो अत्यन्त भाव है ।

४ अन्य वस्तुसे जो अन्य वस्तुका भेद । सो अन्योन्याभाव है ।।

इस रीति से अभाव चार प्रकार का है ।

(१) यह क्रोध मैं नहीं। और
(२) यह क्रोध मेरा नहीं।
(३) यह क्रोध आकाश का है।
(४) मैं इस क्रोध का जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्याई इससे न्यारा हूं॥

ऐसेक्रोधमैं नहीं और मेरा नहीं यह जानना।

४ (१) मोह होवे तब भी मैं जानता हूं और
(२) मोह न होवे तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूं।

याते
(१) यह मोह मैं नहीं। और
(२) यह मोह मेरा नहीं।
(३) यह मोह आकाश का है।
(४) मैं इस मोह का जाकनेहारा द्रष्टा घट द्रष्टा की न्याई इससे न्यारा हूं॥

ऐसेमोह मैंनहीं और मेरा नहीं यह जानना।

५ (१) भय होवेतबभी मैं जानता हूं । और
(२) भय न होवे तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूं ।

याते—
(१) यह भय मैं नहीं । और
(२) यह भय मेरा नहीं ।
(३) यह भय आकाशका है ।
(४) मैं इस भयका जाननेहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इससे न्यारा हूं ॥

ऐसेभयमैं नहीं औरमेरानहीं । यहजानना ॥

६–१० वायुकेपांचतत्वविषै:—
६[१] प्रसारण:-शरीर प्रसरै तब भी मैं जानता हूं ॥ और
[२] शरीर न प्रसरै तव तिस प्रसरणेके अभावको मैं जानताहूं ॥

याते

(१) यह प्रसारण मैं नहीं ॥ और
(२) यह प्रसारण मेरा नहीं ।
(३) यह प्रसारण वायुका है ।
(४) मैं इस प्रसारणका जानने हारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इसते न्यारा हूं ॥

ऐसेप्रसारणमैं नहीं औरमेरा नहीं।यहजानना।

७ [१] धावनः—शरीर दोड़े तब भी मैं जानता हूं । और

[२] शरीर न दोड़े तब तिस दोड़ने के अभावको भी मैं जानताहूं । याते

[१] यह धावन मैं नहीं । और

[२] यह धावन मेरा नहीं ।

[३[यह धावन वायुका है ।

[४] मैं इस धवनका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इसते न्यारा हूं ॥

ऐसेधावन मैं नहीं और मेरानहीं ।यहजानना।

८ (१) वलनः—शरीर वलै तब भी मैं जानता हूं। और

(२) शरीर न वलै तब तिस बलने के अभाव को भी मैं जानता हूँ।

याते

(१) यह वलन मैं नहीं। और

(२) यह वलन मेरा नहीं।

(३) यह वलन वायु का है।

(४) मैं इस वलन का जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इससे न्यारा हूं॥

ऐसैवलनमैं नहीं औरमेरा नहीं यह जानना।

(१) चलनः—शरीर चले तब भी मैं जानता हूं। और

[२] शरीर न चले तब तिस चलने के अभाव को भी मैं जानता हूं।

याते

(१) यह चलन मैं नहीं । और
(२) यह चलन मेरा नहीं ।
(३) यह चलन वायु का है ।
(४) मैं इस चलन का जाननेहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टा की न्यांई इससे न्यारा हूँ ॥
ऐसेचलनमैं नहीं औरमेरा नहीं यह जानना ।
१० [१] आकुञ्चनः--शरीर संकोच को पावै
तब भी मैं जानता हूं । और
[२] शरीर संकोचको न पावै तब तिसके
अभाव को भी मैं जानता हूँ । यासे
[१] यह आकुञ्चन मैं नहीं । और
[२] यह आकुञ्चन मेरा नहीं ।
(३) मैं इस आकुञ्चनका जाननेहारा द्रष्टा
घटद्रष्टाकी न्यांई इससे न्यारा हूँ ॥
ऐसेआकुञ्चनमैंनहींऔरमेरानहीं । यहजानना

११-१५ तेजके पांचतत्वविषे:—

११(१) निद्राहोवेतिसको भी मैं जानताहूंऔर

(२) निद्रा न होवे तब तिसके अभाव को

भी जानता हूं ।

याते

(१) यह निद्रा मैं नहीं । और

(२) यह निद्रा मेरा नहीं ।

(३) यह निद्रा तेजको है।

(४) मैं इस निद्राका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसमे न्यारा हूं ॥

ऐसेनिद्रामैं नहीं और मेरानहीं यह जानना॥

१२(१) तृषालगेतिसको भीमैंजानताहूं ।और

(२) तृषा न होवे तब तिसके अभाव को

भी मैं जानता हूं ।

याते

(१) यह तृषा मैं नहीं । और
(२) यह तृषा मेरी नहीं ।
(३) यह तृषा तेजकी है ।
(४) मैं इस तृषाका जाननेहारा द्रष्टा घट-द्रष्टा की न्याई इसते न्यारा हूं ॥

ऐसे तृषामैंनेनहींऔर मेरीनहों । यहजानना ।

१३ (१) क्षुधा लगै तिसकोभीमैं जानताहूं।और
(२) क्षुधा न होवे तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूं ॥

याते
(१) यह क्षुधा मैं नही । और
(२) यह क्षुधा मेरी नहीं ।
(३) यह क्षुधा तेजकी है ।
(४) मैं इस क्षुधाका जाननेहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इसते न्यारा हूं ॥

ऐसे क्षुधा मैंनहीं औरमेरीनहों । यहजानना॥

१४ [१] कांति होवे तिसको भी मैं जानता हूं और

[२] कांतिनहोवेतबतिस के अभाव को भी मैं जानता हूं ।

याते

(१) यह कांति मैं नहीं । और

(२) यह कांति मेरी नहीं ।

(३) यह कांति तेज की है ।

(४) मैं इस कांतिका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इससे न्यारा हूं ॥

ऐसे कांति मैं नहीं औरमेरीनहीं । यह जानना

१५ (१) आलस्य होवे तिसको भी मैं जानता हूं । और

(२) आलस्य न होवे तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूं ।

याते

(१) यह आलस्य मैं नहीं और
(२) यह आलस्य मेरा नहीं
(३) यह आलस्य तेज का है।
(४) मैं इस आलस्य का जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इससे न्यारा हूँ॥

ऐसेआलस्यमैं नहीं औरमेरा नही यह जानना

१६-२० जलके पांचतत्त्वविषैः—

१६ (१) लालगिरेतिसकोभी मैंजानताहूँऔर
(२) लाल न गिरे तब तिसके अभाव कों भी मैं जानता हूँ। याते

(१) यह लाल मैं नहीं। और
(२) यह लाल मेरा नहीं।
(३) यह लाल जल का है।
(४) मैं इस लाल का जाननेहारा द्रष्टा घट द्रष्टा की न्यांई इनते न्यारा हूँ॥

ऐसेलाल मैं नहीं और मेरा नही यहजानना

१७(१) स्वदज नाम प्रसीना होवे तिसकोभी
में जानता हूँ और
(२) प्रसीना न होवे तब तिसके अभावको
भी जानता हूँ।

याते

(१) यह प्रसीना मैं नहीं। और
(२) यह प्रसीना मेरा नहीं।
(३) यह प्रसीना जलका है।
(४) मैं इन प्रसीने का जाननेहारा द्रष्टा·
घटद्रष्टाकी न्याई इससे न्यारा हूँ॥

ऐसेस्वदजमैंनहीं औरमेरा नहीं। यह जानना॥

१८(१) मूत्र आवैंतिसको मैं जानता हूँ।और
(२) मूत्र न आवे तब तिसके आभावको
भा मैं जानता हूं।

याते

(१) यह मूत्र में नहीं । और

(२) यह मूत्र मेरा नहीं ।

(३) यह मूत्र जलका है ।

(४) मैं इस मूत्रका जाननेहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्याईं इसते न्यारा हूं ॥

ऐसेमूत्रमें नहींऔरमेरा नहीं । यह जानना ॥

१६[१] शुक्र कहिए वीर्य शरीर विषैवर्ते
तिसको भी मैं जानता हूं । और

[२] वीर्य घटै तब तिसके अभावको भी
मैं जानता हूँ ।   यातें

[१] यह वीर्य मैं नहीं । और

[२] यह वीर्य मेरा नहीं ।

[३] यह बीर्य जलका है ।

[४] मैं इस वीर्यका जाननेहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्याईं इसते न्यारा हूँ ॥

ऐसे शुक्र मैं नहीं और मेरानहीं । यहजानना॥

२० (१) शोणित नामरुधिर शरीर विषेबढ़ैं तिसको भी मैं जानता हूँ। और
(२) रुधिर घटै तव तिसके अभाव को मैं जानता हूँ।

याते

(१) यह रुधिर मैं नहीं। और
(२) यह रुधिर मेरा नहीं।
(३) यह रुधिर जल का है
(४) मैं इस रुधिर का जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसते न्यारा हूं।

ऐसे शोणितमैंनहीओरमेरा नहीं यहजानना

२१–२५ पृथ्वी के पांचतत्वविषैः—

२१ (१) रोम बहुत होवे तिनको भी मैं जानता हूं। और
[२] रोम कमती होवे तब तिनके कमती पन को भी मैं जानता हूं। याते

[१] यह रोम मैं नहीं ॥ और
[२] यह रोम मेरा नहीं ।
[३] यह रोम पृथ्वी के हैं ।
[४] मैं इस रोमका जाननेहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टा की न्याई इनसे न्यारा हुँ ॥
ऐसे रोम मैं नही और मेरे नहो यह जानना

२२ [१] त्वचा स्पर्श को ग्रहण करे तिसको
भी मैं जानता हुँ । और
[२] स्पर्श को ग्रहण न करे तब तिसके
अभाव को भी मैं जानता हुँ । याते
[१] यह त्वचा मैं नहीं । और
[२] यह त्वचा मेरी नहीं ।
[३] यह त्वचा पृथ्वी की है ।
[४] मैं इस त्वचाका जाननेहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टाकी न्याई इसते न्यारा हुँ ॥
ऐसे त्वचा मैं नही और मेरी नहीयह जानना

२३[१] नाड़ीचलैतिनको भीमेंजानता हूँ।और
[२] नाड़ी न चलै तब तिनके अभावको भो
मैं जानता हूँ। याते
(१) यह नाड़ी मैं नहीं। और
(२) यह नाड़ी मेरी नहीं।
(३) यह नाड़ो पृथ्वी की है।
(४) मैं इन नाड़ीनका जाननेहाराद्रष्टा घट-
द्रष्टा की न्याई इनते न्यारा हूँ॥
ऐसेनाड़ीमैं नही और मेरीनहीं। यहजानना॥
२४ (१) मांसवढ़ै तिसकोभी मैं जानताहूँ।और
(२) मांस घटै तव तिसके आभावको भी
याते
(१) यह मांस मैं नहीं। और
(२) यह मांस मेरा नहीं।
(३) यह मांस पृथ्वी का है।

(४) मैं इस मांस का जाननेहारा द्रष्टाघट-
द्रष्टाकी न्यांई इसते न्यारा हूं ॥
और मेरा नहों । यह जानना ॥

२५(१) अस्थि नाम हाड़ मैंसूधे होवे तिसको
भी मैं जानता हूँ । और
(२) हाड़ सूधे न होवे तब तिनके अभा-
वको भी मैं जानता हुं ।　　याते
(१) ये हाड़ मैं नहीं । और
(२) ये हाड़ मेरे नहीं ।
(३) ये हाड़ पृथ्वी के है ।
(४) मैं इन हाड़का जाननेहारा द्रष्टा घट-
द्रष्टाको न्यांई इनतो न्यारा हूँ ॥

ऐसे हाड़ मैं नहीं और मेरेनहीं ।यहजानना॥
इसरीतिसेपचीसतत्वमैं नहों औरमेरेनहीं यह
जानना ॥

*४९ प्रश्नः—"पचीसतत्व मैं नहीं और मेरे नहीं" इस जानने से क्या निश्चय भया ?

उत्तरः—स्थूलदेह और तिसके धर्म १ नाम। २ जाति। ३ आश्रम। ४ वर्ण। ५ संबंध। ६ परिणाम। ७ जन्ममरण। इत्यादिक भी मैं नही और मेरे नहीं ? यह निश्चय भया॥

*५० प्रश्नः—१ नाम मैं नहीं और मेरा नहीं। यह कैसे जानना ?

उत्तरः—

१ जन्म से प्रथम नाम नहीं था। और
२ जन्म के अनन्तर नाम कल्पित है और
३ शरीर के भिन्न २ रङ्गनविषै विचार किये ते नाम मिलता नहीं।

याते

१ यह नाम मैं नहीं।
२ यह नाम मेरा नहीं।

३ यह नाम स्थूलदेहविषै कल्पित है ।
४ मैं इस नाम का जाननेहारा द्रष्टाघटद्रष्टा की न्यांई इसतें न्यारा हूँ ॥
ऐसे नाममें नहीं औरमेरा नहीं यह जानना
*५१ प्रश्नः—२ जाति जो वर्ण सो मैं नहीं और मेरी नहीं यह कैसे जानना ?

उत्तर —

ब्राह्मणादिकजातिस्थूलदेहका धर्म है । सूक्ष्म-देहऔरआत्माकाधर्मनहीं । काहेतेंलिंगदेहऔर आत्मा तौ जो पूर्व देहविषैं होवे सोई इस वर्त्तमानदेहविषैऔर भावीदेहविषैरहताहैऔर जाति तौ जो पूर्वदेहविषै थीसोअगिलेदेहविषै रहेगी नहीं । यातें जातिस्थूलदेहकाटी धर्म है लिंगदेहका और आत्माका धर्म नहीं है और

२ शरीरके अङ्गनविषे विचारिके देखिये तो देहविषै जाति मिले नहीं ।

याते

१ यह जाति मैं नहीं । और

२ यह जाति मेरी नहीं ।

३ यह जाति स्थूलदेहविषै आरोपित है ।

४ मैंइस जातिका जाननेहारा द्रष्टाघट द्रष्टाकी न्यांई इसतें न्यारा हूँ ॥

५२ प्रश्नः—३ आश्रम मैं नहीं और मेरा नहीं । यह कैसे जानना ?

उत्तरः—

ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और सन्यासी। ये चारआश्रम भिन्नभिन्नकर्म करावने के लिये अरोपकरिके स्थूलदेहविषै माने हैं ।

२सोभी मनुष्यमात्रविषै सम्भवते नहीं याते

१ ये आश्रम मैं नहीं । और
२ ये आश्रम मेरे नहीं ।
३ ये आश्रम स्थूलदेहविषै आरोपित हैं ।
४ मैं इन आश्रम का जाननेहारा द्रष्टा घट-द्रष्टाकी न्यांई इनते न्यारा हूं ॥

ऐसे आश्रममैं नहीं औरमेरेनहीं ।यहजानना।

५३ प्रश्नः—४ वर्ण नाम रङ्ग मैं नहीं और मेरे नहीं । यह कैसे जानना ?

उत्तरः—

१ गौर श्याम रक्तपीत इत्यादि जो रङ्ग हैं । सो स्थूलदेहविषै प्रत्यक्ष देखिये हैं । और
२ सो स्थूलदेह मैं नहीं । यातें
१ ये रङ्ग मैं नहीं । और
२ ये रङ्ग मेरे नहीं ।
३ ये रङ्ग स्थूलदेह के हैं ।
४ मैं इन रङ्गोंका जाननेहारा द्रष्टाघट द्रष्टा की न्यांई इनते न्यारा हूं ॥

ऐसे वर्णमें नहीं और मेरेनहीं। यह जानना॥

• ५४ प्रश्नः—५ सम्वन्ध मैं नहीं और मेरे नहीं। यह कैसे जानना ?

उत्तरः—

१ पितापुत्र गुरुशिष्य स्त्रीपुरुष स्वामिसेवक। इत्यादिसंबंध स्थूलदेह के परस्पर प्रसिद्ध मिथ्या माने हैं।

२ विचार कियेसे मिलते नहीं। और

३ मैं स्थूलदेहसे न्यारा असङ्ग हूँ।

याते

१ ये सम्वन्ध मैं नहीं और।

२ ये सम्वन्ध मेरे नहीं।

३ मैं इन सम्वन्धों का जाननेहारा द्रष्टा घट-द्रष्टा की न्यांई इनसे न्यारा हूँ॥

ऐसे संबंधमैं नहीं और मेरे नहीं। यहजानना॥

* ५५ प्रश्नः—६ परिणाम जो आकार सो मैं नहीं और मेरे नहीं। यह कैसे जानना ?

उत्तरः—

१ लंबाटूंका जाड़ापतला टेढासूधा। इत्यादि आकारभी प्रसिद्धस्थूलदेहविषैदेखिये हैं। और
२ मैं स्थूल देहते न्यारानिराकारहूँ।

याते

१ ये आकार मैं नहीं। और
२ ये आकार मेरे नहीं।
३ ये आकार स्थूलदेहके हैं।
४ मैं इन आकारों का जाननेहाराद्रष्टाघटद्रष्टा की न्यांई इतते न्यारा हूं॥

ऐसेपरिणाममैंनहींऔरमेरेनहीं। यह जानना॥

* ५६ प्रश्नः—७ मैं जन्ममरणवान् नहीं और मेरे जन्ममरण होवे नहीं। यह कैसे जानना ?

उत्तर:—

१ आत्मा का जन्म मानिये जो आत्माअनित्य होवेगा। सो वार्ता मीमांसक से आदिलेके परलोकवादी जो आस्तिक हैं। तिनका इष्ट नहीं काहेते जो आत्मा उत्पत्तिवान् होवे तो नाशवान् भी होवेगा। ताते

[१] पूर्वजन्मविषै नहीं किये कर्मसे सुख-दुःखका भोग। और

[२] इसजन्म विषै किये कर्मका भोगसे ये दोदूषण होवेंगे। याते कर्मवादीके मतसे अत्माकोजो कर्त्ताभोक्ता मानिये। तो भी जन्म मरणहितही मानना होवेगा। और आत्मा को जन्मका कोई कारण भी संभव नहीं। काहेते आत्माको जो कारण होवे सो आत्माते भिन्नही चाहिये और

(१) आत्माते भिन्न तो अनात्मा नामरूप हैं सो तो आत्माविषै रज्जु सर्प की न्यांई कल्पित हैं याते कारण बनै नहीं और

(२) ब्रह्म तो घटाकाशके स्वरूप महाकाश तिससे भिन्न नहीं याते सो कारण बनै नहीं ।

(३) ताते आत्माका जन्म नहीं ।। और जाते जन्मनहीं ताते आत्माका मरणभी नहीं । और

(४) जाते आत्माविषै जन्ममरणका अभाव है ताते जायते [जन्म] । अस्ति [प्रगट] वर्धते [वृद्धि]। विपरिणमते [विपरिणाम] अपक्षीयते [अपक्षय] नश्यिति[मरण]। इन षट्विकारते भी आत्म रहित है ।।

याते

१ मैं जन्ममरणवान नहीं । और

२ मेरेको जन्ममरण होवे नहीं ।

३ ये जन्ममरण स्थूलदेहको कर्मसे होवे है ।

४ मैं इन जन्ममरणों का जाननेहारा द्रष्टाघट द्रष्टाकी न्यांई इनते न्यारा हूं ।

ऐसे मैं जन्ममरणवान् नहीं और मेरेको जन्म मरण होवे नहीं । यह जानना ।

◆ ५७ प्रश्नः- पंचमहाभूतनकी निवृत्त विषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तरः—दृष्टांत—जैसे कोईको भूत लग्याहोवे । सोधान नकोनामषारघोकोबुलायके डमरूवजायके। लवणादिपांचवस्तु मिलाय के। उसका बलिदान देके । भूतकी निवृत्ति करेहै ।

सिद्धांतः—तैसे आकाशादिकपंचमहाभूत शरीररूप होयकेजीवकोलगे हैं तिनकीनिवृत्ति

२६

वास्तेब्रह्मनिष्ठगुरुरूप धाननकेविधिपूर्वकशरण जायके वेदशास्त्ररूप डमरू कहिये डाक बजाय के ऊपर कहे जो पचीसतत्व तिनमें से पांच-पांचतत्वरूप बलिदान एकएकभूतको आप-आपकाभागअर्पणकरिके। मैंइनपचीसतत्वन्त

॥५२॥ विवेकादिशुभगुणसहित मोक्षी इच्छा वाला अधिकारी।

१ हाथमें भेटा लेके गुरुके शरण होयके।
२ साष्टांक नमस्कर करीके।
२ 'हे भगवान्! मेरेको ब्रह्मविद्याकाउपदेश करो ऐसे कहिके "बन्ध किसको कहिये? मोक्ष किसको कहिये? प्रविद्या किसको कहिये? और विद्या किसको कहिये? इत्यादिप्रश्न करे। और
४ गुरुकी प्रसन्नता वास्ते तन मन धन वाणी अर्पण करिके सेवा करे।
वह ब्रह्मविद्या ग्रहणकी विधि है॥

द्रष्टा हूँ । इस रीति से निश्चय करनेते इन पंचमहाभूतनकी अत्यंतनिवृत्ति[५३] होवे है ॥

इसरीतिसे स्थूलदेहका मैं द्रष्टा हूँ ॥

॥२॥ सूक्ष्मदेहकामैं द्रष्टा हूँ ॥

* ५८ प्रश्नः - सूक्ष्मदेह सो क्या है ?

उत्तरः—अपंचीकृतपंचमहाभूत के सतरातत्वन का सूक्ष्मदेह है ॥

* ५९ प्रश्नः—सूक्ष्मदेहके सतरातत्व कौनसे हैं ?

उत्तरः—१-५ पांचज्ञान इन्द्रिय । ६-१० पांचकर्मइन्द्रिय । ११-१५ पांचप्राण १६ मन और १७ बुद्धि । ये सतरातत्व हैं ॥

* ६० प्रश्नः पांचज्ञानइन्द्रिय कौनसे हैं ?

उत्तरः—१-५ श्रोत्र त्वचा चक्षु जिह्वा और घ्राण । ये पांचज्ञानइद्रिय हैं ॥

॥५३॥ पीछे लगे नहीं । यह अत्यंतनिवृत्ति है ।

॥५४॥ इनके साधनइन्द्रिय ज्ञानन्द्रिय हैं ।

* ६१ प्रश्न:—पांचकर्म इन्द्रिय कौनसे हैं ?

उत्तर:—६–१० वाक् पाणि पाद उपस्थ और गुदा । ये पंचकर्मइंद्रिय हैं ॥

* ६२ प्रश्न:—पांचप्राण कौनसे हैं ।

उत्तर:—११–१५ प्राण अपान समान उदान और व्यान । ये पांचप्राण हैं ॥

* ६३ प्रश्न.—मन कौन को कहिय ?

उत्तर:—१६ संकल्पविकल्प रूप जो वृति ताको मन कहिये ॥

* ६४ प्रश्न:—बुद्धि किसको कहिये ?

उत्तर:—१७ निश्चयरूप जो वृति ताको बुद्धि कहिये ॥

* ६५ प्रश्न:— अपंचीकृतपंचमहाभूत कौनको कहिये

॥५५॥ कर्म के साधन इन्द्रिय कर्म इन्द्रिय है ॥

उत्तरः—जिन भूतनका पूर्व कहीं रीति से पंचीकरण न भया होवे।

१ तिन भूतनकोअपंचोकृत महाभूतकहे हैं
२ तिनही को सूक्ष्मभूत कहै हैं ! और
३ तिनही को तन्मात्र भी कहे हैं ॥

* ६६ प्रश्नः—अपंचीकृतपचमहाभूतन के सतरातत्व कैसे जानने ?

उत्तरः—

पांचज्ञानइन्द्रिय और पांचकर्मइंद्रियविषै

१ आकाशके सत्वगुणका भागश्रोत्र है।
२ आकाशके रजोगुणका भाग वाक है॥
[१] श्रोत्रइन्द्रिय शब्दको सुनता है। और
[२] वाक्इंद्रिय शब्दको बोलता है॥
[३[श्रोत्र ज्ञानइन्द्रिय है। और

॥५६॥ सवंहदार्थनमें सत्व रज तम। ये तीन—गुण वर्णन हैं॥

[२] वाक् कर्म इन्द्रिय है ।
इन दोनों की मित्रता है ॥
३ वायुके सत्वगुणका भाग त्वचा है । और
४ वायु के रजोगुण का भाग पाणि है ।
(१) त्वचाइन्द्रिय स्पर्शको ग्रहण करै । और
(२) हस्तइन्द्रिय तिसका निर्वाह करै है ॥
(१) त्वचा ज्ञानेन्द्रिय है । और
(२) हस्त कर्मेन्द्रिय है ।
इन दोनों की मित्रता है ॥
५ तेजके सत्वगुणका भाग चक्षु है ॥
६ तेजके रजोगुणका भाग पाद है ॥
(१) चक्षु इन्द्रिय रूपका ग्रहण करै हैं और
(२) पादइंद्रिय तहांगमन करै है ॥
(१) चक्षु ज्ञानेन्द्रिय है ॥
(२) पाद कर्मेंद्रिय है ॥
इन दोनों की मित्रता है ॥

७ जलके सत्वगुणका भाग जिह्वा है ।
८ जलके रजोगुण का भाग उपस्थ है ॥

(१) जिह्वाइन्द्रिय ग्रहण करैहै । और
(२) उपस्थइन्द्रिय रसका त्याग करै हैं ॥
[१] जिह्वा [रसना] ज्ञानेन्द्रिय है । और
[२] उपस्थ कर्मेन्द्रिय है ॥

इन दोनों की मित्रता है ॥

९ पृथ्वी के सत्वगुण का भाग घ्राण है ।
१० पृथ्वीके रजोगुणका भाग गुद है ॥

[१] घ्राणइंद्रिय गंधका ग्रहण करैहै । और
[२] गुदइंद्रय गंधका त्याग करै है ॥
[१] घ्राण ज्ञानेन्द्रिय है । और
[२] गुद [पायु] कर्मेन्द्रिय है ॥

इन दोनों की मित्रता है ॥

पांचप्राण और मनबुद्धिविषै —

११-१५ इन पांचभूतन के रजोगुण के भाग मिलके पांचप्राण भये हैं। और १६-१७ इन पांच भूतन के सत्वगुण के भाग मिलिके अंतःकरण भयाहै। यह भी अंतःकरण मन और बुद्धिरूप है यहां चित्तऔर अहंकार का मन और बुद्धिविषै अंतर्भाव है। ऐसे अपंचीकृतपंचमहाभूतनके कार्य। सतरातत्व जान ने ॥

* प्रश्नः ७-सतरातत्व के समझनेका क्या फल है?

उत्तरः-ये सतरातत्व मैं नहीं और मेरे नहीं। ये अपंचीकृतपंचमहाभूतन के हैं। यह सतरातत्वन के समझने का फल है ॥

६८ प्रश्न ये सतरातत्व में नहीं और मेरे नहीं। यह किस कारण से जानना ?

उत्तर:-इन सतरातत्वनका मैं जानने हारा हूं ॥ जो जिसको जाने सो न्यारा होवै-है। यह नियम है ॥ इस कारणसे ये सतरा तत्व में नहीं और मेरे नहीं। यह जानना ॥

६९ प्रश्नः— इसविषै दृष्टांत क्या समझना ?

उत्तरः—

दृष्टांत:-जैसे [१] नृत्यशालाविषै स्थित। [२] दीपक। [३] राजा। [४] प्रधान। [५] अनुचर। [६] नायिका [७] वाजंत्री और [८] अन्य सभा के लोग [९] वे बैठे-होवें तब प्रकाशे है और [१०] सर्व उठि जावें तब शून्यग्रहके भी प्रकाशै है ॥

सिद्धांत:—तैसे (१) स्थूलदेहरूप नृत्य-शालाविषै (२) साक्षीरूप जो मैं दीपक हूं। (३)सो चिदाभासरूप राजाओर(४)मनरूप प्रधानऔर(५)पांचप्राणरूप अनुचर और(६) बुद्धिरूप नायिका और (७) दशइन्द्रियरूप वाजन्त्री और(८)शब्दादिपंचविषय रूप सभा के लोग(९)ये जाग्रत स्वप्न समयविषैहोवेतब इनको प्रकाशताहूंऔर(१०)सुषुप्तिसमयविषैये न होवे तब तिनकेअभावको भीमैंप्रकाशताहूं। इतविषै यह उक्त दृष्टांत समझना॥

* ७० प्रश्न:—सो कैसे समझना ?

उत्तर:—

१ जाग्रत्अवस्थाविषै इन्द्रिय और अंत:-करण दोनों की सहायतासे मैं प्रकाशता हूं कहिये जानता हूं। और

२स्वप्नअवस्थाविषै इन्द्रियन से बिना केवल अंतःकरणकी सहायतासे मैं प्रकाशताहूँ। और १ सुषुप्तिअवस्था विषै इन्द्रिय और अंतः—करण दोनों की सहायता विना केवल मैंही प्रकाशता हूँ। ऐसे समझना ॥

* ७१ प्रश्नः—इसविषै और दृष्टान्त क्या है ?
उत्तरः—दृष्टांतः—जैसे (१) पांचछिद्र—वाले घटके भीतर पात्र तैल और बत्ती सहित दीपक जलता है (२) सो दीपक। पात्र तैलबत्ती घट के भीतर के अवयव और घटके दिनको प्रकाशताहुआ घटके वाहर छिद्रन के मुख क्रमते धरे जो वीणा। पुष्पनका गुच्छ। मणि रसपात्र और। अतर की सीसी। तीन सबको छिद्रद्वारा प्रकाशता है। और [४]महा-तेजमय सामान्यरूपसेसर्व व्यापी है ॥

सिद्धांत:—तैसे (१) पांचज्ञानेन्द्रियरूप छिद्रवाले स्थूलदेहरूप घटकेभीतर हृदयकमल रूप पात्र है। तामैं मनरूपतैल है और बुद्धिरूप वत्ती है। तापर आरूढ़ आत्मारूप दीपक है॥ (२) सो हृदयरूप पात्रको और मनरूप तेलको औरबुद्धिरूप वत्तीकोऔर देहके भीतरकेअवयवनकोऔरइन्द्रियरूपछिद्रनकोप्रकाशता(जानता) हुआ। इन्द्रियनसे संबंधवाले शब्दादिकविषयन को भी इन्द्रियद्वारा प्रकाशताहैऔर (३)ईश्वररूपसे ब्रह्मांडादिसर्ववाह्यपंचकोप्रकाशताहैऔर (४) सामान्यचैतन्य ब्रह्मरूपसे सर्वव्यापी है।

५७

यह इसविषै और दृष्टांत है

॥५७॥ यहां और यज्ञशालाका द्राष्टांत है। सो आगेसातवींकलविषै उपद्रष्टारूप आत्माके निक्षेपणके प्रसङ्ग में कहियेगा ॥

* ७२ प्रश्नः—ऐसे कहने से क्या निर्णय भया ?

उत्तरः—ये कहे जो सतरातत्व है मैं नहीं और ये मेरे नहीं। ये पंचमहाभूतनके हैं॥ मैं इनका जाननेहाराद्रष्टाघटद्रष्टाकी न्यांईइनसे न्यारा हूं। यह निर्णय भया॥

* ७३ प्रश्नः—सतरातत्व में नहीं और मेरे नहीं। सो किसी रीतिसे समझना ?

उत्तरः—

॥१–५॥ पांचज्ञानइन्द्रियविषैः—

१ श्रोत्र —

(१) शब्दको सुनै तिसको भी मैं जानताहूं।
(२) न सुने तब तिस सुनने के अभाव को भी मैं जानता हूं।

याते यह श्रोत्र मैं नहींऔर मेरा नहीं। यह आकाशका है। मैं इसका जानने हारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी नाईं इसते न्यारा हूं॥

२ त्वचाः—

(१) स्पर्शको ग्रहण करै तिसको भी मैं जानता हूँ। और

(२) ग्रहण न करै तब तिस ग्रहण करने-के अभावको भी मैं जानता हूं।

याते यह त्वचा मैं नही और मेरी नहीं। यह वायुकी है। मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इसते न्यारा हूँ॥

३ चक्षुः—

(१) रूपको देखै तिसकोभी मैं जानता हूँ।

(२) न देखै तब तिस देखने के अभाव को भी मैं जानता हूँ।

याते यह चक्षु में नहीं और मेरा नहीं। यह तेजका है। मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घट द्रष्टा की न्यांई इसते न्यारा हूँ॥

४ जिह्वा:—

(१) रसका स्वाद लेवेतिसको भी मैं जानता हूँ। और

(२) स्वादन लेवे तब तिस स्वाद लेने के अभाव को भी मैं जानता हूँ।

याते यह जिह्वा मैं नहीं और मेरी नहीं। यह जलकी है। मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घट-द्रष्टा की न्यांई इससे न्यारा हूँ॥

५ घ्राण:—

(१) गंधका ग्रहण करै तिसको भी मैं जानता हूं। और

(२) ग्रहण न करै तब तिस ग्रहण करने के अभावको भी मैं जानता हूं।

याते यह घ्राण मैं नहीं। और मेरा नहीं। यह पृथ्वी का है मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घट-द्रष्टा की न्यांई इससे न्यारा हूँ॥

॥ ६—१० ॥ पांचकर्मइन्द्रियविषै:—

६ वाक्:—(वाचा)

(१) बोले तिसको भी मैं जानता हूं। और
(२) न बोले तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूं। यों यह वाक् मैं नहीं और मेरी नहीं। यह आकाशको है। मैं इसका जानने हारा द्रष्टा घटद्रष्टाको न्यांई इसते न्यारा हूं।

६ पाणि:—(हस्त)

[१] लेना देना करैं तिसको भी मैं जानता हूं। और
[२] न करै तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूं।

याते ये हस्त मैं नहीं और मेरे नहीं। ये वायुके हैं। मैं इनका जानने हारा घट-द्रष्टा की न्यांई इनते न्यारा हूं।

८ पाद:—

(१) चलैं तिसको भी मैं जानता हूं । और
(२) न चलैं तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूं ।

याते ये पाद मैं नहीं और मेरे नहीं । ये तेज के हैं । मैं इनका जाननेहारा द्रष्टा घट द्रष्टा की न्यांई इनते न्यारा हूं ॥

९ उपस्थ:—

(१) रस [मूत्र और वीर्य] का त्याग करै तिसको भी मैं जानता हूं । और
(२) त्याग न करै तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूं ।

याते यह उपस्थ मैं नहीं और मेरा नहीं । यह जलका है । मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इसते न्यारा हूं ।

१० गुद:—

(१) मलका त्याग करै तब तिसको भी मैं जानना हूँ। और

(२) त्याग न करै तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूं।

याते यह गुद में नहों और मेरा नहीं। यह पृथ्वीका है। मैं इसका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इसते न्यारा हूँ ।।

।।११--१७।। प्राण और अन्तःकरण विषै

११—१५ पांचप्राण:—

(१) क्रियाकरें तिसको भी मैं जानताहूँ। और

(२) क्रिया न करै तब क्रिया के अभाव को भी मैं जानता हूँ।

याते ये प्राण में नहों और मेरेनहीं। ये मिले हुये पंचमहाभूतन के हैं। मैं इनका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाको नांई इनते न्यारा हूं ।।

१६ मन:—

(१) संकल्पविकल्प करै तिसको मैं जानता हूं

(२) संकल्पविकल्प न करै तब तिसके अभावको भी मैं जानता हूं।

याते यह मन मैं नहीं और मेरानहीं। यहमिले-हुये पंचमहाभूतनका है। मैं इसका जानने-हारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इससे न्यारा हूं॥

१७ बुद्धि—

(१) निश्चय करै तिसकोभी मैंजानताहूं। और

(२) निश्चय न करै तब तिसके अभाव को भी मैं जानता हूँ।

याते यह बुद्धि मैं और मेरी नहीं। यह मिले-हुये पचमहाभूतनकी है। मैं इसका जानने-हारा द्रष्टा घटद्रष्टा की न्यांई इससे न्यारा हूं इस रीतिसे ये सतरातत्वमैं नहीं औरमेरेनहीं। यह समझना॥

* ७४ प्रश्न:—ऐसे कहने से क्या भया ?

उत्तर:—

१ लिङ्गदेह और तिसके धर्म पुण्यपापकाकर्त्ता पना तिनकेफलसुखदु:खका भोक्तापना। और
२ इसलोक परलोकविषै गमनआगमन। और
३ वैराग्यशमदमादिसात्त्विकीवृत्तियां औरराग द्वेषहर्षादिराजसीवृत्तियां। औरनिद्राआलस्य प्रमादादितामसीवृत्तियां।
४ तैसे क्षुधातृषाअधपनाआदि अरु मंदपना और पटुपना

इत्यादिक मैं नहीं और मेरे नहीं। यह निश्चय भया॥

* ७५ प्रश्न:—पुण्यपापका कर्त्ता और तिनके फल सुख दु:खका भोक्ता मैं कैसे नहीं और कर्त्तापनाभोक्तापना मेरा धर्म नहीं और यह कैसे जानना ?

उत्तर:—१ जो वस्तु विकारी होवै सो क्रियावानहोनेते कर्त्ताकहिये है ॥ मैं निर्विकार कूटस्थ होनेते क्रिया का मैं कर्त्ता नहीं । और पुण्यपापरूप क्रियाका मैं कर्त्ता नहीं । और जो कर्त्ता नहीं सो भोक्ता भी होवै नहीं । याते ये अंत:करण के धर्म हैं । मेरे नहीं । मैं इनका जाननेहारा द्रष्टाघटद्रष्टाकी न्यांई इनतेन्यारा हूं । ऐसे जानना

* ७६ प्रश्न:—इसलोक परलोकविषै गवन आगमन मेरे धर्म नहीं । यह कैसे जानना ?

उत्तर:—२ अन्त:करण (लिङ्गदेह) परिच्छन्न है । तिसका प्रारब्धकर्म के बलसे गमन आगमन संभव है और मैं आकाशकी न्यांई व्यापक हूं याते मेरे धर्म गमन आगमन नहीं । ऐसे जानना ॥

* ७७ प्रश्न :—सात्विकी राजसी और तामसी वृत्तियां मैं नहीं और मेरा धर्म नहीं । यह कैसे जानना !

उत्तर:—३ दृष्टांत जैसे (१) किसी महलमैं बैठे (२) राजाके विनोदअर्थ (३) कोई कारीगर (४) कारजा बनावे है । (५) तिस कारंजेकी कलके खोलनेसे जलकी तीन-धारा निकसती हैं (६) तिन तीन धारा के भीतर प्रवाहरूप से अनन्तधारा निकसती है (७) जब वो कल बंद करिये तब तीन धारा बंद होयके अकेलाराजाही बाकीरहता है

सिद्धान्तः-तैसे (१) स्थूलशरीररूप महलमैं (२) अधिष्ठान कूटस्थरूपकरि स्थित परमात्मारूप राजा है। तिसके विनोदअर्थ

(३) माया [अज्ञान] रूपकारीगरने (४) अन्त:करणरूप कारंजा किया है। (५) जाग्रत स्वप्नविषै तिसको प्रारब्धरूप कलके खोलनेसे तीनगुणके प्रवाहरूप तीनधारा निकसती हैं। (६) तिन तीनधारा के भीतरसे अगणित-वृत्तियां उठती हैं। (७) और सुषुप्तिविषै प्रारब्धकर्मरूप कलके बन्दहुयेतेतीनवृत्तियां के भावअभावकाप्रकाशक आनन्दस्वरूपकेवलपर-मात्मारूप राजा बाकी रहता है ॥ सोई मैं हूं। याते ये सात्विकी राजसीतामसी वृत्तियां मैं नहीं और मेरी नहीं। ये अन्त:करणकीहैं। मैं इनका जाननेहारा द्रष्टा घटद्रष्टाकी न्यांई इनते न्याराहूं। ऐसे जानना ॥

* ७८ प्रश्न:—अन्धपनाआदि और मंदपना और पटु-पना मैं नहीं और मेरे नहीं। यह कसेजानना?

उत्तरः—४

(१) नेत्रादिकइन्द्रिय आपआपके विषय को कुछ भी ग्रहण न करें सो तिनका अन्धपनाआदि है ॥ तिसको भी मैं जानता हूं । और

(२) विषयको स्वल्प ग्रहण करे सो तिनका मंदपना है तिसको भी मैं जानता हूँ और

(३) विषयको स्पष्ट ग्रहण करें सो तिनका पटुपना है । तिसकोभी मैं जानता हूँ ।

याते ये मैं नहीं और मेरे नहीं । ये इन्द्रियन के धर्म हैं ? मैं इनका जाननेहारा द्रष्टाघटद्रष्टाकी न्यांई इनते न्यारा हूँ ।

इस रीतिसे सूक्ष्मदेहका मैं द्रष्टा हूं ॥२॥

॥३॥ कारणशरीरका मैं द्रष्टा हूं ॥

* ७६ प्रश्नः—कारणदेह सो क्या है !

उत्तरः—

१ पुरुष जब सुषुप्ति से उठे तब कहता है कि ५८ "आजमैं कुछ भी न जानताभया" इसते। सुषुप्तिविषै अज्ञान है। ऐसा सिद्ध होवे-है। और

२ जाग्रत्‌विषैभी "मैंब्रह्मकोजानतानहीं" और मेरी मुझको खबर नहीं है। 'मैं यह नहीं जानताहूं। मैं वह नहीं जानता हूं, इस अनुभवका विषय अज्ञान है। और

॥ ५८ ॥ सुषुप्तिसे उठाया जो पुरुष। तिसको "मैं कुछ भी न जानताभया" ऐसा ज्ञान होवे है। सो ज्ञान अनुभवरूप नहीं। किन्तु सुषुप्तिकालविषै अनुभव किये अज्ञानकी स्मृति है॥ तिस स्मृतिका विषय सुषुप्तिकालका अज्ञान है।

३ स्वप्न का कारण भी निद्रारूप अज्ञान है ।
५९
ऐसा जो अज्ञान सो कारण देह है ॥

* ८० प्रश्न: —कारणदेह मैं नहीं और मेरा नहीं । यह कैसे जानना ?

उत्तर:--मैं जानताहूं" और "मैं न जानताहूं" ऐसो जो अन्त:करणकी वृत्तियां हैं । तिनको

॥५९॥

१ अज्ञान) स्थूलसूक्ष्मदेहका हेतु है । याते इसको कारण कहते हैं ॥

२ तत्वज्ञानसे इस अज्ञान का दाह होवे । याते इसको देह कहते हैं ॥

यह अज्ञान गर्भमंदिर के अन्धकारकी न्यांई ब्रह्म के आश्रित होयके ब्रह्मको ही आवरण करता है ।

ज्ञातअज्ञातवस्तुरूप विषयसहित मैं जानता हूँ। याते यहकारणदेह मैं नहीं और मेरा नहीं। यह
६०
अज्ञानकाहै। मैं इसका जाननेहारा द्रष्टाघट-द्रष्टा की न्याईं इसते न्यारा हूँ। यह ऐसे जानना ॥

इसरीतिते कारणदेहका मैं द्रष्टा हूँ ॥३॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदयदेहत्रयद्रष्टवर्णननामिका तृतीयकला समाप्ता ॥३॥

———

॥६०॥ कारणदेह आप अज्ञान है। तिसकों अज्ञान रूप ऐसे जो कहा। सो जैसे राहु को ही राहुका मस्तक कहते हैं। तैसे है।

|| अथ चतुर्थकलाप्रारम्भः ||४||

❀ पंचकोशातीत हूँ ❀

* मनहर छन्द *

पंचकोशातीत मैं हूँ अन्न प्राण मनोमय
विज्ञान आनन्दमय पंचकोश नातमा ||[५१]
स्थूलदेह अन्नमय—कोश लिङ्गदेह[६२] प्राण
मन अरु विज्ञान तीनकोश कहे मातमा ||
कारणआनन्दमय-कोश ये[६३] कारज जड़ ।
विकारी विनाशी व्यभिचारीही अनातमा
अज चित अविकारी नित्य व्यभिचारहीन
पीताम्बर अनुभव करता मैं आतमा ||४||

* ८१ प्रश्नः—पंचकोशातीत कहिये क्या ?

उत्तरः—पंचकोशातीत कहिये पांच कोशनते मैं अतीत नाम न्यारा हूँ ॥

* ८२ प्रश्नः—कोश कहिये क्या है ?

उत्तरः—

१ कोश नाम तलवार के म्यान का। और

२ धनके भन्डार का। और

३ कोशकार नामक कीड़े का है ॥

तिनकी न्यांई पचकोश आत्मा को ढापेहैं। यातें अन्नमयादिक भी कोश कहावे हैं ॥

* ८३ प्रश्नः—पांच कोशके नाम क्या हैं !

॥६१॥ आत्मा नहीं। अर्थ यह जो अनात्मा है ॥

॥६२॥ महात्मा लिङ्गदेह को प्राण मन अरु विज्ञान तीनकोशरूप कहे हैं ॥

॥६३॥ पंचकोश।

उत्तरः—अन्नमयकोश । २ प्राणमयकोश । ३ मनोमयकोश । ४ विज्ञानमयकोश । और ५ आनन्दमयकोश । ये पाँच कोशकें नामहैं॥

* ८४ प्रश्नः—१ अन्नमयकोश सो क्या है ?

उत्तरः—

१ मातापिताने खाया जो अन्न । तिसते भया जो रजवीर्य । तिसकरि जो माताके उदर-विषै उत्पन्न होता है ।

२ फेर जन्म के अनन्तर क्षीरादिकअन्नकरि के जो वृद्धिको पावता है ।

३ फेर मरण के अनन्तर अन्नमयपृथ्वीविषै लीन होता है ।

ऐसा जो स्थूलदेह सो अन्नमयकोश है ॥

* ८५ प्रश्नः - अन्नमयकोश कैसा है ?

उत्तरः—सुख दुःख के अनुभव रूप भोग का स्थान है ॥

* ८६ प्रश्नः—अन्नमयकोश से मैं न्यारा हूं यह कैसे जानना ?

उत्तरः—

१ जन्मते प्रथमऔरमरणते पीछे अन्नमयकोश [स्थूलशरीर]का अभावहै। याते यह उत्पत्तिनाशवान् होनेते घटकी न्यांईकार्य है और

२ मैं सदा भावरूप हूं। ताते उत्पत्तिनाश-रहित होने से इसते विलक्षण हूँ।

याते यह अन्नमयकोश मैं नहीं और मेरानहीं। यह स्थूलदेह रूप है। मैं इसका जानने हारा आत्मा इससे न्यारा हूँ॥ इस रीतिसे अन्नमयकोशते मैं न्यारा हूँ। यह जानना॥

* ८७ प्रश्नः—२ प्राणमय कोश सो क्या है ?

उत्तरः—पांचकर्म इन्द्रिय सहित पाँच प्राण। सो प्राणमयकोश हैं॥

* ८८ प्रश्नः-पांचकर्मइन्द्रिय और पांचप्राणकौनसेहैं!
उत्तरः—पांचकर्म इन्द्रिय और पांचप्राण पूर्व सूक्ष्मदेहकी प्रक्रियाविषै कहे हैं।

* ८९ प्रश्नः—पांचप्राणके स्थान औरक्रिया कौन हैं ?
उत्तरः—

१ प्राणवायुः—
(१) हृदयस्थानविषै रहता है। और
(२) प्रत्येकदिनरात्रिविषै २१६०० श्वास-उच्छ्वास लेनेरूप क्रियाको करता है ॥

२ अपानवायुः–
(१) गुदस्थानविषै रहता है और
(२) मलमूत्रके उत्सर्ग (त्याग) रूप क्रिया को करता है ॥

३ समानवायुः–
(१) नाभिस्थानविषै रहता है । और

[२] कूपजल को बगोचे विषै मालीकी न्याई भोजन लिये अन्न के रसको निकासिके नाड़ी द्वारा सर्व शरीर विषै पहुंचावनेरूप क्रिया को करता है॥

[१] कंठस्थान विषे रहता है और

[२[खाएपिए अन्नजलके विभागको करता है। तथा स्वप्न हिचकी आदिकके दिखावनेरूप क्रिया को करता है।

५ व्यानवायु:—

[१] सर्वाङ्गस्थानविषै रहता है। और

[२] सर्वाङ्गन की संधिन के फेरने रूप क्रिया को करता है।

इस रीति से पांच प्राण के मुख्य स्थान और क्रिया है॥

* ६० प्रश्नः--प्रणादिवायु शरीरविषै क्या करते है?

उत्तर —प्राणादिवायु

१ सारेशरीरविषै पूर्ण होय के शरीर को बल देते हैं। और

२ इन्द्रियनके आप आपको कार्यविषै प्रवृत्ति रूप क्रिया के साधन होते हैं॥

* ६१ प्रश्नः—प्राणमयकोशते मैं न्यारा हूं। यह कैसे जानना?

उत्तरः—

१ निद्राविषै पुरुष सोयाहोवे। तब प्राण जागता है। तो भी कोई स्नेही आवै तिसका सन्मान करता नहीं। और

२ चोर भूषण लेजावे तिसको निषेध करता नहीं।

वाते यह प्राणवायु घटको न्यांई जड़ है। और

मैं चैतन्यरूप इसते विलक्षण हूँ। याते यह प्राणमयकोश मैं नहीं और मेरा नहीं। यह सूक्ष्मदेहरूप है॥ मैं इसका जाननेहारा आत्मा इसते न्यारा हूँ इसरीतिसे प्राणमयकोशते मैं न्यारा हूँ यह जानना॥

● ६२ प्रश्नः—३ मनोमयकोश सो क्या है?
उत्तरः—पांचज्ञानइन्द्रिय सहित मन। सो मनोमयकोश है॥

● ६३ प्रश्नः—पांचज्ञानइन्द्रिय और मन कौन हैं?
उत्तरः—से पूर्व सूक्ष्मदेहकी प्रक्रियाविषै कहे हैं॥

● ६४ प्रश्नः—मन कैसा है।
उत्तरः—देहविषै अहन्ता और गृहादिकविषै ममतारूप अभिमानकोकरताहुआ इन्द्रियद्वारा बाहीं गमन करता हुआ कारणरूप है॥

* ९५ प्रश्नः—मनोमयकोषते मैं न्यारा हूं। यह किस रीति से जानना?

उत्तरः—

१ कामक्रोधादिवृत्तियुक्त होनेते मन नियमरहितस्वभाववाला है ताते विकारी है। और
२ मैं सर्ववृत्तिनका साक्षी निर्विकार हूँ॥ याते मनोमयकोश मैं नहीं और मेरा नहीं यह सूक्ष्मदेहरूप है। मैं इसका जाननेहारा आत्मा इसते न्यारा हूं॥ इसरीतिसे मनोमयकोशते मैं न्यारा हूं। यह जानना॥

* ९६ प्रश्नः—४ विज्ञानमयकोश क्या?

उत्तरः—पांचज्ञानइन्द्रिय सहित बुद्धि। सो विज्ञानमयकोश है॥

* ९७ प्रश्न – ज्ञानइन्द्रिय और बुद्धि कौन है?

उत्तरः—ये पूर्व लिङ्गदेहकी प्रक्रिया विषे

* ९८ प्रश्न:—बुद्धि कैसी है ?

उत्तर:—

१ सुषुप्तिविषै चिदाभासयुक्त बुद्धि विलीन होवे है। और

२ जाग्रत्विषै नखके अग्रभागसे लेके शिखा पर्यंत शरीरविषै व्यापिके वर्तती हुई कर्ता- रूप है॥

* ९९ प्रश्न:—विज्ञानमयकोशते मैं न्यारा हूँ। यह कैसे जानना ?

उत्तर:—

१ बुद्धि। घटादिककी न्यांई विलयआदि- अवस्थावाली होने ते विनाशी है॥ और

२ मैं विलयआदि अवस्थारहित होनते इसते विलक्षण अविनाशी हूँ।

याते यह विज्ञानमयकोश मैं नहीं और मेरा नहीं। यह सूक्ष्म देह रूप है मैं इसको जानने-

हारा आत्मा इसतें न्यारा हूं ।। इस रीति से विज्ञानमय कोशते मैं न्यारा हूँ। यह जानना।।

* १०० प्रश्न:—५ आनन्दमय कोश सो क्या है ?

उत्तर:—

१ पुण्यकर्मफलके अनुभवकालविषै कदाचित् बुद्धिकी वृत्ति अंतर्मुख हुई आत्मस्वरूप-भूत आनंद के प्रतिबिंबको भजती है। और

६४

१ जैसे दीपक का प्रकाश और आकाश अभिन्न प्रतीत होवै हैं। तो भी भिन्न है। और

२ जैसे तप्तलोहविषै अग्नि और लोह अभिन्न प्रतीत होवै है। तो भी भिन्न है।

तैसे अंत:करण और आत्मा अभिन्न प्रतीत होवै हैं तो भी भिन्न हैं। काहेते सुषुप्तिविषै अंत:करण के लय हुये आत्मा को अज्ञानका साक्षी होने पर प्रतीय मान वे हो।।

२ जो प्रिय मोद प्रमोदरूप कहिये है
३ सोई वृत्तिपुण्यकर्मफलके भोग को निवृत्ति के हुये निद्रारूप से विलीन होवे है।
सो वृत्ति आनन्दमय कोश है ॥
* १०१ प्रश्न:—आनन्दमयकोश कैसा है ?
उत्तर:—
१ इष्टवस्तुके दर्शनसे उत्पन्न प्रियवृत्ति जिसका शिर है। और
२ इष्टवस्तुके लाभते उत्पन्नमोदवृत्ति जिसका एक (दक्षिण) पक्ष हैं और
३ इष्टवस्तुके भोगसे उत्पन्नप्रमोदवृत्ति जिसका द्वितीय (वाम) पक्ष है और
४ बुद्धिवा अज्ञानकी वृत्तिविषैआत्मस्वरूपभूत आनन्दका प्रतिबिंब जिसका स्वरूप है और

५ बिंबरूपआत्माका स्वरूपभूत आनन्दजिसका

६५

पुच्छ (आधार) है।

६६

ऐसा पक्षीरूप भोक्ता आनन्दमयकोश है ॥

* १०२ प्रश्न:--आनन्दमयकोशते मैं न्यारा हूँ। यह किसरीति से जानना ?

उत्तर:—

१ आनन्दमयकोशबादलआदिकपदार्थनकीन्यांई कदाचित् होनेवाला है। यातेक्षणिक है। और

२ मैं सर्वदा स्थित होने ते नित्य हूँ ॥

॥६५॥ ब्रह्मरूप आनन्द आधार होनेते तैत्तिरीय श्रुतिविषै पुच्छशब्द करि कहा है ॥

॥६६॥ ऐसे अन्यत्यारी कोशन की पक्षीरूपता ग्रस्पष्टकृत तैत्तिरीयउपनिषद्की भाषाटीकाविषै न विस्तार लिखी है। जाको इच्छा होवे सो तहां देखलेवे॥

याते यह आनंदमयकोशमैं नहींऔरमेरानहीं। यह कारणदेहरूप है । मैं इसका जाननेहारा आत्मा इसते न्यारा हूँ।इसरीतिसे आनंदमय कोशते मैं न्यारा हूँ यह जानना ॥

* १०३ प्रश्नः—विद्यामान अन्न मयादि कोश जब आत्मा नहीं । तब कौन आत्मा है?

उत्तरः—

१ बुद्धि आदिविषै प्रतिबिंबरूपकरिस्थित।और
२ प्रिय आदिकशब्द से कहिये है ।
ऐसा जो आनंदमयकोश है । तिसका बिंबरूप कारणजो आनंदहै। सोनित्य होनेते आत्मा है

* १०६ प्रश्नः—पांचकोश जे हैं वे ही अनुभवविषै आवते तिनते न्यारा कोई आत्मा अनुभवविषै आवता नहीं । याते पांचकोशते न्यारा आत्मा है । यह निश्चय कैसे होवे?

उत्तरः-यद्यपि पांचकोश ही अनुभवविषै आवते हैं इनते न्यारा कोई आत्मानुभवविषै आवता नहीं। यह वर्त्ता सत्यहै।तथापिजिस अनुभवते येपांचकोश जानिये हैं।तिनअनुभव-को कौननिवारणकरैगा?कोईभीनिवारणकरि सके नहीं।याते पांचकोशन का अनुभवरूप जो चैतन्य है।सो पांचकोशनते न्यारा आत्मा है।

• १०५ प्रश्नः- आत्मा कैसी है ?

उत्तरः—सत् चित् आनंद आदि स्वरूप है।

इति श्री विचारचन्द्रोदय पंचकोशातीत-वर्णननामिका चतुर्थकला समाप्ता ।४।

॥ अथ पंचमकला प्रारम्भः ॥५।

तीन अवस्था का मैं साक्षी हूं ॥

॥ मनहर छन्द ॥

अवस्था तीन कोसाक्षी आतमा अन्वययाको
व्यभिचारी अवस्थाको व्यतिरेक पाईयो ॥
त्रिपुटी चतुरदश करि व्यवहार जहां।
स्पष्ट सो जाग्रत झूठ ताको दृश्य ध्याईयो ॥
देखे सुने वस्तुनके संस्कार से सृष्टि जहां।
अस्पष्टप्रतीति स्वप्न मृषा लोक गाईयो ॥
६९
सकलकरण लय होय जहां सुपुप्ति सो,
७० ७१
पीतांबर तुरीयहीं प्रत्येक प्रत्याईयो ॥१॥

* १०६ प्रश्नः—तीन अवस्था कौनसी हैं ?

७२ ७३
उत्तरः—१ जाग्रत। २ स्वप्न। और
७४
३ सुषुप्ति। ये तीन अवस्था हैं ॥

।६७। या (आत्मा को अन्वय कहिये पुष्प मालामें सूत्र की न्याँई तीन अवस्थामें अनुस्यूतपनाहै। यह अर्थ है ।

॥६८॥ पुष्पनकी न्यांई तीन अवस्थाका परस्पर और अधिष्ठानते भेद ॥

॥६९॥ पदयोजना:—जहाँ सकलकरण लय होय । सो सुषुप्ति है ॥

॥७१॥ अन्तरात्मा ॥७१॥ निश्चय कीयो ॥

॥७२॥ स्वप्न और सुषुप्ति ते भिन्न इन्द्रियजन्म ज्ञानका और इन्द्रिय जन्मज्ञानके संस्कार का आधार काल सो जाग्रत अवस्था कहिये है ॥

॥७३॥ इन्द्रिय से अजन्य । विषयगोचर अन्तः-करणकी अपरोक्षवृत्ति का काल । स्वप्न अवस्था कहिये है ॥

॥७४। सुखगोचर और अविद्यागोचर अविद्याकी वृत्तिका काल । सुषुप्ति अवस्था कहिये है ॥

॥१॥ जाग्रत् अवस्था का मैं साक्षी हूं ॥

१०७ प्रश्न: —जाग्रत् अवस्था सो क्या है ?

उत्तर—

१ चौदहइन्द्रिय अध्यात्म हैं ॥[७५]

२ तिनके चौदह देवता अधिदेव हैं ॥[७६]

३ तिनके चोदहविषय अधिभूत हैं ॥[७७]

इन व्यालीसतत्वसे जिसविषै व्यवहारहोवे ॥ सो जाग्रत् अवस्था है ॥

॥७५॥ आत्माको आश्रयकरिके वर्त्तमानजेइन्द्रियादिक। वे अध्यात्म कहिये हैं॥

॥७६॥ स्वसंघात से भिन्न होवै और चक्षुइन्द्रिय का अविषय होवे। सो अधिदेव कहिये हैं ॥

॥७७॥ स्वसंघातसे भिन्न होवै और चक्षुआदि इन्द्रियका विषय होवै सो अधिभूत कहिये है ॥

॥७८॥ यह स्थूलदृष्टिवाले पुरुषनको जाननेयोग्य जाग्रतका लक्षण है तैसेही स्वप्नसुषुप्तिविषैभीजानना॥

* १०८ प्रश्नः-चोदहइन्द्रिय कौनसी हैं ?
उत्तरः—
१-५ पांच-ज्ञानइन्द्रिय १ श्रोत्र। २ त्वचा।
३ चक्षु। ४ जिह्वा। और ५ घ्राण॥
६-१० पांच कर्मइन्द्रिय :-६ वाक्। ७पाणि।
८ पाद। ९ उपस्थ। और १० गुद।
११-१४ चार अन्तःकरणः-११ मन।
१२ बुद्धि। १३ चित्त और १४ अहंकार॥
ये चौदह इन्द्रिय अध्यात्म है।
* प्रश्नः-चौदहइन्द्रियन के चौदह देवता कौन से हैं ?
उत्तरः—
१-५ ज्ञानइन्द्रिय के पांच देवताः—
[१] श्रोत्रइन्द्रिय का देवता। दिशा *॥
[२] त्वचाइन्द्रियका देवता। वायु॥
[३] चक्षुइन्द्रियका देवता। सूर्य॥

* दिक्पाल॥

[४] जिह्वाइन्द्रियका देवता । वरुण ॥
[५] घ्राणइंद्रियका देवता । अश्विनीकुमार

६—१० पांचकर्मइन्द्रिय के देवताः—

[६] वाक्इन्द्रियका देवता । अग्नि ॥
[७] हस्तइन्द्रियका देवता । इन्द्र ॥
[८] पादइन्द्रियका देवता । वामनजी ॥
[९] उपस्थइंद्रियका देवता । प्रजापति ॥
[१०] गुदइन्द्रियका देवता । यम ॥

७९

११-१४ चार अन्तःकरण के देवता—

[११] मनइन्द्रियका देवता । चन्द्रमा ॥
[१२] बुद्धिइन्द्रियका देवता । ब्रह्मा ॥
[१३] चित्तइन्द्रियका देवता । वासुदेव ॥
[१४] अहंकारइन्द्रियका देवता । रुद्र ॥

ये चौदहदेवता अधिदेव हैं ।

॥७९॥ अन्तरिन्द्रियरूप अन्तःकरण ॥

• ११० प्रश्नः—चौदहइन्द्रियनकेचौदहविषयकौनसे हैं

उत्तरः—

१—पांच ५ ज्ञानइन्द्रिय के विषयः—

१ शब्द । २ स्पर्श । ३ रूप । ४ रस । ५ गंध ॥

६—१० पांचकर्मइन्द्रिय के विषयः—

६ वचन । ७ आदान । ८ गमन । ९ रतिभोग । १० मलत्याग ॥

११—१४ चारअन्तःकरण के विषय :—

८०

११ संकल्पविकल्प । १२ निश्चय

१३ चिंतन । १४ अहंपना ॥

ये चौदहविषय अधिभूत हैं ॥

॥८०॥ मनका संकल्पविकल्प विषय नहीं । किंतु जिस वस्तुका संकल्प होवे । ;सो वस्तु विषय है । तैसेही बुद्धि चित्त अहंकार और कर्मइन्द्रियनविषै जानना ॥

* १११ प्रश्न:—अध्यात्म अधिदेव अधिभूत । ये तीनतीन मिलिके क्या कहिये हैं ।

उत्तर:—अध्यात्मादितीन—पुट (आकार) मिलिके त्रिपुटी कहिये हैं ॥

* प्रश्न:११२—चौदहत्रिपुटी किस रीतिसे जाननी । उत्तर:—

१-५ ज्ञानइन्द्रियनकी त्रिपुटी

इन्द्रिय — अध्यात्म ॥	देवता — अधिदेव ॥	विषय — अधिभूत ॥
[१] श्रोत्र ।	दिशा ।	शब्द ॥
[२] त्वचा ।	वायु ।	स्पर्श ॥
[३] चक्षु ।	सूर्य ।	रूप ॥
[४] जिह्वा ।	वरुण ।	रस ॥
[५] घ्राण ।	अश्विनीकुमार ।	गंध ॥

६-१० ॥ कई इंद्रियको त्रिपुटी ॥

इन्द्रिय —	देवता —	विषय —	
अध्यात्म ॥	अधिदेव ॥	अधिभूत	
[६] वाक्	। अग्नि	। वचन (क्रिया)	॥
[७] हस्त	। इन्द्र	। लेना देना	॥
[८] पाद	। वामनजी	। गमन	॥
[९] उपस्थ	। प्रजापति	। रतिभोग	॥
[१०] गुद	। यम	। मलत्याग	॥

११-१४ । अन्तःकरण ४ की त्रिपुटी ॥

[११] मन	। चन्द्रमा	। संकल्प विकल्प	॥
[१२] बुद्धि	। ब्रह्मा	। निश्चय	॥
[१३] चित्त	। बासुदेव	। चिंतन	॥
[१४] गुद	। रुद्र	। अहंपना	॥

इस रीति से चौदह त्रिपुटी जानना ॥

* ११३ प्रश्नः–इन त्रिपुटीन का क्या स्वभाव है ?

उत्तरः–तीनतीन पदार्थन की जे त्रिपुटी हैं। तिनमैंसे एक न होवे तो तिसतिसका व्यवहार न चले। जैसे

१ इन्द्रिय औरदेवता होवे और तिसकाविषय न होवे तो भी व्यवहार न चले।

२ विषय और इंद्रिय होवे और देवतान होवे तो भी व्यवहार न चले।

ऐसे सर्व त्रिपुटीनविषै जानना ॥

* ११४ प्रश्नः–मेरा क्या स्वभाव है, यह कैसे जानना !

उत्तरः—

१ त्रिपुटी पूर्ण होवे तिसकोभीमैंजानताहूँ।और

२ त्रिपुटी अपूर्णहोवे तिसकोभी मैंजानताहूँ ॥

३ तैसे त्रिपुटीसे व्यवहार चले तिसको भी मैं जानता हूं ॥ और

४ व्यवहार न चले तिसको भी जानता हूँ।
ऐसा मेरा स्वभाव है। यह जानना॥

* ११५ प्रश्न:—इस कथन से क्या सिद्ध भया ?

उत्तर:–त्रिपुटीसे जिस विषै व्यवहार चलता है ऐसी जाग्रत्अवस्था है। यह सिद्ध भया॥

* ११६ प्रश्न:—जाग्रतअवस्थाविषै जीवका स्थान वाचा भोग शक्ति गुण और जाग्रत्के अभिमानसे तिस (जीव) का नाम क्या है ?

उत्तर:-जाग्रत्अवस्थाविषै जीवका

८१

१ नेत्र स्थान है।

२ वैखरी वाचा है।

॥८१॥ यद्यपि जाग्रत्विषै इस चिदाभास रूप जीवकी नखसे लेके सिखापर्यन्त सारेदेहविषै व्याप्ति है। तथापि मुख्यता करिके सो नेत्रविषै रहता है। याते ताका नेत्र स्थान कहिये है

३ स्थूल भोग हैं।

४ क्रिया शक्ति है।

५ रजो गुण है।

६ जाग्रत् के अभिमान से विश्व नाम है॥

* ६३ प्रश्न.—जाग्रतअवस्था के कहने में क्या सिद्ध भया ?

उत्तर:—

१ यह जाग्रतअवस्था होवे तिसको भी मैं जानता हूं। और

२ स्वप्न सुषुप्तिविषै न होवे तब तिसकेअभाव को भी मैं जानता हूं।

याते जाग्रतअवस्था मैं नहीं और मेरी नहीं। यह स्थूल देह की है॥ मैं इसका जाननेहारा साक्षी घटसाक्षी की न्यांई इसते न्यारा हूं। इस रीति से जाग्रत् अवस्था का मैं साक्षीहूं॥

॥२॥ स्वप्नअवस्थाका ॥ मैं साक्षी हूँ ॥

* ११८ प्रश्न:—स्वप्न अवस्था सो क्या है ?

उत्तर—जाग्रतअवस्थाविषै जो पदार्थ देखेहोवैं । सुनेहोवैं । भोगेहोवैं । तिनका संस्कार वालके हजारवे भाग जैसी वारीक हितानामक नाड़ी जो कंठविषै है तिसविषै रहता है। तिससे निद्राकालमें पांचविषयआदिक पदार्थ और तिनका ज्ञान उपजताहै । तिनसेजिसविषै व्यवहार होवै । सो स्वप्न अवस्था ॥

* ११९ प्रश्न:—स्वप्न अवस्था विषै जीव का स्थान वाचा भोग शक्ति गुण और स्वप्न के अभिमानमें तिस (जीव का नाम क्या है ?)

उत्तर:-स्वप्न अवस्था विषै जीव का

१ कंठ स्थान है ।

२ मध्यमा वाचा है ।

३ सूक्ष्म (वासनामय) भोग है ।

४ ज्ञान शक्ति है ।

८२

५ सत्व गुण है । और

६ स्वप्नकेअभिमानसे तेजस नाम है ।

* १२०प्रश्न:-स्वप्नअवस्थाके कहनेसे क्यासिद्धभया ?

उत्तर:—

१ स्वप्नअवस्थाहोवेतिसकोभीमैंजानताहूं और

२ जाग्रत्सुषुप्तिविषै न होवै तब तिसके अभावको भी मैं जानता हूं ।

याते यह स्वप्नअवस्थामैं नहीं और मेरीनहीं। यह सूक्ष्मदेह की है । मैं इसका जाननेहारा साक्षी घटसाक्षीकी न्यांई इसते न्यारा हूं । यह स्वप्नके कहनेसे सिद्ध भया ॥

इसरीतिसे स्वप्नअवस्था का मैं साक्षी हूं ।

॥८२॥ कितनेक रजोगुण भी कहते हैं ॥

॥३॥ सुषुप्तिअवस्थाका मैं साक्षी हूँ ॥

* १२१ प्रश्नः-सुषुप्ति अवस्था सो क्या है ?

उत्तरः-पुरुष जब निद्रासे जागिके उठे सुषुप्तिविषै अनुभव किये सुख और अज्ञानका स्मरणकरिके कहता है। जो "आज मैं सुख मैं सोया था औरकुछ भीन जानताभया" यह सुख और अज्ञानका प्रकाश साक्षीचेतनरूप अनुभवसे जिसांवषै होवे है ऐसी जोबुद्धि की विलयअवस्था। सो सुषुप्तिअवस्था है॥

* १२२ प्रश्नः—सुषुप्तिअवस्थाविषै जीवका स्थान वाचा भोग शक्ति गुण और सुषुप्तिके अभिमानसे तिस (जीव) का नाम क्या है ?

उत्तरः—सुषुप्तिअवस्थाविषै जीवका

१ हृदय स्थान है।
२ पश्यंती वाचा है।
३ आनन्द भोग है।

४ द्रव्य शक्ति है।

५ तमो गुण है। और

६ सुषुप्तिके अभिमान से प्राज्ञ नाम है॥

* १२३ प्रश्न:—सुषुप्तिअवस्थाविषैं दृष्टांत क्या है?

उत्तर:—प्रथमदृष्टांत (१) जैसे कोई का भूषण कूपविषैंगिरगयाहोवैतिसके निकासनेको कोई तारूपुरुषकूपविषं उतरे। सो पुरुषभूषण मिले तिसकोभी जानता है और भूषण नमिले तिनको भी जानता है। (२)परन्तु कहने का साधन जो वाक्इन्द्रिय हैतिसके देवता अग्नि-का जल के साथ विरोध होनेते तिरोधानहोवैं है। याते कहता नहीं। और (३) जब पुरुष जल से बाहर निकसे तब कहने का साधन देवतासहित वाक्इन्द्रिय है याते भूषण मिला अथवा न मिला सो कहता है॥

सिद्धांत:—तैसे (१) सुषुप्तिअवस्थाविषै सुख औरअज्ञानकासाक्षीचेतनरूपसामान्यज्ञान हैं। (२)परन्तु विशेषज्ञानके साधनसे इन्द्रिय औरअन्त:करणतिनका तब अभावहै।यातेसुख और अज्ञानकाविशेष ज्ञान होता नहीं।(३) जबजब पुरुष जागताहै तबविशेषज्ञानकेसाधन इन्द्रिय औरअंत:करणहोवेहैं।यातेसुषुप्तिविषै अनुभव किये सुख और आज्ञा का स्मृतिरूप विशेषज्ञान होवे है ॥

द्वितीयदृष्टांत:—जैसे (१) आतपविषै पिघला घृत होवे। (२) सोछायाविषैस्थित होवे तो गट्टारूप होवे है। (३) फेर आयप-विषै स्थित होवे तो पिघलता है॥

सिद्धांत:-तैसे (१)सुषुप्तिविषै कारणशरीर रूप अज्ञान है।(२)सोजाग्रत्स्वप्नविषैबुद्धिरूप होवे हैं।(३)फेरसुषुप्तिविषैअज्ञानरूपहोवेहै॥

तृतीयदृष्टांन्तः-जैसे (१) कोई बालक लड़कनके साथ खेल करने को जावे (२) सो जब श्रमकोपावे तबमाताकीगोदमें सोयकेगृहके सुखका अनुभव करता है। (३) फेर जब लड़के बुलावेंतब बाहिर जायकेखेलकोकरताहै

सिद्धांतः-तैसे (१) कारणशरीर जो अज्ञान तिसरूप माताहै। तिसका बुद्धिरूपबालक कर्म रूप लड़कनके साथजाग्रत्स्वप्नरूप बहिर्भूमि-विषै व्यवहाररूप खेलको करता है। (२) जब विक्षेपरूप श्रमको पावै। सुषुप्तिअवस्था रूप गृहविषै अज्ञानरूप माता मैं लीनहोयके ब्रह्मानंदका अनुभव करता है। (३) फेर जब कर्मरूप लड़के बुलावैं तब जाग्रत्स्वप्नरूप बहिर्भूमिविषै व्यवहाररूप खेलको करताहै॥

चतुर्थदृष्टांतः—जैसे (१) समुद्र जल करि पूर्ण घटको (२) गलेमें रस्सीबांधिकेसमुद्रविषै

लीन करे (३) तब घटविषै स्थितजलसमुद्रके जलसे एकताको पावता है। (४) तोभी घट-रूप उपाधिकारि भिन्नकी न्यांई है (५) फेर जब रस्सी खेंचीयेतबभेदको पावताहै (६) परन्तु जलसहित घट और समुद्रका आधार जो आकाश सो भिन्न होता नहीं। (७) किंतु तीन कालविषै एकरस है ॥

सिद्धांत:-तैसे (१) अज्ञानरूप समुद्र जलकरि पूर्णजोलिंगदेहरूप घट है। (२) सो अदृष्टरूप रस्सीसेबांध्याहुआ सुषुप्तिकालविषै और तिसके अवांतरभेदरूप मरण मूर्छा और प्रलयकालविषैसमष्टिअज्ञानरूप ईश्वरकीउपाधि मायाविषै लीन होवेहै। (३) तब सो व्यष्टि-अज्ञानरूप जीवकी उपाधि अविद्या। समष्टि-अज्ञानसे एकताको पावेहै। [४] तो भी लिंग-शरीरकेसंस्काररूप उपाधिकरि भिन्नकी न्यांई है

(५) फेर जब अदृष्टरूप रस्सीकोअंर्यामीप्रेरता है।तबभेदकोपावेहैं। (६) परन्तु व्यष्टिअज्ञानरूप जलसहित लिंगदेहरूप घटऔर समष्टिज्ञानरूप समुद्रका आधारजो चिदाकाश सो भिन्नहोता नहीं। (७) किन्तु तोनकालविषै एकरस है ॥
* १२४ प्रश्न:—सुषुप्तिके कहनेसे क्या सिद्ध भया ?
उत्तर:—
१ सुषुप्तिअवस्था होवेतिसकोभीमैंजानताहूंऔर
२ जाग्रत् स्वप्नविषै यह न होवे तब तिसके अभावको भी मैं जानता हूं ।
याते यह सुषुप्ति अवस्थामैंनहींऔरमेरोनहीं। यह कारणदेहकी है । मैं इसका जानने हारा साक्षी घटसाक्षी की न्यांई इसते न्यारा हूं ॥
इस रीतिसेसुषुप्तिअवस्थाका मैं साक्षी हूं॥
इति श्री विचारचन्द्रोदय अवस्थात्रय साक्षीवर्णननामिका पंचमकला समाप्ता ॥५॥

॥ अथ षष्ठकला प्रारंभः ॥ ६ ॥

। प्रपंचमिथ्यात्ववर्णन ।

॥ [८३]ललित छन्दः ॥

सकलदृश्य तो ध्यास छोड़ना ।
जगअधारमें चित्त जोड़ना ॥
त्रय[८४]दशाहि जो जाग्रदादि हैं ।
सब प्रपंच सोभिन्न नाहिं हैं ॥६॥
रजत आदि हैं सीपी में यथा ।
त्रयादशा सु हैं ब्रह्ममें तथा ॥
रजतआदिवत् दृश्य ये मृषा ।
शुगतिकादिवत् [८५]ब्रह्म अमृषा ॥७॥
व्यभिचरे [८६]मिथो रजत[८७]आदि ज्यों ॥
इनहिक मिथी व्यावृती जु [८८]त्यों ॥
शुगति[८९] सत्रवत अनुग एक जो ॥
[९०]अनुवृत्तीयुतो ब्रह्म आपसो ॥८॥

शुगतिकामहीं तीन[91]अंश ज्यों ।
अजड़ब्रह्ममें तीन अंश त्यों ॥
[92]उभयअंशको सत्य जानिले ।
[93]त्रतिय त्यागदे मोक्ष तो मिले ॥९॥
[94]भिदभ्रमादि जो [95]पंचधाभवं ।
त्रिविधतापता तप्त सो [96]दवं ॥
[97]परश पचधा युक्तियों करी ।
करि विचार तो छेद ना डरी ॥१०॥
नहि जु जाहिमें तीनकालमें ।
तहँहि भान ह्वै मध्यकलामें ।
शुगति रौप्यवत ध्यास सो भ्रमं ।
[98]अरथ ज्ञान दो—भांतिका क्रमं ॥११॥
[99]द्विविधवेम है ज्ञान अर्थको ।
[100]अरथभ्रांति वा षड्विधा बको ।

१०१
सकलध्यास जे जगत में दसे ।
१०२
सबसु याहिके बीच में धसे ॥१२॥
निज चिदात्मको ब्रह्मजानिके ।
१०३
सकलवेमको मूल भानिके ॥
१०४
परममोदको आप बूजिले ।
इहहि मुक्ति पीतांबरो मिले ॥१३॥

॥८३॥ श्रीमद्भागवतके दशमस्कन्दके एकतासवे अध्यायगत गोपिकागीतकी न्यांई यह छन्द है ॥
॥८४॥ तीन अवस्था ॥
॥८५ सत्य ॥ ॥८६॥ परस्पर ॥
॥८७ इहां आदिशब्दकरि भोडल (अबरख) और कागज का ग्रहण है ॥
॥८८॥ भेद कहिये अन्योन्याभाव ॥
॥८९॥ पुष्पमाला में सूत्र की न्यांई ॥
॥९०॥ अनुस्यूतताकरि युक्त ॥
। ९१॥ सामान्य । विशेष । कल्पितविशेष । ये तीन अंश है ॥
॥९२॥ सामान्य और विशेष । इन दोअंशनको ॥

॥९३॥ तृतीय कल्पितअंशको ॥

॥९४॥ भेदभ्रांतिसे आदिलेके । इहां आदि-शब्दकरि कर्त्ताभोक्तापनेकी भ्रांति । संगभ्रांति ॥ विकारभ्रांति । ब्रह्मते भिन्न जगत्के सत्यता की भ्रांति इन चारभ्रांतिनका ग्रहण है ॥

॥९५॥ पांचप्रकारका संसार है ॥९६॥ वन है ।

॥९७॥ अन्वय.—पंचधा कहिये पांच प्रकार की युक्तियों कहिये दृष्टांतरूप परशु कहिये कुडारकरी ॥

॥९८॥ अन्वय:—सो भ्रम कहिये अध्यास । अरथ कहिये अर्थाध्यास और ज्ञान कहिये ज्ञानाध्यास या क्रमसे दोभांतिका है ॥

॥९९॥ अन्वय:—ज्ञान कहिये ज्ञानध्यास और अर्थ कहिये अर्थाध्यास । तिनको वेस कहिये अध्यास प्रत्येक कहिये एक एक द्विविध है ॥

॥१००॥ वा अरथभांति कहिये अर्थाध्यास षड् बघा कहिये षटप्रकारकी । बको नाम कहो ॥

॥१०१॥ दिखाये ॥

॥१०२॥ प्रवेशको पाये हैं ॥१०३॥ अज्ञान

॥१०४॥ परमानन्दरूप ब्रह्मको आत्मा जानीसे

° १२५ प्रश्न:—आत्माविषै तीन वस्था किसकी न्यांई भासती हैं ?

उत्तर:-दृष्टांत:—जैसे सीपीविषै रूपा अथवा भोडल (अभ्रक) अथवा कागज। ये तीन सीपीके अज्ञानसे कल्पित भासते हैं तीन तीन वस्तुनका

१ परस्पर वा सीपोके साथ व्यतिरेकहै। और
२ सोपी का तीनवस्तुनविषै अन्वय है ॥

जैसे कि:—

१ [१] सीपीविषै जब रूपा भासे तब भोडल और कागज भासता नहीं। और

[२] जब भोडल भासे तब रूपा और कागज भासता नहीं। और

(३) जब कागज भासै तब रूपा औरभोडल भासता नहीं ॥ यह तीन वस्तुनका परस्पर व्यतिरेक है ॥ सोपीविषै आदिमध्यअन्तमैं इन तीन वस्तु नका व्यावहारिकऔरपारमार्थिक अत्यन्त-अभाव है ।। यह सोपीविषैभी तिन तीनवस्तुनका व्यतिरेक हैं । और

२ भ्रांतिकालविषे ।

(१) 'यह रूपा है'

(२) 'यह भोडल हैं'

(३) 'यह कागज है'

इसरीतिसेसीपीका इदंअंशतीन तीनवस्तुनविषै अनुस्यूत भासताहै । यह तीनतीन वस्तुनविषै सोपी का अन्वय है ।

इहां सीपीके तीनअंशहैं:-१ सामान्यअंश। २ विशेषअंश। ३ कल्पितविशेषअंश॥

१ इन्दपनासामान्यअंश है। काहेतेजोअधिक कालविषै प्रतीत होवे सो सामान्यअंश है। इन्दपना जाते

(१) भ्रांतिकालविषै प्रतीत होवे है। और

(२) भ्रांति के अभावकालविषै भी 'यह सीपी है' ऐसे प्रतीत होवे है।

याते यह इन्द सामान्यअंश है और आधार भी कहिये है।

२ नीलपृष्ठत्रीनकाणयुक्तसीपी विशेषअंश है। काहेते जो न्यूनकालविषै प्रतीत होवे सो विशेषअंश है।

[१] भ्रांतिकालविषै इन नीलपृष्ठ आदिकको
प्रतीत होवे नहीं ।
[२] किंतु इनकी प्रतीतिसे भ्रांतिकी निवृत्ति
होवे ।
याते यह विशेषअंश है । और अधिष्ठान
भी कहिये है ॥
३ रूपाआदिक कल्पितविशेषअंशहै । काहेते
जो अधिष्ठान के ज्ञान काल में प्रतीत होवे
नहीं । सो कल्पितविशेषअंश है ॥ जैसे
[१] रूपाआदिक । सीपी के अज्ञानकालविषै
विष प्रतीत होवे हैं । और
[२] सीपीके ज्ञानकालविषै इनकी प्रतीति
होवे नहीं ।
[३] वा सीपीसे व्यभिचारी हैं ।
याते यह कल्पितविशेषअंश है और भ्रांति
भी कहिये है ॥

सिद्धांत:-तैसे अधिष्ठान आत्माविषै जाग्रत अथवा स्वप्न अथवा सुषुप्ति। ये तीन भ्रांति आत्मा के अज्ञानसे होवै हैं । तिनका

१ परस्पर और अधिष्ठान आत्मा के साथ व्यतिरेक[१०५] है । और

२ आत्माका तिनविषै अन्वय[१०६] है ॥

जैसे कि:—

१ (१) जाग्रत् भासै है तब स्वप्न और सुषुप्ति भासै नहीं। और

(२) स्वप्न भासै है तब जाग्रत और सुषुप्ति भासै नहीं । और

(३) सुषुप्त भासै है तब जाग्रत और स्वप्न भासै नहीं ।

यह तीन अवस्थाका परस्परव्यतिरेक है और

॥ १२५ ॥ अभाव या व्यावृत्ति सो व्यतिरेक है॥
॥ १०६ ॥ भाव या अनुवृत्ति । सो अन्वय है ॥

अधिष्ठानविषैइन तीनअवस्थाका पारमार्थिक अत्यंतअभाव (नित्यनिवृत्ति) है यह तीन अवस्थाका अधिष्ठानविषै व्यतिरेक है। और २ आत्मा इन तीनअवस्थाविषै अनुस्यूत होयके प्रकाशता हैं। यह आत्मा का तीन अवस्थाविषै अन्वय है।

इहां आत्माके अविद्याउपाधिसे आरोपित तीनअंश हैं:-१ सामान्य अंश। विशेषअंश ३ कल्पितविशेषअंश ॥

१ सत् 'हैं'पने)रूप सामान्य अंश है। काहें (१) 'जाग्रत् है' स्वप्न है' 'सुषुप्ति हैं'। इसरीति से आत्मा का सत्पने भ्रांतिकालविषै परभी प्रतीत होवै।और

(२) भ्रांति की निवृत्ति का विषै "मैं सत् हूँ। मैं चित् हूँ । मैं आनन्द हूँ । मै परिपूर्ण हूं । मैं असङ्ग हूँ । मैं नित्य मुक्त हूँ। मैं ब्रह्म हू., । इसरीति से आत्मा के सत् पनेकी प्रतीत होवे है ।

याते यह सत्‌रूप सामान्यअंश है और आधार भी कहिये है ।

२ चेतन आनन्द असङ्ग अद्वितीय पनेसेआदि लेके जे आत्मा के विशेषण हैं । सो विशेषअंश हैं । काहेते

(१) भ्रांतिकालविषै इन की प्रतीत होवै नहीं । किन्तु

(२) इनकी प्रतीतिसे भ्रांतिकी निवृत्ति होवै है ।

याते यह विशेषअंश है । और अधिष्ठान भी कहियें ।

३ तीन अवस्थारूप प्रपंच कल्पितविशेशअंश है । काहेते

[१] ब्रह्म से अभिन्न आत्मा के अज्ञान-कालविषै प्रतीत होवै है । और

[२] "मैं ब्रह्म हूँ" ऐसे आत्मा के ज्ञान काल में आत्मासे भिन्न सत् प्रतीत होवे नहीं ।

याते यह तीन अवस्थारूप प्रपंच कल्पित विशेषअंश है और भ्रांति भी कहिये है ॥ इसरीति से ये तीन अवस्था आत्माविषै मिथ्या प्रतीत होवे है ॥

॰ १२६ प्रश्नः-आत्माविषे मिथ्या प्रपंचको प्रतीत मैं अन्यदृष्टांत कौन से हैं ?

उत्तरः-जैसे

स्थाणुविषै पुरुष प्रतीत होवे है । और

२ साक्षीविषै स्वप्न प्रतीत होवे है। और
३ मरुभूमिविषै जल प्रतीत होवे है। और
४ आकाश विषै नीलता प्रतीत होवे है। और
५ रज्जुविषै सर्प प्रतीत होवे है। और
६ जलविषै अधोमुखपुरुष वा वृक्ष प्रतीत होवे है। और
७ दर्पणविषै नगरी प्रतीत होवे है॥
सो मिथ्या है॥

तैसे आत्माविषै अपने अज्ञानतै प्रपंच प्रतीत होवे है। सो मिथ्या है॥

इस रीतिसे प्रपंचके मिथ्यापनेका निश्चय करना। सोई प्रपंचका बाध है॥ १०७

॥१०७॥ मिथ्यापने के निश्चयकानाम बाध है। सो शास्त्रीय यौक्तिक और अपरोक्ष भेदतै तीनभांतिका है॥

• १२७ प्रश्नः—भ्रांतिरूपसंसार कितने प्रकारका है
उत्तरः—
१ वेदभ्रांति [108] ।
२ कर्त्ताभोक्त [109] पनेकी भ्रांति ।
३ रज्जुकी [110] भ्रांति
४ विकारकी [111] भ्रांति ।
५ ब्रह्मसे भिन्न जगत्के सत्यताकी भ्रांति
यह पांचप्रकारका, भ्रांतिरूप संसार है ॥
• १२८ प्रश्नः—पांचप्रकारके भ्रमकी निवृत्ति कि
दृष्टांतनसे होवे है ?
उत्तरः—
१ बिंबप्रतिबिंबके दृष्टान्त से भेदभ्रम की
निवृत्ति होवे है ॥

।१०८। जावईश्वरका भेद जीवनका परस्पर
भेद । जड़नका परस्परभेद जीव जड़नका भेद । औ
जड़ ईश्वरका भेद।यह पांचप्रकारकीभेद भ्रांति है।

॥१०९॥ अन्तःकरण के धर्म कर्त्तापनेभोक्तापनेको आत्माविषै प्रतीत होवै है। यह कर्त्ताभोक्तापनेकी भ्रांति है॥

॥११०॥ आत्माका देहादिकविषै अनन्तारूप और गृहादिकविषै ममतारू। सवन्ध है। वा सजातिय विजातीय स्वगत वस्तुके साथि संबन्ध की प्रतीति। सो संगभ्रांति है।

॥१११॥ दुग्ध के विचार दधिकी न्याई। ब्रह्मका विकार जीव तथा जगत् है। ऐसी जो प्रतीति। सा विकारभ्रांति है।

॥११२॥ सूत्रभाष्यके उपरि पचपादिका नामक टीका पद्मपादाचार्यने करी है। तिस पंचपादिकाका व्याख्यानरूप विवरणनामग्रन्थ है। तिसके कर्त्ता श्रीप्रकाशात्मचरणनामआचार्य हैं। तिसकी रीतिसे अनुसार यह उपरि लिख्या बिंबप्रतिबिंबका दृष्टांत है।

२ स्फाटिकविषै लालवस्त्रके लालरङ्गकी प्रतीतिके दृष्टान्त से कर्त्ताभोक्तापनेंकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवे है ॥

३ घटाकाशके दृष्टांन्तसे संगभ्रांतिकी निवृत्ति होवे है ॥

४ रज्जुविषै कल्पितसर्प के दृष्टांतसे ब्रह्म सें भिन्न जगत्के सत्यपने की भ्रांतिकी निवृत्ति होवे है ॥

* ११९प्रश्नः—१ बिंबप्रतिबिंबके दृष्टान्तसेभेदभ्रांति की निवृत्ति किसरीति के होवे है ?

उत्तर—जैसे (१) दर्पणविषै मुखका प्रतिबिंब भासता है सो प्रतिबिंब दर्पणविषै नहीं है । किन्तु दर्पणको देखनेवास्ते निकसी

जो नेत्रकी वृत्ति से दर्पणको स्पर्श करिके पीछे लौटिके मुखको ही देखती हैं। याते बिंब जो मुख तिसके साथ प्रतिबिम्ब अभिन्न है। ताते प्रतिबिम्ब मिथ्या नहीं। किंतु सत्य है। और [२] प्रतिबिम्ब धर्म जे बिंबसे उलटे-पना। ये तीन और तिनकी प्रतातिरूप ज्ञान सो भ्रांति है ॥ [३] याते इनधर्मनकोमिथ्या-पनेका निश्चयरूप बाध करिके बिंबका सदा अभेद निश्चय होवे है।

सिद्धांत:—तैसे [१] शुद्धब्रह्मरूप बिम्ब है। तिसका अज्ञानरूप दर्पणविषै जोवरूप प्रतिबिंब भासताहै। तिनसे स्वप्नकी न्यांईएक जीव मुख्यहै औरदूसरे स्थावर जङ्गमरूपनाना-जीव भासते हैं। ये जीवाभास हैं ॥ सो

जीवरूपप्रतिबिंब रूपईश्वर बिम्बके साथसदा अभिन्न हैं परन्तु [२] मायाके वलसे तिब जीवके धर्म। बिंबरूप ईश्वरसेभेद । जवपना अल्पज्ञपना। अल्पशक्तिपना ।परिच्छिन्नपना। नानापना इत्यादिओर तिनकी प्रतीतरूपज्ञान। सो भ्रांति है [३] याते तिनका मिथ्यापनेका निश्चयरूप वाधकरिके ।जीवरूपप्रतिबिंब और ईश्वररूप बिंबका सदा अभेद निश्चय होवेहै। इसरीतिसे बिंबप्रतिबिंबके दृष्टांतसे भेद-भ्रांतकी निवृत्ति होवे है ॥

॥११३॥ मुख्य जीवईश्वरके भेदके निषेधसे तिनके अन्तर्गत चारभेदनका निषेध सहज सिद्ध होवेहै । सर्व भेद उपाधिके किये है । उपाधि सर्व मिथ्या है । ताते तिनके किये भेद भी सर्व मिथ्या है । याते वास्तव-अद्वैत ब्रह्महो अवशेष रहता है ।

*१३० प्रश्न;-२ स्फटिकविषै लालवस्त्रके लालरङ्ग की प्रतीतिके दृष्टांतसे कर्त्ताभोक्तापने भ्रांति किसरीतिसे निवृत्ति होवैहै ?

उत्तरः—जैसे [१] लाल वस्त्रके ऊपर धरे स्फटिकमणिविषै वस्त्रका लालरङ्ग संयोगसंबन्धसे भासता है [२]परन्तु सो वस्त्रका धर्म है ।[३]वस्त्र और स्फटिक के वियोगके भये स्फटिक विषै भासता नहीं [४] याते स्फटिकका धर्म नहीं है। [५] किन्तु स्फटिकविषै भ्रांतिसे भासता है॥

सिद्धान्तः—तैसे [१] अन्तकरणका धर्म जो कर्त्ताभोक्तापना सो आत्माविषै दाता-त्म्यसंबन्धसे भासता है। [२]परन्तुसो अंत-करण धर्म है [३] सुषुप्तिविषै अन्तःकरण

औरआत्माकेवियोगकेभये आत्माविषैभासता नहीं । (४) याते आत्माका धर्म नहीं है॥ (५) किंतु आत्माविषै भ्रांतिसे भासता है॥

इसरीतिसे स्फटिकविषै लालरङ्गको प्रतीतिके दृष्टांत कर्त्ताभोक्तापनेकी भ्रांतिकी निवृत्ति होवे है ।

* २११ प्रश्नः–३ घटाकाशके दृष्टान्तसे संगभ्रांतिकी निवृत्ति किसरीतिसे होवे है ?

उत्तरः—जैसे (१) घटउपधिवाला आकाश घटाकाश कहियेहै। (२) सो आकाशघट के संग भासता है (३) तो भी घटके धर्म उत्पत्तिनाश गमनआगमनआदिक हैं । वे आकाश को स्पर्श करते नहीं। (४) याते आकाश असङ्ग है । ओर (५) आकाशका संबंध घटके साथ भासता है । सो भ्रांतिहै॥

. सिद्धांत—तैसे (१) देहआदिकसंघात रूप उपाधिवाला आत्मा जीव कहियेहै। (२) सो आत्मा संघातके संग भासता है। (३) तो भी संघातके धर्मजन्ममरणादिक हैं। वेआत्मा को स्पर्श करते नहीं। काहेते संघात दृश्य है और आत्मा द्रष्टा है। (४) ताते आत्मा संघातसे न्यारा असंग है॥ (५)जाते आत्मा अहंतारूप संबंधभी नहीं और जाते आत्माका संघात नहीं। किन्तु संघात पंचमहाभूतकाहै। ताते आत्माका संघातकेसाथ ममतारूप संबंध भी नहीं॥ जाते आत्माका संघातसे न्यारा है। ताते आत्माका संघातके संबंधी स्त्री पुत्र-गृहादिकनके साथ भी ममतारूप संबंध नहीं॥ एसे आत्मा असंग है। इनका संघात के

साथ अहंताममतारूप संबंध भ्रांति है।

इसरीतिसे घटाकाशके दृष्टांतसेसंगभ्रांति की निवृत्ति होवे है ॥

* १३२ प्रश्नः—रज्जुविषै कल्पित सर्प के दृष्टांतसें विकारभ्रांति की निवृत्ति किसरीतिसे होवे है?

उत्तरः–जैसे (१) मंदअन्धकारविषै रज्जु स्थित होवे। तिसके देखने वास्ते नेत्ररूपद्वारसे अन्तःकरण वृत्ति निकसे है। सो वृत्ति अन्धकारादि दोषसेरज्जुके आकारकोपावतीनहीं।नहीं तिसवृतिसे रज्जुके आवरणभङ्ग होवे नहीं। तब रज्जुउपाधिवाले चैतन्यकेआश्रितरही जो ११४ तूलाअविद्या। सो क्षोभकोपायके सर्परूपविकारको धारतीहै ॥(२) सो सर्प। दुग्धकेपरिणाम दधिकी न्याई अविद्या का परिणाम है।

॥११३॥ घटादिरूप उपाधिवाले चैतन्यको आवरण करने वाली जो अविद्या। तूलअविद्या है॥

और (१) रज्जुउपाधिवाले चैतन्यका विवर्त है ॥ परिणाम (विकार) नहीं ॥

सिद्धांत:—तैसे (१) ब्रह्मचैतन्यके आश्रित रही जो[115]मूलअविद्या। सोप्रारब्धआदिकनिमित्तसे क्षोभको[116] पायके जड़चैतन्य(चिदाभास) प्रपंच रूप विकारको धारतो है ॥ (२) सो प्रपंच अविद्या परिणाम[117] है और (३)[118] अधिष्ठान-ब्रह्मचैतन्यका विवर्त[119] है। परिणाम नहीं ॥

इसरीतिसे रज्जुविषै कल्पित सर्प दृष्टान्तसे विकारभ्रांतिकी निवृत्ति होवे है ॥

॥११५॥ शुद्धब्रह्म और आत्माको आचरण करनेवाली जो अविद्या। सो मूलाअविद्या है।

॥११६॥ कार्य करने सन्मुख होनेको क्षोभ कहे हैं॥

॥११७॥ १ पूर्वरूपको त्यागके अन्यरूपकी प्राप्ति परिणामहैं।

२ वा उपादानके समानसत्तावाला जो अन्यथारूप कहिये उपादानते और प्रकारका आकार सो परिणाम है ॥

जैसे दुग्धका परिणाम दधि है। याही को विकार भी कहे हैं।

॥११८॥ जो आप निर्विकाररूप से स्थित होवे और अविद्याकृत कल्पितकार्य का आश्रय होवे। सो अधिष्ठान है ॥ जैसे कल्पितसर्प का अधिष्ठान रज्जु है। याही को परिणामीउपादानसे विलक्षण दूसरा विवर्त उपादान भी कहते हैं ॥

॥११९॥ अधिष्ठानते विषमसत्तावाला कहिये अल्प अरु भिन्नसत्तावाला जो अधिष्ठानसे अन्यथारूप नाम और प्रकारकर आकार सो विवर्त है ॥ जैसे रज्जुका विवर्त सर्प है। याही को कल्पितकार्य और कल्पितविक्षेप भी कहते हैं ॥

* १३३ प्रश्नः—५ कनकविषै कुन्डलकी प्रतीत के दृष्टांतसे भिन्न जगत् के सत्यताकी भ्रांति की निवृत्ति किसरीतिसे होवै है ॥

उत्तरः—जैसे (१) ब्रह्मकनकऔरकुंडलका कार्यकारणभावकरि भेद भासता है सो कल्पित है। और (२) ब्रह्मकनकसे कुन्डलका भिन्नस्वरूप दीखता नहीं। (३) याते वास्तवभेद है। (४) ताते कनक से भिन्न कुंडलकी सत्ता नहीं है ॥

सिद्धांतः-तैसे (१) ब्रह्म और जगत् का कार्यकारणभावकरि अरु विशेषणकरि भेद भासता है सो कल्पित है। और (२) विचारकर देखिये तो अस्तिभांतिप्रियसे भिन्न नाम-

रूपजगत् सत्य सिद्ध होवे नहीं। किंतुमिथ्या सिद्ध होवै है और जो वस्तु जिसविषै कल्पित होवैसो वस्तु तिसते भिन्नसिन्न सिद्धहोवैनहीं।
(३) याते ब्रह्मसे जगत् का वास्तवअभेदहै।
(४) ताते ब्रह्मसे जगत्की भिन्नता नहीं है।
इसरीतिसे कनकविषै कुन्डल की प्रतीत के दृष्टांत से ब्रह्म से भिन्न जगत् के सत्यता की भ्रांति निवृत्ति होवै है।

* १३४ प्रश्न— भ्रांति सो क्या है?

उत्तरः—भ्रांति सो अध्यास है।

* १३५ प्रश्न—अध्यास सो क्या है?

उत्तरः—भ्रांतिज्ञानका विषय जो मिथ्या वस्तु और भ्रांतिज्ञान तिसका नाम अध्यास है।

* १३६ प्रश्नः—यह अध्यास कितने प्रकार का है ?

उत्तरः-ज्ञानाध्य सऔर अर्थाध्यास। इस भेदते अध्यास दोभांतिका है ॥ तिनमें अर्थाध्यास । केवलसंबंधाध्यास[120] संबंध[121] सहित सम्बधी का अध्यास[122] । केवलधर्माध्यास[123] । धर्म सहितधर्मीका अध्यास । अन्योन्याध्यास[124]। अन्यतराध्यास[125] । इसभेदते षट्प्रकारका है ।

अथवा स्वरूपाध्यास[126] और संसर्गाध्यास[127] । इस भेदते अर्थाध्यास दोप्रकारका है ।

१ ताके अन्तर्गत[128] उक्त षड्भेद हैं। और
२ उपरि लिखे भेदभ्रांतिआदिकपांचप्रकारके भ्रम भी याही के अंतर्गत[129] हैं । और
१ आगे नेडेहीं कहियेगा जो आत्माअनात्मा- के विशेषणोंका अन्योन्याध्यास सो भी याही के अंतर्गत है । सो ताके टिप्पणविषै दिखाया जावेगा ॥

॥१२०॥ अनात्माविषै आत्माका अध्यास होवै है। तहाँ आत्मा का अनात्मा के साथ तादात्म्यसंबंध अध्यस्त है। आत्माका स्वरूप नहीं। याते अनात्माविषै आत्मा का केवल संबंधाध्यास है ॥।

॥१२१॥ आत्माविषै अनात्माका सबंधऔरस्वरूप दोनों अध्यस्त हैं। याते आत्माविषै अनात्माका सबंध सहित सम्बन्धी का अध्यास है।

॥१२२॥ स्थूलदेहके गौरताआदिक औरइन्द्रियनके दर्शनआदिकधर्मकाही आत्माविषै अध्यास होवै है। तिनके स्वरूप का नहीं याते आत्माविषै देहऔरइन्द्रियनके केवलधर्मका अध्यास है।

॥१२३॥ अन्तःकरण के कर्त्तापनाअदिकधर्म और स्वरूप दोनों आत्माविषै अध्यस्त हैं। याते अन्तःकरण का आत्माविषै धर्मी का अध्यास है।

॥१२४॥ लोहे और अग्निकी न्यांई आत्माविषै अनात्माका और अनात्माविषै आत्माका जो अध्यास सो अन्योन्याध्यास है ॥

॥१२५॥ अनात्माविषै आत्मा स्वरूप अध्यस्त नहीं। किंतु आत्माविषै अनात्माका स्वरूप अध्यस्त है। यह ही अन्यतराध्यास है॥ दोनों में से एक का अध्यास अन्यतराध्यास कहिये हैं॥

॥१२६॥ ज्ञानसे बाध होने योग्य वस्तु। अधिष्ठानविषै स्वरूपसे अध्यस्त होवै है। देहादिअनात्माका अधिष्ठानके ज्ञानसे बाध होवै है। याते ताका आत्माविषै स्वरूपाध्यास है॥

॥१२७॥ बाध के अयोग्यवस्तुका स्वरूप अध्यास होवै। किन्तु ताका सम्बन्ध अध्यस्त होवै है। याते अनात्माविषै आत्माका संसर्गाध्यास है। याही कों सम्बन्धाध्यास भी कहै हैं॥

॥१२८॥ केवलधर्माध्यास धर्मसहित धर्मी का अध्यास औंर अन्यतराध्यास। ये तीन स्वरूपाध्यास के अन्तर्गत हैं॥

केवल संबन्धाध्यास। संसर्गाध्यासही है ॥
सम्बन्धसहित सम्बन्धीका अध्यास। संसर्गाध्यास सहित स्वरूपाध्यास है।
अन्यान्याध्यास मैं संसर्गाध्यास और स्वरूपाध्यास दोनों हैं। काहेते

१ आत्माका स्वरूप तो सत्य है। याते अध्यस्त नहीं किंतु ताकासंसर्ग कहिये तादात्म्यसबन्ध अनात्मा-विषै अध्यस्त है। याते ताका संसर्गाध्यास हैं। और
२ अनात्माका स्वरूपही आत्माविषै अध्यस्त है। याते ताका स्वरूपाध्यास है ॥
ताते अन्योन्याध्यास दोनों के अन्तर्गत है ॥

॥१२९॥ मंदभ्रांतिआदिकप्रपांचप्रकारका भ्रमजो पूर्व लिखा है। तिनमें

सङ्गभ्रांति को छोड़िके चार प्रकारका भ्रम। स्वरूपा ध्यास के अन्तर्गत हैं।
सङ्गभ्रांति। संसर्गाध्यासके भीतर है ॥

* १३७ प्रश्नः—अहंकारादिक आत्मा का और आत्मा का अध्यास जानने में विशेष उपयोगी अर्थात् सर्व अध्यासों में अनुस्यूत कौन अध्यास है ?

उत्तरः—अन्योन्याध्यास ।

* १३८ प्रश्नः—अन्योन्याध्यास सो क्या है ?

उत्तरः—परस्परविषै परस्परके अध्यास का
१३०
नाम अन्योन्याध्यास है ॥

* १३९ प्रश्नः—आत्मा और अनात्मा का परस्पर-अध्यास किसरीति से हैं ।

उत्तरः—

१–४ सत् चित् आनन्द और अद्वैतपनाये चार विशेषण आत्माके हैं ॥

१–४ असत् जड़ दुःख और द्वैतसहितपना ।
चारीविशेषण आत्माके हैं ।

तिनमैं

॥१३०॥ इहां सर्वअध्यासनके स्वरूप और उदाहरण विस्तारके भयसे विशेष लिखे नहीं। किन्तु संक्षेप से लिखे हैं। परन्तु अन्योन्याध्यासका स्वरूपतो विशेषउपयोगी जानि स्पष्ट दिखाया है ॥ तामें

१ अनात्माके धर्म दुःख और द्वैतसहितपना। आत्माके आनन्द और अद्वैतपनेविषै स्वरूप से अध्यस्त होयके तिनको ढांपे हैं। और

२ आत्मा के धर्म सत् अरु चित्। अनात्मा के असत्ता और जड़ताविषै संसर्ग, संबन्ध) द्वारा अध्यस्त होयके तिनको ढांपे हैं॥

कार्य सहित अज्ञानसे जो आवृत (ढांया होवै। सो अधिष्ठान कहिये है।

इस रीति से आत्माका और अनात्माका यह अन्योन्याध्यास भी संसर्गाध्यास और स्वरूपाध्यास के अन्तर्गत है॥

१–२अनात्माके दुख और द्वैतसहितपना इन दोविशेषणोंने आत्माके आनन्दओर अद्वैतपनेकोढांपे हैं। ताते आत्माविषै

(१)"मैं आनन्द ओर अद्वैतरूप हू" ऐसी प्रतीत होवै नहीं।

(२) किंतु "मैं दुःखी ओर ईश्वरादिकसे भिन्न हू" ऐसी प्रतीत होवै है॥

३–४ आत्माको सत् ओर चित् इनदोविशेषणोंने अनात्माके असत् ओर जड़पनेको ढापे हैं ताते अनात्मा जो अहंकारादिक। तिसविषै

(१) "असत् है। अभान (जड़) रूप है।" ऐसी प्रतीत होवै नहीं।

(२) किंतु"विद्यमान है ओर भासता (चेतन) ऐसी प्रतीत होवै है॥

इसरीतिसे आत्मा और अनात्मा का
१३१
परस्पर अध्यास है ॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदय प्रपंचमिथ्या
त्ववर्णननामिका षष्टकला समाप्त ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमकलाप्रारंभः ॥ ७ ॥

॥ आत्मा के विशेषण ॥

१३२
॥ इन्द्रविजय छन्द ॥

आत्मा विशेषण है जु दुभांति ॥
विधेय निषेध्य कहो निराधारे ॥
१३३
वे सब जानि भले गुरु शास्त्र सु।
सो अपनो निजरूप निहारे ॥

॥१३१॥ ब्रह्म और ईश्वर का अरु कूटस्थ औ
जीवका जो परस्पर अध्यास है सो आगे ग्यारह
कलाविषै कहैगे ॥

सच्चिदानन्द रु ब्रह्म स्वयंपर–
काश कुटस्थ रु साक्षि विचारे ।
द्रष्ट अरु उपद्रष्ट रु एकहि ।
आदि विधेय विशेषण धारे ॥ १४ ॥
[134] अंत विहान अखंड असंग रु ।
[135] अद्वय जन्मबिना अधिकारे ॥
चारि [136] अकारबिना अरुव्यक्त ।
न [137] माननेको विषयो जु निकारे ॥
कर्म करीहि बढ़ै न घटै इस
हेतुहि अव्यय वेद पुकारे ॥
अक्षर नाश बिना कहिये इस
आदि निषेध्य पीतांबर सारे ॥ १५ ॥

॥१३२॥ इन्द्र विजयछंद ठुमरी और लावनी में गाया जावै है ॥१३३॥ ये विधेय निषेध्य विशेषण ॥
॥१३४॥ अनन्त ॥१३५॥ अजन्मा ॥
॥१३६॥ निराकार ॥१३७॥ अप्रमेय ॥

•१४० प्रश्नः-आत्मा के विशेषण कितने प्रकारके हैं

उत्तरः—आत्माके विशेषण । विधे[१३८]
कहिये साक्षात्बोधकऔरनिषेध्य[१३९]कहियेप्रपंच
के निषेधद्वारा बोधक भेदते दो प्रकारके हैं॥

॥१३८॥ जैसे "सधवा,, शब्द विधवा स्त्री का
निषेध करिके सुवासिनीस्त्री का साक्षात् बोधक है।
तैसे "सत,, आदिकविधेयाविशेषण "असत,, आदिक
प्रपंचके विशेषणों का निषेध करिके सदादिरूप ब्रह्म
के साक्षात बोधक हैं। याते "विधेय,, कहिये हैं।

॥ १३९ ॥ जैसे अविधवाशब्द विधवा स्त्री का
निषेध करिके। अर्थात ताते विलक्षण सुवासिनीजो
का बोधक है। तैसे अनन्तआदिक जे निषेधविशेषण
हैं। वे अनन्तआदिक प्रपंच के धर्मों का निषेध करि
के अर्थात तिनते विलक्षण ब्रह्म के बोधक हैं। याते
"निषेध्य,, कहिये हैं॥

*१४१प्रश्न—:आत्माके विधेयविशेषण कौन से हैं ?

उत्तर:—१ सत् २ चित् ३आनन्द ४ ब्रह्म ५ स्वयंप्रकाश ६ कूटस्थ ७ साक्षी ८ द्रष्टा ९ उपद्रष्टा १० एक इत्यादि है ॥

*१४२ प्रश्न:—सत आत्मा कैसे है ?

उत्तर–१जिसकी ज्ञानसे भी औरकिसी से भी निवृत्ति होवै नहीं। सो सत् है ॥

आत्माकी जातै ज्ञानसे वा औरकिसी से भी निवृत्ति होवै नहीं। यातै आत्मा सत् है ॥

*१४३ प्रश्न:—चित आत्मा कैसे हैं ?

उत्तर—२ अलुप्तप्रकाशसो चित् है ॥ आत्मा जातै अलुप्तप्रकाशरूप है यातै आत्मा चित् है ॥

• १४४ प्रश्नः – आनन्द आत्मा कैसे है ?

उत्तरः—३ परम कहिये सर्वसे अधिक प्रीतिका जो विषय। सो आनन्द है ॥

आत्मा विषे जाते सर्वकी परमप्रीतिहै। याते आत्मा आनन्द है ॥

•१४५ प्रश्नः—ब्रह्मरूप आत्मा कैसे हैं ?

उत्तर—४ .

(१) आत्मा सत्चित् आनन्दरूप श्रुतियुक्ति और अनुभवसे सिद्ध है। और

(२) ब्रह्मभी शास्त्र (उपनिषद्) विषै सत्चित् आनन्दरूप कह्या है।

ताते आत्मा ब्रह्मरूप है ॥ किंवा

ब्रह्मनाम व्यापकका है ॥ जिसका देशते अन्त न होवे व्यापक कहिये है ॥

[१] आत्मा जो ब्रह्म से भिन्न होवे तो देश ते अन्तवाला होवेगा ।

[२] जिसका देशते अन्त होवे तिसका कालते भी अन्त होवे है । यह नियमहै । जिसका देशकालते अंत होवे सो अनित्य कहिये है । ताते आत्मा अनित्य होवेगा।याते आत्मा ब्रह्म से भिन्न नहीं । और

[१] आत्मासे भिन्न जो ब्रह्म होवेतो ब्रह्म अनात्मा होवेगा ॥

[२] जो अनात्मा घटादिक है सो जड़ है । ताते आत्मासे भिन्न ब्रह्म । जड़ होवेगा ।

सो वार्त्ता श्रुति से विरुद्ध है । याते आत्मासे भिन्न ब्रह्म नहीं । याते ब्रह्मरूप आत्मा है ॥

* १४६ प्रश्न —स्वयंप्रकाश आत्मा कैसे है ?

उत्तर ५

(१) जो दीपककी न्यांई आपके प्रकाशने-
विषे किसकीभी अपेक्षा करे नहीं। और
(२) आप सर्वका प्रकाशक होवे।
सो स्वयंप्रकाश कहिये है ॥

ऐसा आत्माही है याते आत्मा स्वयं प्रकाश है।

अथवा

(१) जो सदा अपरोक्षरूप होवे। और
(२) किसी ज्ञानका विषय न होवे।
सो स्वयंप्रकाश कहिये है ॥

आत्मा जाते अपरोक्षरूप है और प्रकाश रूप होनेते किसीभी ज्ञानका विषय [प्रकाश्य] नहीं। याते आत्मा स्वयंप्रकाश है ॥

*१४७ प्रश्नः—कूटस्थ आत्मा कैसे है ?

उत्तर—६ कूट नाम लोहारके अहिरनका है। ताकी न्यांई जो निर्विकार [अचल]रूपसे स्थित होवे। सो कूटस्थ कहिये है ॥

जैसे लोहार अनेकघाट घटता है। तो भी अहिरन ज्योंकात्यों रहता है। तैसेमनरूप-लोहार व्यवहाररूप अनेकघाटघटता है तो भी आत्मा ज्योंकात्यों रहता है। याते आत्मा कूटस्थ है ॥

कूटस्थ कहनेसे अचल और अक्रिय अर्थ से सिद्ध भया ॥

*१४८ प्रश्न—साक्षी आत्मा कैसे है ?

उत्तरः—७

[५] लोकव्यवहारविषै

[१]उदासीन कहियेरागद्वेषरहितहोवे।

[२] समोपवर्ती होवे। और

[३] चेतन होवे ।
सो साक्षी कहिये है ॥
जाते आत्मा
[१] देहादिकसे उदासीन है । और
[२] समीपवर्ती है । और
[३] चेतन कहिये अजड़प्रकाश है ।
याते आत्मा साक्षी है ।

[२] वा अन्तःकरणरूप उपाधिवाला चेतन साक्षी कहिये है ॥

[३] वा अंतःकरण और अंतःकरणकी वृत्तिनविषै वर्तमान चेतनमात्र [केवल। चेतन] साक्षी कहिये हैं ॥
ऐसा आत्मा है । याते साक्षी है ॥

●१४९ प्रश्नः— द्रष्टा आत्मा कैसे हैं ?

उत्तर–८ देखनेहारा जो होवे सो द्रष्टा कहिये है।

आत्मा जाते सर्वदृश्यका जाननेहारा है याते आत्मा द्रष्टा हैं ॥

●१५० प्रश्न —उपद्रष्टा आत्मा कैसे है ?

उत्तरः— ९ जैसा

(१–१५) यज्ञशालाविषै यज्ञकार्यके करनेहारे १५ ऋत्विज होवे है । और

(१६) सोलवां यजमान होवे है । और

(१७) सतराभी यजमानकी स्त्री होवेहै। और

(१८) अठारहवां उपद्रष्टा कहिये पास बैठके देखनेहारा होवे है सो कछु भी कार्य करता नहीं ॥

तैसे

[१-१५] स्थूलदेहरूप यज्ञशालाविषै पाँचज्ञानइंद्रिय पाँचकर्मइंद्रियओर पाँच प्राण। ये १५ ऋत्विज हैं।

[१६] सोलवां मनरूप यजमान है। और

[१७] सतराभीं बुद्धिरूप यजमानकी स्त्री है

[१८] ये सर्व आप आपके विषय के ग्रहण करनेरूप भोगमय यज्ञ का कार्य करते है और इन सर्वका समीपवर्ती जाननेरूप आत्मा अठारवां उपद्रष्टा है॥

*१५१ प्रश्न—एक आत्मा कैसे है ?

उत्तर—१० आत्माका सजातीय चेतनहियै जातिवाला और आत्मानहीं। याते आत्मा एक है।

इत्यादिक आत्मा के विधेयविशेषण है॥

●१५२ प्रश्न–आत्मा के निषेध्य विशेषण कौनसे हैं ?

उत्तर—१ अनन्त २ अखण्ड ३ असङ्ग ४ अद्वितीय ५ अजन्मा ६ निर्विकार ७ निराकार ८ अव्यक्त ९ अव्यय १० अक्षर इत्यादिक हैं ।

●१५३ प्रश्न—अनन्त आत्मा कैसे है

उत्तर—१

(१) आत्मा व्यापक है ॥ ताते आत्माका देशते अन्त नहीं । और

(२) जाते आत्मा नित्यहै । ताते आत्मा का कालते अन्त नहीं । और

(३) जाते आत्मा अधिष्ठान होनेते सर्व का स्वरूप है । ताते आत्माका वस्तुते अंत नहीं । और

जाते जात्माकादेशकाल और वस्तुते अंत नहीं कहिये परिच्छेद नहीं ताते आत्मा अनन्त है ।

*१५४ प्रश्न—अखन्ड आत्मा कैसे है?
उत्तर—२
(१) जीवईश्वरका भेद। जीवनका परस्पर भेद। जीवजडका भेद। जडईश्वरका भेद। जड जड़का भेद। ये पांचभेद हैं। तिनतें आत्मा रहित है अथवा
(२) सजातीय विजातीय स्वगत भेदतें आत्मा रहित है॥
याते आत्मा अखन्ड है॥
*१५५ प्रश्नः—असंग आत्मा कैसे है?
उत्तरः—३ सङ्ग नाम संबंध का है॥
सो संबंध तीन प्रकारका हैः—(१)सजातीय संबंध (१)विजातीयसंबंध (२) स्वगतसंबंध
(१)अपनी जातिवाले से जो संबंध है। सो सजातीयसंबंध है। जैसे ब्राह्मण का अन्य ब्राह्मण से संबंध है॥

(२) अन्यजातिवालेसे जो सम्बन्ध हैं। सो विजातीयसम्बन्ध हैं। जैसे ब्राह्मणका शूद्र से सम्बन्ध है।

(३) अपने अवयवनसे कहिये अङ्गनसे जो सम्बन्ध है। सो स्वगतसम्बन्ध है। जैसे ब्राह्मण का अपने हस्तपादमस्तकादिकअंगनसे सम्बन्ध है॥

(१) [१] आत्मा (चेतन) एक है। ताते ताकी जाति नहीं॥ और

[२] जीव ईश्वर ब्रह्मा विष्णु शिव मैं तू इत्यादिक भेद तो उपाधि के किये है। ताते मिथ्या है॥ याते आत्माका काहूके साथ सजातीयसम्बन्ध बने नहीं।

तैसे आत्मा अद्वैत है और सत् है तिसते भिन्न माया (अज्ञान) और माया का

कार्य स्थूलसूक्ष्मप्रपंच प्रतीत होवे है। सो असत् है और असत् कुछ वस्तु नहीं। याते आत्मा का काहूके साथ विजातीय संवन्ध बने नहीं॥

(३) तैसे आत्मा निरवयव है और सच्चिदानन्दादिक तो आत्मा के अजयव नहीं किन्तु एकरूप होनेते आत्माका स्वरूप है ताते आत्मा का काहू के साथ स्वातसंवन्ध बने नहीं॥

इसी रीतिसे आत्मा संवन्ध है रहित है॥ याते असंग है।

•१५६ प्रश्न—अद्वैत आत्मा कैसे है?

उत्तर—४ द्वैत जो प्रपंच। सो स्वप्नकी न्याँई कल्पित होवेते वास्तव नहीं है। याते आत्साद्वैतसे रहित होनेते आत्मा अद्वैत है।

*१५७ प्रश्न—अजन्मा आत्मा कैसे है ?

उत्तर—स्थूलदेह का धर्म जन्म है ॥ सूक्ष्मदेहका धर्म भी नहींतो आत्मा का धर्म जन्म कहां से होवेगा ?

फेर जो आत्माका जन्म मानिये तो आत्मा का मरण भी मानना होवेगा ताते आत्मा अनित्य सिद्ध होवेगा। सो परलोकवादी आस्तिकनकोअनिष्टकहिये अवांछितहै। काहेते

(१) जन्ममरणवाला वस्तु है ताका आदि अन्तविषै अभावहै। तासे पूर्व जन्मविषै आत्मा नहीं था। और तिसके कर्म भी नहीं थे। तब इह जन्मविषै आत्माको कर्मसे बिना भोग होवेहै और

(२) मरणसें अनन्तर आत्मा नहीं होवेगा। ताते इसजन्म विषै किये कर्मका भोग से बिना नाश होवेगा।

ताते वेदोक्तकर्मकी व्यर्थता होवेगी। याते आत्माका धर्म जन्म नहीं॥ ताते आत्मा अजन्मा है। और

अजन्मा कहनेसे अजर अमर अर्थसेसिद्ध भया॥

*१५८ प्रश्नः—निराकार आत्मा कैसे है ?

उत्तर—६ जैसे [१] घटके जन्म [२] अस्तिपना कहिये प्रगटता [३] वृद्धि [४] विपरिणाम [५] अपक्षय [६] विनाश। ये षट्धर्म है। परंतु घटविषै स्थित और घटसे भिन्न जो आकाश। तिसके धर्म नहीं॥

तैसे

(१) "देह जन्मता है,, यह जन्म ॥
(२) " देह जन्म्या है" यह अस्तिपना
[पूर्व नहीं था । अब है] ॥
(३) "देह बालक भया,, यह वृद्धि ॥
(४) "देह युवा भया,, यह विपरिणाम ॥
(५) "देह वृद्ध भया" यह अपक्षय ॥
(६) "देह मरणको पाया,, यह बिनाश ॥

ये षट्‌बिकार देहके धर्म हैं । देहको जानने हारा और देहसे न्याराजो आत्मा है । तिसके धर्म नहीं ॥

इस रीतिसे षट्‌विकारनते रहित आत्मा निर्विकार है ॥

●१५९ प्रश्न—निराकार आत्मा कैसे है ?

उत्तर—७ [१] स्थूल [२] सूक्ष्म [३] लम्बा [४] टुंका कहिये छोटा। ये चार प्रकारके जगत्‌विषे आकार हैं ॥

(१) आत्मा। इंद्रिय और मनका अविषय होनेते सूक्ष्म है। ताते स्थूल नहीं ॥

(२) आत्मा व्यापक है। ताते सूक्ष्म नहीं। कहिये अणु नहीं ॥

(३-४) आत्मा सर्वठिकाने ओतप्रोत है। ताते लम्बा और टुंका नहीं ॥

याते आत्मा निराकार है ॥

●१६० प्रश्न—अव्यक्त आत्मा कैसे है ?

उत्तर—८ आत्मा। जाते मनइन्द्रिय गु आदिकका अगोचर होनेते अस्पष्ट है। याते आत्मा अव्यक्त है॥

*१६१ प्रश्नः—अव्याय आत्मा कैसे है ?

उत्तर—९ जैसे कोठे मैं धान्यके निकास ने करि धान्य का व्यय कहिये घटना होवे है। तैसे आत्मा का व्यय होवे नहीं। यातै आत्मा अव्यय है ॥

*१६२ प्रश्न—अक्षर आत्मा कैसे है ?

उत्तर—१० आत्मा जातेअक्षर कहिये नासते रहित है। यातें आत्मा अक्षर है ॥ याहीको अक्षज। अमृत और अविनाशी भी कहे हैं। इसरीतिसे आत्माके निषेध्यविशेषण हैं ॥

*१६३ प्रश्न ये कहे जो आत्मा के विशेषण। सो परस्पर अभिन्न किसरीति से हैं ?

उत्तर—सच्चिदानन्दादिक जो आत्मा के गुण होवे तो परस्पर भिन्न होवे। और ये आत्माके गुण नहीं। किन्तु स्वरूप हैं। याते परस्परभिन्न नहीं किंतु अभिन्न है। और

१ एक ही आत्मा नाशरहित है ॥ याते सत
कहिये है। और

२ जड़से विलक्षण प्रकाश रूप है। यातेचित्त
कहिये है। और

३ दुःखसे विलक्षण मुख्य प्रीतिका विषयहै।
याते आनन्द कहिये है ॥

ऐसे सर्व विशेषणनविषै जानना ॥

दृष्टान्तः—

जैसे एकही पुरुष

१ पिताकी दृष्टिसे पुत्र कहिये है और

२ पितामहकी दृष्टिसे पौत्र कहिये है। और

३ पितृभ्राताकी दृष्टिसे भ्रातज कहियेहै। और

४ मातुलकी दृष्टिसे भाणज कहिये।

किंवा जैसे एकही संन्यासी ।
१ पशूस्त्री गृहस्थ अदंडो आदिकनकी दृष्टिसे मनुष्य पुरुष त्यागी दण्डी इत्यादि विधेयविशेषण करिके कहिये है ॥ और
२ घट पाषाण वृक्ष आदिक की दृष्टिसे अघट अपाषाण अवृक्ष आदिक निषेध्यविशेषणोंकरिके कहिये है ॥
तैसे एकही आत्मा प्रपंचके विशेषण असत् जड़दुख और अंगखडसङ्ग आदिककी दृष्टिसे सत्‌चित आनन्दादिक और अनन्तआदिक कहिये हैं ।
इस रीतिसे कहे जो आत्मा के विशेषण सो परस्पर भिन्न नहीं । किंतु अभिन्न है ॥
इति श्रीविचार चन्द्रोदये आत्माविशेषणवर्णन नामिका सप्तमकला समाप्ता ॥७॥

॥ सत्चित् आनन्दका विशेषवर्णन ।

॥ इन्द्रविजय छन्द ॥

सच्चिदानन्दसरूपहि मैं यह ।
सद्गुरु के मुखसे पहिचान्यो ॥
जागृत स्वप्न सुषुप्ति जु आदिक
तीनहुँ,कालहिमैं परमान्यो ॥
जागृतआदि लयाविधि तीनहुं
कालहि हों इसते सब मान्यो ॥
तीनहुं कालविषं सब जानहुं ।
या हित मैं चिदरूपहि जान्यो ॥ १६ ॥

मैं प्रिय हूं धन पुत्र रुपुद्गल—[140]
आदिकते त्रयकाल अगान्या ।[141]
आतमअर्थं सवे प्रिय आतम ।
आपहि है प्रिय दु:ख नसान्यो ॥
या हित मैं सबते प्रियतम्म रु ।
हो परमानन्द दुःखहि भान्यो ॥
देह दशादि अतीत सु आतम ।[142]
पूरणब्रह्म पीतांबर गान्यो ॥ १७ ॥

१६४ प्रश्नः—सत् सो क्या है ?
उत्तर—तीनकाल में जो अबाधित होवै । सो सत् है ॥

१६५ प्रश्नः—चत् सो क्या है ?
उत्तर—२ तीनकालमें जो सर्व को जाने सो चित् है ॥

॥ १४० ॥ स्थूलशरीर ॥ १४१ तत्व ॥
॥ १४२ ॥ अवस्थाआदिक ते ॥

•१६६ प्रश्नः—आनन्द सो क्या है ?

उत्तर—३ तीनकालमैं जो परमप्रेम का विषय होवे। सो आनन्द है ॥

•१६७ प्रश्न—मैं सत् हूं यह कैसे जानना ?

उत्तर—१ तीनकालविषै मैं हूं। याते मैं सत् हूं यह ऐसे जानना ॥

•१६८ प्रश्न- तीनकाल विषै मैं हूं याते सत् हूं यह कैसे जानना ?

उत्तर-

१ [१] जाग्रतविषै मैं हूं।

[२] स्वप्नविषै मैं हूं।

[३] सुषुप्तिविषै मैं हूं॥

२ [१] तैसे प्रातःकालविषै मैं हूं।

[२] मध्यान्हकालविषै मैं हूं।

[३] सायंकालविषै मैं हूं॥

३ (१) तैसे दिवस विषै मैं हूं ।
(२) रात्रिविषै मैं हूं
(३) पक्षविषै मैं हूं ॥
४ (१) तैसे मासविषै मैं हूं ।
(२) ऋतुविषै मैं हूं ।
(३) वर्ष विषै मैं हूं ।
५ (१) तैसे बाल्यअवस्थाविषैं मैं हूं ।
(२) योवनअवस्थाविषै मैं हूं ।
(३) वृद्धअवस्थाविषै मै हूं ॥
६ (१) तैसे पूर्वदेहविषै मैं हूं ॥
(२) इस देहविषै मैं हूं ॥
(३) भावीदेहविषै मैं हूं ॥

*यां कारणविषै "था" अरु "होऊंगा" ऐसे उच्चारण करनेके योग्य भूतऔर भविष्यतकालकाभी "हूं" ऐसे वर्तमानकी न्यांई उच्चारण किया है। सो

७ (१) तैसे युगविषै मैं हूं।

[२] मनुविषै मैं हूं।

[३] कल्पविषै मैं हूं।

८ [१] तैसे भूतकालविषै मैंहूं।

[२] वर्तमानकालविषै मैं हूं।

[३] भविष्यकालविषै मैं हूं।

इस रीतिसे तीनकालविषै मैं हूं याते सत् हूं। यह जानना॥

भूतादिकालको कल्पनामात्रता (मिथ्यात्व) के सूचना करने अर्थहै। और आत्माकी सदादिरूपताविषै श्रुति आदिक अनेकप्रमाणोंका सद्भावहै अरु ताकी किसी कालमें असत्तादिकविषै प्रमाणका अभावहै ताते सर्व कालोंविषै आत्मा सच्चिदानंदरूप सिद्धहै। यहजानना॥

•१६९ प्रश्न—मेरे मे भिन्न नामरूपवस्तुसहिततीन-
काल क्या जानने ?

उत्तर—मेरेसे भिन्न नामरूपवस्तु सहित तीनकाल असत् । ऐसे जानने ॥

•१७० प्रश्न—सत् और असत् का निर्णय किसी से होवै है ?

उत्तर—सत् और असत् का निर्णय अन्वय व्यतिरेकरूप युक्ति से होवै है ।

•१७१ प्रश्न—सत् असत् के निर्णयविषै अन्वय-
व्यतिरेक युक्ति कैसे जाननी ?

उत्तर—

१ (अ) जो मैं जाग्रत्‌विषै हूं।
सोई मैं स्वप्नविषै हूं।
याते मैं सत् हूं॥
(व्य) जाग्रत्‌मेरेविषै नहीं।
याते यह जाग्रत असत् है॥
(अ) जो मैं स्वप्नविषै हूं।
सोई मैं सुषुप्तिविषै हूं।
याते मैं सत् हूं॥
(व्य) स्वप्न मेरेविषै नहीं।
याते यह स्वरूप असत् है।
(अ) जो मैं सुषुप्तिविषै हूं।
सोई मैं प्रात:कालविषै हूं।
याते मैं सत् हूं॥
(व्य) सुषुप्ति मेरे विषै नहीं।
याते यह सुषुप्ति असत् है।

२ [अ] जो मैं प्रातःकालविषै हूं ।
सोई मैं मध्यान्हकाल विषै हूं ।
याते मैं सत् हूं ॥

[व्य] प्रातःकाल मेरेविषै नहीं ॥
याते वह प्रातःकाल असत् है ॥

[अ] जो मैं मध्यन्हकालविषै हूं ।
सोई मैं सायंकालविषै हूं ।
याते मैं सत् हुं ॥ ॥

[व्य] मध्यान्हकाल मेरे विषै नहीं ।
याते यह मध्यान्हकाल असत् है ।

[अ] जो मैं सायंकालविषै हुं ।
सोई मैं दिवस विषै हुं ।
याते मैं सत् हुं ॥

[व्य] सायंकाल मेरे विषै नहीं ॥
याते यह सायंकाल असत है ॥

४ (अ) जो मैं दिवसविषै हूं ।
सोई मैं रात्रिविषै हूं ।
याते मैं सत् हूं ॥
(व्य) दिवस मेरेविषै नहीं ॥
याते यह दिवस असत् है ॥
(अ) जो मैं रात्रिविषै हूं ।
सोई मैं पक्षविषै हूं ।
याते मैं सत् हूं ॥
(व्य) रात्रि मेरेविषै नहीं ।
याते यह रात्रि असत् है ।
(अ) जो मैं पक्षविषै हूं ।
सोई मैं मासविषै हूं ।
याते मैं सत् हूं ॥
(व्य) पक्ष मेरे विषै नहीं ।
याते यह पक्ष असत् है ।

४[अ] जो मैं मासविषै हूँ ।
सोई मैं ऋतुविषै हूँ ।
याते मैं सत्‌ हूँ ॥
[व्य] मास मेरेविषै नहीं ।
याते यह मास असत्‌ है ॥
[अ] जो मैं ऋतुविषै हूँ ।
सोई मैं वर्षविषै हूँ ।
याते में सत्‌ हूँ ॥
(व्य) ऋतु मेरे विषै नहीं ।
याते यह ऋतु असत्‌ है ॥
(अ) जो मैं वर्ष विषै हूँ ।
सोईमें बाल्यअवस्था विषै हूँ ॥
याते में सत्‌ हूँ ॥
(व्य) वर्ष मेरे विषै नहीं ।
याते यह वर्ष असत्‌ है ॥

५ [अ] जो मैं बाल्यअवस्था विषै हूँ ।
सोई मैं यौवनअवस्था विषै हूं ।
याते मैं सत हूं ॥
(व्य) बाल्यअवस्था मेरे विषै नहीं ।
याते यह बाल्यअवस्था असत है ॥
(अ) जो मैं यौवनअवस्था विषै हू ।
सोई मैं वृद्धअवस्था विषै हू ।
याते मैं सत हू ॥
(व्य) यौवनअवस्था मेरेविषै नहीं ।
याते यह यौवन अवस्था असत है ॥
(अ) जो मैं वृद्धावस्था विषै हूं ।
सोई मैं पूर्वदेह विषै हूँ ।
याते मैं सत हू ॥
(व्य) वृद्धावस्था मेरे विषै नहीं ।
याते यह वृद्धावस्था असत है ॥

६ (अ) जो मैं पूर्वदेह विषै हूं ।
सोई मैं इसदेह विषै हूं ।
याते मैं सत् हूं ॥
(व्य) पूर्वदेह मेरे विषै नहीं ।
याते यह पूवदेह असत है ॥
(अ) जो मैं इसदेह विषै हूं ।
सोई मैं भावीदेह विषै हूं ।
याते मैं सत हूं ।
(व्य) यहदेह मेरे विषै नहीं ।
याते यह देह असत् है ॥
(अ) जो मैं भावीदेह विषै हूं ।
सोई मैं युगविषै हूं ।
याते मैं सत् हूं ॥
(व्य) भावीदेह मेरे विषै नहीं ।
याते यह भावीदेहअसत् है ॥

६ (अ) जो मैं युगविषै हूँ।
सोई मैं मनुविषै हूं।
याते मैं सत् हूँ ॥
(व्य) जो मेरे विषै नहीं।
याते यह युग असत् है ॥
(अ) जो मैं मनुविषै हूं।
सोई मैं कल्प विषै हूं।
याते मैं सत हूँ।
(व्य) मनु मेरेविषै नहीं।
याते यह मनु असत् है॥
(अ) जो मैं कल्प विषै हूं।
सोई मैं भूतकाल विषै हूं
याते मैं सतहूँ॥
(व्य) कल्प मेरेविषै नहीं।
याते यह कल्प असत् है॥

८ (अ) जो मैं भूतकालविषै हूं । सोई मैं
भविष्यत्काल विषै हूं । यातेमैं सत हूं
(व्य) भूतकाल मेरेविषै नहीं ।
याते यह भूतकाल असत् है ॥
(अ) जो मैं भविष्यतकालविषै हूं ।
सोई मैं वर्तमानकाल विषै हूं ।
याते मैं सत हूं ॥
(व्य) भविष्यतकाल मेरेविषै नहीं ।
याते यह भविष्यत्काल असत है ।
(अ) जो मैं वर्तमानकाल विषै हूं ।
सोई मैं सर्वकाल विषै हूं ।
याते मैं सत हूं ॥
(व्य) वर्तमानकाल मेरेविषै नहीं ।
याते यह वर्तमानकाल असत है ॥
इस रीति से सत असत् के निर्णयविषै
अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी ॥

* १७२ प्रश्न—चित कैसे हूं ?

उत्तर:—२ तीनकालविषै जानता हूं।
याते मैं चित् हूं ॥

* १७३ प्रश्न—तीनकालविषै मैं जानता हूं याते चि
हूं। यह कैसे जानना ?

उत्तर:—

१ (१) जाग्रतको मैं जानता हूं।
(२) स्वप्नको मैं जानता हूं।
(३) सुषुप्ति को मैं जानता हूं ॥

२ (१) तैसे प्रातःकाल को मैं जानता हूं।
(२) मध्यान्हकाल को मैं जानता हूं।
(३) सायंकाल को मैं जानता हूं।

३ (१) तैसे दिवस को मैं जानता हूं।
(२) रात्रि को मैं जानता हूं।
(३) पक्ष को मैं जानता हूं।

४ (१) तैसे मास को मैं जानता हूं।

[२] रितु को मैं जानता ।

[३] वर्ष को मैं जानता हूं ।

५ [१] तैसे बाल्यअवस्था को मैं जानताहूं ।

[२] यौवन अवस्था को मैं जानता हूं ।

[३] वृद्धावस्था को मैं जानता हूं ।

६ [१] तैसे पूर्वदेह को मैं जानता हूं ।

[२] इस देह को मैं जानता हूं ।

[३] भावीदेह को मैं जानता हूं ।

७ (१) तैसे युगको मैं जानता हूं ।

(२) मनु को मैं जानता हूं ।

(३) कल्प को मैं जानता हूं ।

८ (१) तैसे भूतकाल को मैं जानता हूं ।

(२) भविष्यतकाल को मैं जानता हूं ।

[३] वर्तमानकालको मैं जानता हूं ।

इसरीतिसे सबकालविषै मैं जानता हूं । याते

नित्य हूं । या जानता ।

• १७४ प्रश्न—मेरे से भिन्न नाम रूप वस्तु सहित तीन काल क्या जानने ?

उत्तर.—मेरेसे भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीन काल जड़ हैं । ऐसे जानने ॥

• १७५ प्रश्न—चित और जड़ का निर्णय किससे होवे है ?

उत्तरः—चित् और जड़का निर्णय अन्वय-व्यतिरेकरूप युक्ति से होवे है ॥

• १७६ प्रश्न—चित और जड़ के निर्णयविषैअन्वय व्य तरेकरूप युक्ति कैसे जाननी ?

उत्तरः—

१ (अ) जो मैं जाग्रतको जानता हूं ।
सोई मैं स्वप्नको जानता हूं ।
याते मैं चित् हूं ॥
(व्य) जाग्रत् मेरेको जाने नहीं ।
याते यह जाग्रत जड़ है ॥

(अ) जो मैं स्वप्नको जानता हूं ।
सोई मैं सुषुप्तिको जानता हूं ।
याते मैं चित्‌ हू ॥

(व्य) स्वप्न मेरे को जाने नहीं ।
याते यह स्वप्न जड़ है ॥

इत्यादि इस रीतिसे चित्‌ और जड़के निर्णय विषै अन्वयव्यतिरेक रूप युक्ति जाननी ॥

* १७७ प्रश्न—आनन्द मैं कैसे हूं ?

उत्तर:—३ तीनकालविषै मैं परमप्रिय हूं ।
याते मैं आनन्द हूं ॥

* १७८ प्रश्न—तीनकालविषैमैं प्रिय हूं यातेआनन्द हूं । यह कैसे जानना ?

उत्तर:—

[१] १-जाग्रत विषै में प्रिय हूँ।
२-स्वप्नविषै मैं प्रिय हूं।
३-सुषुप्ति विषै मैं प्रिय हूं।

[२] १ तैसे प्रातःकाल विषै मैं प्रिय हूं।
२-मध्यान्हकाल विषै मैं प्रिय हूं।
३-सांयकालविषै मै प्रिय हू।

[३] १-तैसे दिवसविषै मैं प्रिय हूं।
२-रात्रिविषै मैं प्रिय हूं।
३ पक्षविषै मै प्रिय हूं।

[४] १-तैसे मासविषै मैं प्रिय हूं।
२-ऋतुविषै मैं प्रिय हूं।
३-वर्ष विषै में प्रिय हूं।

[५] १-तैसे बाल्यअवस्थाविषै मैं प्रिय हूं।
२- यौवनअवस्थाविषै मैं प्रिय हूं।
३-वृद्धावस्था विषै मैं प्रिय हूं।

[६] १-तैसे पूर्वदेहविषै मैं प्रिय हूं ।
२- इस देह विषै मैं प्रिय हूं ।
३-भावीदेहविषै मैं प्रिय हूं ।

[७] १-तैसे युगविषै मैं प्रिय हूं ।
२-मनुविषै मैं प्रिय हूं ।
३-कल्पविषै मै प्रिय हूं !

[८] १-तैसे भूतकालविषै मैं प्रिय हूं ।
२-भविष्यतकालविषै मैं प्रिय हूं ।
३-वर्तमानकालविषै मैं प्रिय हूं ।

इसरीति से तीनकाल विषै परमप्रिय हूं ।
याते मैं आनन्द हूं । यह जानना ।

*१७९ प्रश्न—मेरे से भिन्न नाम रूप वस्तु सहित तीन काल क्या जानने ?

उत्तर:—मेरे सें भिन्न नामरूपवस्तुसहित तीनकाल दु:ख है ऐसे जानना ।

* १८८ प्रश्न – आनन्द और दुःखका निर्णय किससे होवे है ?

उत्तर :– आनन्द और दुःख का निर्णय अन्वयव्यतिरेक रूप युक्ति होवे है ॥

* १८९ प्रश्न-आनन्द और दुःखके निर्णयविषैं अन्वय व्यतिरेकरूप युक्ति कैसे जाननी ?

उत्तरः—

[अ] जो मैं जाग्रत्‌विषै [परम]प्रिय हूं ।
सोई मैं स्वप्नविषै प्रिय हूं ॥
१४३
याते मैं आनन्द हूं ॥

[व्य] जाग्रत मेरेको प्रिय नहीं ।
याते यह जाग्रत दुःख हैं ॥

इसरीति से आनन्द और दुःखके निर्णयविषै अन्वयव्यतिरेकरूप युक्ति जाननी ॥

॥१४३॥ जो जो जाग्रतआदिक काल आत्माविषै

* १८२ प्रश्न--मैं परमप्रिय हूँ। यह कैसे जानना ?

उत्तर:-दृष्टान्त:—

१ जैसे पुत्र के मित्रविषै प्रीति है। सो पुत्र-
  वास्ते है। और
२ पुत्रविषै जो प्रीति है। सो तिसके मित्र-
  वास्ते नहीं।
  याते पुत्र अधिकप्रिय है॥

भासता है सो सो काल यद्यपि दुःखरूप है। तथापि
१ अध्यास करिके आत्मा की चिदा भास द्वारा प्रिय
भासता है॥ तब अल्पकाल प्रिय भासते नहीं। याते
सर्वकालमैं व्यभिचारप्रीति है। याते ये वास्तव
दुःख रूप ही है। और
२ आत्मा मैं कहिये आपमैं अव्यभिचारी (सर्वदा
प्रीति है। याते आत्मा आनन्दरूप है।

१ तैसे धनपुत्रादिकविषै जो प्रीति है सो आत्मा के वास्ते है। और

२ आत्माविषै जो प्रीतिहै। सोधनपुत्रादिक के वास्ते नहीं।

याते आत्मा अधिकप्रिय है ॥

इसरीतिसे मैं परमप्रिय ॥ यह जानना ॥

१८३ प्रश्न—प्रीतिका न्यून अधिकभाव कैसे जानना

उत्तर—

१ जाग्रतविषै सर्वसे प्रिय द्रव्य है। काहेते धनवास्ते पुरुषदेश छोड़िके परदेश जाता है और अनेकनीचकर्म करता है। याते द्रव्य प्रिय है ॥

२ द्रव्यते पुत्र प्रियहै। काहेते पुत्र दुष्टकर्मकरिके राजगृहविषै बन्धनको पायाहोवे तब तिसको धन देके छुड़ावता है। याते धनते पुत्र प्रियहै।

३ पुत्रते शरीर प्रिय है । काहेते जब दुर्भिक्ष कहिये दुष्काल होवे, तब पुत्र को बेच के शरीर का निर्वाह करे है । याते पुत्रते शरीर प्रिय है ॥

४ शरीरते इन्द्रिय प्रिय है काहेते कोई मारने आवे तब इन्द्रियको छुपाय के "मेरे शरीर विषै मार । परन्तु आंख कान नाक मुख विषै मारना नहीं" ऐसे कहता है । याते शरीरते इन्द्रिय प्रिय है ॥

५ इन्द्रियते प्राण (मन) प्रिय है । काहेते किसी को दुष्कर्म करने से राजा का हुकुम भया होवे कि "इसके प्राण लेने" तब कहता है कि मेरे धन पुत्र स्त्री गृह लूट ल्यो ।

परन्तु प्राण मत लेना। तो भी राजाकी आज्ञा तो प्राण लेनेविषै है। तब कहता है कि "मेरा कान काटो। नाक काटो; हाथ काटो। पाँउकाटो। परन्तु मेरे प्राण मत लेना" याते इन्द्रियते प्राण प्रिय हैं।

६ प्राणसे आत्मा प्रिय है॥ काहेते किसी को अतिशयव्याधिसे पीड़ा होती होवे। तब कहता है कि 'मेरे प्राण जावे तब मैं सुखी होऊं', याते प्राणते आत्मा प्रिय है॥

इस रीति से प्रीति का न्यूनअधिकभाव जानना।

इति श्रीविचारचन्द्रोदय सच्चिदानन्दविशेष-वर्णवनामिका अष्टमकला समाप्ता ॥८॥

॥ अथ नवमकला प्रारम्भः ॥

❀ अवाच्यसिद्धान्तवर्णन ❀

—(⌣)—

॥ इन्द्रविजय छन्द ॥

ब्रह्म अहै मनवानि-अगोचर ।
शास्त्र और संत कहै अरु ध्यावें ।
वेद वदे लछ्मनादिकरीति रु ।
वृत्ति विश्राप्ति जनो मन लावे ।
है जु सदादिविधेयविशेषण ।
वे असदादिक भिन्न कहावे ।
सत्य अपेक्षिक[१४४] आदि विरोधि जु
अंस तजी परमार्थ[१४५] लखावे ॥१८॥

॥१४४॥ आपेक्षिकसत्य । वृत्तिज्ञान और विषयानन्दआदिक विरोधि जो अंश है । ताको त्यागिके ॥

॥१४५॥ वास्तवरूपजो निरपेक्षसत्य । चेतनरूपज्ञान औरस्वरूपानंदआदिक । ताकोलक्षणासे बोधन करे है॥

है जु अनन्त अखन्ड असंग रु
अद्वयआदिनिषेध्य रहावैं ॥

वे परपंच निषेध करी अव-
शेषितवस्तु गिराबिन गावैं ॥

यूं परमातम आतम देवही ।
वेद रु शास्त्र सबे सुरटावैं ॥

१४६
पण्डित त्यागि अभास पीतांवर ।
वृत्ति अहं अपरोक्षहि पावै ॥१६॥

॥१४६॥ पण्डितपीतांवर कहैं हैं कि—प्रभा(फलव्याप्तिको) त्यागिके अहं वृत्ति (वृत्तिव्याप्तिका) अपरोक्ष जाने ॥यह अर्थ है ॥

१४८ प्रश्न　ब्रह्मात्मा जब वाणी का विषय नहीं। तब सत्चित् आनन्दआदिक विशेषणसे कैसे कहिये है
१४८
उत्तर:–ब्रह्मात्मा के कितनेक विधेयविशेषण
१४८
है और कितनेन निषेधविशेषण हैं। तिनमैं
१ विधेयविशेषण जो सदादिकहैं। सो प्रपंच का निषेधकरिके अवशेष (बाकी रहे) ब्रह्मको
१४९
लक्षणासे साक्षात्बोधन करे। और
२ निषेधविशेषण जो अनन्तादिकहै। सो तो साक्षात्प्रपंचकाहीनिषेध करे है और तिसते विलक्षण ब्रह्मात्मा अर्थते सिद्ध होने है।
ताते ब्रह्मात्मा अवाच्य होनेते किसी विशेषण से नहीं कहिये है॥

॥१४७॥ "सत् है"। चित् है,। इस प्रकार विधिमुखसे ब्रह्मके बोधकपद विधेय विशेषण है।
॥१४८॥ अनन्त (अन्तवाला नहीं), 'अखंड-

(खांडवाला नहीं), इस प्रकार निषेधमुखसे ब्रह्मके बोधकपद निषेध्यविशेषण है।

॥१४६॥

१ (वा) माया और प्रपंचविषै आपेक्षिकसत्यता है और ब्रह्मविषै निरपेक्षसत्यता है। दोनों मिलि के "सत्" पद का वाच्य है। और

(ल) माया की सत्यता त्यागिके केवल ब्रह्मकी सत्यता लक्ष्य है।

२ (वा) अन्तःकरण की वृत्तिरूप ज्ञान और चेतनरू ज्ञान। दोनों मिलिके, 'चित्' पद का वाच्य है।

(ल) वृत्तिज्ञानको छोड़िके केवल चेतनरूप ज्ञान लक्ष्य हैं।

३ (वा) विषयानन्द। वासनानन्द और ब्रह्मानन्द। तीनों मिलके 'आनन्द' पदका वाच्य है॥

(ल) दोनों को छोड़िके केवल ब्रह्मानन्द आनन्दपद का लक्ष्य है।

४ (वा) माया और ताके कार्य आकाशादिकविषै आपेक्षिक व्यापकता है अरु ब्रह्म (आत्मा) विषं निरपेक्षव्यापकता है। दोनों मिलिके 'ब्रह्म' (विभु) पदका वाच्य है।

(ल) केवल ब्रह्म 'ब्रह्म' पद का लक्ष्य है।

५ (वा) साभासबुद्धिविषै निरपेक्षस्वप्रकाशताहै और चेतनविषै निरपेक्षस्वप्रकाशता है। दोनों मिलिके 'स्वयंप्रकाश, पद का वाच्य है।

(ल) केवलचेतन 'स्वयंप्रकाश' लक्ष्य है।

६ (वा) रज्जुआदिकविषै आपेक्षिकअविकारता है और चेतनविषै निरपेक्षिअविकारता है। ये दोनों मिलिके 'कूटस्थ' पदका वाक्य है।और

(ल) केवलचेतन, कूटस्थ, पदका लक्ष्य है।

७ (वा) लौकिकसाक्षी और मायाअविद्याउपहित चेतन (ब्रह्म और आत्मा) दोनों मिलके 'साक्षी' पदका वाच्य है। और

(ल) केवल मायाअविद्याउपहित चेतन 'साक्षी' पदका लक्ष्य है ।

८ (वा। साभासअन्तःकरणकी वृत्तिरूप दृष्टिकरिके विशिष्ट । सहित चेतन । द्रष्टा, पदका वाच्य है। और

(ल) केवलचेतनभाग द्रष्टा, पदका लक्ष्य है।

६ (वा) यज्ञका उपद्रष्टा और प्रत्यगात्मा दोनोंमिल के उपद्रष्टा पद का वाच्य है ।।

(ल) केवलप्रत्यगात्मा'उपद्रष्टा, पदका लक्ष्य है ।

१० (वा) लोकगतएकाकीपुरुष और सजातीयभेदरहित ब्रह्म 'एक' पदका वाच्य है ।

(ल) केवलब्रह्म एक पदका लक्ष्य है ।।

ऐसे अनुक्तअन्यविधेयविशेषणोंविषै भी जान लेना।

इस रीतिसे प्रपंच के 'असत् आदिकविशेषणों के निषेधक सदादि पदोंके अर्थविषैभी भागत्यागलक्षणा की प्रवृत्ति है ।।

१८५ प्रश्न—सदादिकविधेविशेषण । प्रपंच का निषेधकरिके अवशेषब्रह्म को कैसे बोधन करै हैं ?

उत्तर:—

१ सत् कहने से असत् का निषेध भया,वाकी रह्या सद्रूप । सो लक्षणासे सिद्ध है ॥

२ चित् कहने से जडका निषेध भया।बाकी रह्या चिद्रूप । सो लक्षणासे सिध्द है ॥

३ आनन्दकहनेसे दु:खका निषेधभया । बाकी रह्या आनन्द (सुख) रूप । सो लक्षणा से सिध्द है ।

४ ब्रह्म कहनेसे परिच्छिन्नका निषेध भया । बाकी रहा व्यापक । सो लक्षणासे सिध्दहै ।

५ स्वयंप्रकाश कहनेसे परप्रकाश का निषेध भया । बाकी रहा स्वयंप्रकाश । सो लक्षणा से सिध्द है ।

६ कटस्थ (अविकारी) कहने से विकार का निषेध भया। बाकी रहा विविकारी। सो लक्षणा से सिद्ध है॥

७ साक्षी कहने से साक्ष्यकानिषेध भया। बाकी रहा साक्षी सो लक्षणासे सिद्ध है।
८ द्रष्ट कहने से दृश्यका निषेध भया। बाकी रहा द्रष्टा। सो लक्षणा में सिद्ध है।

९ उपद्रष्टा कहनेसे उपदृश्यका कहिये समीप वस्तु का निषेध भया। बाकी रहा उपद्रष्टा सो लक्षणा से सिद्ध है।

१० एक कहनेसे नानाका निषेध भया। बाकी रहा एक। सो लक्षणा से सिद्ध है।

इसरीतिसे अन्यविधेयविशेषणनविषैभीजान

* १८६ प्रश्न—अनन्तादिकनिषेध्यविशेषण । प्रपंका निषेध कैसे करै हैं ?

उत्तर:—

अनन्तकहनेसे देशकालवस्तुकृतपरिच्छेदका निषेध बाकी रहा अनन्त । सो अर्थसे सिद्ध है ।।

इसरीति से अन्यनिषेध्यविशेषणन विषै भी जानना !

* १८७ प्रश्न—इन विशेषण का ऐसे अर्थ करने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर:—इन विशेषणका ऐसे अर्थ करने का प्रयोजन यह है कि चेतनको मनवाणीका अविषय करनैहारी श्रुतिके अर्थ का अविरोध

होवें हैं ॥ जाते गुण क्रिया जाति और संबंधादिक जो शब्द अरु मनकी प्रवृत्तिके निमित्त रूप धर्महै । सो ब्रह्म में नही है किन्तु निर्धर्मक होनेते ब्रह्म निर्विशेष है याते श्रुतिभी ताको मनवाणी का अविषय कहती है ॥

किंवा जो कुछ बोलना है सो द्वैतसे होवै हैं अद्वैतसे नहीं । याते इन विशेषणन का ऐसे अर्थ करने से श्रुतिविरुद्ध द्वैत की सिध्दि होवै नहीं और अद्वैत मुखसो समझने को शून्य होवें है ॥

इति श्रीविचारचन्द्रोय अवाच्य सिध्दान्त वर्णननामिका ववमकला समाप्ता ॥९॥

॥ अथ दशमकला प्रारम्भः ॥१०॥

❀ सामान्य विशेषचैतन्य वर्णन ❀

—(~)—

॥ इन्द्रविजय छन्द ॥

चेतन है जु समान विशेष सु ॥
दोविधसत्व सुजान समाने ॥
भ्रांति सरूप विशेष जु कल्पित ।
संसृति आश्रय सो तिहि भाने ॥
ज्यों रविबिंबो प्रतिबिंब जलादिक ।
सो रविरूप विशेष पिछाने ।
१५०
त्यों मतिमें प्रतिबिंब परातम ।
सो कलपीत विशेषहि जाने ॥२०॥

॥ १५० परमात्मा का प्रतिबिंब ॥

आवत जावत लोक प्रलोक हि ।
१५१
भोगत भोग जु कर्म निपाने ॥
१५२
सो सब चित-अभास करै अरु ।
शुद्ध सम.न महीं नहिं माने ॥

अस्ति रु भाति प्रिय सब पूरम-
ब्रह्म समान सु चे माने ।
नाम रु रूप तजो सत् चेतन ।
मोद पीतांबर आप पिछाने ॥२१॥

॥१५१॥ जो कर्म रचित भोग है। ताको भोगता है।

॥१५२॥ चेतनका प्रतिबिंब

◆ १८८ प्रश्न–विशेषचैतन्य सो क्या है ?

उत्तरः—अन्तःकरण और अन्तःकरणकीवृत्ति नविषैजो सामान्यचैतन्यब्रह्म का प्रतिबिंबरूप चिदाभास। सो विशेषचैतन्य है। १५३

◆१८९प्रश्न—चिदाभास का लक्षण क्या है ?

उत्तर—

१ चैतन्य (ब्रह्म)के लक्षणसे रहित होवै और

२ चैतन्य की न्यांई भासै।

सो चिदाभास कहिये है।

॥१५३॥ यहाँ चिदाभासरूप जो विशेष चैतन्य कहा है। सो षष्ठकलाविषै उक्त कल्पितविशेष अंश के अंतर्गत है।

१९० प्रश्न—यह चिदाभास विशेषचैतन्य काहेते कहिये है ?

उत्तरः—अल्पदेश और कालविषै जो वस्तु
१२६
होवै । सो विशेषकहिये है ॥ जाते चिदाभास अन्तःकरणदेश और जाग्रतस्वप्नकालवा अज्ञानकालविषै है याते विशेषचैतन्य कहिये है ॥

॥१५४ अधिष्टान और अध्यस्त । इस भेदते विशेषदोप्रकारका है ॥ तिनमें

१ भ्रांतिकालविषै जाको प्रतीति होवै नहीं किन्तु जाको प्रतीतसे भ्रांति की निवृत्ति होवै । अधिष्ठानरूपविशेष है । और

२–भ्रांतिकालविषै जाकी प्रतीत होवै और अधिष्ठान के ज्ञानकाल विषै जाकी प्रतीति होवै नहीं सो अध्यस्वरूप विशेष है ॥ याही को कल्पितविशेष भी कहे हैं ॥

१६१ प्रश्न—विशेषचैतन्यविषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तर—

दृष्टान्त—

१ जैसे सूर्यका प्रकाश सर्वत्र समान है। परन्तु सर्वठिकाने प्रतिबिंब होता नहीं और जहाँ जल वा दर्पणरूप उपाधि होवै तहाँ प्रतिबिंबरूपकरि विशेष भासता है ॥

२ किंवा जैसे सूर्यका प्रकाश सर्वत्र समान है। परन्तु सो वस्त्रकपास आदिकको जलावता नहीं और जहाँ आगिया (सूर्यकांतमणि) रूप उपाधि होवै। तहाँ अग्निरूपसे विशेषहोयके वस्त्रकपासआदिकको जलाता है ॥

तिनमैं

१ सामान्यरूप है सो सर्वदा ज्यों का त्यों होनेतें यथार्थ (बहुकालस्थाई) हैं। और

२ उपाधिकरि भासता है जो विशेषरूपसो व्यभिचारी होनैते अयथार्थ (अल्पकाल स्थाई) है।

१ तैसे सामान्यचैतन्य जो अस्ति भाति प्रिय सो सर्वत्र समान है। परन्तु तिसमैं बोलना चलना इत्यादिकविशेषव्यवहार होता नहींऔर
२ जहां अन्तःकरण उपाधि होवै तहां चिदाभासरूपसे विशेष चैतन्य होयके बोलवाचलना। कर्तापनाभोक्तापना। परलोक इस लोकविषै गमनआगमन। इत्यादिक विशेष व्यवहार होवै है।

तिनमैं

१ सामान्यचैतन्य जो ब्रह्मसो सत्य है। और
२ उपाधिकरि भासता है जो विशेषचैतन्य चिदाभास। सो मिथ्या है। तैसे

[१] पुन्यपापका कर्त्तापना ।

[२] सुखदुःखका भोक्तापन ।

[३] परलोकइसलोकविषै गमनागमन ।

[४] जन्ममरण ।

[५] चौरासीलाखयोनिकी प्राप्ति ।

इत्यादिकसंसाररूप धर्म भी चिदाभासके हैं । याते मिथ्या हैं ॥

* १९२ प्रश्न:—विशेषचैतन्य के जानने में क्या निश्चय करना ?

उत्तर:—

१ विशेषचैतन्य जो चिदाभास । और

२ तिसके धर्म ।

सो मैं नहीं और मेरे नहीं । किन्तु ये मेरेविषै कल्पित हैं॥मैं इनकाअधिष्ठान सामान्यचैतन्य इनसे न्यारा हूँ । यह निश्चय करना ॥

* १९३ प्रश्न—सामान्यचैतन्य सो क्या है ?

उत्तर—

१ जो आकाशकी न्यांई सर्वत्र परिपूर्ण है।
२ जो सर्वनारूपका अधिष्ठान है।
३ जो अस्तिभातिप्रियरूप
४ जो निर्विकारब्रह्म हैं।
सो सामान्य चैतन्य है।

* १९४ प्रश्न—ब्रह्म। सामान्यचैतन्य काहेते कहिये है ?

उत्तर:—अधिकदेश और कालविषै जोवस्तु होवै। सो सामान्य कहिये है॥

जाते ब्रह्म। बुद्धिकल्पित सर्वदेशऔर सर्व कालविषै व्यापक है। ताते ब्रह्म सामान्य चैतन्य कहिये है॥

• १९५ प्रश्न—सामान्य चैतन्य जानने विषै दृष्टांत क्या है ?

उत्तर:—

दृष्टांत:-जैसे एक रज्जुकेविषै नाना पुरुषन को किसीको दंडकी। किसीको सर्पकी। किसी को पृथ्वीके रेखाकी। किसीको जलधाराकी भ्रांति होवै है। तिस भ्रांतिविषै दोअंश हैं।

१ एक सामान्यइदंअंश है। और

२ दूसरा सर्पादिक विशेष अंश है॥ तिनमें

१ (१) 'यह' दंड है॥

(२) 'यह' सर्प है॥

(३) 'यह' पृथ्वी की रेखा है॥

(४) 'यह' जलधारा है॥

इसरीतिसे सर्पादिकविशेषअंशनविषैंसामान्य 'इदं' अंश कहिये 'यह' अंश सर्वत्र व्यापक है और सो रज्जुका स्वरूप है। सो सामान्य-

इदंअंश जाते

(१) भ्रांतिकालविषै भी भासता है। और

(२) भ्रांतिकी निवृत्तिकालविषै भी "यह" रज्जु है, इसरीति से भासता है।

याते सामान्यइदंअंश अव्यभिचारी होनेतें सत्य है। और

२ परस्परव्यभिचारी जो सर्पादिकविशेषअंश सो कल्पित है ॥

सिद्धान्त:-तैसे सर्वपदार्थनविषै पांचअंश हैं:-

१ अस्ति २ भांति ३ प्रिय ५ रूप ॥

१ 'घट है' यह अस्ति [सत्]

२ 'घट भासता है' यह भाति (चित्)।

३ 'घट प्यारा है। काहेते घट जल भरने को उपयोगी है। याते वह प्रिय (आनन्द)॥सर्प सहआदिक भी सर्पिणीऔर सिंहणीको प्रियहैं

४ 'घट' यह दो अक्षर का नाम है।

५ स्थूलगोल उदरवान्‌घटकारूप [आकार]है ।
ऐसे घटआदिकसर्वभूत औरभूतनकेकार्यनविषै
भी जानना ॥

यह बाहिरकेपदार्थनविषैपांचअंशदिखाये।तैसे

१ भीतरदेहआदिकविषै--

(१) 'मैं हूं' यह अस्ति है ।

(२) 'मैं भासता [जानता] हूं' यह भांति है ।

(३) 'मैं आपआपको प्यारा हूं' यह प्रिय है और

(४) देह । इन्द्रिय । प्राण । मन । बुद्धि । चित्त । अहंकार । अज्ञान और इनके धर्म । ये नाम हैं ।

(५) इनके यथायोग्य आकार । सो रूप है ॥

ये अन्तरके पदार्थनविषै पांचअंश दिखाये ॥

२ इन सबके नामरूपके त्याग कियेसे—

(१) 'पृथ्वी है'।

(२) 'पृथ्वी भासती है'।

(३) 'पृथ्वी प्रिय है'। काहेते पृथ्वी रहने को स्थान देती है।

(४) 'पृथ्वी' ऐसा नाम है। और

(५) 'गंधगुणयुक्त' रूप है॥

३ पृथ्वी के नामरूप के त्याग कियेसे—

(१) 'जल है'।

(२) 'जल भासता है'।

(३) 'जल प्रिय है'। काहेते जल तृषा को दूर करता है।

(४) 'जल ऐसा नाम है।' और

(५) 'शीतस्पर्शगुणयुक्त' रूप है॥

४ जलके नामरूपके त्याग कियेसे—

(१) 'तेज है'

(२) 'तेज भासता है,

(३) 'तेज प्रिय है' काहेते तेज शीत और अन्धकारको दूर करता है ।

(४) 'तेज' ऐसा नाम है । और

(५) 'उष्णस्पर्शगुणयुक्त' रूप है ॥

५ तेजके नामरूपके त्याग कियेसे—

(१) 'वायु है' ।

(२) 'वायु भासता है' ।

(३) 'वायु प्रिय है, । काहेते वायु पसीना दूर करता है ।

४) 'वायु' ऐसा नाम है । और

(५) 'रूपसहित और स्पर्शगुण युक्त रूप है ॥

६ वायुके नामरूपके त्याग कियेसे—

(१) 'आकाश है'।

(२) 'आकाश भासता है'।

(३) 'आकाश' ऐसा नाम है। और रहनेफिरनेको अवकाश देता है।

(४) 'आकाश' ऐसा नाम है। और

(५) 'शब्दगुणयुक्त' रूप है॥

७ आकाश के नामरूपके त्याग कियेसे-

(१) 'पीछे क्या है सो मैं जानता नहीं'। ऐसा अज्ञान है। सो

(२) 'अज्ञान भासता है'।

(३) 'अज्ञान प्रिय है' काहेते अज्ञानी जीवन को प्रिय है। और अज्ञान प्रपंच का कारण होने से जीवन का निर्वाह करता है।

(४) 'अज्ञान' ऐसा नाम है । और

(५) 'आवरणविक्षेप शक्तिवाला अनादि अनिर्वचनीय भावरूप' यह रूप है ॥

८ अज्ञान के नामरूप के त्याग कियेसे--

(१) 'कछु भी नहीं' है ऐसे प्रतीयमान सर्ववस्तुनका अभाव रहता है ।

(२) 'अभाव भासता हैं' ।

(३) 'अभाव सुखकालीनको प्रिय है' । याका ।

(४) 'अभाव' ऐसा नाम है । और प्रतीतिका विषय) रूप है ।

६ अभावके नामरूप के त्याग कियेसे–

(१) अभावत्वका स्वरूपभूतअधिष्ठान। सत्वस्तुही अवशेष रहता है सो

(२) अभावके अभावपनेको प्रकाशताहै। याते चित् है। और

(३) दुःखसे भिन्न है। याते आनंदहै।

इसरीति से

१ सर्वनामरूपविषै अनुगत अव्यभिचारी नामरूपका अधिष्ठानब्रह्म सामान्यचैतन्य है। सो सत्य ।और
१५५

॥१५५॥
१ सुषुप्ति मूर्छा समाधिका प्रकाशक सामान्य चैतन्य है॥

२ घटको मैं जानता हूँ, इसरीति है प्रमाता । प्रमाण और प्रमेयरूप त्रिपुटीका प्रकाशक साक्षी सामन्य-चैतन्य हैं ।

३ जाग्रदादिअवस्थाकी संधिका प्रकाशक सामान्य-चैतन्य है ।।

४ तैसे ही वृत्तिनकी संधिका प्रकाशक सामान्य-चैतन्य है ।।

५ अंगुष्ट के अग्रभाग का प्रकाशक सामान्य-चैतन्य है ।।

६ देशान्तरविषै वृत्ति गईहोवे। तब तिसके मध्यभाग का प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ।।

७ सूर्यचन्द्राकार वृत्ति हुयी होवे तिसके मध्य भागका प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ।।

८ 'मेरेको मैं नहीं जानता हूँ', ऐसे अज्ञानविशिष्ठ मेरे का प्रकाशक सामान्यचैतन्य है ।।

२ घटके नामरूप पटविषै नहीं और पटके
१५६
नामरूप घटविषै नहीं । यातें परस्पर व्यभि-
चार ये नामरूप मिथ्या है ॥

यह सामान्यचैतन्यके जाननेविषै दृष्टान्त है॥

१५६ प्रश्न—उक्त सामान्यचैतन्यरूप ब्रह्मकी सर्वतें अधिक सूक्ष्मता और व्यापकता कैसे है ?

उत्तर -

१ जो जो कार्य है । सोस्थूल और परिच्छिन्न होवे है । और

२ जो जो कारणहै । सो सूक्ष्म और व्यापक (अधिकदेशवर्ति) होवे हैं । यह नियम है ॥

याते ब्रह्म सर्वका कारणहै यातेसर्वसे अधिक सूक्ष्म और व्यापकहै । सो अब दिखावे हैं:-

॥१५६॥ जो वस्तु कहींकी होवे और कहीकी न होवे । सो वस्तु व्यभिचारी है ।

२(१) जाते समुद्रजलमें कठिन फेन और लवण होवे है। याते जान्याजावे है कि पृथ्वी जलका कार्य है। ताते पृथ्वी ते जल सूक्ष्म और व्यापक है॥

किंवा

(२) पृथ्वीके पाषाण आदिक अवयव वस्त्र-विषै डाले हुये निकसते नहीं। और

(४) पृथ्वीमें जहां २ खोद के देखो तहां २ जल निकसता है। और

(५) पुराणोंविषै पृथ्वी दशगुणाधिक-देशवर्ति जल कहा है।

ताते भी पृथ्वी ते जल सूक्ष्म और

(२) तैसे अग्निआदिकके ताप से शरीरविषै प्रस्वेद (पसीना) छूटताहै और वर्षा होवे है। याते जान्याजावे है कि जल अग्निकाकार्य है। तातें जलते अग्नि (ते) सूक्ष्म है । और व्यापक है ॥ किंवा

(२) जल वस्त्रविषै ठहरता नहीं परन्तु घट विषै ठहरता है । और

(३) सूर्यादिक का प्रकाश घटविषै भी ठहरता नहीं । और

(४) पुराणों विषै जलते दशगुणा आदिक- देशवर्त्तितेज कहा है ।

याते भी जलते तेज सूक्ष्म है और व्यापक है ॥

३ [१] तैसे अग्निका जन्मओरनाश पवन के आधीन है । याते जान्या जावे है कि तेज वायुका कार्य है। ताते तेजते वायु सूक्ष्म है ओर व्यापक है ॥ किंवा

[२] सूर्यादिकका प्रकाश घटादिपात्रविषै ठहरता नहीं परन्तु नेत्रसे दीखता है और वायु तो नेत्र से भी दीखता नहीं ॥ और

[३] पुराणोंविषै तेजते दशगुण अधिक वायु कह्या है ।

याते तेजसे वायु सूक्ष्म है और व्यापकहै ॥

४ [१] तैसे वायु की उत्पत्ति स्थितिऔरलय आकाश (पुलार) विषे ही होवे है याते जान्याजावे है कि वायु आकाश का कार्य है ॥ ताते वायु ते आकाश सूक्ष्म है और व्यापक है ॥

किंवा

[२] वायु नेत्रसे दीखता नहीं परन्तु त्वचासे स्पर्शगुण द्वारा ग्रहण होता है और आकाश तो त्वचासे भी ग्रहण होता नहीं। और

[३] पुराणविषे वायु ते दशगुणाअधिक देशवर्ति आकाश कहा है ॥

याते भी सो आकाश वस्तुते सूक्ष्म और व्यापक है ॥

५ (२) जैसे 'आकाशसे आगे क्या होवेगा' ऐसा विचार किये हुये मैं नहीं जानता हूँ' ऐसे बुद्धिके कुंठीभावका आश्रय (विषय) अज्ञानप्रतीत होता है याते जान्याजावे है कि आकाश अज्ञानका कार्य है। ताते सोअज्ञान आकाशते सूक्ष्म और व्याप है ॥

किंवा

(२) आकाशत्वचासे ग्रहण होता नहीं। परन्तु मनसे ग्रहण होता है। और मनसेभी ग्रहण होता नहीं। और

(३) आकाशते अनंतगुणअधिक अज्ञान शास्त्रविषे कहा है।

याते भी सो अज्ञान आकाशते सूक्ष्म और व्यापक है ॥

६(१) तैसे मैं नहीं जानता हूँ. इस अनुभव का विषय जो अज्ञान। ताका प्रकाश जानने वाले चेतनसे होवे है। और
(१) 'अज्ञान है।
(२) 'अज्ञान भासता है।
(३) अज्ञान अज्ञपुरुषको प्रिय है।'

इसरीतिसे अज्ञानविषै अनुस्यूत अस्तिभाति प्रियरूप ब्रह्मचेतन भासता है। याते अज्ञान ब्रह्मचेतनके आश्रित है। ताते ब्रह्मचेतन अज्ञानते सूक्ष्म और व्यापक है। किंवा

(२) अज्ञान मनकरि ग्रहण होता नहीं परन्तु 'मैं नहीं जानता हूँ इस अनुभवरूप लिंगकरि ताका अनुमान, होवे है। और ब्रह्मचेतन स्वयं प्रकाशरूप होवैते किसी भी प्रमाण का विषय नहीं। और

(३) शरीरविषै तिलकी न्यांई ब्रह्म के एकदेशविषै अज्ञान स्थित है । और अवशेष रहा ब्रह्म शुद्धस्वप्रकाश है । ऐसे श्रुतिविषै कहा है ।

यातेभी सो ब्रह्मचेतनअज्ञानते सूक्ष्मऔर व्यापक है ॥

इसरीतिसे सामान्यचैतन्यरूप ब्रह्मकीसर्वप्रपंच से अधिकसूक्ष्मता और व्यापकता है ।

* १६७ प्रश्न—सामान्यचैतन्य के जानने से क्या निश्चय करना है ?

उत्तर—

१ (१) अस्तिभातिप्रियरूप सामान्यचैतन्यजो ब्रह्म सो मैं हूं । और

(२) मैं सो अस्तिभातिप्रियरूप सामान्य-चैतन्यब्रम्ह हूं । और

२ नामरूपजगत् मेरे विषै कल्पित हैं।

यह निश्यचय करना।

• १६८ प्रश्न—इस रीति से निश्चय किये से क्या होवे है ?

उत्तरः—इस रीति से निश्चय किये से सर्व अनर्थ की निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति रूप मोक्ष होवे है ॥

इति श्री विचार चन्द्रोदय सामान्य विशेष-चैतन्य वर्णननामिका दशमकलासमाप्ता १०

॥ अथ एकादशकला प्रारम्भः ॥११॥

❀ 'तत्त्वं' पदार्थैक्यनिरूपण ❀

—(¤)—

॥ इन्द्रविजय छन्द ॥

वाच्य रु लक्ष्य लखी तत् त्वंपद ।
लक्ष्य दुहूंकर एक दृढावै ॥
भिन्न जु देशहि काल सु वस्तु रु ।
धर्मसमेत उपाधि उड़ावै ॥
१८५
जन्मतिथी लयकारक मायिक ।
जनकहार सभी जग भावै ॥
ईश्वर वाच्य सु है ततपादहि ।
ब्रह्म सु लक्ष्य उपाधि अभावै ॥२२॥

॥१५७॥ मायाउपाधिवान् ।

संसृति मानत आपहिमैं पर—
।१५८।।
तन्त्र अयिद्यक अल्प जनावै ।।
त्वंपद वाच्य सु जीव विवेचित ।
लक्ष्य सुमाक्षि उपाधि ढहावै ।।
वाच्य हुअर्थ हि भेद वि है पुनि ।
लक्ष्य विभेदनरंचक गावै ।।
ब्रह्म अहं इस भांति जु जानत ।
सोई पीतांबर ब्रह्महि पावैं ।।२३।।

• १६९ प्रश्न—'तत्' पद सो क्या है ?

उत्तरः॥सामवेदकी छांदोग्यउप[illegible] पदके पाठ-प्रपाठक (अध्यास) विषे श्वेतकेतु नाम पुत्रके प्रति तिसके पिता उद्दालकमुनिनेउपदेश किये
१५५
'तत्वमसि, महावाक्यका जो प्रथमपद । सो 'तत्' पद है ।

॥१५८॥ अविद्याउपाधिवान् ॥

॥१५९॥

१ इस 'तत्वमसि' की न्याँई

२ 'प्रज्ञान ब्रह्म' यह ऋग्वेद महावाक्य है ?

३ 'अहंब्रह्मास्मि' यह यजुर्वेदका महावाक्य है।

४ 'अयमात्मा ब्रह्म' यह अथर्वणवेदका महावाक्य है।

१ जो तत्पदका वाच्य अर्थ ईश्वर है और लक्ष्यअर्थ शुद्धब्रह्म है। सोई ऊपरलिखे तीन महावाक्यगत 'ब्रह्म' शब्द का वाच्यअर्थ अरु लक्ष्यअर्थ है। और २ जो त्वपद का वाच्य अर्थ जीव है अरु लक्ष्य अर्थ कूटस्थसाक्षी है। सोई उस तीन महावाक्यगत 'प्रज्ञानं' 'अहं' 'अयं' पदसहित 'आत्मा' इन तीन पदन का वाच्यअर्थ और लक्ष्यअर्थ है। और ३ सारे 'तत्वमसि' वाक्यका जो जीवब्रह्म की एकता रूप अर्थ है। सोई उक्त तीन महावाक्य-का अर्थ है॥

• २०० प्रश्न—'त्वं' पद सो क्या है ?
उत्तर–इसोही 'तत्वमसि' महावाक्यका दूसरापद। 'त्वं' पद है॥

• २०१ प्रश्न–वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ सो क्या है ?
उत्तर–शब्दका अर्थके साथ जो सम्बन्ध हो शब्दकी वृत्ति कहिये है॥ सो वृत्ति दो प्रकार की है। १ एक शक्ति वृत्ति है और दूसरी लक्षणावृत्ति है॥

१ शब्दविषै अर्थके ज्ञान करवैका सामर्थ्य रूप जो शब्दका अर्थके साथ साक्षात् संबध। सो शब्दकी शक्तिवृत्ति है॥ और
२ शक्तिवृत्तिसे जान हुये अर्थद्वारा जो शब्द का अर्थके साथ परम्परारूप सम्बन्ध है। सोई शब्दकी लक्षणावृत्ति है॥

तिःर्मी

१ शक्तिवृत्तिकरि जो अर्थ जानियेहै सो शब्द का वाच्यअर्थ. कहिये है। ताही को शक्य-

और मुख्यअर्थ भी कहै है ॥ और

२ लक्षणावृत्तिकरि जो अर्थ जानिये है। सो शब्द का लक्ष्यअर्थ कहिये है ॥

• २०९ प्रश्न—लक्षणावृत्ति कितने प्रकार की है?

उत्तर-१ जहत् अजहत् और २ भाग त्यागके भेदते लक्षणावृत्ति तीनप्रकार की है ॥

• २० प्रश्न—तीन प्रकार की लक्षणाके लक्षण और उदाहरण कौनसे हैं।

उत्तर:—

१ जहां संपूर्णवाच्यर्थ का त्यागकरिकै वाच्य अर्थ के सम्बन्धी का ग्रहण होवै। सो जहतलक्षणा है ॥

जैसे कोई पुरुषने काहूको पूछया कि:—
'गायका वाडा कहां है ? तब तिसने कहाकि
'गङ्गाविषै गाईका वाडा है, यहां गंगापनका
वाच्यअर्थं देवनदीका प्रवाह है तिसविषै
गाय का वाडा संभवनहीं। याते संपू र्णवाच्य
अर्थ जो देवनदी का प्रवाह। ताका त्याग
करिके। तिसके संबंधी तीर का ग्रहण है।
२ जहां वाच्यअर्थका त्याग न करिके तिसके
सम्बन्धीका ग्रहण होवै। सो अजहत्लक्षणा है॥
जैसे किसीने कहा कि:-'शोण दौडता
है,॥तहां शोणपदका वाच्यअर्थ जो लालरङ्ग
है। तिसविषै दौडना संभव नहीं। याते
लालरङ्गवाला घोडा दौडता है। ऐसे वाच्य
अर्थका त्याग न करिकेतिसके संबन्धी घोडे
रूप अधिक अर्थ का ग्रहण होवै है।

३ जहाँ विरोधी कछुकवाच्यभाग का त्याग करिके तिसकेसबंधीअविरोधीकछुकवाच्यभाग का ग्रहण होवै । सो भागत्यागलक्षणा है ॥ जैसे पूर्व किसी देशकालविषै देख्या पुरुष अन्यदेशकालविषै देखनेमें आवै । तबदेखनेहारा पुरुष कहता है कि:-तिस(दूर)देशऔर तिस(भूत) कालविषै जो पुरुष देखा था सो पुरुष इस समीप देशऔर इस [वर्तमान] कालविषै आया है, । इहाँ तिस देशकाल और इस देशकालरूप वाच्यभागकी एकताका विरोध है याते तिनकी दृष्टि त्यागकरिके 'पुरुष यहही है' ऐसे अविरोधीवाच्यभागका ग्रहण होवै है ॥

• २०४प्रश्न-तीनप्रकारकीलक्षणामेंसे महावाक्यविषै कौनसी लक्षणा संभव है ?

उत्तर--

१ जहाँ जहत्लक्षणा होवै। तहां संपूर्णवाच्य अर्थ का त्याग होवै है॥ जो महावाक्यविषै जहत्लक्षणा मानिये; तौ

[१] 'तत्' 'त्वं' पदके वाच्यअर्थविषै प्रवेशभये ब्रह्मचैतन्य और साक्षी चैतन्यका त्याग होवैगा। और

[२] तिनसैं भिन्न असत्जडदुःखरूप प्रपंचका ग्रहण करना होवैगा। अथवा समष्टिव्यष्टि प्रपंचमय उपाधि [विशेषणरूप वाच्यभाग] का भी चेतन के साथि त्याग किये से अवशेष रहे शून्यका ग्रहण करना होवैगा॥

तातैं महाअनर्थकी प्राप्ति होवैगी। तिसतैं पुरुषार्थ सिद्ध होवै नहीं। यातैं महावाक्यविषै जहत्लक्षणा संभव नहीं॥

२ जहांअजहत्लक्षणा होवै तहां वाच्यअर्थ का कुछ भी त्याग होवैनहीं।औ' अधिकअर्थ का ग्रहण होवै है । जो महावाक्यविषै अजहत्-लक्षणा मानिये तो 'तत्' 'त्वं' पद का वाच्यअर्थ ज्यों का त्यों बन्यारहैगा औरताके साथ शून्यरूप अधिकअर्थ का ग्रहण करना होवैगा । याते एकता का विरोध दूरी होवै नहीं ताते लक्षणा करने का कुछ प्रयोजन सिद्ध होवै नहीं । याते महावाक्यविषै अजहत्लक्षणा संभव नहीं ॥

३ जहांभागत्यागलक्षणा होवै तहां विरोधी भाग का त्याग कर के अविरोधी भाग का ग्रहण होवै है । जो महावाक्य विषै भाग त्यागलक्षणा मानिये तो ।

(१) 'तत्' त्व, पद के वाच्य अर्थ में से धर्मसहित मायाअविद्यारूप विरोधी-भाग का त्याग होवै है । और

[८] अविरोधी सङ्ग शुद्धचेतनभाग का ग्रहण होवै है ।

तातें

[१] तिनकी एकता भी बनैहै । और
[२] तिसतें परमपुरुषार्थ की प्राप्तिहोवैहै।

यातें महावाक्यविषै भाग त्यागलक्षणा संभव है ।

* २०५ प्रश्न—'तत्' पदका वाच्यअर्थ लक्ष्य-अर्थ क्या है ?

उत्तरः—

१ अव्याकृत जो माया सो ईश्वर का देशहै।
२ उत्पत्ति स्थिति और प्रलय । ये तीन ईश्वर के काल है ॥

३ सत्वगुण रजोगुण और तमोगुण । ये तीन
१६०
ईश्वरके वस्तु हैं । कहियेसृष्टिकी सामग्री है॥
४ विराट हिरण्यगर्भऔर अव्याकृत । येतीन
ईश्वर के शरीर हैं॥
५ वैश्वानर सूत्रात्मा और अन्तर्यामी । ये
तीन ईशपनेके अभिमानी हैं ॥

॥१६०॥ यद्यपि माया और तीनगुण एकहीं पदार्थहैं।याते ईश्वरके देश वस्तु और शरीरकोएकता होवे है तथापि जैसे कुलालको घट करने के लिए
१ मृत्ति का रूप पृथ्वी का देश है । और
२ मृत्तिका का पिंड वस्तु है । और
३ अस्थिआदिकरूप पृथ्वी का भाग शरीर है ।
तिनकी एकताका असंभव नहीं तैसे ईश्वरकेभी देश आदिक की एकता का असंभव नहीं है ॥

कि मैं एक हूं । सो बहुरूप होऊं, ऐसी जो ईक्षणा तिसको आदि लेके 'जीवरूपकरि प्रवेश भया, यहांपर्यंत जो सृष्टि । सो ईश्वर का कार्य है ॥

७(१) सर्वशक्तिपना (२) सर्वज्ञपना (३) व्यापकपना (४) एकपना (५) स्वाधीनपना (६) समर्थपना (७) परोक्षपना (८) मायाउपाधिवान्‌पना । ये आठ ईश्वर के धर्म हैं ।

१(१) इन सर्वसहित माया । और
(२) तिसविषे प्रतिबिंबरूपचिदाभास और
(३) तिनका अधिष्ठान ब्रह्म ।

ये सर्व मिलि के ईश्वर कहिये है सो 'तत्' पदका वाच्यअर्थ है ॥

२ इनसर्वसहित माया औरचिदाभासभागका त्यागकरिकेअवशेषरहा जो विराटहिरण्यगर्भ और अव्याकृत का अधिष्ठान ईश्वरसाक्षीशुद्ध ब्रह्म सो 'तत्' पद का लक्ष्य अर्थ है ॥

१०६ प्रश्न– ब्रह्मका और माया में प्रतिबिम्बरूप ईश्वर का परस्परअध्यास (अन्योन्याध्यास) कैसे है ?

उत्तर—अविचारदृष्टि से

१ ब्रह्मकी सत्यताका ईश्वरविषै संसर्ग (तादत्म्यसंबन्ध) अध्यस्त है। याते ईश्वर सत्य प्रतीत होवे है। और

१ ईश्वर अरु ताकी कारणताका स्वरूपब्रह्मवैं अध्यस्त है। याते ब्रह्म जगत् का कारण प्रतीत होवे है याहीका अनुवाद तटस्थलक्षणके बोधक श्रुति पुराण और आचार्यांके वचन करै है।

इसरीतिसे ब्रह्म और ईश्वर का परस्पर अध्यास है ॥

दि० ३३

२०७ प्रश्न—उक्तअभ्यासकी निवृत्ति किससे है?

उत्तर:–उक्त अभ्यास की निवृति विवेक ज्ञानसे होवे है॥

२०८ प्रश्न—'त्वं' पदका वाच्यअर्थ और लक्ष्यअर्थ क्या है?

उत्तर:—

१ चक्षु कंठ और हृदय। ये तीन जीवकेदेश हैं

२ जाग्रत् स्वप्नऔरसुषुप्तियेतीन जीवकेकाल हैं

३ स्थूल सूक्ष्म और कारण। येतीन जीवपर्वे वस्तु (भोगसामग्री) हैं। और

४ यहही शरीर हैं॥

५ विश्वतेजस और प्राज्ञ। ये तीन जीव अभिमानी हैं।

६ जाग्रत्से आदिलेके मोक्षपर्यन्त जो भोगरू संसार। सो जीवका कार्य है॥

९[१] अल्पशक्तिपना [२] अल्पज्ञपना [३] परिच्छिन्नपना [४] नानापना [५] पराधीनमना [६] असमर्थपना [७] अपरोक्षपना और [८] अविद्याउपाधिवान्पना। ये आठ जीवके धर्म हैं॥

[१] इन सर्वसहित जो अविद्या। और
[२] तिसविषै प्रतिबिंबरूप चिदाभास। और
[३] तिनका अधिष्ठान कूटस्थ।
ये सर्व मिलिके जीव कहिये है॥ सो जीव 'त्वं' पदका वाच्यअर्थ है॥

२ इन सर्व सहित चिदाभासभाग का त्याग करिके अवशेष रहा जो स्थूलसूक्ष्मकारण शरीरका अधिष्ठान जीवसाक्षी कूटस्थ। आत्मा सो 'त्वं' पदका लक्ष्यअर्थ है।

२०९ प्रश्न-कूटस्थ का और बुद्धिमेंप्रतिबिंबरूपजीव का परस्पर अध्यास कैसे है?

उत्तरः—अविचारदृष्टिसे

१ कूटस्थकी सत्यताका संसर्ग (तादात्म्यसंबन्ध) जीवमैं अध्यस्त है। याते जीवमिथ्याप्रतीत होवे नहीं। किन्तु सत्य प्रतीत होवे। और

२ जीव अरुताके कर्त्तापने आदिक धर्म का स्वरूप। कूटस्थमें अध्यस्त है। याते कूटस्थ अकर्त्ता अभोक्ता असंसारी नित्यमुक्त असंग ब्रह्मरूप प्रतीत होवे नहीं। किन्तु याते विपरीत प्रतीत होवे है॥

इसरीतिसे कूटस्थ का और जीवका परस्पर अध्यास है।

२१० प्रश्नः—उक्तअध्यासकीनिवृत्तिकिससे होवे है?

उत्तरः—उक्त अध्यास की निवृत्ति विवेक ज्ञानसे होवे है॥

* २११ प्रश्न–'तत्' पद और 'त्वं' पदके अर्थ की महावाक्यविषै कथनकरी एकता कैसे संभव है ?

उत्तर-

१ यद्यपि 'तत्' पद और 'त्वं' पदके वाच्य-अर्थ जो उपाधिसहित चैतन्य (ईश्वर और जीव) है ; तिनकी एकताका विरोध है ।

२ तथापि 'तत्' पदका लक्ष्यार्थ ब्रह्म और 'त्वं' पद का लक्ष्यार्थ आत्मा । तिनकी एकताका कुछ भी विरोध नहीं ॥

ऐसे, 'तत्' पद और 'त्वं पद के अर्थ की महावाक्यविषै कथन करी एकता संभव है ॥

* २१२ प्रश्न—मैं ब्रह्म हूं ऐसा ब्रह्मात्मा की एकताका ज्ञान किसको होवे है ?

उत्तर:-यह ज्ञान चिदाभासकोहोवे है ॥

॰ २१३ प्रश्न—ब्रह्मते भिन्न जो चिदाभास । सो आपको ब्रह्मरूप करिके कैसे जाने है ?

१ जीवभावकेअधिष्ठान कूटस्थकालब्रह्मकेसाथ मुख्यअभेद है। और

२ बुद्धिसहित चिदाभासकाब्रह्मके साथ अपने स्वरूपको बांधकर केअभेद होवे है।

याते

१ चिदाभास अपने स्वरूप का बोध कर के आपको अहंशब्द के लक्ष्यअर्थ कूटस्थरूप जाने हैं। और

२ अपने निजरूप कूटस्थका 'मैं कूटस्थ हूं' ऐसे अभिमान करिके 'मैं ब्रह्महं''। ऐसे इसरीतिसे चिदाभास आपको ब्रह्मरूप करिके जाने है।

◆ २१४ प्रश्न—इन 'तत्' और 'त्वं' पदकेलक्ष्यार्थको एकताविषै दृष्ठाँत क्या है ?

उत्तर—दृष्टान्त—

१ जैसें

(१) घटमठपाधिसहित घटाकाश और मठाकाशकी एकताका विरोध है ॥

(२) तथापिघटमठरूप उपाधिकी दृष्टिको छोडिके केवलआकाशको एकताका विरोध नहीं ॥

२ जैसे

(१) कांचकी हंडोऔरमृत्तिकाहंडीविषै दीपक जलताहोवे। तिनकी उपाधि दोहंडी की एकताका विरोध है ॥

(२) तथापि उपाधिकूंत्यागिकरि दीपककीएकताका विरोध नहीं।

३ जैसे

(१) राजा और रवारी (भेड़) होवे । तिनकी उपाधि सेना और अजावर्गकी एकता का विरोध है ।

(२) तथापि मनुष्यपने की एकताका विरोध नहीं ॥

४ जैसे

(१) गङ्गाजल और गङ्गाजल का कलश होवे । तिनकी उपाधि नदी और कलश की एकताका विरोध है ।

(२) तथापि केवलगङ्गाजलकी एकता का विरोध नहीं ॥

५ जैसे

(१) सागर और जलका बिंदु होवै। तिनकी उपाधि सागर और बिंदु की एकताका विरोध है ॥

(२) केवल जलकी एकताका विरोध नहीं ॥

६ जैसे-

(१) कोई एक पुरुषको पिता की अपेक्षा से पुत्र कहते हैं और पितामह की अपेक्षासे पौत्र कहते हैं तिनकी उपाधि पिता और पितामहकी एकता का विरोधहै॥

(२) केवलपुरुष की एकता का विरोध नहीं ॥

७ जैसे कोई काशी का राजा था। सो हस्ती पर बैठि के सवारी मैं निकस्या था । ताको कोई यात्र वासी पुरुष ने अच्छी तरह से देखा था। पीछे सो स्वदेश को गया और काशी के राजाको कोई अन्य राजा कि राज्य छीनके निकासदिया। तब सो लंगोटी पहरके अङ्गमैं विभूत लगाय के हाथ मैं तुम्बी और दड लेके नग्न पाद से तीर्थ यात्रा को गया॥ फिरते फिरते तिस यात्रा वासी पुरुष के ग्राम मैं गया । तब तिसको देखिके सो यात्रावासी पुरुष अन्य यात्रावासीपुरुषन को कहता भया कि:—अपने काशी विषै जो राजा देखा था। 'सो यह है ।

तब अन्ययात्रावासीपुरुष कहते भये किः—

(१) सो देश अन्य । यह देश अन्य ॥

(२) ताका काल (अवस्था) अन्य ।
याका काल अन्य ॥

(३) तिसकी वस्तु (सामग्री) अन्य ।
याकी वस्तु अन्य है

(४) तिसका अभिमान अन्य । इसका
अभिमान अन्य ॥

(५) तिसका कार्य अन्य । इसका कार्य
अन्य ॥

(६) तिसके धर्म अन्य । इसके धर्म अन्य ॥

याते तिस काशी के राजा्ी औरइस भिक्षु-
ककी एकता कैसे बने ?

तब सो प्रथम यात्रावासी पुरुष कहता भया
किः—'तिसके और इसके (१) देश

(२) काल (३) वस्तु (४) अभिमान (५) कार्य और (६) धर्मका त्याग करीके दोनोंविषे अनुगत (अनुस्यूत) जो पुरुषमात्र सो एकहीं है ॥

सिद्धांतः-तैसे जो ईश्वरके भी देशकालआदि का त्याग करके । दोनों विषे अनुगत जो चेतनमात्र ब्रह्मऔर आत्माको एकही हैं॥याते 'ब्रह्म सो मैं हूं' और मैं सो ब्रह्म हूं', ऐसा दृढ़निश्चय करना । सोई तत्वज्ञान है ॥ याहि ते सर्वदुःखकी निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्तिरूप मोक्ष होवै है ।

इति श्रीविचारचन्द्रोदये 'तत्वमसि' महावाक्यगत 'तत्व' पदार्थैक्यनिरूपणनामिका एकादशकला समाप्ता ॥११॥

।। अथ द्वादसकला प्रारम्भ. ।।१२।

ज्ञानी के कर्मनिवृत्तिकाप्रकारवर्णन ।

१६१

।। तोटकछन्द ।।

१६२

जिन आतमरूप पयो जु भले ।

तिह तैं विधकर्म मिटैं सकले ।।

१६३

तम आवृत्ति आश्रित संचित ले ।

निज बोध सु पावक सर्व जले ।।२४।।

जड़ चेतन गांठ विभेद बले ।

हढ़ राग पवेप कषाय गले ।

१६४

जलमैं जिम लिप्त न कंजदले ।

परसैन अगामि जु कर्म भले ।२५।।

।।१६१।। ठुमरी मैं गाया जावै है ।।

।।१६३।। दह्यो ।।

।।१६३।।नज्ञानकीआवरणशक्तिके आश्रितसंचित

कर्मोंको लेके ।। १६४ कमलका पत्र ।।

इस जन्म आरंभक कर्म फले ।
सुखदुःखहि भोगत होउ प्रले ।
इस भांति जु होवत जन्म दिले ।
१६५
पिख रूप पीतांबर स्वं विमले ॥२६॥

* २१५ प्रश्नः—कर्म सो क्या है ?
उत्तरः—शरीर वाणी और मनकी जो क्रिया सो कर्म है ॥

* २१६ प्रश्नः-कर्म कितने प्रकार का है ?
उत्तरः-१ संचित २ प्रारब्ध और ३ क्रियमाण (आगामि) भेदते कर्म तीन-प्रकार का है ।

* २१७ प्रश्नः-संचितकर्म सो क्या है ?
उत्तरः—१ अनेक अतीत जन्मोंविषै संचय-किया जो कर्म । सो संचितकर्म है ॥
॥१६५॥ देखिके ॥

२१८ प्रश्नः-प्रारब्धकर्म सो क्या है ?

उत्तरः४—अनेक संचित कर्मन के मध्य से परिपक्वभया और ईश्वरकीइच्छासे इसवर्त्तमानदेहका आरम्भक जो कोईएक संचितकर्म। सो प्रारब्धकर्म है ।

२१९ प्रश्नः-क्रियमाणकर्म सो क्या है ?

उत्तरः-३ ज्ञानते पूर्व वा पीछे इस वर्त्तमान देहविषै मरणपर्यन्त करिये है जो कर्म । सो क्रियमाणकर्म है ।

२२० प्रश्नः-ज्ञानीके कर्म की निवृत्ति किसरीतिसे होवै है ?

उत्तरः—१ ज्ञानसे अज्ञानके आवरणअंश की निवृत्ति होवै है ।। आवरणकीनिवृत्तिके भये आवरणको आश्रयकरिके स्थित संचित कहिये पूर्वके अनेकजन्मविषै किये कर्म कीनिवृत्ति (नाश) होवै । और

२ ज्ञानके आगेपीछे इसजन्मविषै किये क्रिय-
माणकर्म ।। 'मैं अकर्त्ता अभोक्ताअसंगब्रह्महूं'॥
इस निश्चयके बलसेअपने आश्रय भ्रमजतादा-
त्म्यके नाश करिके औररागद्वेषकेअभावते जल-
विषै स्थित कमलपत्र की न्याईंज्ञानीको स्पर्श
होवैनहीं । किंतु ज्ञानी के क्रियमाण जो इस
जन्मविषै किये शुभ और अशुभकर्म काकुमत
जन ग्रहण कर हैं ।

३ और अज्ञान की विक्षेपशक्तिकेआश्रितज्ञानी
के प्रारब्धकहियेपूर्वके किसीएकजन्मविषैकिये
इसजन्मकेआरंभकर्मकीभोगसे निवृत्तिहोवैहै ।
तातें ज्ञानी सर्वकर्मसेमुक्त है । याही से कर्म
रचितजन्मादिक संसारसे भी मुक्त है ॥
इसरीतिसे ज्ञानी के कर्मकी निवृत्ति होवै है॥
इति श्रीविचारचन्द्रोदये ज्ञानीकर्मनिवृत्ति-
प्रकारवर्णन नामिका द्वादशकला समाप्ता॥

॥ अथ त्रयोदशकला प्रारम्भः ॥१३॥

॥ सप्तज्ञानभूमिकावर्णन ॥

॥ तोटकछन्द ॥

निज बोधकि भूमि सु सप्त अहैं ।
१६६
इम भाँति वसिष्ठ मुनीश कहैं ॥
शुभसाधन सम्मति आदि लहै ।
श्रवणादिविचार द्वितीय वहै ॥२७॥
निदिध्यासन तीसरभूमि गहै ।
अपरोक्ष निजातम चौथि चहै ॥
अहता ममता विन पंचम है ।
छटवी वस्तु अकार दहै ॥२८॥

॥१६६॥ योगवसिष्ठविषै

सतमी तुरिया जु वरिष्ठित है।
सबवृत्ति विलीन चिदात्म रहै ॥
१६७
इव गाढसुषुप्ति न जागत है।
परमानन्द मत्त पीतांबर है ॥२६॥

* २२१ प्रश्नः-सर्वज्ञानिनकानिश्चयतो एकही है। परन्तु स्थितिका भेद काहेंते है ?

उत्तर—सर्वज्ञानिनको स्थितिका भेद ज्ञानभूमिकाके भेदते है ॥

* २२२ प्रश्नः-सो ज्ञानभूमिका कितनी है ?

उत्तरः-१ शुभेच्छा २ सुविचारणा ३ तनुमानसा ४ सत्वापत्ति ५ असंसक्ति ६ पदार्थाभाविनी ७ तुरीयगा। तेसातज्ञानभूमिका है॥

॥१६७॥ गाढसुषुप्ति (वत्) ॥

* २२३ प्रश्नः-शुभेच्छा सो क्या है !

उत्तरः-१ पूर्वजन्मविषै अथवा उसजन्म विषै किये निष्कामकर्म और उपासनासे शुद्ध और एकाग्रचित्तवाले पुरुषकोविवेकवैराग्यषट्संपति और मोक्षइच्छा। ये चारसाधन होय के जो आत्माके जानने की तीव्रइच्छा होवे है। सो शुभेच्छा नाम ज्ञानकी प्रथमभूमिकाहै।

* २२४ प्रश्न—सुविचारणा सो क्या है ?

उत्तरः—२ आत्माके जाननेकी तीव्रइच्छासे ब्रह्मनिष्ठगुरुके विधिपूर्वक शरण जायके।गुरुके मुखसे जीवब्रह्मकी एकता के बोधक वेदांन्त-वाक्यकोश्रवणकरीके। तिसे श्रवण कियेअर्थ-को आपके मनविषै घटावनेवास्ते अनेकयुक्ति-योंसे मनन (विचार) करना सो सुविचा-रणा नाम ज्ञानकी दूसरी भूमिका है॥

• २२५ प्रश्न—तनुमानसा सो क्या है !

उत्तर:-३ स्वरूप के साक्षात्कार कहिये अपरोक्षअनुभवअर्थ श्रवण मनद्वारा निर्णय किये ब्रह्मात्माकी एकतारूप अर्थके निरन्तर चिंतन रूप विदिध्यासनसे जो स्थूल मन की कहिये बहिर्मुखपनकीसूक्ष्मता नामअन्तर्मुखता होवेहै। सो तनुमानसा नाम ज्ञानकी तीसरी भूमिका है।

* २२६ प्रश्न—सत्वापत्ति सो क्या है ?

उत्तर—४ श्रवणमननिदिध्याससे संशय औरविपर्ययसे रहित स्वरूपसाक्षात्काररूप निर्विकल्पस्थितिकेभयेते। तत्वज्ञानमुक्तमनरूप सत्व (शुद्धअन्तःकरण) की जो प्राप्ति होवेहै। सो सत्वापत्ति नाम ज्ञानकी चतुर्थ भूमिकाहै॥

* २२७ प्रश्न असंसक्ति सो क्या है ?

उत्तर-५ निर्विकल्पसमाधिके अभ्यास की परिपक्वतासे देहविषै सर्वथा अहम्तामता गलित होय के। देहादि विषै जो सर्वथा आसक्तिकानाम ज्ञानकीपंचभूमिका है।

* २२८ प्रश्न-पदार्थाभाविनी सो क्या है ?

उत्तर—६ अतिशयनिर्विकल्पसमाधि के अभ्याससे देहादिकसर्वपदार्थनका अधिष्ठान-ब्रह्मरूपसे प्रतीति होनेकरि जो अभाव कहिये अप्रतीति होवे है। पदार्थभाविनी नाम ज्ञान-की षष्ठमभूमिका है॥

* २२९ प्रश्न-तुरीयगा सो क्या है ?

उत्तरः-७ ज्ञाताज्ञान और ज्ञेयरूप त्रिपुटीकी चतुर्थपंचमभूमिकाकी न्यांई भावरूपकरिऔर षष्ठभूमिकाकी न्यांई अभावरूपकरि प्रतीतिभी

जहांहोवे नहीं । ऐसीजो स्वर सेउत्थानरहित तुरीयपदविषै मनकी स्थिति । सो तुरीयगा नाम ज्ञानकी सप्तमभूमिका है ।

* २३० प्रश्न—ये सप्तभूमिका किससे साधन है ?

उत्तर:—

१-३ प्रथम द्वितीयऔरतृतीयभूमिका । तत्व-ज्ञानके साधन हैं । और

१६८

४ चतुर्थभूमिका तो तत्वज्ञानरूप होनै ते जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्त के साधन हैं । और

५-७ पंचम षष्ठ और सप्तमभूमिका जीवन्मु के विलक्षणआनन्दके साधन हैं ॥

इति श्रीविचार चन्द्रोदये सप्त भूमिकावर्णन-नामिका त्रयोदशकला समाप्ता ॥१३॥

॥१६८॥

१ कृतोपासन कहिये ज्ञानते पूर्व करी है पूर्ण उपासना जिसने सो और

२ अकृतोपासन कहिये ज्ञानते पूर्ण नहीं करी है उपासना जिसने सो

इस भेदते चतुर्थभूमिका रूप ज्ञानका अधिकारी दो प्रकार का है ।। तिनमें

१ कृतोपासना जो है सो तो सम्यकवैराग्यादिसाधन करि सम्पन्न होवेहै और ज्ञानके अनन्तर अल्पाभ्यास से झटिति पचमआदिक भूमकाविषै आरूढ़ होवे है ।

२ और अकृतोपासन जो है तामें सर्व साधन स्पष्ट प्रतीन होते नहीं किंतु एकदो साधन प्रकट होवे हैं और अन्य साधन गोप्य रहते हैं । याते सो बुद्धिमान होवे तो चतुर्थभूमिकारूप तत्वज्ञानको पावता है । परन्तु बहुतकाल के अभ्यासके कदाचित कोईक पंचमआदिकभूमिकालविषै आरूढ होवे है । जटिति नहीं ।।

॥ अथ चतुर्दशकलाप्रारंभः ॥१४॥

॥ जीवन्मुक्तिविदेह मुक्तिवर्णन ॥

—(::)—

॥ तोटक छन्द ॥

जब जानत है निजरूपहिको ।
तब जीवन्मुक्ति समीपहिको ॥
१६९
भ्रमबन्द निवृक्ति सदेहहिकी ।
सुखसं:क्तिहोवत गेहहिको ॥३०॥
बिदवान तजे इस देहहिको ।
तब पावत मुक्ति विदेहहिको
तम लेश भजे सद नाशहिको ।
तजदेत प्रपंच अभासहिको ।

॥१६९॥ तब शरीरसहित पुरुषको भ्रमरूप बन्ध की निवृत्तिस्वरूप जीवन्मुक्ति समीपहीको कहिये तत्काल होवे है। यह अर्थ है ॥

१७०
सरिता इव सागर देशहिको।
१७१
चिनमात्र मिलाय विशेषहिको ॥
चिदहोय *जे अवशेषहिको।
नहि जन्म पीतांबर शेषहिको ॥

* २३१ प्रश्न—जीवनमुक्ति सो क्या है ?

उत्तर—देहादिक प्रपंचकी प्रतीत के होते जो ब्रह्मस्वरूपसे स्थिति। सो जीवन्मुक्ति है।

• २३२ प्रश्न—जीवनमुक्तिविषै प्रपंच प्रतीति काहेते होवे है॥

उत्तर—आवरण और विक्षेप । ये दो

॥१७०॥ सागरदेशहिको सरिता इव (नदीकीन्याई)
॥१७१॥ स्थूलसूक्ष्म प्रपंच सहित चिदाभासरूप विक्षेपको ॥

अविद्याकीशक्तियां हैं तिनमें

१ आवरणशक्तिका ज्ञानसे नाशहोवेहै। ताते ज्ञानी को अन्यजन्म होवे नहीं

२ परन्तु प्रारब्ध के बल से दग्धधान्यकणकी न्यांई विक्षेपशक्ति (अविद्यालेश) रहे है। ताते जीवन्मुविषै प्रपंचकी प्रतीति होवे है

* २३३ प्रश्न—जीवन्मुक्ति प्रपंच की प्रतीति कैसे होवे है?

उत्तर--

१ जैसे रज्जु ज्ञानसे सर्पभ्रांतिके निवृत्ति भये पीछे कंपादिक भासते हैं। और

२ जैसेदर्पणकेज्ञानीको प्रतिबिंब भासताहै और

३ जैसे मरुस्थलके ज्ञानीको मृगजलभासताहै।

तैसे तत्वज्ञानी को जीवन मुक्ति दशाविषै बाधितभये प्रपंचकी प्रतीति होवे है॥

* २३४ प्रश्न—बाधित भये प्रपंच की प्रतीतिविषे अन्यदृष्टांत क्या है !

उत्तर-दृष्टांन्त-जैसे महाभारत के युद्ध में द्रोणाचार्य के मरणभये पीछे अश्वत्थामा-आदिक के साथ युद्ध भया है ॥ तब सत्य-संकल्पश्रीकृष्णपरमात्माने यह संकल्प किया कि:—'इसयुद्ध कीसमाप्तिपर्यंत यह रथ और घोड़े ज्यों केत्यों ही बने रहें, । यह चिंतन-करिके युद्ध भूमिमें आये । तहां अश्वत्थामा आदिकोंने ब्रह्मास्त्र (अग्निअस्त्र) आदिकका समूह डारया । तिसकरि तिसी क्षणविषे अर्जुनके रथ और घोड़े भस्मीभूत भये । तो भी श्रीकृष्णपरमात्मारूप सारथि के संकल्पके बलसे ज्यों के त्यों बने रहे । जब युद्ध समाप्त भया तब भस्मी का ढेर होगया ।

सिद्धांत-तैसे
१ स्थूलदेहरूप रथ है।
२ ताके पुण्यपापरूप दो चक्र हैं। और
३ तीनगुणरूप ध्वज है और
४ पांच प्राणरूप बन्धन है। और
५ दशइन्द्रियरूप घोड़े हैं। और
६ शुभअशुभशब्दादिपांचविषयरूपमार्गहैऔर
७ मनरूप लगाम है। और
८ बुद्धिरूप सारथि (श्रीकृष्ण) और
९ प्रारब्धकर्मरूपताका संकल्प है। और
१० अहंकाररूप बैठने का स्थान है। और
११ आत्मारूप रथी (अर्जुन) है।
१२ ताके वैराग्यादिसाधनरूप शस्त्र हैं।
सो रथपर आरूढ़ होयके सतसंगरूपरणभूमि-
में गया। ताको गुरुरूप अश्वत्थामादिकने
महावाक्यकाउपदेशरूपब्रह्मअस्त्रआदिकमारया

तिसकरि ज्ञानरूप अग्न उदय होयके तिसी क्षण विषै देहादि प्रपंचरूप रथादिकसर्वकाबाध भया। तौ श्रीकृष्णरूप सारथिस्थानी बुद्धिके प्रारब्धकर्मरूपसंकल्पके बलसेदेहादिककीप्रतीत
१७२
होवी नहीं। किंतु पीछे भी देहादिककीप्रतीत
१७३
होवेहै याही को बाधितानुवृत्ति कहे है॥

॥१७२॥ जिसका नाश होवै सो नाशका प्रतियोगी है॥

१ ताप्रतियोगी की नाशविषै प्रतीति होवे है। और
२ बाधविषे प्रतियोगी की प्रतीति होवै नहीं। किंतु तीनकालअभाव प्रतीत होवे है।

यह नाश और बाधक भेद है।

॥१७३॥ जैसे कुलालका चक्र। डंडसे फेरने का प्रयत्न छोड़े हुये पीछे भी वेगके बलसेफिरताहै। तैसे बाध हुये पीछे प्रारब्ध कर्म से देहादि प्रपंच की जो प्रतीति होवे। बाधितानुवृत्ति है।

इसरीति से यह बाधित भये प्रपंच की प्रतीतिविषै दृष्टांत है।

* २३५ प्रश्न— विदेहमुक्ति सो क्या है ?

उत्तर—

१ प्रपञ्चकीप्रतीतिरहित ब्रह्मस्वरूपसेस्थितिवा

२ प्रारब्धकर्मकेभोगसे नाश भये पीछे स्थूल सूक्ष्म शरीरके आकारसे परिणामको प्राप्त चेतनविषे विलय।

सो विदेहमुक्ति है।

* २२६ प्रश्न—प्रारब्ध के अन्त भये कार्य सहित अज्ञानलेशका विलय किस साधन से होवे है ?

उत्तर: ३प्रारब्धके अन्त भये अधिक वा न्यून मूर्छाकाल मैं यद्यपि ब्रह्माकारवृत्तिकाअसंभवहै औरविद्वानकोविधिभीवहींहै। तथापिसुषुप्तिकी

न्यांई। ता मूर्छाकालमें भी ब्रह्मविद्या का संस्कार है तामें आरूढ़ चेतनसे कार्य सहित अज्ञानलेशका विलय (नाश) होवे है॥ और काष्ठआरूढ़अग्नि से तृणादिकका दाहहोय के आपके भी दाहकी न्यांई। ता संस्कार-आरूढ़ चेतनसे प्रपंचका विनाश होयके आप (ज्ञान के संस्कार) का भी विनाश होवे है। पीछे असंग शुद्ध सच्चिदानन्द स्वप्रकाश अपने आप ब्रह्म अवशेष रहता है।

इति श्रीविचार चन्द्रोदय जीवन्मुक्तिदेह-मुक्तिवर्णन चतुर्दशकल समाप्त ॥१४॥

॥ अथ पञ्चदशकलाप्रारंभः ॥१५॥

१७४

❀ वेदांतप्रमेय (पदार्थ) वर्णन ❀

—(:०:)—

ललितछन्द ॥ [गोपिकागीतवत्]

१७५

जन तु जानिले ज्ञेय अर्थको ।
सकल छेद सन्देह अनर्थको ॥
सुगति कौन है हेतु ताहिको ।

१७६

जनक वीचको कौन बाहिको ॥३३॥
विषय बांधको कौन जानिले ।
प्रतक ईशको तत्व मानिले ॥

१७७

अहमअर्थको खूब सोचिले ।
"तत्" पदार्थको शुद्धखोजिले ॥३४॥

॥ १७४ ॥

१ वेदांतशास्त्र प्रमाण से जन्य जो यथार्थज्ञान । सो प्रमाण है ॥

२ ता प्रमाणसे जानने याग्य जो पदार्थ । सोप्रमेयहै॥ तिनका यहां कथनहै· यातै इन (पंचदशम) कला के विचारतै प्रमेयगतसंशयकी निवृत्ति होवै है ॥

प्रमेयगतसंशय का कथन हमारे किये बालबोधिनी-टीका सहित । बालबोधनामकग्रन्थ के नवमउपदेश विषै किया है । तहां देखलेना ॥

॥ १७५ ॥ वेदांतके प्रमेयरूप पदार्थनकोजानिले॥

॥ १७६ ॥ वाहिकी(मोक्षके हेतु ज्ञानको)बीचकी जनक [अवांतरसाधन] कौन हैं ?

॥ १७७ ॥ अहं [त्वं] पदके अर्थको ॥

१७८
परमआतमा एक मानिले ।
तहं सदादि ऐश्वर्य आनिले ॥
१७९
सत् चिदात्म सो सर्वदा अहै ।
इस पीतांबरो ज्ञानको गहै ॥३५॥

उत्तरः—

• २३७ प्रश्नः— मोक्षका स्वरूप क्या है ?

उत्तरः—

१ कार्यसहित अज्ञानरूप अनर्थ की कहिये बन्धन की निवृत्ति । और

२ परमानन्दरूप ब्रह्म की प्राप्ति ।

यह मोच का स्वरूप है ॥

॥१७८॥ ब्रह्म ॥
॥१७९॥ सच्चिदानन्दस्वरूपसो [ब्रह्मआत्माकी एकता) सर्वदा [तीनोंकाल में] है ॥

* २३८ प्रश्नः-तिस मोक्षका साक्षात् साधन क्या है?

उत्तरः-ब्रह्म और आत्मा की एकता का अपरोक्षज्ञान। मोक्ष का साक्षात्साधन है।

* २३९ प्रश्न-मोक्ष का अवांतर [ज्ञान द्वारा] साधन क्या हैं?

उत्तरः-निष्कामकर्म और उपासनादिक अनेक मोक्षके अवान्तरसाधन हैं॥

* २४० प्रश्न-तिस ज्ञान का विषय क्या है?

उत्तरः-आत्मा और ब्रह्म की एकताज्ञान का विषय है।

*२४१ प्रश्न—आत्मा का स्वरूप क्या है?

उत्तरः-१ देह—इन्द्रिय—प्राण—मन बुद्धि—अज्ञान औरशून्यसे भिन्न। २अकर्ता ३ अभोक्ता।४ असङ्ग। ५ व्यापक। और ६ चेतन। आत्मा का स्वरूप है॥

• २४२ प्रश्न—ब्रह्म का स्वरूप क्या है ?

उत्तरः-१ निष्पाप। २ असङ्ग। ३ परिपूर्ण। और ४ चेतन। ब्रह्मकास्वरूप है॥

• २४३ प्रश्न—ब्रह्म आत्मा की एकता कैसी है !

उत्तरः—सच्चिदानन्द। ऐश्वर्यस्वरूप। ३ सदाविद्यमान। ब्रह्म आत्माकी एकता है॥

• २४४ प्रश्न—ज्ञान का स्वरूप क्या है ?

उत्तरः—जीवब्रह्म के अभेदका निश्चय। ज्ञान का स्वरूप है॥

• २४५ प्रश्न—ज्ञानका साक्षात् अन्तरंग (समीपका) साधन क्या है ?

उत्तरः-ब्रह्मनिष्ठगुरुके मुखसे महावाक्यके अर्थ का श्रवण। ज्ञानका साक्षात्अन्तरङ्ग साधन है॥

• २४६ प्रश्न – ज्ञानकेपरंपराअन्तरंगसाधनकौनसेहैं?

उत्तरः—१ विवेक । २ वैराग्य । ३ षट्-संपत्ति (शम । दम । उपरति । तितिक्षा । श्रद्धा शमाधान) । ४ मुमुक्षुता । ५ 'तत्' पद और 'त्व' पदके अर्थ का शोधन । ६ श्रवण । ७ मनन और ८ निदिध्यासन । ये आठ ज्ञान-के परम्परा से अन्तरङ्गसाधन हैं ॥

• २४७ प्रश्न · ज्ञानके वहिरंग दूरके)साधन कौनहैं?

उत्तरः—निष्कामकर्म और निष्कामउपासना आदिक । ज्ञानके वहिरङ्गसाधन हैं ॥

• २४८ प्रश्न– ज्ञानकेसर्वमिलिके कितने साधन हैं ?

उत्तरः—ज्ञान के सर्वमिलि के एकादश [११ वा कछु अधिक] साधन हैं ॥

इति श्रीविचारचन्द्रोदय वेदांतप्रमेयनिरूपण-नामिका पंचदशकला समाप्ता ॥१५॥

— * —

मंगलाचरण

—(:o:)—

चैतन्यशाश्वत शांत व्योमातीत निरंजनम् ।
नादबिंदुकलातीत तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥
सर्वश्रुतिशिरोरत्नविराजितपदांबुजम् ।
वेदांतांबुजमार्तंड तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥
अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलित येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुदेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४॥
अखंडमण्डलाकार व्याप्तं येन चराचरम् ।
त पदं दर्शित येन तस्मै श्रीगुरवेनमः ॥५॥
अखंडानन्दबोधाय शिष्यसंतापहारिणे ।
सच्चिदानन्दरूपाय रामाय गुरवे नमः ॥६॥

॥ इति मङ्गलाचरणम् ॥

—:o:::o—

|| अथषोडषकला प्रारम्भः ||१६||

।। अथ श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रहः ।।

—*—

।। उपोद्धातकीर्त्तनम् ।।

स्मृत्वाऽद्वैतपरात्मानं शङ्करं परमं गुरुम् ।
तात्पर्यसंविदे वक्ष्ये श्रुतिषड्लिंगसंग्रहं ।।१।।

टीकाः—अद्वैतपरमात्मारूप जो परमगुरु शंकर हैं । तिनको स्मरण करिके । श्रुतिनको तात्पर्य के ज्ञानअर्थ । मैं श्रुतिषड्लिंगसंग्रह नामकलघुग्रन्थको कहता हूं ।। १ ।।

विषयाशक्ति मानस्थ-मेयस्थ संशय भ्रमाः ।
चत्वारःप्रतिबन्धाः स्युज्ञानादाढ्यस्यहेतवः ।।

टीकाः—१ विषयाशक्ति २ प्रमाणगतसंशय ३ प्रमेयगतसंशय औंर ४ भ्रम कहिये विपर्यय । ये चार ज्ञान की अदृढ़ता के हेतु प्रतिबन्ध होवें हैं ।।

आद्यस्य विनिवृत्तिः स्याद्वैराग्यादिचतुष्टयात् । श्रवणेन द्वितीयस्य मननात्तार्तीयस्य च ॥३॥

टीका:—प्रथमकी निवृत्ति। वैराग्य है आदि जिसके ऐसे साधनोंके चतुष्टयते होवै है और द्वितीयकी निवृत्ति श्रवणसे होवैहैऔर तृतीय की निवृत्ति माननते होवै है ॥

ध्यानेन तु चतुर्थस्य विनिवृत्तिर्भवेद्ध्रुवम् । पूर्वपूर्वानिवृत्या नैवोत्तरोत्तरनाशनम् ॥ ४ ॥

टीका:—और चतुर्थप्रतिबन्धकी निवृत्ति। निदिध्यासनसे निश्चित होवैहै।पूर्वपूर्व की अनिवृत्तिकरि उत्तर उत्तर का नाश कहिये निवृत्ति नहीं होवै है ॥ ४ ॥

विषयाशक्तिनाशेन विना नो श्रवणं भवेत्

ताभ्यामृते न मनन न ध्यान तैर्विना भवेत्

टीका:–विषयाशक्ति के नाशसे विना श्रवण होवै नहीं और तिन दोनों विना मनन नहीं होवै है और इन तीनों से विना निदिध्यासन होवै नहीं ॥६॥

स्वर्गाश्रमधर्मेण तपसा हरितोषणात् ।
साधनं प्रभवेत्पुंसां वैराग्यादिचतुष्टयम् ॥ ६ ॥

टीका:—स्व कहिये मिथ्यात्मा-शरीर । ताके वर्ण अरु आश्रमसबन्धी धर्म करि और कृच्छ्रचांद्रायणादितपकरि और हरिजन किंवा सर्वभूतन पर दयादिरूप हरिके सतोषकारक कर्मते पुरुषनको वैराग्यादिक का चतुष्टयरूप साधन प्रकर्षकरि होवै है ॥ ६ ॥

तत्सिद्धावुपसन्नः सन् गुरुं ब्रह्मविदुत्तमम् ।

ज्ञानो त्पत्यैमहा वाक्यश्रुति कुर्याद्वि-
तन्मुखात् ॥

टीकाः-तिन चार साधनों की सिद्ध के हुये ब्रह्मवेत्ताओंविषै उत्तम कहिये निर्दोषगुरु के प्रति उपशक्तियुक्त कहिये शरणागत हुआ ज्ञानकी उत्पत्तिअर्थ तिसगुरुके मुखतेवेदविषै-प्रसिद्ध अर्थसहितमहावाक्यके श्रवणकोकरै ।७।

तत्सिद्धौ द्वापरभ्रांतिप्रहाणाय मुमुक्षुभिः ।
श्रवण मनना ध्यानमनुष्ठेय फलावधि ॥८॥

टीकाः-ता ज्ञानकी सिद्धि कहिये उत्पत्ति के हुये । मुमुक्षुन करि द्वापर जो द्विविधसंशय और भ्रांति जो विपरीतिभावना । तनकेनाश अर्थ प्रमाणगयादित्रिविध प्रतिबन्धके नाशरूप फल पर्यंत जैसे होवैं तैसे श्रवण मनन और निदिध्यासन करनेको योग्य है ॥८॥

श्रवणस्य प्रसिद्धये वभतांऽस्त्येतथासति ।
द्वयोर्मूलतु श्रवणकर्त्तव्य तद्विधधीवनैः ।६।

टीकाः-श्रवणकी प्रकर्पकरि सिद्धिसे ही अन्तके दो जे मनन अरु ध्यान वे होवें हैं। तैसे हुये तिनदोनोंका प्रसिद्धिमूल जो श्रवण। सो तो बुद्धिरूप धनवानोंकरि प्रथमकर्तव्य है ॥ ६ ॥

वेदांतानामशेपाणामादिमध्यावसानतः ।
ब्रह्मात्मन्येवतात्पर्यमितिधीःश्रवण भवेत् ।

टीकाः-तात्पर्यके निर्णायक षड्लिङ्गरूप युक्तिनकरि 'सर्ववेदांत जो उपनिषद्। तिन का आदि मध्य और अन्तते ब्रह्मरूप आत्मा विषैही तात्पर्य है ऐसी जो बुद्धि कहिये निश्चय। सो श्रवण होवें है। यह श्रवण का शास्त्रउक्त लक्षण है ॥१०॥

१ २ ३
उपक्रमोपसहाराबभ्यासोऽपूर्वता फलम् ।
५ ६
अर्थवादोपपत्ती च लिङ्ग ता·पर्यनिर्णये ।

टीकाः—तिन षट्लिङ्गनको अब नाम-करि निर्देश करैं हैं '-१ उपक्रम अरुउपसहार इन दोनोंकी एकरूपता। २ अभ्यास। ३ अपूर्वता। ४ फल।५ अर्थवाद।६ और उपपत्ति यह प्रत्येकतात्पर्यके निर्णयविषैलिंग हैं ॥२१॥

॥ १ ॥ उपक्रम और उपसंहार ॥

वस्तुनः प्रतिपाद्यस्यादावते प्रतिपादनम् ।
उपक्रमोपसहारौ तदैक्यं कथित बुधैः ॥२२॥

टीकाः—अब षट्श्लोकनकरि प्रत्येक लिङ्ग-के लक्षणको कहै हैं:-प्रकरणकरिके प्रतिपादन करनेको योग्य जो ब्रह्मरूप अद्वितीयवस्तु है। ताका प्रकरणके आदिविषै तथा अन्तविषै जो

प्रतिपादन । सो उपक्रम अरु उपसंहार हैं ॥ तिनमें आदि विषै जो प्रतिपादन । सो उपक्रम हैं और अन्तविषै जो प्रतिपादन । सो उपसहार है ॥ तिन दोनों की एकलिङ्ग-रूपता पडितों ने कही है ॥ १२ ॥

॥२॥ अभ्यास ॥

वस्तुःन—प्रति पाद्यस्य पटन च पुनः पुनः । अभ्यासः प्रोच्यते प्राज्ञैः स एवावृत्तिश-ब्दभाक् ॥ १३ ॥

टीकाः—प्रकरणकरि प्रतिपादन करने योग्य अद्वितीयवस्तु का तिसप्रकरण के मध्यविषै अभ्यास कहिये है। सोई अभ्यास आवृत्ति-शब्द का वाच्य है॥१३॥

॥३॥ अपूर्वता ॥

श्रुतिभिन्नप्रमाणेनाविषयत्वमपूर्वता ।
कुत्रचित्स्वप्रकाशत्वमप्यमेयतयोच्यते ॥

टीकाः-प्रकरणकरि प्रतिपाद्य अद्वितीय-वस्तुकी जो श्रुतिते भिन्न कहिये प्रत्यक्षादि लौकिकप्रमाणकरि अविषयता है। सो अपूर्वता है। औरकहीकता अद्वितीयवस्तुकी स्वप्रकाशता भी अमेयताकहिये सर्वप्रमाणनकी अविषयता रूपहेतुकरि अपूर्वता कहिये है ॥१४॥

॥४॥ फल

श्रूयमाणंतु तज्ज्ञानात्तत्प्राप्त्यादिप्रयोजनम्
फलं प्रकीर्तितं प्राज्ञैर्मुख्यमोक्षैकलक्षणम्

टीकाः-और प्रकरणकरिप्रति पाद्य अद्वितीय वस्तु केज्ञनतेप्रकरणविषै श्रूयमाण कहिये सुन्या जो तिसकीप्राप्ति आदिक प्रयोजन। सो पंडितोंने मोक्षरूपएकलक्षणवालामुख्य फल कहाहै।१५।

॥५॥ अर्थवाद ॥

वस्तु नः प्रतिपाद्यस्य प्रशंसनमथापि वा ।
निंदातद्विपरीतस्यह्यर्थवादः स्मृतोबुधैः ।१६।

टीकाः-प्रकरणकरि प्रतिपाद्य अद्वितीय-वस्तु का जो प्रशंसन कहिये स्तुति अथवा तिससे विपरीति कहिये द्वैत की निंदा भी पण्डितों ने अर्थवाद कहा है ॥१६॥

॥ ६ उपपत्ति ॥

वस्तुनःप्रतिपाद्यस्त युक्तिभिः प्रतिपादनम् ।
उपपत्तिःप्रविज्ञेयाद्दष्टाँताद्याह्यनेकधा ॥१७॥

टीकाः—प्रकरणकरिप्रतिपाद्य अद्वितीय-वस्तु का युक्तिसे जो प्रतिपादन । सो दृष्टांत आदिक अनेक प्रकारकी युक्तिरूप उपपत्ति जाननें को योग्य है ॥१७॥

एतल्लिंगविचारेण भवेत्तात्पर्यनिर्णयः ॥
तात्पर्यं यस्य शब्दस्य यत्र सः स्यात्तदर्थकः ॥

टीकाः-उक्तप्रकारके षट्लिंगनके उपनिषदन विषैविचार से उपनिषदनका अद्वैत कहिये प्रत्येकअभिन्नब्रह्मविषै जो तात्पर्य है। ताका निश्चय होवे है॥ और तिसशब्दका जिसअर्थ विषै तात्पर्य होवे। सो ता शब्दका अर्थहोवे है। अन्य कहिये केवलावाच्य अर्थनहीं ॥१८॥

मदानां श्रुतिससिद्धया मानससशयनुत्तये।
करोम्यवनिचिस निधिवल्लिंग कीर्तनम् ॥

टीकाः—मन्द कहिये अपन्डितजनोंके 'वेदांतन के अद्वितीयब्रह्मविषै तात्पर्य के निश्चयरूप' श्रवणकी सिद्धकरि 'वेदान्त अद्वैतब्रह्म के प्रतिपादक हैं वा अन्य अर्थ के प्रतिपादकहैं?" इस ज्ञानरूप प्रमाणसंशयके नाश अर्थ।

भूमिविषैंगाढ़ेहुये निधिकेसिद्धिकरि कीर्तन की न्यांई। मैं लिंगनकेकीर्त्तनको करूं हूं ॥१६॥
तत्वालोके विशेषोऽपिविचारस्तद्धदर्शनात्।
भयात्वेषांसमासेनक्रियतेदिक्प्रदर्शनम् ॥२०॥
टीका:—यद्यपि आनन्द गिरि स्वामीकृत तत्वा लोक नामक ग्रन्थ विषैं इन लिंगन का विशेष विचार किया है। याते इस लघुग्रथका प्रयोजन नहीं है। तथापि ता तत्वालोक के प्रदर्शनते। भुजकरितो सच्चेपसे इन लिंगन की दिशामात्र का प्रदर्शन करिये है ॥२०॥
सर्वेषूपनिषद्ग्रन्थेषूपासनमनेकधा।
ज्ञानशेषतुतज्ज्ञेय चित्तशुद्धिकरयतः ॥ २१ ॥
टीका:—सर्व उपनिषद्रूप ग्रथनविषैं अनेक प्रकारका उपासन कहिये ध्यान कहा है। सो तो ज्ञानका शेष कहिये उपकारक जानने को

योग्य है। जाते चित्तकी शुद्धि का करने हारा है। याते उपनिषद्‌विषै याते उपासना भाग हैं। ताके पृथक लिंगनके विचारका उपयोग नहीं है। याते सो यहां किया ॥२१॥

इति श्रीश्रुतिषड्लिंगसंग्रहे उपोद्घातकीर्तनं नाम प्रथमं प्रकरणं समाप्तम् ॥१॥

— ※ —

अथेशावास्योपनिषद्‌लिंगकीर्तनम्।

ईशावास्यमुपक्रम्योपसंहारः स पर्यगात्।
अनेजदेकमित्याद्योऽभ्यासस्तस्याद्वयस्य च॥

१ उपक्रमउपसंहारः— (१) "ईशावास्यामिदं सर्व"। कहिये "यह सर्वजगत्। ईश्वरकरि आवास्य कहिये आच्छादन करने को योग्य है,। ऐसे प्रथममन्त्रसे उपक्रम करिके। (२) 'स पर्यगाच्छुक्र।, कहिये

'सो चारोंओरते जाताभया और शुद्ध है, ।
इस मन्त्रनकरि उपसंहार है ॥

२ अभ्यासः—और अनेजदेकं मनसो जवीयो,, । कहिये "अचल एक मनसे वेगवान् है" । इसआदि अर्थरूप तिस अद्वैत का अभ्यास है ॥ यहां आदि शब्द करि 'तदन्तररस्य सर्वस्य, कहिये 'सोइस सर्व के अन्तर है, । इस मंत्रका ग्रहण है ॥ १ ॥

नेनद् वा अपूर्वत्व फलं मोहाद्यभावकम् ।
कुर्वन्नित्यनुवाद्यं वाक्यर्थाभेदविनिंदनम् ॥

अपूर्वताः नैनद् वा आप्नुवन् पूर्वमर्शत् । कहिये इसको देव जे इन्द्रिय वे प्राप्त होते भये । सो पूर्व कहा है । इस ४ मन्त्रकरि उपनिषद्नते अन्य प्रत्यक्षादि प्रमाणन की अविषयतारूप अपूर्वता कही है ॥

४ फलः—और 'तत्रको मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः कहिये "तहां एकता के देखनेहारेको कौन मोह है कौन शोक है,। इस ७ मन्त्र से मोह आदिक का अभाव रूप फल कहा है ॥

५ अर्थवादः—कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ 'समाः'। कहिये "यहां कर्मन को कहता हुआ शत वर्ष जीवन को इच्छे"। इस २ मन्त्रसे जीवनेकी इच्छावालेभेददर्शी को कर्म करने का अनुवाद करिके हीं। पीछे "असूर्य्या नाम ते लोका,। कहिये "वे असुरन के लोक प्रसिद्ध हैं,। इन ३ मन्त्र से भेदज्ञान की निंदा अरु अर्थात् अभेद ज्ञान की स्तुतिरूप अर्थवाद कहा है ॥२॥

तस्मिन्नपो मातरिश्वेत्युपपत्तिः प्रदर्शिताएते
रीशोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते ॥ ३ ॥

६ उत्पत्तिः—और 'तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति,, । कहिये "ताके होते वायु जलको धारता है,, ऐसे इस ४ मन्त्र से उपपत्ति कहिये अभेदबोधनकी युक्ति दिखाई ॥ इन-लिंगोंकरि ईशोपनिषद् का अद्वैतब्रह्मविषै तात्पय अङ्गीकार करिये है ॥३॥

इति श्री० ईशोपनिषद्लिंग ॥ द्वितीय प्रकरणं० ॥ २ ॥

— ❋ —

॥ अथ केनोपनिषद्लिंगकीर्तनम् ॥

श्रोत्रस्येत्याद्युपक्रम्यप्रतिबोधादिवाक्यतः

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] "श्रोत्रस्य

श्रोत्रं, । कहिये 'श्रोत्रका श्रोत्र हैं' इत्यादि १ खंडके २ वाक्यसे उपक्रमकरिके ॥ [२] 'प्रतिबोधविदितं, कहिये 'बोधबोधके प्रति विदित हैं, इत्यादि १।१२ वाक्यते उपसंहार ही कहा है। इनदोनोंकीएकता पंडितनकरि जानिये है ॥ १ ॥

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धीत्याद्यभ्यास उदीरितः।
न तत्रेन्याद्यपूर्वत्वं प्रेत्यास्मादितिवै फलम् ॥

२ अभ्यासः—'तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि,। कहिये 'ताहीकोतूब्रह्मजान, इत्यादि १।४।८ अभ्यास कहा हैं ॥

३ अपूर्वताः—और 'न तत्र चक्षुर्गच्छति,। कहिये 'तिसविषै चक्षु गमन करता नहीं,। इत्यादि १।३ उपनिषदनतें भिन्न प्रमाण की अविषयतारूप अपूर्वता है ॥

४ फलः 'भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः। कहिये 'धीर।। सर्वभूतनविषे जानिके, । ऐसे आत्मज्ञानको अनुवादकरिके प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवंति, । कहिये 'इस लोकते देह अरु प्राणके वियोगको पायके अमृतरूपहोवैं है। ऐसे ३-५ प्रसिद्धफल कहा है ॥ २ ॥
ब्रह्महे-याद्यर्थवादोऽविज्ञानतमिति चांतिमम्। एतैः केनोपनिषद्दोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते ॥ ३ ॥
५ अर्थवादः—और ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये, कहिये ब्रह्म देवनके अर्थ विजय देताभया, इत्यादि इन ३।१ वाक्यनसे आख्यायिकारूप अर्थवाद कहा है ॥
६ उपपत्तिः—और "यस्यामत तस्य मत" कहिये, जिसको अज्ञात है तिसको ज्ञात है। इत्यादिरूप इस २।३ स्वयंप्रकाश अद्वैत वस्तुकेसाधक वाक्यकरिअन्तिमकहियें उपपत्ति

कहिये तर्कमययुक्तिरूप षष्ठलिंग कहा है" ॥ इनलिङ्गोंकरि केनउपनिषद्‌का अद्वैत ब्रह्म विषैं तात्पर्य अङ्गीकार करिये है ॥ ३ ॥

इति श्री० केनोपनिषल्लिङ्गकीर्तन नाम
तृ० प्र० समाप्तम् ॥३॥

— ※ —

अथ कठोपनिषल्लिङ्गकीर्तनम् ॥१४।

येय प्रेते मनुष्ये त्वित्यादिः सामान्यतस्तथा
अन्यत्र धर्मतस्त्यादिवाक्याच्च विशेषतः

१ उपक्रमः उपसहारः—[१] "येय प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये,, । कहिये 'मरे मनुष्यविषैं जो यह संशय है'इत्यादि १।१।१० सामान्यतें उपक्रम् है तथा 'अन्यत्र धर्मादन्यत्रा धर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात्, कहिये 'धर्म तें भिन्न अरु अधर्मतें भिन्न और इस कार्य कारणतें भिन्न है, इत्यादि १।२।१४ वाक्यतें विशेषकरि उपक्रम है ॥ १ ॥

उपक्रमोऽगुष्ठमात्र इत्यारभ्योपसहृतिः ।
न जायतेऽशरीरश्च नित्यानांनित्यएव सः ।२।
चेतनोऽचेतनानां च बहूनामेक एव च ।
अरतीत्येवोपलब्धव्य इत्याद्यभ्यास ईरितः ।३।
[२] और अगुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा, ।
कहिये "अंगुष्ठमात्र पुरुष अन्तरात्मा है, ।
ऐसे आरंभ करिके इस २।६।१७ वाक्य से
उपसहार कहा है ॥

२ अभ्यासः–और "न जायते म्रियते वा, ।
कहिये 'जन्मता नहीं वा मरता नहीं' । १ ।
२।१८ और 'अशरीररूपं शरीरेस्वनवस्थेस्व-
वस्थितम्' । कहिये अस्थिर शरीरनविषै
स्थित अशरीरको २ । २ । २१ और नित्यो
नित्यानां, । कहिये 'सो नित्योंका नित्य है, ।
२ । ५ । १३ ॥ २ ॥

और 'चेतनश्चेतनामेको बहूनां विदधाति कामान्। कहिये "चेतनोंका चेतन है। बहुतनके मध्य एक हुआ कामोंको करता है, ।२।५।२३ और असौ थैत्रोपल, व्यव्य:, 'है, ऐसे ही जाननेको योग्य है। २। १३ इत्यादि बहुकरिके अभ्यास कहा है ॥३॥

नैव वाचा न मनसेत्याद्यपूर्वत्वमिंगितम् मृ यु प्रोक्तां त्वेवमाद्यात्फलं श्रु या समीरितम् ॥

३ अपूर्वता:—नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा, कहिये 'नहीं वाणी करि न मनकरि न चक्षुकरि जाननेको शक्य है,।१।६।१६ इत्यादि अपूर्वता अभिप्रेत है॥

४ फलः—और 'मृत्युप्रोक्तां नचिकेतोऽथ लब्ध्वाविद्यामेतां योगविधिं च कृत्स्नम् । ब्रह्म प्राप्तो विरजोऽभूद्विमृत्युरन्योऽप्येवं यो विदध्यात्ममेव, । कहिये, अनन्तर नचिकेता । यमकरि कही इस विद्याको और सम्पूर्णयोग विधिको पायके ब्रह्मको प्राप्त निर्मल मृत्युरहित होताभया । अन्य भी जो अध्यात्म को ही जानेगा सो ऐसे होवैगा, । इत्यादि १ अध्यायकी ६ षष्ठवल्लीके १८ वाक्यते। श्रुति में फल सम्यक् कहा है ॥४॥

स लब्ध्वा मोदनीयत्वं फलप्रोक्तं स्फुटं तथा ।
ब्रह्म चत्रं च युगलं मोदनं त्वेचमादितः ॥५॥

तैसे 'स मोदते मोदनीयं हि लब्ध्वा, कहिये 'सो मोदरूप से अनुभव करने योग्य को पायके मोदको पावता है, १ । २ । १३ इस वाक्य करि ऐसे यह भी स्पष्ट फल कहा है ॥

५ अर्थवादः—और "यस्य ब्रह्म च क्षत्र च उभे भवत ओदनः,, । कहिये "जाका ब्राह्मण और क्षत्रियदोनों ओदन होवे है,, ।१।२।२४ इत्यादि वाक्यते ॥५॥

अर्थवादश्च युक्तिर्वै ःवग्निरित्यादिवाक्यतः
एभिः कठोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते ।

अद्वैतब्रह्म की स्तुतिरूप अर्थवाद कहा है। तैसे 'मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य यह नानेव पश्यति, कहिये जो यहां नानाकी न्यांई देखता है सो मृत्युको पावता है, इस १।४।१० आदिक १।४।११ वाक्य नसे भेदज्ञानकी निन्दारूप जो अर्थवाद कहा है। सो भी "च" शब्दकरि सूचन किया ॥ और

६ उपपत्तिः—अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव"। कहिये "जैसे एक अग्नि भुवन के प्रति प्रविष्ट हुआ रूप-रूपके तांई प्रतिरूप होता भया,, ।२।५। ९-११ इत्यादितीनमन्त्ररूप वाक्यनकरि और चकारसे 'येन रूपं रसं गंध, कहिये 'जिस करि रूपको रसको गंधको जानता है। इस २। ४।३ आदिक अनेकवाक्यनसेभी युक्तिशब्द की वाच्य उपपत्ति कही है॥ इन लिङ्गोंकरि कठवल्लीउपनिषद् का अद्वैतब्रह्मविषै तात्पर्य अङ्गीकार करिये है ॥६॥

इति श्री० कठोपनिषल्लिंग की च०
प्र० समाप्तम् ॥४॥

—(:o:)—

अथ प्रश्नोपनिषल्लिंग कीर्तनम् । ५ ।

ब्रह्मपरा हि वै ब्रह्मनिष्ठा इत्युपक्रम्य तत् ।
तान्होवाचैतावदेवोपसंहारस्तदेकता ॥

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] 'ब्रह्मपरा ब्रह्मनिष्ठा पर ब्रह्मान्वेषमाणाः, । कहिये । 'ब्रह्मविपतत्पर ब्रह्मनिष्ठपर ब्रह्म को खोजते हुये, १ । ऐसे तिस परब्रह्मकोही उपक्रमकरिके । [२] 'तान्होंवाचैतावदहमेतत्पर, ब्रह्म वेदनातः परमस्ति, कहिये 'तिनको कहता भयाः—इतना ही मैं इस परब्रह्मको जानता हूँ । इसते परे नहीं है । ६ प्रश्न के ७ वाक्य से ऐसे उपसंहार है । इन दोनों की एकलिंग रूपता है ॥ १ ॥

एतद्वै सत्यकामेति यत्तदभ्यास उच्चते ।

इहैवांतः शरीरे तु सोम्य ! चेत्याद्यपूर्वता ॥

३ अभ्यासः—और 'एतद्वै सत्यकाम् ! परं चापरं च यदोंकारः कहिये' हे सत्य काम ! यहनिश्चयकरि परब्रह्म और अपरब्रह्म है। जो ॐकार है, ।५।२ ऐसे और

'यत्तच्छांतमजरमृतमभयं परं च'

कहिये 'जो सो शान्त अजर-अमृत-अभय अरु परब्रह्म है ।५।७ऐसे अभ्यास कहियेहैं॥ और

३ अपूर्वताःइहैवांतः शरीर सौम्य ! से पुरुषो यस्मिन्नेताः षोडशकलाः प्रभवति कहिये 'हे सौम्य ! ऐसे ही शरीर भीतर से पुरुष है । जिस विषै ये षोडशकला उपजतीयां है, । इस ६ । २ वाक्य से शरीर विषै स्थित का ही उपदेशविना अनुपलंभ कहिये अप्रतीति रूप अपूर्वता सूचन करो ॥ २ ॥

त चेद्यं पुरुष वेदेत्यादिः फलमुच्यते ।
तदच्छायमदेहत्यादिभिः कथितास्तुः ।

४ फलः—और "तं वेद्यं पुरुषं यथा। मा वो मृत्युपरि व्यथा इति"। कहिये 'तिस वेद्यपुरुषको जैसा है तैसा जानना। तुमको मृत्यु की पीड़ा मति हो „ ऐसे ६। ६ इत्यादि वाक्यते फल कहिये है॥ और

५ अर्थवाद—"तदच्छायमशरीरमलो हित शुभ्रमक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य। स सर्वज्ञः सर्वो भवति„। कहियें " हे सोम्य ! जो कोईक तिस अज्ञानरहित अशरीर-अलोहित-शुद्ध- अक्षरको जानता है। सो सर्वज्ञ अरु सर्व होवै है„ इत्यादि ४। १० वाक्यनकरि अर्थवादरूप स्तुति कही है ॥३॥

नदीसमुद्रदृष्टांतांदुपपत्तिः प्रदर्शिता ।
एतैः प्रश्नोपनिषदोऽद्वैते तात्पर्यमिष्यते ॥४॥

६ उपपत्तिः—और 'स यथेमा नद्यः, कहिये 'सो जैसे ये नदियां, इस । ६ । ५ आदिक ६ । ६ । वाक्यगत दृष्टांततें परमात्मातें षोडशकलाओंकी उत्पत्ति अरु विनाशके उपन्यासतें उपपत्ति दिखाई ॥ इन लिंगोंकरि प्रश्नोपनिषद्का अद्वैतब्रह्मविषै तात्पर्य अङ्गीकार करिये है ॥४॥

इति श्री० प्रश्नोपनिषल्लिंग० पंचम प्र० समाप्तम् ॥१॥

—*—

अथ मुंडकोपनिषल्लिंगकीर्त्तनम् ॥६॥

अथ परेत्युक्रम्य यो ह वै परमं च तत् ।
ब्रह्म वेदेत्यादिवाक्यादुपसंपार ईरितिः ॥१॥

उपक्रमउपसंहारः-[१] "अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते यत्तदद्रश्यं,, । कहिये "अब पराविद्या कहिये हैः—जिसकरि सो अक्षर जानिये है जो सो अदृश्य है ।,, इत्यादि १।१।५-६ वाक्यकरि उपक्रम करिके । [२] "स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म वेद,, । कहिये " सो जोई तिस परम ब्रह्म को जानता है,, इत्यादि ३ । २ । ६ वाक्यते उपसंहार कहा है ॥ ६ ॥

आविःसन्निहितं चेति तदेतदक्षर त्विति ।
अभ्यासोगृह्यतेनेवचक्षु पेताद्य पूर्वता ॥२॥

२ अभ्यासः—और आविः सन्निहितं,, कहिये "प्रत्यक्ष है अरु समीप हैं,, २ । २ । १ और 'तदेतक्षरं ब्रह्म, कहिये,, सो यह

अक्षररूप ब्रह्म है,, । २ । २ । २ । ऐसे तो अभ्यास कहा है ॥ और

३ अपूर्वताः—"न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा ।,, कहिये "न चक्षुकरि ग्रहण करियेहै और वाक्करि भी नहीं ।,, इत्यादिरूप ३ मुंडकके १ खंडके ८वाक्यकी अर्थरूप अपूर्वता कहिये प्रमाणांतरकी अविषयता है ॥३॥

भिद्यते हृदयग्रंथिरित्याद्यात्फलमीरितम् ।
यं यं लोकंचहेत्याद्यै रर्थवादःप्रघोषितः ॥४॥

४ फलः—"भिद्यते हृदयग्रंथिः ।,, कहिये तिस परावरके देखे हुए । हृदयग्रंथि भेदको पावता है ।,, इस २।२। । ८ आदिक ३ । २ । ८-६ वाक्यतें फल कहा है ॥

५ अर्थवादः—'और यं यं लोकं मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः कामयते यांश्च कामान्। तं तं लोकं जायते तांश्च कामांस्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकाम।', कहिये "निर्मल मनवाला जिस जिस लोकको मनसे चितवता है और जिन भोगनको इच्छता है। तिसतिस लोकको और तिन भोगनको पावता है। तातें विभूति की इच्छा वाला आत्मज्ञानी को पूजन करे।, इस ३। १। १० आदिक वाक्यनसें अर्थवाद कहा है॥ ३ ॥

सुदीप्ताग्नेर्यथेत्यादिनोपपत्तिः प्रकाशिता।
एतैर्मुण्डकतात्पर्यमद्वैतेऽङ्गीकृत बुधैः ॥ ४ ॥

७ उपपत्तिः—और यथा सुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिंगाः सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः।

तथाऽक्षराद्विविधा सोम्य ? भावाः प्रजायन्ते तत्र चैवापियन्ति, कहिये जैसे प्रज्वलित अग्नितें हजारों हजार सरूप विस्फुलिंगउपजते हैं। तैसे हे सौम्य ! अक्षरते विवध पदार्थ उपजते हैं और तहां ही लीन होते है, इस २। १। १ आदिक वाक्यते उपपत्ति प्रकाश करी है। इन लिंगोंकरि मुंडकोपनिषद्का अद्वैत निपं तात्पर्य पडितों ने अंगीकार किया है ॥४॥

इति श्री० मुंडकोपनिषल्लिग० षष्ठ प्र० समाप्तम् ॥६॥

—(:o:)—

अथ मांडूक्योपनिषल्लिंगकीर्त्तनम् ॥७॥

ॐ मित्येतदुपक्रम्यात्र इत्त्यपक्रमोपसहृतिः ।
प्रपञ्चोपशमं शांतिमित्याद्य भ्यासईरितः १

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] "ॐ मित्येतदक्षरमिदँ सर्वं,, कहिये "यह सर्व ॐ ऐसा यह अक्षर है ।, इस १ वाक्यसे उपक्रम करिके । [२] "अमात्रश्चतुर्थो , कहिये "अमात्ररूप चतुर्थपाद है ।,, इत्यादिरूप १२ वाक्यसे उपसंहार है॥ और

२ अभ्यासः—"प्रपंचोपसनं शांतं,, कहिये "निष्प्रपंचअरुशांत हैं, १२ इत्यादि अभ्यास कहा है ॥१॥

अदृष्टमाद्य पूर्वत्वंर विशत्यात्मना फलम् ॥
अवांतरफलोक्तिस्तु ह्यर्थवादोविदांमते २

३ अपूर्वताः—और "अदृष्टमव्यवहार्यं,,

कहिये । 'अदृष्ट है अरु अव्यवहार्य है। ७ इत्यादि प्रमाणांतरकी अविषयतारूप अपूर्वता है ।। और

३ फलः—"सविशत्यात्मनात्यानम् एवं वेद,, । कहिये 'आत्माको जो ऐसे जानता है सो आत्मा के साथ प्रवेश करता है,, । इस १२ वाक्यकरि फल कह्या है । और

अर्थवाद—"आप्नोति ह वै सर्वान् कमान्,, कहिये 'सर्व कामों को पावता है,, । इस ६ आदिक १० वाक्यनसे जो अवांतर फलकी है । सो तो विद्वानोंके मतविषै प्रसिद्ध अर्थवाद है ॥२॥

अद्वैत च प्रवेशपियोपपत्तिः पादकल्पना ।
मांडुक्योपनिषद्भाव एतैर्मेरिष्यतेऽद्वये ॥३॥

५ उपपत्तिः—और अद्वैत ब्रह्मविषै प्रवेश

अर्थ १–१२ वें वाक्यपर्यन्त जो ४ पादनकी कल्पना है सो उपपत्ति कहिये युक्ति है ॥ उन लिंगोंकरिहों मांडूक्योपनिषद्का भाव कहिये तात्पर्य अद्वैतब्रह्मविषैअंगीकार करिये है ॥३॥
इति श्री०मांडूक्योपनिषल्लिंग०सप्तम०प्र०समाप्तम् ॥७॥

—*—

अथ तैत्तिरीयोपनिषद्लिंगकीर्त्तनम् ।

ब्रह्मविदित्यकम्प यश्चायं तूपसंहृतिः ।
तस्माद्वाइत्येथोवाक्यंय दाह्यं वेतिचापरम् ॥
भीषाऽस्मादित्यथोऽभ्यासोयतो वाचोत्व-
पूर्वता । सोऽश्नुते ब्रह्मणा कामान सहेत्यादि फलंश्रुतम् ॥२॥

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] "ब्रह्मविदाप्नोति पर कहिये 'ब्रह्मवित् परब्रह्मको पावता है,। २। १ ऐसे उपक्रम करिके ।

(२) 'सपश्चाय पुरुषे । यश्चसावादित्ये । स एकः, । कहिये सो जो यह पुरुषविषै है और जो यह आदित्यविषै है । सो एक है,। इत्यादिरूप इस १ । ८ वाक्यकरि उपसंहार है । और

२ अभ्यासः—'तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सभूतः, । कहिये "तिस इस आत्माते आकाश उपज्या, । २ । १ ऐसे और 'यदा ह्येवैष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽ निरुक्तेऽनिलयने, कहिये ' जबहीं यह इस अदृश्य–अशरीर–अवाच्य–अनाधारविषै, है । यह २ । ७ अपर वाक्य है ॥१॥

और 'भीषास्माद्वातः पवते । कहिये इस परमात्माते भयकरि वायु वहता है, ॥२॥ ८ ऐसे अभ्यास है ॥ और

३ अपूर्वताः—यतो वाचो निवर्त्तते अप्राप्य मनसा सह,,। कहिये "मनसहित वाणीयांअप्राप्त होयके तिसते निवर्त्त होवे है,। इस २। ४ वाक्यसे मनवाणीकरि उपलक्षित सकलप्रमाणोंकी अगोचरतारूप अपूर्वता कही॥

४ फलः—और "सोश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता ,, कहिये "सो ज्ञानी ज्ञानरूप ब्रह्मके साथ एक हुआ सर्व कामों को भोगता है। २। इत्यादि २ वल्लीके ७ वें अनुवादसे फल कहा है ॥२॥

अर्थवादोऽन्तरं कुर्यादुदरं भेदनिंदनम्।
गायन्नास्तेत्रिसामतदियादिर्विदुपःस्तुति

६ अर्थवादः—यदुदरमतरं कुरुते। अथ तस्य भयं भवति,, कहिये,, जो यत् किंचत् भेदको करता है। अनन्तर ताको भय होवेहै।

२ । ७ ऐसे भेदज्ञानकी निन्दा हैं और गाय-
गायन्नाते हितत्साम अहमन्नमहमन्नमहम-
न्नम् । अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः,, ।
कहिये "विद्वान् इस सामको गायनकरताहुआ
स्थित होवे हैः—मैं [सर्व] भोग्य हूं । मैं भोग्य
हूं । मैं भोग्य हूं । मैं [सर्व] भोक्ता हूँ । मैं
भोक्ता हूं । मैं भोक्ता हूं,, इत्यादि ३ । १०
विद्वान्की स्तुति है । सो अर्थवाद है ॥३॥
यतो भूतानिजाय तेसत्सृष्ट्वेत्यादितोऽतिमान्
तैत्तिरीयश्रुतिर्भाव ऐवेमैरिष्यतेऽद्वये ॥ ४ ॥
७ उपपत्तिः—और "यतो वा इमानि
भूतानि जायंते,, । कहिये "जिससे ये भूत
उपजतें हैं । ३ । १ और "तत्सृष्ट्वातदेवा-
नुप्राविशत्,, । कहिये "ताको सृजिके ताहीके
प्रतिप्रवेश करतामया,, ।२।६। इत्यादि कार्य

कारणके अभेदके बोधक सृष्टिः वाक्यते और। प्रवेष्टा प्रविष्ट अरु प्रवेश्य के अभेद के बोधक प्रवेशवाक्यते अन्तका उपपत्तिरूपलिंगकहाहै॥ इन लिंगोंकरिही तैत्तिरीयोपनिषद् का भाव कहियेतात्पर्य अद्वैतविषैअंगीकारकरिये है ॥४॥

इति श्री तैतरीयोपनिषल्लिंग० नामाष्टम प्रकरणं समाप्तम् ॥८॥

—(ऽ)—

अथै तरेयोपनिषल्लिंग कीर्तनम् । ६ ।

आत्मावा इत्युपक्रमोपसंहारस्तु चांतिमे प्रज्ञानब्रह्म वाक्येन महतोक्तो विधीधनैः ॥१॥

१ उपक्रमउपसहारः—[१] "आत्मा वा इदमेक एकाग्र आसीत, कहिये "यह आगे आत्माही होता भया ।, । १ । १ । १ ऐसे उपक्रम करिके । [२] "प्रज्ञानं ब्रह्म,,

कहिये 'प्रज्ञान जो जीव सो ब्रह्म है,। इस अन्तके ३ अध्यायविषै स्थित ५ खंडके ३ ऋकगत महावाक्यकरि बुद्धिमानों ने प्रसिद्ध उपसंहार कहा है ॥१॥

स इमानसृजल्लोकान्स ईक्षत सृजा इति ।
तस्मादिदंद्र इत्यादिवाक्यैरभ्यासईरितः ॥२॥

अभ्यासः—और "स इमांल्लोकान-सृजत,। कहिये "सो इन लोकनको सृजता भया ,। १ । १ । २ और "स ईक्षतेमे नु लोका लोकान्नु सृजा इति कहिये "सो ईक्षण करता भयाः—ये लोक हैं । लोकपालोंको सृजोंसे ऐसे,, । १ । १ । ३ और "तस्मादिदन्द्रो नाम, कहिये 'ताते इन्द्र नाम है, । १ । ३ । १४ इत्यादि वाक्योंकरि अभ्यास कहा है ॥२॥

स जाय इत्यापूर्वत्वं प्रज्ञानेत्रं तदित्यपि।
स एतेनेतिवाक्येन फलं स्पष्टमुदीरितम् ३

अपूर्वता:—और "स जातो भूतान्यभिव्यैक्षत्,, । कहिये 'सो प्रकट हुआ भूतनको स्पष्ट जानता भया,, इस १ । ३ १३ वाक्यसे सर्व भूतनका प्रकाशक होनेकरि तिनकी अविषयतारूप क्रिया:—"सर्वं तत्प्रज्ञाननेत्रं,, कहिये "सर्वजगत् स्वप्रकाश चैतन्यरूपनिर्वाहनवाला है,, इस ३ अध्यायके ५ खंडके २ वाक्यसे ऐसे स्वप्रकाशतारूप भी अपूर्वता कही है ॥ और

४ फलः—स एतेन प्रज्ञेनात्मनाऽस्माल्लोकादुत्क्रम्यामुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्वान्कामानाप्त्वाऽमृतः समभवत् समभवद् इत्योम्, कहिये 'सो इस ज्ञानरूपसे इस लोकतें उल्लंघन करिके उस मोक्षरूपलोकविषै

सर्वकामोंको पायके अमृत होता भया। ऐसें सत्य है,, ॥ इस ३ अध्यायके ५ खंडके ४ वाक्यकरि स्पष्ट फल कहा है ३ ॥
ता एतादेवताः सृष्टास्तथागर्भे नुसन्निति।
स्तुतियुक्तिस्तुसईमानित्यारभ्यविदार्यसः
एतंसीमानलित्यदिश्रुतिवाक्यात्प्रकीर्तिता
इत्युक्तं स्तु षड्लिंगैरतरेयश्रुतौं गतम् ५
तात्पर्य ज्ञायतेऽद्वैते तन्निष्ठैर्वेदपारगैः।
तथा मुमुक्षुभिः सर्वोपरि विज्ञेयमादरात् ६

५ अर्थवाद—और "ता एता देवताः सृष्टा।" कहिये 'जो ये उत्पादित देवता स्तुति करती भई" ।१ ।२ ।१ और "गर्भेनु सन्नन्वे पामवेदमहं देवानांजनिमानि विश्वा"। कहिये "माताकेगर्भस्थानविषेंहीं हुआ मैं इन देवनके सर्व जन्मोंको जानता हूं ।२।४।५ ऐसे अद्वैतपरमात्माकीस्तुतिरूपअर्थवादकहाहै। और

६ उपपत्तिः—स इमांल्लोकानसृजत" । कहिए "सो इन लोकन को सृजत भया" ॥ १ । १ । २ इहां से आरम्भ करिके ॥ ४ ॥ स एतमेव सीमानं विदार्य्येतया द्वारा प्रपाद्यत, । कहिये "सो इसी ही मस्तकगत सीमाको विदारण करिके इस द्वारकरिशरीर-विषै प्राप्त होता भया । इत्यादि १ । ३ । १२ वाक्यते श्रुतिने युक्ति, कहिए उपपत्ति कही है ॥ उक्त इन षट्लिंगों से तो ऐतरेयउप-निषद्विषैस्थित ॥ ५ ॥

अद्वैतविषै जो तात्पर्य है । सो वेदके पारको प्राप्त भए कहिए श्रोत्रियऔरतिसविषैनिष्ठा वाले कहिएब्रह्मनिष्ठनकरि जानिए है । तैसे सर्व मुमुक्षुनकरिभी आदरसेजाननेको योग्य है ॥६॥

इति श्री० ऐतरेयोपनिल्लिंग० नवमं प्रकरणं समाप्तम् ॥६॥

अथ श्री छान्दोग्योपनिषद्‌लिंग कीर्त्तनम् ॥ १० ॥

तत्र षष्ठाध्याय लिंगकीर्त्तनम् ॥६॥

सदेवेत्युपक्रम्यैवैतदात्म्यमिदमित्यतः ।
उपसंहृतिरभ्यासो नवकृत्वा उदीरतः ॥ १ ॥
तत्त्वमसीतिवाक्यस्यावर्तनाद्बुद्धिमत्तमैः
अत्रैवसोम्य ! सन्नेत्यपूर्वतोक्ताहिपंडितैः ॥२॥

१ उपक्रमउपसंहारः—'सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीय, । कहिये 'हे सोम्य ! सृष्टितैं पूर्व एकहीं अद्वितीय सत् ही होता भया, । ६ । २ । १ ऐसे उपक्रम करिके 'एतदात्म्यमिदं सर्वं' कहिये यह

सर्व इस सत्‌रूप आत्मभाव वाला है, । ऐसे इस ६ अभ्यास के १६ खंडके ३ वाक्यते उपसंहार कहा है ॥

२ अभ्यासः—नववार कहा है । 'तत्त्वमसि, कहिये सो तू है, इस ६ । ८ । १६ वाक्यके आवर्त्तनते पण्डितोंने कहा है ॥

३ अपूर्वताः—और अन्न वाव किलसत्योम्य ! न निभालयसेऽत्रैव किलेति कहिये ऐसे हे सौम्य ! इस शरीरविषै आचार्यके उपदेशते बिना सत्‌रूप ब्रह्म विद्यमान है ताको इन्द्रियनसे नहीं जानता है । यहांही विद्यमान सत्‌को गुरुउपदेशरूप अन्य उपायसे जान ६ ।१।३।२ ऐसे पडितोंने गुरुउपदेशसे बिना प्रमाणान्तरकी अविषयतारूप प्रसिद्ध अपूर्वता कही है ॥ १–२ ॥

तावदेवचिरंतस्यत्यादिवाक्यात्फलस्मृतम्
तंमादेशमुताप्रेक्ष्य इत्यादेःस्तुतिरीरिता ३

४ फलः—आचार्यवान पुरुषो वेद । तस्य तावदेव चिरं यावन्न विमोक्ष्येऽथ संपत्स्ये कहिये आचार्यवान् पुरुष जानता है । तिस ज्ञानीको तहांलगिहीं विदेहमोक्षविषै विलंब है जहांलगि प्रारब्धके क्षयकरि देहका अन्त भयानहीं अनन्तर जगतरूप ब्रह्मको पावता है । इत्यादि ६।१४।२ वाक्यसे फल कहा है ॥

५ अर्थवादः—और उत तमादेशमप्रायो येनाश्रुतं श्रुतंभवत्यमतं मत मविज्ञातं विज्ञातं कहिये हे श्वेतकेतो ! तिस आदेशको भी आचार्यके प्रति पूछताभया है ।

जिसकरि नहीं सुन्यासुन्या होवैहै ॥ नहीं मनन-किया मननकिया होवै है। नहीं जान्याजान्या होवै है। इत्यादि ६।१।१ वाक्यते अर्थ-वादरूप अद्वैतके ज्ञानकी स्तुति कही है ॥३॥

उपपत्तिर्यथा सौम्यैकेनेत्यादिनिदर्शनम्।
एतैश्छांदोग्यतात्पर्यं त्विषष्ठे चप्यतेऽद्वये ॥४॥

२ उपपत्तिः—और यथा सौम्यैकेन मृत्पिंडेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातँ स्यात् कहिये हे सौम्य ! जैसे एक मृत्तिका के पिंडकरि सब घटादि कार्य मृत्तिकामय जान्या जावै है। इत्यादि ६।१।१—३ वाक्यगत दृष्टांतरूप उपपत्तिहै ॥ इन लिंगोंकरि षष्ठअ-ध्यायगत छांदोग्यउपनिषद्का तात्पर्य अद्वैत-विषै अंगीकार कहिये है ॥४॥

अथ सप्तमाध्यायलिंगकीर्त्तनम् ॥ ७ ॥

शोकं तरतितद्वत्थे-त्युपक्रम्योपसंहृति ।
तस्य ह वेतिवाक्येन तदैक्यमनुभूयताम्

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] "तरति शोकमात्मवित् , । कहिये "आत्मज्ञानी शोकको करता है, । ७ । १ । ३ ऐसे उपक्रम करिके [२] तस्य ह वाएतस्यैव पश्यत एव मान्यानस्यैवं विजानत आत्मतः प्राण आत्मत आशा, । कहिये "तिस इस ऐसे देखनेवालेके और ऐसे मनन करनेवालेके और ऐसे जाननेवालेके आत्माते प्राण और आत्माते आशा होवै है, । इस ७ अध्यायके २६ खंडके १ वाक्यकरि उपसंहार कहा हैं। तिनदोनोंकी एकता अनुभव करना ॥ ५ ॥

अधरताच्च स एव स्यात्तथाऽथातस्त्वहंकृतेः
आदेशश्च स्मृतोऽभ्यासोऽथात आत्मोप-
देशयुक् ॥६॥

२ अभ्यासः—और 'स एवाधस्तात्स उपरिष्टात्, कहिये 'सोई' नीचे है। सो उपरि है, तैसे अथातोऽहंकारादेश एवाह मधस्तादहमुपरिष्टात, कहिये अब अहंकारका उपदेश ही है कि:—मैं नीचे हूं। मैं उपरि हूं, तैसे 'अथा आत्मादेश एवात्यैवाधस्तादात्मोपरिष्टात्, कहिये 'अब आत्माका उपदेश है कि:—आत्मा ही नीचे है। आत्मा उपरि है, इस आत्माके उपदेशकरि युक्त। उक्त ७ अध्यायके २५ खंडके १-२ वाक्यनकरि अभ्यास कहा है ॥६॥

ऋगादिसर्वविद्यानामगोचरतयाऽऽत्मनः ।
अपूर्वता फलं पश्यो नैव मृत्युर्हि पश्यति

३ अपूर्वताः—और 'स होवाचर्ग्वेदंभगवो ऽध्येमि' कहिये 'नारद सनत्कुमारको कहै हैंः—हे भगवान् ! ऋग्वेदको पढ्या हूं' । इत्यादि ७ । १ । २–३ वाक्यकरि आत्माकी ऋग्वेदआदि सर्वविद्याओंकी अगोचरता करि गुरुउपदेशकरि वेद्यतारूप अपूर्वता की है ॥

४ फलः—और 'न पश्यो–मृत्यु पश्यति, कहिये 'ज्ञानी मृत्युको नहीं देखता । इत्यादि ७।२६।२ वाक्यकरि फल कहा है ॥७॥

पश्यः पश्यति सर्वं हीत्यर्थवादः सुसूचितः
जातावा आत्मतःप्राणादयो युक्तिः प्रदर्शिता ८

५ अर्थवादः–और 'सर्वं ह पश्यः

पश्यति । सर्वमाप्नोति सर्वशः कहिये "ज्ञानी सर्वको देखता है । सर्वतर्फ से सर्व को पावता है, । ७ । २६ । २ ऐसे अर्थवाद सूचन किया है ॥ और

६ उपपत्तिः—'आत्मतःप्राण आत्मतः आशा, कहियै "आत्माते प्राण । आत्माते आशा,। इत्यादि ७।२६ । १ वाक्यकरि हेतु आत्मैकतावोधक युक्ति कहिये उपपत्ति दिखाई ॥८॥

छांदोग्यश्रुतितात्पर्यं सप्तमाध्यायगं बुधैः ।
इष्यतेचाद्वयेभूम्निपड्भिर्लिंगैरिमैःस्फुटम् ।
पंडितोंनै इन पट्‌लिंगोंकरि सप्तमाध्यायगत छांदोग्य उपनिषद्‌का तात्पर्य । अद्वैत ब्रह्म विषै स्पष्ट अंगीकार करिये है ॥६॥

अथाष्टमाध्यायलिंगकीर्त्तनम् ॥८॥

य आत्मेत्युपक्रम्यैव तं वा एतमुपासते ।
इत्यादिनोपसहार एव आत्मेतिवाक्यतः

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] "य आत्मापहतपाप्मा,, । कहिये जो आत्मा पापरहित है, । ८ । ७ । १ ऐसे उपक्रम करिके ही । (२) "तं वा एतं देवा आत्मानमुपासते,, कहिये तिस इस आत्माको देव निश्चयकरि उपासते हैं,, इत्यादि ।८।१२।६ रूप वाक्यकरि उपसंहार कहा है ॥

२ अभ्यासः—"एष आत्मेति होवाचैतदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति,, कहिये "यह आत्मा । यह अमृत अभय । यह ब्रह्म है । ऐसे केताभया, इस ८ अध्यायके १० खंड के १ वाक्यते अभ्यास कहा है ॥ १० ॥

अभ्यसोऽपूर्वत ब्रह्मचर्येणेत्यादितःफलम् पुनरावर्तते नैव स इत्यादिरवेरितम् ॥

अपूर्वता—‘ तद्य एवैतं ब्रह्मलकं ब्रह्मचर्येणानुविंदंति तेषामेवैष ब्रह्मलोकः कहिये ‘ तातैं जेई इस ब्रह्मरूप लोककूं ब्रह्मचर्य्य करि शास्त्र अरु आचार्य्य के उपदेशके पीछे प्राप्त करते हैं। तिनहीकूं यह ब्रह्मरूप लोक प्राप्त होवे है। इस ८।४।३ आदिक वाक्यततैः अपूर्वता ध्वनित करी है ॥

४ फलः—‘ब्रह्मलोकमभिसंपद्यते । न च पुनरावर्त्तते’ कहिये ‘ब्रह्मरूप लोककूं पावता है और पुनावृत्तिकूं पावता नहीं’ । इत्यादि ८। १५। १ वाक्यकरि फल कहा है ॥११॥

आख्यायिकार्थवादः स्यादिंप्रस्याह्यर-

स्वामिनः अशरीरो वायुरभ्रमित्यादिश्रुक्तिरीरिता ॥१२॥

५ अर्थवादः—इन्द्र अरुविरोचनकी आख्यायिका अर्थवाद होवे है ॥

६ उपपत्तिः—'अशरीरो वायुरभ्रं विद्युत्स्तनयित्नुरशरीराण्येतानि', कहिये 'वायु अशरीर है। मेघ वीजली मेघगर्जनये अशरीर हैं,। इत्यादि ८।१२।२ अभेदक युक्तिरूप उपपत्ति कही है ॥ १२ ॥

छांदोग्यश्रुतितात्पर्यमष्टमाध्यायग त्विमैः इष्यतेऽद्वय एवास्मिन्ब्रह्मण्येतत्प्रदर्शितम् । इन लिङ्गोंकरि तो अष्टमाध्यायगत छांदोग्य उपनिषद्का तात्पर्य। इस अद्वैतब्रह्मविषैही अङ्गीकार करिये है। यह दिखाया ॥ १३ ॥

इति श्री छांदोग्योपनिषल्लिंग० दशम प्रकरण समाप्तम् ॥१०॥

अथश्रीबृहदारण्यकोपनिषल्लिंग-कीर्त्तनम् ॥ ११ ॥

तत्र प्रथमा अध्याय लिङ्ग कीर्त्तनम् ॥१॥

आत्मेत्येवेत्यादि वाक्यादुप क्रम्योपसंहृति।
लोकेआत्मानमेवोपासीतेत्यादिसमीरणात्।

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "आत्मेत्येवोपासीत, । कहिये "आत्मा ऐसे ही जानना, । इत्यादि १ । ४ । ७ रूप वाक्यते उपक्रम करिके । (२) "आत्मानमेव लोकमुपासीत, । कहिये "आत्मारूप ही लोक को जानना, इत्यादि १ अध्याय के ४ ब्राह्मण के १५ वें वाक्यते उपसंहार कहा है ॥ १ ॥

तदेतत्पदनीय च तदेतत्प्रेय इत्यादि । वाक्य-
मारभ्य संप्रोक्ताऽभ्यासस्तस्य परात्मनः ॥

२ अभ्यासः—और "तदेतत्पदनीयमस्य सर्वस्य यदयमात्मा, कहिये "सो यह प्राप्त

करनेकोयोग्य है। जो यह इस सर्वकीआत्मा है'। १। ४। ७ ऐसे और "तदेतत्प्रेयः पुत्रात्प्रेयो वित्तात्'॥ कहिये 'सो यह पुत्रते प्रिय है। वित्तते प्रिय है, इसी १॥४॥८ भी वाक्यको आरंभकरिके। आगे [आगे१।४। १० विषै] दोवार 'अहं ब्रह्मास्मि' । इस महावाक्यके कथनपर्यन्त तिस परमात्मा का अभ्यास कह्या है ॥२॥

तदाहुर्यदि तीराया अपूर्वत्वं समिंगितम्।
य ऐव वेद वाक्येन सर्वात्मत्वं फलस्मृतम् ॥

३ अपूर्वता:—'तदाहुर्यद्ब्रह्मविद्ययासर्वं भविष्यन्तो मनुष्या मन्यंते, कहिये "सो कहते हैं:-जो ब्रह्मविद्याकरि सर्वरूप होने वाले मनुष्य मानते हैं, । इस १। ४। ६ उक्ति कहिये वाक्यतें प्रमाणांतरको अविषय जीवनकी सर्वात्मतारूप अपूर्वता अभिप्रेत है ॥

४ फलः-'य एव वेदाहं ब्रह्मास्मीति स इदं सर्वं भवति, । कहिये 'जो ऐसेअहं ब्रह्मास्मि इस प्रकारसे जानता है। सो यह सर्व होवै है, । इस १।४।१० वाक्यकरि ज्ञानसे सर्वात्मभावरूप फल कहा है ॥ ३ ॥

तस्याभूत्यै हि देवाश्च नेशते हेतिवाक्यतः
अर्थवादो द्विरूपो वैप्रोक्तःश्रुत्वा स्फुटोक्ति

५ अर्थवादः-'तस्य ह न देवाश्चः नाभूत्या ईशते, कहिये 'तिसब्रह्मजिज्ञासु के ब्रह्मसर्वभावके नहोने अर्थ देव भी समर्थ होते नहीं। तब अन्य न होवै यामैं क्या कहना। इत्यादिरूप इस १।४।१० वाक्यते अभेद-ज्ञानकी स्तुति और भेदज्ञानकी निंदा। इन दो रूप न वाला अर्थवाद श्रुति ने स्पष्ट उक्तिते कहा है ॥४॥

उपपत्तिः स एषो ही हेति वाक्या-
त्स्मृता त्रिभीः बृहदारण्यकाद्यस्याद्वै ते
तात्पर्यमिष्यते ॥५॥

६ उपपत्तिः—'स एष इह प्रविष्ट आनखा-
ग्रेभ्यः,। कहिये 'सो परमात्मा नखाग्र-
पर्यन्त इस देहविषै प्रविष्ट भया है ,। इत्यादि
रूप इस १।४।७ वाक्यते उपपत्ति कही हैं ॥
इन लिंगों से बृहदारण्यकउपनिषद्केप्रथमाध्याय
का अद्वैतविषै तात्पर्य अंगीकार करिये है ।२।

अथ द्वितीयाध्यायलिंगकीर्त्तनम् ॥ २ ॥

ब्रह्मतेऽहं ब्रवाणीति सामान्योपक्रमः स्मृतः
व्येव त्वा ज्ञपयिष्यामि विशेषोपक्रमस्त्वयम्
य एषःपुरुषो विज्ञानमयस्तूपसहृतिः ।
सामान्यतो विशेषण तदेतत् ब्रह्मचेत्यपि ७

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] 'ब्रह्म

तेऽह ब्रवाणीति कहिये 'ब्रह्मतेरेताईं कहता हूं। २। १। १। यह सामान्य उपक्रम है और ब्येव त्वः ज्ञपयिष्यामि। कहिए ब्रह्म तेरे ताईं जनावे गाहीं। २। ३। १५ यह तो विशेष उपक्रम है ॥ ६॥ [२] और 'य एषः पुरुषो विज्ञानमयः। कहिये 'जो यह पुरुष विज्ञानमय है। २। १। १६ यह तो सामान्यते उपसंहार है और 'तदेतब्रह्मा-पूर्वमनपर कहिये 'सो यह ब्रह्मकारणरहित अरुकार्यरहित है। २। ५। १९ यह विषेपकरि उपसंहार है ॥७॥

सत्यें सत्य चाथात आदेशो नेति नेति च
स योऽयमिति चाभ्यासो बहुकृत्वउदीरितः।

२ अभ्यासः—'सत्यस्य सत्यं।
कहियें सत्यका सत्य है।, २। १। २०। २।

३ । ६ और "अर्थात् आदेशो नेति नेति,, कहिये "कि अव 'नेति नेति ऐसा आदेश है,, । २ । २ । ६ और "स योऽयमात्मेद अमृतमिदं ब्रह्मेदं,, सर्वम् ,, कहिये "सो जो यह आत्मा है । यह अमृत है । यह ब्रह्म है । यह सर्व है,, २ । ५ । १–१५ ऐसा बहुकरिके अभ्यास कहा है ॥८॥

विज्ञातारमरे ! कनेत्यादिनाऽपूर्वता मता
यत्र वास्य ह्यभूदात्मैव सर्वं चादितःफलम्

३ अपूर्वताः—"विज्ञातारमरे ! केन विजानीयात्,, कहिये "अरे ! मैत्रेयि ! विज्ञाताको तिसकरि जाने,, । इत्यादि २ ।४।१४ वाक्यकरि प्रमाणांतरकी अविषयतारूपअपूर्वता मानी है ॥

४ फलः—यत्र वा अस्य सर्वमात्मैवा-भूत्तत्केन कं जिघ्रेत,, कहिये "जहां (जिस मोक्षविषैं) इस विद्वानको सर्व आत्माहीहोता भया ॥ तहांकिसकरिकिसको सूंघे" ॥ इत्यादि २ अध्याय के ४ ब्राह्मणके १४ वाक्यते निष्प-पंचब्रह्मरूपसे अवस्थिरूप अद्वैतज्ञानका फल कहा ॥९॥

पारदाब्रह्मते चैवाख्यायिका बहवोऽपि च ।
अर्थवादस्तूपपत्तिरूर्णनाभ्याद्यनेकशः ॥

५ अर्थवादः—"ब्रह्म तं परादाद्यो-न्यत्रात्मनो ब्रह्म वेद" ॥ कहिये "ब्राह्मण-जातिताकोतिरस्कार करे है जो आत्मातेअन्य ब्राह्मणजातिको जानता है" ।२।४।६ ऐसे भेदज्ञानकी निंदा औरबहुतआख्यायिका भी अर्थ-वाद है ॥१०॥

६ उपपत्तिः—"स यथोर्णनाभिस्तंतुनो-च्चरेद्यथाऽग्नेः क्षुद्रा विस्फुलिंगा व्युच्चरन्ति,,। कहिये "सो जैसे ऊर्णनाभि तन्तुकरि उच्चगमन करे है औरजैसेअग्नितै अल्पअग्निके अवयव विविध उच्चगमन कर है,। इस २।१।२०। आदिक २।४-१२ वाक्यन विषै अनेकदृष्टांतरूप उपपत्ति है ॥१०॥

बृहदारण्यकस्यैव द्वितीययस्याद्वितीयके ।
तात्पर्यंतिवष्यते प्राज्ञै रेभिर्लिंगैः समिंगितैः

बृहदारण्यक उपनिषद्के द्वितीयअध्यायका पंडितोंकरि इनसूचनकिये लिंगों से अद्वितीय-ब्रह्मविषै तात्पर्य अंगीकार करिये है ॥११॥

अथ तृतीयाध्यायलिंगकीर्तनम् ॥३॥

यत्साक्षादित्युपक्रम्योपसंहारस्तु वाक्यतः
विज्ञानमित्यतः प्रोक्त आवृत्तिरेपते रवात्

१ उपक्रमउपसंहारः—(१) "यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म कहिये "जो साक्षात् अपरोक्ष ब्रह्म है,, ।३।४। १ ऐसे उपक्रमकरिके (२)" विज्ञानमानंद ब्रह्म,, । कहिये "विज्ञान आनन्दरूप ब्रह्म है, ऐसे इस ३ । ६ । २८ वाक्यते तो उपसंहार कहा है ॥

२ अभ्यासः—एप त आत्मांतर्याम्यमृतः,, । कहिये "यह तेरा आत्मा अन्तर्यामी अमृतरूप है,, । इस ३ । ७ । ३-२३ वाक्यतेआवृतिका वाच्य अभ्यास कहा है ॥

तं त्वौपनिषदं चाहं पृच्छामिती त्वपूर्वता
फलं परायणं चैतत्तिष्ठमानस्य तद्विदः ॥

३ अपूर्वताः—"तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि,, । कहिये "तिस उपनिषदनकरि गम्य पुरुषको [मैं याज्ञवल्क्य] तुझ [शाकल्यके] त्यांई पूछता हूँ,, । ३ । ९ । २६ ऐसे तो उपनिषदनकीहीं विषयतारूप अपूर्वता कही है ॥

४ फलः—"पारायणं तिष्ठमानस्य तद्विदः,, कहिये "यह ब्रह्म अद्वैतत्वविषैं स्थित तत्त्ववेत्ताका परमगति है,, । ३ । ९ । २८ ऐसे फल कहा है ॥१३॥

यो वे तत्काप्य ! सूत्र तंविद्याच्चैत्यादितोऽपि च । यो वे एतच्च न ज्ञात्वाक्षर गार्गीति च स्तुतिः ॥१४॥

१ अर्थवादः—या वे तत्काप्य ! सूत्रं विद्यात्त्तं चांतर्यामिणमिति स ब्रह्मवित्,, । कहिये "हे काप्य ! जोई तिस सूत्रको औरतिस अन्तर्यामीको जानता है । सो ब्रह्मवित् है,, यह । ३ । ७ । १ वी । और यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वास्मिंल्लोके जुहोति,, । कहिये "हे गार्गि ? जोई इस अक्षरकोन जानिके इसलोकविषै होमता है,, इस ३।८।१० आदिकवाक्यतेअभेदज्ञानकीस्तुति औरचकारकरि भेदज्ञानकी निन्दारूप अर्थवाद कहा है ॥ एतस्य वा अक्षरस्यैत्यादितो युक्तिरीरिता

तटस्थलक्षणस्योपन्यासेन　परमात्मनः　॥

६ उपपत्तिः— एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि ! सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः,, कहिये "हे गार्गि ! इस अक्षरको आज्ञाविषैसूर्यचन्द्रधारणकिए हुये स्थित होवे हैं,, । इत्यादि ३ । ८ । ९ रूप वाक्यते परमात्माके तटस्थलक्षणके उपन्यासकरि उपपत्ति करी है ॥१५॥

बृहदारण्यकश्रुत्यास्तृतीयस्य समिष्यते । तात्पर्यमद्वये लिंगैरेभिस्तु परमात्मनि ॥ बृहदारण्यकोपनिषद्के इस तृतीयाअध्यायका इन लिंगोंकरि अद्वयपरमात्माविषै तात्पर्य । सम्यक् अंगीकार करिये है ॥१६॥

अथ चतुर्थांध्यालिंगकीर्तनम् ।४।

इन्धश्चं क्रिमुपक्रम्याभयं स उपसंहृतिः।
सामान्यतो विशेषेण यत्र त्वस्येतिवाक्यतः

१ उपक्रमउपसंहारः—[१] "इन्धो ह वे नाम,, । कहिये "इन्ध ऐसा प्रसिद्ध नाम है,, ।४।२।२ ऐसे सामान्यते "किं-ज्योतिरय पुरुष इति,, । कहिये "ऐसे ज्योतिवाला यह पुरुष है,, ।४।३।२ ऐसे विशेषकरि उपक्रमकरि के । (२) "अभयं वे जनक ! प्राप्तोऽसि,, । कहिये "हे जनक ! तू अभयको प्राप्त भया है,, ।४।२।४। ऐसे वा "स वा एव महानज आत्मा,, । कहिये

सोई यह महान्-अज-आत्मा, । ४ । ४ । २२ ऐसे सामान्यते उपसंहार है और 'यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत, कहिये 'जहां तो सर्व आत्माहीं होताभया, इस ४ । ५ । १५ वाक्यते विशेषकरि उपसंहार है ॥१७॥

तद्देवा ज्योतिषांज्योतिरायुर्हो पासतेऽमृतम् ।
इत्यादिबहुभिर्वाक्यैरभ्यासः स्पष्टमीक्ष्यते ॥

२ अभ्यासः-'तद्देवा ज्योतिषांज्योतिरायुर्हो पासतेऽमृतम्, । कहिये "इस ब्रह्म को देव ज्योतिनका ज्योति आयु और अमृतरूप उपासते हैं, । ४ । ४ । १६ इत्यादि बहुत वाक्यनकरि अभ्यास स्पष्ट देखिये है ॥ १८ ॥

विज्ञातारमगृह्यो च न त पश्यत्यपूर्वता ।
थकाकामयमानो य इत्यादिवस्तुभिः फलम्

३ अपूर्वता:—"विज्ञातारमरे ! केन विजानीयात्,, । कहिये "अरे मैत्रेय ! विज्ञाताको किसकरि जानना" ४ । ५ । १५ और अगृह्यो न हि गृह्यते,, । कहिये "जाते ग्रहण करनेको अयोग्य है । ताते नहीं ग्रहण करिये है,, ।४।४। २२ और न "न त पश्यति कश्चन,, । कहिये "ताको शास्त्रगुरुके उपदेश विना कोई भी नहीं देखता है,, ४।३। १४ इत्यादि वाक्यनसे सिद्ध प्रमाणांतरकी अविषयतारूप अपूर्वता है ॥

४ फलः—अथाकामयमानो यो,, । कहिये "और जो निष्काम है,। इत्यादि ४ । ४ । ६–८ वचुतवाक्यनकरि फल कह्या है ॥१६॥

मृत्योःस मृत्युमाप्नोति यइह नानेव पश्यति । एत एतमु हैवेत्यादिवाक्यच्च स्तुतिः स्मृता ॥२०॥

अर्थवादः—"मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति,, । कहिये "सो मृत्युते मृत्युको पावता है । जो इहां नानाकी न्यांई देखता है,, । ४ । ४ । १६ ऐसे और "एतमु हैवेत न तरतः,, । कहिये "इस ज्ञानीको पुण्यपाप तरते नहीं,, ४ । ४ । २२–२३ इत्यादि वाक्यते अर्थवादरूप निन्दा अरु स्तुति कही है ॥२०॥

यद्वै तन्नेति प्राणस्य प्राणं कैव न वा अरे !
पत्युः कामाय नैवायं पतिर्हि भवति प्रियः
इत्यादिवाक्यजातेनोपपत्तिः परिकीर्तिता
बृहदारण्यकश्रुत्याश्चतुर्थाध्यायगं बुधाः ।
तात्पर्यमद्वये षड्भिरेवेमें लिंगकैर्विदुः ।
अग्नेर्धूम इवेमानि लिंगान्यस्य परमात्मनः ॥

६ उपपत्तिः-"यद्वै तन्न पश्यति,, । कहिये "जहां सुषुप्ति पै तिसरूपको नहीं देखता है, । ४ । ३ । २३-३० ऐसे । और 'प्राणस्य प्राणमुत, । कहिये "प्राणके भी प्राणको जानते हैं, ४। १८ ऐसे । और "न वा अरे ! पत्युः कामाय पतिः प्रिय भवत्यात्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति, । कहिये "अरे मैत्रेयि ! पति के काम अर्थ पति प्रिय नहीं होवे है । आत्मा के तो काम

अर्थ पति प्रिय होवे, ॥२१॥ इस ४।५।६ आदिक ४ । ५ , ८–१२ वाक्यनकेसह करि ब्रह्मरूप आत्माके बोधककी युक्तिरूप उपपत्ति कही है ॥ पंडितइस बृहदारण्यकरूपउपनिषद्-भागके चतुर्थाध्यायगत ॥२२॥ अद्वैतविषै तात्पर्यको इनपट् लिंगोंसे जानते हैं ॥औरअग्नि के निश्चायक धूमरूपलिंगकी न्यांईइस प्रत्येक अभिन्न ब्रह्मके निश्चायक ये लिंग हैं । (ऐसे जानना) ॥ २३ ॥

इति संक्षेपतः प्रोक्ता पड्लिंगानां विचारणा । दशोपनिषदां तद्वत्तामन्यास्वपि योजयेत् ॥२४॥

इसीरीतिसे संक्षेपते दशउपनिषदनके पट्लिंगनकाविचारकहा । ताकी न्यांई ता [विचार] को अन्यउपनिषदनविषै भी जोड़ना ॥२४॥

दोषोऽप्यत्रोपयुक्तत्वाद्गुण एवेति चिंत्यताम्
सारग्रहणशीलैस्तु पितृभ्यां बालवाक्यवत् ॥

इस ग्रन्थविषै क्वचित् दोषभीउपयोगी होनेतै "गुणहीहै" ऐसे सारग्राही स्वभाववालेकनिकरि विचारनेकौ योग्य है ॥ माता पिताकरि विनोदअर्थ उपयोगी बालकके फल वाक्यकी न्याई ॥२५॥

इति श्री वृहदारण्यकोपनिषल्लिंगकीर्तनमं नामै कादशं प्रकरणं समाप्तम् ॥१६॥

इति श्रीविचार चन्द्रोदये श्रीमत्परमहंसपरि
व्राजकाऽऽचार्यवासरस्वती पूज्यपाद-
शिष्य पीतांबरशर्मा विदुषा विरचिता
सटीकश्रुतिपड्लिंगसंग्रहनायिका
षोडशीकलायाःप्रथमविभागः
समाप्तः ॥

—(:०:)—

।। अथ षोडशकलाद्वितीयविभाग- प्रारम्भः ।।१६।।

—*—

।। वेदांतपदार्थसंज्ञावर्णंम ।।

अथवा

।। लघुवेदान्तकोश ।।

।। ललितछंद ।।

—*—

निष्फलं निजं वेदहीं वदे ।
षटदशं कला ब्रह्म में नदे ।
निरवयेव जो निष्कलङ्क सो ।
इकरसं सदा अंगता न सो ।। ३६ ।।

हिरण्यगर्भ और श्रद्धया नभो।
पवन तेजको भूमि इन्द्रभो।
१८०
मन अनाज और शक्ति सत्तयो।
१८१
कुरमलोक नामामनूजपो ॥३७॥
पटदशं कला एहि जानिले।
जड़उपाधिको धर्म मानिले।
अनुगताश्रयोपुष्प सूत्रवत।
निज चिदात्म पीतांबरो हि सत् ॥३८॥

॥१८०॥ बल ॥

॥१८१॥ मन्त्र का जप ॥

॥ पदार्थ द्विविध ॥२॥

अध्यात्मताप २—आत्माको आश्रय करके वर्तमानजो स्थूलसूक्ष्मशरीरसोअध्यात्म है। तद्गत जो ताप [दुःख] सो अध्यात्म-ताप है।

१ आधितापः—मानसताप ॥

२ व्याधितापः—शरीरताप ॥

अध्यास २—भ्रांतिज्ञानका विषय और भ्रांति-ज्ञान ॥

१ अर्थाध्यास—भ्रांतिज्ञान का विषय जो सर्पादि वा देहादिप्रपंच सो ॥

२ज्ञानाध्यास—भ्रांतिज्ञान [सर्पादिक का भी देहादिप्रपंच का ज्ञान]॥

असंभावना २—असंभव का ज्ञान ॥

१ प्रमाणगत असंभावना–प्रमाण (वेद) गत असंभव का ज्ञान ॥

२ प्रमेयगत असंभावना–प्रमेय [प्रमाण के विषय मोक्ष आदिक) गत असंभवका ज्ञान ॥

अहंकार २

१ शुद्धअहंकार-स्वस्वरूपका अहंकार ॥

२ अशुद्धअहंकार—देहादिअनात्माका अहंकार ॥

१ सामान्यअहंकार—देहादिकधर्मके उद्देशसे रहित। केवल " अहं (मैं),, ऐसा स्फुरण ॥

२ विशेषअहंकार देहादिधर्म (नामजाति-आदिक) का उद्देश करिके ' अहं (मैं), ऐसा स्फुरण

१ मुख्यअहंकार— देहादियुक्त चिदाभास और कूटस्थ (साक्षी) का एकीकरण करिके। मूढ़करि सारे संघातविषै 'अहं, शब्दको जोड़िके 'अहं (मैं), ऐसा स्फुरण होवे सो मुख्य (शक्तिवृत्तिसे जानने योग्य अहंशब्दके अर्थको विषय करनेवाला) अहंकार है ॥

२ अमुख्यअहंकारः— विवेकीकरि (१) व्य, वहारकालमें केवल देहादियुक्त चिदाभासविषै और (२) परमार्थदशा में केवलकूटस्थ विषै 'अहं, शब्दको जोड़िके जो " अहं (मैं),, ऐसा स्फुरण होवे सो दो भांती का अमुख्य (लक्षणावृत्तिसे जानने योग्य अहं शब्दके अर्थको विषय करनेवाल) अहंकार है ॥

अज्ञान २—
१ समष्टिअज्ञान—वनकी न्यांई वा जातिकी न्यांई वा जलाशय [तड़ाग] की न्यांई एक बुद्धि का विषय ॥
२ व्यष्टिअज्ञान—वृक्षनकी न्यांई व व्यक्तिनकी न्यांई वा जलबिंदु की न्यांई अनेक बुद्धिन का विषय ॥
१ मूलज्ञान—शुद्धचेतन का अच्छादक [ढापने वाला अज्ञान ॥
२ तूलाज्ञान—घटादिअवच्छिन्नचेतन का आच्छादिक अज्ञान ॥
अज्ञानकी शक्ति २— अज्ञाका सामर्थ्य ॥
१ आवरणशक्ति—अधिष्ठान के ढांपने वाली जो अज्ञानविषै सामर्थ्य है सो
२ विक्षेपशक्ति—प्रपंच और ताके ज्ञानरूप विक्षेपकीजनकुजो आज्ञानविषै सामर्थ्य है सो।

उपासना २-

१ सगुणउपासना:-कारणब्रह्म [ईश्वर] और कार्यब्रह्म [हिरण्यगर्भआदिक] की उपासना

२ निर्गुणउपासना-शुद्ध ब्रह्म की उपासना ॥

गन्ध२-१ सुगन्ध ॥ २ दुर्गन्ध ॥

जाति २-अनेकधर्मि [आश्रय] न विषै अनुगत जो एक धर्म सो ॥

१ परजाति-'घट है,, ऐसे सर्वत्र अनुगत जो सत्ता है । ताको न्यायमतमे पर [श्रेष्ठ] जाति कहते हैं ॥

२ अपरजाति-सत्तासे भिन्न घटत्व आदिक जाति जो न्यायमत में अपर [अश्रेष्ठ] जाति कहते हैं ॥

१ व्याप्यजाति-व्यापक जाति के अन्तर्गत [न्यूनदेशवर्ती] जोजाति । सो व्याप्यजाति है । जैसे मनुष्यजातिके अन्तर्गत (एकदेश-

गत) ब्राह्मणत्व क्षत्रित्व आदिक जातियां हैं । वे व्याप्य जातियां हैं ॥

२ व्यापकजाति—व्याप्य जातिते अधिकदे-शविषै स्थित जो जाति सो व्यापकजाति है। जैसे ब्राह्मणत्वआदिकव्याप्य जातिते अधिक देशविषै स्थित मनुष्यत्वजाति है सो व्यापकजाति है। ये व्याप्य और व्यापक दो भेद अपरजातिके हैं ॥

निग्रह २:-

१ क्रमनिग्रह-यमनियमआदिकअष्ट योगकेअङ्गोंकरि क्रमसे जो चित्तका निरोध होवै है। सो क्रम निग्रह है ॥

२ हठनिग्रह - प्राणनिरोधरूप हठकरिके वा साम्भवी आदिकमुद्रान मध्य किसी एक मुद्राके अभ्यासकरि जो चित्त का निरोध होवे है। सो हठ निग्रह है ॥

निःश्रेयस २—मोक्ष ॥

१ अनर्थनिवृत्ति ॥ २ परमानन्द प्राप्ति ॥

परमहंस संन्यास २—

१ विविदिषासन्यास—जिज्ञासाकरि के ज्ञान-प्राप्ति अर्थ किया जो संन्यास सो विविदिषा सन्यास है ॥

२ विद्वत्सन्यास—ज्ञानके अनन्तर वासना-क्षय मनोनाश और तत्वज्ञानाभ्यासद्वारा जीवनमुक्तिके विलक्षण आनंदअर्थ किया जो सन्यास जो विद्वत्संन्यास है ॥

प्रपंच २—१ बाह्यप्रपंच ॥ २ आंतरप्रपंच ॥

३ प्रज्ञा २—१ स्थितप्रज्ञा ॥ २ अस्थितप्रज्ञा ॥

लक्षण २—

१ स्वरूपलक्षण—सदाविद्य मान हुआ व्याव-र्तक लक्षण ॥

२ तटस्थलक्षण–कदाचित हुआ व्यावर्तक लक्षण ॥

वाक्य २–१ अवांतरवाक्य ॥ २ महावाक्य॥

वाद २–१ प्रतिबिंबवाद ॥ २ अच्छेदवाद ॥

विपरीतभावना २—१ प्रमाणगत विपरीत-भावना ॥ २ प्रमेयगत विपरीतभावना ॥

शब्द २–वर्णरूपशब्द ॥ २ ध्वनिरूपशब्द

शब्दसंगति २-१ शक्तिवृत्ति ॥ लक्षणावृत्ति ॥

संपति २-१ देवीसपति ॥ आसुरीसंपति ॥

संशय २-१ प्रमाणगतसंशय ॥ २ प्रमेय गतसंशय ॥

समाधि २-१ सविकल्प ॥ २ निर्विकल्प ॥

सूक्ष्मशरीर २-१ समष्टि ॥ २ व्यष्टि

स्थूलशरीर -१ के समष्टि ॥ व्यष्टि ।

॥ पदार्थ त्रिविध ॥३॥

आध्यात्मादि ३—१ इन्द्रिय (आध्यात्म) ॥ २ देवता [अधिदैव] ॥ ३ विषय [अधिभूत] ॥

अन्तःकरणदोष ३—

१ मलदोष—जन्मजन्मांतरों के पाप ॥

२ विक्षेपदोष—चित्तकी चंचलता ॥

३ आवरणदोष—स्वरूप का अज्ञान ॥

अर्थवाद ३—निंदा वा स्तुतिका बोधक वाक्य ॥

१ अनुवाद—अन्यप्रमाणकरि सिद्धअर्थोंका बोधनवाक्य । जैसे "अग्नि हिमका भेषज है,, यह वाक्य है ॥

२ गुणवाद अन्यप्रमाणविरुद्ध विधेयअर्थका गुणद्वारा स्तावकवाक्य । जैसे प्रकाशरूप

गुणकी ममतासमतास्तावक 'यूप [यज्ञको खंभ) आदित्य है, यह वाक्य है ॥

३ भूतार्थवाद्–स्वार्थविषैं प्रमाण हूआ लक्षणसे विधेयार्थकी श्लाघाका बोधकवाक्य । जैसे 'वज्रहस्त पुरन्दर, यह वाक्य है ॥

अवधि ३–सीमा [हद] ॥

१ बोधकी अवधि ॥ २ वैराग्यकी अवधि ॥

३ उपराम की अवधि–चित्तनिरोधरूप उपरति [उपशम] की ।

अवस्था ३-तीनदेह के व्यवहार के काल ॥

१ जाग्रतअवस्था ॥ २ स्वप्नअवस्था ॥

३ सुषुप्तिअवस्था ॥

आत्मा ३—

१ अज्ञानात्मा–बुद्धि ॥

२ महाना मा-महतत्त्व ॥

३ शांतात्मा—शुद्धब्रह्म ॥

आत्मा के भेद ३—

१ मिथ्यात्मा—स्थूलसूक्ष्मसंघात ॥

२ गौणात्मा—पुत्र ॥

३ मुख्यात्मा-साक्षी [कूटस्थ] ॥

आनन्द ३—

१ ब्रह्मानन्द—समाधिविषै आविर्भूत वा सुषुप्तिगत जो बिंबभूत आनन्द है सो ॥

२ विषयानन्द जाग्रत्स्वप्नविषै विषय की प्राप्तिरूप निमित्तसे एकाग्र भये चित्तविषै आत्मास्वरूपभूत आनदकाजो क्षणिकप्रतिबिंबहोवे है सो ॥ याही कौ लेशानन्द और मात्रानन्द भी कहते हैं ॥

३ वासना नन्द–सुषुप्तिते उत्थान आदिक उदासीनदशाविषै तो आनन्द अनुभूत होवे है सो ॥

अन्ध्यादि ४-अन्धताआदिक नेत्रके धर्म ॥

इहां आन्ध्य [अंधता] रूप नेत्रका धर्म जो है सो वधिरतामूकताआदिक अन्यइन्द्रियन के धर्म का भी सूचक है। और मांद्यअरु पटुत्व तो सर्व इन्द्रियनके तुल्य जानने ॥

१ आंध्य– चक्षुद्वारि सर्वथा स्वविषयका अग्रहण ॥
२ मांद्य–इन्द्रियकरिस्वविषयका स्वल्पग्रहण
२ पटुत्व–इन्द्रियकरि स्वविषयका स्पष्टग्रहण

उद्देशादि ३–

१ उद्देश्य–नामका कीर्तन ॥
२ लक्षण–असाधारण । (एकविषै वर्तनेवाला धर्म)।
६ परीक्षा–पदकृति [अतिव्याप्तिआदिक दोषन का विचार) ॥

एषणा ३—इच्छा वा वासना ॥
१ पुत्रैषणा ॥ वित्तैषणा ॥
२ लोकैषणा—सर्वलोक मेरी स्तुति करे । कोईभी मेरी निन्दा करे नहीं । ऐसी इच्छा वा परलोककी इच्छा ॥
कारण ३—कर्म के साधन ॥
१ मन ॥ २ वाणी ॥ ३ कार्य ॥
कर्तव्यादि ३—
१ कर्तव्य-करनेको योग्य ज्ञान के साधन ॥
२ ज्ञातव्य-जाननेको योग्य ज्ञान का विषय (ब्रह्म अरु आत्मा एकत्व) ॥
३ प्राप्तव्य-- प्राप्त करनेको योग्य ज्ञानकाफल मोक्ष ॥
कर्म ३—१ पुण्यकर्म ॥ २ पापकर्म ॥ ३ मिश्रकर्म ॥

कर्म ३—

१ संचितकर्म-जन्मांतरोंविषै संचय कियेकर्म
२ आगामिकर्म-वर्तमानजन्मविषैक्रिय माणकर्म
३ प्रारब्धकर्म-वर्तमानजन्मका आरंभ कर्म

कर्मादि ३—

१ कर्म-वेदविहितकर्म ॥
२ विकर्म-वेद से विरुद्धकर्म ॥
३ अकर्म-वेदविहित और वेदविरुद्ध उभय विधकर्म का अकरण ।

कारणवाद ३-

१ आरंभवाद-जैसे पितामहआदिक के किये पुराणे गृहका जब नाश होवे तब तिसविषै स्थितईंटआदिक सामग्रीसेफेर नवीनगृहका आरभहोवैहै । तैसेकार्यरूपपृथ्वी आदिक के नाशताके कारण परामणु ज्योंकेत्यों रहते हैं। तिनते फेर अन्यपृथ्वीआदिकका आरंभ

होवै है।।ऐसेन्यायमतसे आरंभवादमाना है ।।
यामें कार्य और कारण का भेद है ।।
२ परिणामवाद-जैसे दुग्ध का परिणाम (रूपांतर) दधि होवे है। तैसे सांख्यमत में प्रकृतिका परिणाम जगत् है। और उपासकोंके मतमें ब्रह्मका परिणाम जगत्के जीव हैं ।। ऐसे तिनोंने परिणामवाद मान्या है। यामें कार्य और कारण का अभेद है ।।
३ विवर्तवाद-जैसे निर्विकाररज्जु विषै रज्जु-रूप अधिष्ठानते विषमसत्तावाला अन्यथास्वरूप सर्प होवै है। सो रज्जुका विवर्त (कल्पित-कार्य] है ।। तैसे निर्विकारब्रह्मविषैअधिष्ठान ब्रह्मते विषमसत्तावाला अन्यथास्वरूप जगत् होवै है सो ब्रह्मका विवर्त (कल्पिताकार्य) है ।। ऐसे वेदांतसिद्धांतमें विवर्तवाद माना है। यामें भी कार्य और कारणका बोधकृत अभेद है ।।

काल ३—१ भूतकाल ॥ २ भवष्यत्काल ॥
३ वर्तमानकाल ॥
जाग्रत् ३—
जाग्रतव्जाग्रत-वर्तमानजाग्रत्विषै जो स्वरूपका साक्षात्कार होवै सो ॥
२ जाग्रत्स्वप्न-जाग्रत्विषै जो भूत वा भविष्य अर्थका चिंतनरूप मनोराज्य होवै है सो ॥
जाग्रत्सुषुप्ति—जाग्रत्विषै भ्रमकरि जड़ीभूत वृत्ति होवै सो ॥
जीव ३—
१ परमार्थिकजीव-साक्षी (कूटस्थ) चेतन ॥
२ व्यवहारिकजीव—साभासअंतःकरण रूपजीव
३ प्रातिभासिकजीव-साभासअंतःकरणरूप व्यावहारिकजीवमें स्वप्न विषै अध्यस्त जीव ॥
१ विश्व—जाग्रत्विषैतीनदेहका अभिमानीजीव।

२ तैजस--स्वप्नविषै स्थूलदेहके अभिमानको छोड़िके सूक्ष्म और कारण इन दो देहका अभिमानी वही जीव ॥

३ प्राज्ञ-सुषुप्तिविषै स्थूलसूक्ष्मदेहके अभिमानको छोड़िके एक कारणदेहका अभिमानी वही जीव ॥

ताप ३---दुःख ॥

१ अध्यात्मताप--स्थूलसूक्ष्मशरीरविषै होता जो है आधि और व्याधिरूप दुःख। सो अध्यात्मताप है ॥

२ अधिदैवताप--देवताकरि जो शीत उष्ण अतिवृष्टिअनावृष्टि विद्युत्पात भूकंपआदिक दुःख होवै है। सो अधिदैवताप है ॥

३ अधिभूतताप--स्वशरीरतें भिन्न चक्षुगोचरप्राणि (चोरव्याघ्र शत्रु आदि) नकरिहोता है जो दुःख। सो अधिभूतताप है ॥

नादादि ३—
१ नाद-ॐकार वा शब्दगुण वा पराआदिक वाणी ।
२ बिंदु-ॐकार अलक्ष्यअर्थरूप तुरीयपद ।
३ कला-ॐकारकी अकारादि मात्रा परावाणी-रूप अङ्क (शब्द का अवयव) ।
निवृत्ति ३ (तादात्म्यकी निवृत्ति):—
१ भ्रमज की निवृत्ति - ज्ञानसे भ्रांति (अविवेक) के नाश करो भ्रमजतादात्म्यकी निवृत्ति होवै है ।
२ सहजकीनिवृत्ति—सहजतादात्म्य का ज्ञानसे बाधओ ज्ञानीकेदेहपातके अनन्तरनाश होवैहै ।
३ कर्मजकी निवृत्ति-कर्मजतादात्म्यप्रारब्ध भोगके अन्त भये ज्ञानीकी निवृत्ति होवै है ।
पापकर्म ३—१ उत्कृष्टपापकर्म । २ मध्यम-पापकर्म । ३ सामान्यपापकर्म ।

पुण्यकर्म ३-१ उत्कृष्टपुण्यकर्म । २ मध्यम पुण्यकर्म । ३ सामान्यपुण्यकर्म ।

प्रपंच ३—१ स्थूलप्रपंच । २ सूक्ष्मप्रपंच । ३ कारणप्रपंच ।

प्राणायाम ३—१ पूरक । २ कुंभक । ३ रेचक ।

प्रारब्ध ३ १ इच्छाप्रारब्ध । २ अनिच्छाप्रारब्ध । ३ परेच्छाप्रारब्ध ।

ब्रह्म ३—१ विराट । २ हिरण्यगर्भ । ३ ईश्वर ।

मिश्रकर्म ३—१ उत्कृष्टमिश्रकर्म । २ मध्यम मिश्रकर्म ३ सामान्यमिश्रकर्म ।

मूर्ति ३-१ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ शिव ।

लक्षणदोष ३—

१ अव्याप्तिदोष-लक्ष्यके एकदेशविषै लक्षण का वर्त्तना ॥

२ अतिव्याप्तिदोष—लक्ष्यके तांई व्यापिके अलक्ष्यविषै भी लक्षणका वर्तना ॥
३ असंभवदोष—लक्ष्यविषैलक्षणकानवर्तना ।
लोक ३—१ स्वर्ग ॥ २ मृत्यु ॥ ३ पाताल॥
वादादि ३—
१ वादः—गुरुशिष्यका संवाद ॥
२ जल्प युक्तिप्रमाणकुशलपंडितनकापरमत खंडक स्वमतमंडक वाद ॥
३ वितंडा—मूर्खनका प्रमाणयुक्ति रहित वाद । किंवा स्वरूपका स्थापन करीके परपक्षकाही खंडन सो । जैसे श्रीहर्षमिश्राचार्यने खंडन ग्रन्थविषै किया है ॥
विधिवाक्य ३—
१ अपूर्वविधिवाक्य अलौकिक क्रिया का विधायकवाक्य ॥

२ नियमविधिवाक्य—प्राप्त दोपक्षनविषै एकका विधायकवाक्य ॥
३ परिसंख्याविधिवाक्य - उभयपक्षविषै एक निषेधका विधायकवाक्य ।
वेदके कांड ३ –१ कर्मकांड ॥ २ उपासनाकांड ॥ ३ ज्ञानकांड ॥
शरीर ३–१ स्थूलशरीर ॥ २ सूक्ष्मशरीर ॥ ३ कारणशरीर ॥
श्रवणादि ३—१ श्रवण ॥ २ मनन॥ ३ निदिध्यासन ॥
श्रवणादिफल ३–१ प्रमाणसंशयनाश[श्रवणफल] ॥ प्रमेयसंशयनाश (मननफल) ॥ ३ विपर्ययनाश [निदिध्यासनफल] ॥
संबंध ३–१ संयोगसंबंध ॥२ समवायसंबंध ॥ ३ तादात्म्यसंबंध ।

सुषुप्ति ३—

१ सुषुप्तिजाग्रत-सात्त्विकवृत्तिपूर्वक सुखसुषुप्ति।

२ सुषुप्तिस्वप्न-राजसवृत्तिपूर्वक दुःखसुषुप्ति।

३ सुषुप्तिसुषुप्ति-तामसवृत्तिपूर्वकगाढसुषुप्ति।

सुषुप्त्यादि ३—१ सुषुप्ति। २ मूर्छा। ३ समाधि।

स्वप्न ३—

१ स्वप्नजाग्रत-सत्यअर्थका स्वप्नाविषदर्शन।

२ स्वप्नस्वप्न-स्वप्नविषै रज्जुसर्पादिभ्रांतिका दर्शन।

३ स्वप्नसुषुप्ति—दृष्टस्वप्न का अस्मरण।

हेत्वादि ३-१ हेतु। २ स्वरूप। ३ फल।

ज्ञातादि ३-१ ज्ञाता। २ ज्ञान। ३ ज्ञेय।

ज्ञानप्रतिबन्धक ३-१ संशय २ असंभावना। ३ विपरीतिभावना।

ज्ञानादि ३—१ ज्ञान। २ वैराग्य। ३ उपशम।

॥ पदार्थ चतुर्विधि ॥४॥

अनुबन्ध ४— अपने ज्ञानके अनन्तर पुरुष को ग्रन्थविषै जोड़ने वाला।

१ अधिकारी - मलविक्षेपरूप दोषरहित और अज्ञानरूप दोषरहित हुआ विवेकादिचारी साधनकरिं सहित पुरुष वेदांत का अधिकारी है।

२ विषय—ब्रह्म और आत्मा की एकता। वेदांतशास्त्र का विषय [प्रतिपाद्य] है।

३ प्रयोजन—सर्वदुःखन की निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्तिरूप मोक्ष।

४ संबन्ध-ग्रन्थका और विषयका प्रतिपादक प्रतिपाद्यतारूप संबन्ध है।

अन्तःकरण ४

१ मन—संकल्पविकल्परूप वृत्ति ॥
२ बुद्धि—निश्चयरूप वृत्ति ॥
३ चित्त—चिंतन [स्मरण] रूप वृत्ति ॥
४ अहंकार—अहतारूप वृत्ति ॥

आर्तविद्भक्ति ४—

१ आर्त-अध्यात्म आदिकदुःखकरव्याकुल।
२ जिज्ञासु-भगवत्तत्वके जानने की इच्छा-वाला ॥
३ अर्थार्थी—यालोक या परलोक के भोगकी इच्छावाला ॥
४ ज्ञानी जीवनमुक्ति विद्वान ॥

आश्रम ४-१ ब्रह्मचर्य ॥ २ गृहस्थ ॥ ३ वानप्रस्थ ॥ ४ सन्यास ॥

उत्पत्यादिक्रिया ४—इहां क्रियाशब्दकरि क्रिया जो कर्म। ताका फल कहिये है ॥

१ उत्पत्ति—आद्यलक्षण (जन्म)। जैसे कुलाल-की क्रियाका फलरूप घटकी उत्पत्ति है ॥

२ प्राप्ति—गमनरूप क्रियाका वांछित देशको प्राप्तिरूप फल है ॥

३ विकार अन्यरूप की प्राप्ति। जैसे पाक [रसोई] रूप क्रिया का फलरूप अन्न का विकार [पलटना] है ॥

३ संस्कार—(१) मलकी निवृत्ति और (२) गुण की प्राप्ति। इस भेदतेसंस्कार दो प्रकार का होवे है। (१) जैसे वस्त्र के प्रक्षालन रूप क्रिया फलरूप मलनिवृत्ति है सो प्रथम है और। (२) कुसुंभमें वस्त्र के मज्जन रूप क्रिया का फलरूप रक्तगुण की उत्पत्ति है सो द्वितीय है ॥

चित्तनिरोधयुक्ति ४ १ अध्यात्मविद्या ।।
२ साधुसंग । ३ वासनात्याग । ४प्राणायाम ।
धर्मादि ४—चारपुरुषार्थ ।
१ धर्म —सकाम वा निष्काम जो भोग सो ।
२ अर्थ—इसलोक और परलोकविषै जो भोग के साधन धनादिक है सो ।
३ काम—इसलोक और परलोकजोपुण्यसो ।
४ मोक्ष—दुःखनिवृत्ति और सुखप्राप्ति ।
पुरुषार्थ ४—१ धर्म । २ अर्थ । ३ काम । ४ मोक्ष ।
पूजापात्र ४ १ ब्रह्मनिष्ठ । २ मुमुक्षु । ३ हरिदास । ४ स्वधर्मनिष्ठ ।
प्रमाण ४ -प्रमाज्ञान का कारण प्रमाण है । इहां चार प्रमाणों का कथन न्यायरीति से है ।
१ प्रत्यक्षप्रमाण । २ अनुमान प्रमाण । ३ उपमानप्रमाण । ४ शब्दप्रमाण ।।

ब्रह्मविदादि ४—

१ ब्रह्मवित् चतुर्थभूमिका विषै आरूढ़ज्ञानी ।

२ ब्रह्मविद्वर—पञ्चभूमिकाविषै आरूढ़ज्ञानी ॥

३ ब्रह्मविद्वरीयान षष्ठभूमिकाविषैआरूढ़ज्ञानी

ब्रह्मविद्वरिष्ठ—सप्तमभूमिकाविषै आरूढ़ज्ञानी ।

भूतग्राम ४ —

१ जरायुज मनुष्य पशु आदिक ।

२ अंडज पक्षी सर्पआदिक ।

३ उद्भिज वृक्षादिक ।

स्वेदज—जूकामत्कुणआदिक ।

मैत्र्यादि ४—

१ मैत्री—धनवान वा गुणकरि समान वा ईश्वरभक्त वा विषयी [सुकर्मी उपासक], पुरुष इनविषै "ये मेरे हैं" ऐसी बुद्धि ॥

२ करुणा—दुःखी वा गुणकरि निकृष्ट वा अज्ञजन वा जिज्ञासु । इन विषै दया ॥

३ मुदिता-पुण्यवान् वा गुणकरि अधिक वा ईश्वर वा मुक्त इनविषै प्रीति ।
४ उपेक्षा-पापिष्ठवा अवगुण युक्त वा द्वेषी वा पामर । इनविषैरागद्वेषकरि रहिततारूप उदासीनता ।
मोक्षद्वारपाल ४-१ शम ॥ २ संतोष ॥ ३ विचार [विवेक] ॥ ४ सत्संग ॥
योगभूमिका ४-१ वाणीलय ॥ २ मनोलय ॥ ३ बुद्धिलय ॥ ४ अहंकारलय ॥
वर्ण ४-१ ब्राह्मण॥ २क्षत्रिय॥ ३वैश्य॥४शूद्र ।
वर्तमानज्ञानप्रतिबन्धनिवृत्तिहेतु ४-
१ शमादि-यह विषयासक्तिकानिवर्तक है ॥
२ श्रवण-यह बुद्धिकी मंदताका निवर्तकहै ॥
३ मनन-यह कुतर्कका निवर्तक है ॥
४ निदिध्यासन-यह विपरीतभावना विषै दुराग्रह होवे है ताका निवर्तक है ॥

धर्मानज्ञानप्रतिबन्ध ४-१ विषयाशक्ति ॥ २ बुद्धिमांद्य ॥ ३ कुतर्क ॥ विपयाशक्ति दुराग्रह ॥

विवेकादि ४—१ विवेक ॥ २ वैराग्य ॥ ३ सद्सपत्ति ॥ मुमुक्षता ॥

वेद ४-१ ऋग्वेद ॥ यजुरुवेद ॥ ३ सामवेद ॥ अथर्वणवेद ॥

शब्दप्रवृत्तिनिमित्त ४—जाति ॥ २ गुण ॥ ३ क्रिया ॥ ४ संबंध ॥

सन्यास ४—१ कुटीचकसंन्यास ॥ बहूदक संन्यास ॥३ हंससंन्यास ॥४ परमहंस-संन्यास॥

समाधिविघ्न ४-१ लय ॥ २ विक्षेप ३ कषाय ४ रसास्वाद ॥

स्पर्श ४—१ शीत ॥ २ उष्ण ॥ ३ कोमल ॥ ४ कठिन ॥

पदार्थ पंचविधि ॥ ५ ॥

अभाव ५—नास्तिप्रतीतिका विषय ॥

१ प्रागभाव कार्य की उत्पत्तिते पूर्व जो कार्य का अभाव है सो ॥

२ प्रध्वंसाभाव—नाशके अनन्तर जो अभाव होवे है सो ।

३ अन्योन्याभाव परस्परविषै जो परस्पर का अभाव है सो । जैसे रूपभेद । जैसे घट-पट का भेद है सो ॥

४ अत्यंताभाव—तीनिकाल विषै जो अभाव है सो , जैसे वायुविषै रूपका है ॥

५ सामयिकाभाव-किसी (उठाय लेने के) समविषै जो भूतकालादिक में घटादिक का अभाव होवै है सो ॥

अज्ञान के भेद ५ – अज्ञानविषै वेदांतआचार्यन के मत के भेद ।

१ मायाअविद्यारूपअज्ञान केइक [विद्यारण्य स्वामी] अज्ञान को माया (समष्टि अज्ञानमय ईश्वर की उपाधि) और अविद्या (व्यष्टि अज्ञानमय जीवन की उपाधि) रूप मानते हैं ।

२ ज्ञानक्रियाशक्तिरूपअज्ञान केइक अज्ञानको ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति मानते हैं ।

३ विक्षेपआवरणरूपअज्ञान केइक अज्ञानको आवरणरूप अरु विक्षेप [की हेतुशक्ति] रूप मानते हैं ।

४ समष्टिव्यष्टिरूपअज्ञान--केइक अज्ञान को समष्टि [ईश्वर की उपाधि] और व्यष्टि जीवकी उपाधि रूप मानते हैं॥

५ कारणरूपअज्ञान--केइक अज्ञानको जगत् का उपादानकारण मलप्रकृतिमय ईश्वरकी उपाधिरूप मानते हैं और तिस पक्ष में कार्य [अन्तःकरण] उपाधिवाला जीव मान्या।

उपवायु ५--

१ नाग--उद्गार का हेतु वायु।
२ कूर्म--निमेषउन्मेष का हेतु वायु॥
३ कृकल--छींकका हेतु वायु।
४ देवदत्त--जम्हाई का हेतु वायु।
५ धनंजय--देहपुष्टि का हेतु वायु।

कर्म ५—

१ नित्यकर्म—सदा जाका विधान होवेहै ऐसा कर्म [स्नानसंध्याआदिक] ॥

२ नैमित्तिककर्म—किसी निमित्त को पायके जाका विधान होवे है ऐसा कर्म [ग्रहण-श्राद्ध आदिक] ॥

३ काम्यकर्म–कामना के लिये विधान किया कर्म [यज्ञयागादिक] ॥

४ प्रायश्चितकर्म—पाप की निवृत्ति के लिये विधान किया कर्म ॥

५ निषिद्धकर्म–नहीं करने के लिये कथन किया कर्म [ब्रह्महत्यादिक] ॥

कर्मइन्द्रिय ५–१ वाक् ॥ २ पाणि ३ पाद ॥ ३ उपस्थ ॥ ५ गुद ॥

कोष ५—१ अन्नमयकोष। २ प्राणमय—
कोष। ३ मनोमयकोष। ४ विज्ञानमयकोष।
५ आनन्दमयकोष।

क्लेश

१ अविद्या—

[१] दुःखविषै सुख बुद्धि॥

[२] अनात्माविषै आत्मबुद्धि।

[३] अनित्यविषै नित्यबुद्धि।

[४] अशुचिविषै शुचिबुद्धि।

यह चार प्रकार की कार्य अविद्या।

२ अस्मिता—साची (आत्मा) और बुद्धि की एकता ज्ञान (सामान्यअहंकार)।

३ राग—दृढ़आशक्ति (आरूढ़प्रीति)

४ द्वेष—क्रोध।

५ अभिनिवेश—मरण का भय।

ख्याति ५—प्रतीति और कथनरूप व्यवहार ।
१ असत्ख्याति— शून्यवादी । असत् (निःस्व-रूप) सर्पकी रज्जुदेशविषै प्रतीति और कथन मानते हैं सो ।
२ आत्मख्याति— क्षणिकविज्ञानवादी । क्षणिक बुद्धिरूप आत्मा की सर्परूप से प्रतीति और कथन मानते हैं सो ।
३ अन्यथाख्याति नैयायिक । वंबी (राफडा) आदिक दूरदेशविषै स्थित सर्प की दोष के बल से रज्जुदेशविषै प्रतीत और कथन मानते हैं सो । अथवा रज्जुरूपज्ञेयकासर्प-रूपसे ज्ञान मानते हैं । सो ।
४ अख्यातिख्याति— सांख्यप्रभाकर मतके अनुसारी । "यह सर्प है," "यह" अंश तो रज्जुके इन्दपने का प्रत्यक्षज्ञान है और 'सर्प' यह पूर्व देखे सर्प का स्मृति-

ज्ञान है। ये दो ज्ञान हैं। तिनका दोप के बल से अख्याति कहिये अविवेक (भेद प्रतीति का अभाव) होवे है। ऐसे मानते हैं ॥

५. अनिर्वचनीयख्याति—वेदांतसिद्धांतमें:— रज्जुविषै ताकी अविद्याकरि अनिर्वचनीय (सत्असत्से विलक्षण) सर्प और ताका ज्ञान उपजै है। ताकी ख्याति कहिये प्रतीति और कथन होवे है ॥ ऐसे मानते हैं। सो ॥

जीवनमुक्तिके प्रयोजन ५—यद्यपि जीवन-मुक्ति तो ज्ञानी को सिद्ध है। तथापि यहां जीवन्मुक्ति शब्द करि जीवनमुक्तिके विलक्षण आनन्दकी अवस्था (पंचमआदिकभूमिका) का ग्रहण है। ताके प्रयोजन कहिये फल-पांच प्रकार के हैं ॥

१ ज्ञानरक्षा—यद्यपि एक बार उपजे दृढ़-बोधका नाश नहीं होवेहै। याते ज्ञानरक्षा आपही सिद्ध है। तथापियहां निरंतर ब्रह्माकारवृत्तिकी स्थिति। ज्ञानरक्षाशब्द का अर्थ है।

२ तप-मन और इन्द्रियन की एकाग्रता वा शरीर वाणी और मन का संयम ॥

३ विसंवादाभाव—जल्प और वितंडवाद का अभाव ॥

४ दुःखनिवृत्ति-दृष्ट (प्रत्यक्ष) दुःख की निवृत्ति ॥

५ सुखप्राप्ति निरावरण परिपूर्ण और सवृत्तिरूप जीवन्मुक्ति के विलक्षण आनन्दकीप्राप्ति

दृष्टांत ५—जगत्के मिथ्यापनेंविषै दृष्टांत पंच-विधि है।
१ शुक्तिविषै रजतका दृष्टांत।
२ रज्जुविषै सर्पका दृष्टांत।
३ स्थाणुविषै पुरुष का दृष्टांत।
४ गगनविषै नीलता का दृष्टांत।
५ मरीचिकाविषै जल का दृष्टांत मध्यान्हकाल में मरुभूमि (ऊसरभूमि विषैप्रतिबिंबित सूर्यके किरण मरीचिका करिये हैं। तिनविषै जो जल भासता है। ताको मृगजल और झांझूजल कहते हैं। सो॥
नियम ५—
१ शौच। २ संतोष। ३ तप।
४ स्वाध्याय-स्वशाखा के वेद भाग का वा गीताआदिका जो नित्य पाठ करना सो।
५ ईश्वरप्रणिधान—ॐकारादिईश्वरउपासना।

प्रलय ४—

१ नित्यप्रलय—क्षणक्षणविषै सर्वकार्यनका जो दीपज्योति की न्याई नाश होवे है सो। या सुषुप्ति ॥

२ नैमित्तिकप्रलय—ब्रह्माकी रात्रिरूप निमित्तिकरि होता जो है भूरआदि नीचे के तीन लोकनका नाश सो ॥

३ दिनप्रलय—ब्रह्माके दिनमें चतुर्दशमन्वंतर होते हैं। तिस प्रत्येक का जो नाश। सो ॥ याहीको अवांतरप्रलयऔर मन्वन्तर प्रलय भी कहते हैं। कोई तो याहीको नैमित्तिक प्रलय कहते हैं।

४ महाप्रलय—ब्रह्माके शतवर्षके अनन्तर जो होता है ब्रह्मदेवहित आकाशादिसर्वभूतन का नाश सो।

५ आत्यंतिकप्रलय ज्ञानकरि जो होता है कारणसहित सकलजगत्‌का बाध (अत्यंत-निवृत्ति) सो ॥

प्राणादि ५-१ प्राण॥ २ अपान॥ ३ व्यान ॥ ४ उदान ॥ ५ समान ॥

भेद ५-१ जीवईश्वर का भेद ॥ २ जीव-जीवका भेद ॥ ३ जीवजड़का भेद ॥ ४ ईशजड़का भेद ॥ ५ जड़जड़ का भेद ॥

भ्रम ५-(देखो षष्ठकलाविषै) १ भेदभ्रम ॥ २ कर्तव्यभ्रम ॥ ३ संगभ्रम ॥ ४ विकार-भ्रम ५ सत्यत्वभ्रम ।

भ्रमनिवर्तकदृष्टान्त ५—(देखो षष्ठकला-विषै) १ बिंबप्रतिबिंब ॥ २ लोहितस्फटिक । ३ घटाकाश । ४रज्जुसर्प॥५कनककुण्डल ॥

महायज्ञ ५—१ देव ॥ २ ऋषि ॥ ३ पितर ४ मनुष्य ॥ ५ भूतयज्ञ ॥

यम ५—
१ अहिंसा ॥ २ सत्य ॥ ब्रह्मचर्य ॥
४ अपरिग्रह—निर्वाहसेअधिकधनका असंग्रह
५ अस्तेय चोरी का अभाव ॥
योगभूमिका ५—
क्षेप—रागद्वेपादिकरिचित्तकी चंचलता ॥
२ विक्षेप—बहिर्मुखचित्तकी जो कदाचित्
ध्यानयुक्ता ॥ सो क्षेपक विशेप विक्षेप है ॥
मूढ़—निद्रांतद्रादियुक्तता ॥
४ एकाग्र ॥ ५ निरोध ।
वचनादि ५—१ वचन ॥ २ आदान
३ गमन ॥ ४ रति ॥ ५ मलत्याग ॥
शब्दादि ५—१ शब्द ॥ २ स्पर्श ॥ ३ रूप
४ रस ॥ ५ गन्ध ॥
स्थूलभूत ५—१ आकाश ॥ २ वायु ॥
३ तेज ॥ ४ जल ॥ ५ पृथ्वी ।

हेत्वाभास ५—हेतुके लक्षण [साध्यकी साधकता] से रहित हुआ हेतुकी नांईभासै। ऐसा जो दुष्टहेतु सो। वा हेतुकाजो आभास। [दोष] सो

१ सव्यभिचार—साध्य (अग्नि) के आश्रय (पर्वत) और ताके अभाव के आश्रय (ह्रद) विषै वर्तनेवाला हेतु। सव्यभिचार है। जैसे पर्वत अग्निमान् है "प्रमेय होनेते,, यह हेतु है। याहीको अनैकांतिहेतु भी कहते हैं।

विरुद्ध—साध्यके अभावकरि व्याप्त हेतु विरुद्ध है जैसे "शब्द नित्य है कृतक (क्रियाजन्य) होनेते" यह हेतु है सो साध्य (नित्यता) के अभावरूप अनित्यता करि व्याप्त है। काहेते जो कृतक है सो अनित्य है। घटवत्। इस नियमते।

३ सत्प्रतिपक्ष—जाके साध्य के अभाव का

साधक अन्यहेतु होवैसो। जैसे शब्द नित्य है। "श्रवण होनेते" इस हेतु के साध्य [अनित्यहै "काय होनेते" घटकीन्यांई। यह हेतु है। जो कार्य होवै सो अनित्य ही होवैहै।

४ असिद्ध—शब्द गुण है। "चाक्षुप होनेते" रूप की नाँई॥ यहां चक्षुपत्वरूप हेतु का स्वरूप शब्दरूप पक्षविषै नहीं है। काहे ते शब्दको श्रवणजन्य ज्ञान का विषय होनेते

५ बाधित—जाके साध्यका अभाव अन्य प्रमाणकरि निश्चित होवै सो। जैसे अग्नि उष्ण नहीं है "द्रव्य (वस्तु) होनेते,,। इस हेतुके साध्य (अनुष्णता) के अभाव (उष्णता) का ग्रहण त्वकइन्द्रियकरि होवै है

ज्ञानइन्द्रिय ५—१ श्रोत्र। २ त्वक्। चक्षु। ४ जिव्हा। ५ घ्राण।

॥ पदार्थ षड्विधि ॥

अजिव्हत्वादि ६–यति (सन्यासी) के धर्म विशेष ॥

१ अजिव्हत्व–रसविषयकी आसक्तिरहितता।

२ नपुंसकत्व–कुमारी। किशोरी [१६ वर्ष की] अरु वृद्धास्त्रीविषै समता [निर्विकारिता] रूप ॥

३ पंगुत्व–एकदिनमैंयोजनाते अधिकअगमन।

४ अंधत्व–एकधनुष पर्यंतत अधिक दृष्टिका अप्रसरण।

५ बधिरत्व–व्यर्थालापका अश्रवण ॥

५ मुग्धत्व—व्यवहारविषैशून्यता (मूढ़तावा)।

अनादिपदार्थ ६—उत्पत्तिरहित पदार्थ ॥

१ जीव ॥ २ ईश ॥ ३ शुद्धचेतन ॥ ४ अविद्या ॥ ५ चेतन अविद्यासम्बन्ध ॥ ६ तिनका भेद ॥

अरिवर्ग ६ परलोकके विरोधी आंतर (भीतरस्थिति) शत्रुनका समूह ॥

१ काम—प्राप्त वस्तु की भोगकी इच्छा ॥
२ क्रोध द्वेष ॥
३ लोभ अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति की इच्छा
४ मोह—आत्माअनात्माका वा कार्य (शुभ) अकार्य (अशुभ) का अविवेक ॥
५ मद—गर्व (अहंकार) ॥
६ मत्सर—परके उत्कर्षका असहन ।

अवस्था ५—स्थूलदेहके काल ॥

१ शिशु - एक वर्ष के देह का काल ॥
२ कौमार—पांचवर्ष के देहका काल ॥
३ पौगंड—षट् से दसवर्षके देहका काल ॥
४ किशोर—एकादशसेपंचदशवर्षके देहका काल
५ यौवन—षोडशसे चालीसवर्ष के देहका काल
६ जरा—चालीस से ऊपरके देहका काल ॥

ईश्वरके भाग ६—१ समग्रऐश्वर्य। २ समग्रधर्म। ३ समग्रयश। ४ सामग्री।
५ समग्रज्ञान। ६ समग्रवैराग्य।

ईश्वर के ज्ञान ६—

१ उत्पत्ति। २ प्रलय। ३ गति।
४ आगति—इसलोकविषै जीवका आगमन रूप आगति है ताका ज्ञान।
५ विद्या। ६ अविद्या।

ऊर्मि ६—संसाररूप सागरकी लहरियां।

१ जन्म। २ मरण। ३ क्षुधा। ४ तृषा।
५ हर्ष। ६ शोक।

कर्म ६— नित्यकर्म।

१ स्नान। २ जप। ३ होम।
४ अर्चन—देवपूजन।

५ आतिथ्य- भोजनके समय आये अभ्यागतके अर्थ अन्नदान।

६ वैश्वदेव-अग्निविषै हुतद्रव्यका होम।

कौशिक ६—अन्नमयकोश (देह) विषै होनेवाले पदार्थ।

१ त्वक्। २ मांस। ३ रुधिर। ४ मेद। ५ मज्जा। ६ अस्थि।

प्रमाण ६—

१ प्रत्यक्षप्रमाण—प्रत्यक्षप्रमाण जो करण सो प्रत्यक्षप्रमाण है ऐसे श्रोत्रआदिक पांच ज्ञानेन्द्रिय हैं।

२ अनुमानप्रमाण—अनुमितिप्रमाणका करण जो लिंगका ज्ञान सो अनुमान प्रमाण है। जैसे पर्वतविषै अग्निके ज्ञान का हेतु धूमरूप लिंग का ज्ञान है।

३ उपमानप्रमाण - उपमितिप्रमाणका करण जो सादृश्यका ज्ञान सो उपमान प्रमाण है। जैसे गवय [रोझ] में गौके सादृश्यका ज्ञान है ॥

४ शब्दप्रमाण-शब्दीप्रमाण का करण जो लौकिकवैदिकशब्द । सो ॥

५ अर्थापत्तिप्रमाणका— अर्थापत्तिप्रमाणकाकारण जो उपपाधका ज्ञान । सो अर्थापत्तिप्रमाण है ॥ जैसे दिनमें अभोजीस्थूलपुरुषके रात्रिमें भोजन के ज्ञानरूप अर्थापत्तिप्रमाण का हेतु स्थूलता (उपपाद्य) का ज्ञान है ॥

६ अनुपलब्धिप्रमाण-अभावप्रमाण का करण जो पदार्थकी अप्रतीति । सो अनुपलब्धि-प्रमाण है। जैसे गृहमें घटके अभाव क ज्ञानको हेतु घटकी अप्रतीति है ॥

भ्रम ६—१ कुल । २ गोत्र । ३ जाति ।
४ वर्ण । ५ आश्रम । ६ नाम

रस ६—१ मधुरस । २ अम्लरस ॥
३ लवणरस । ४ कटुकरस । ५ कषायरस ।
६ तिक्तरस ।

लिंग ६—वेदवाक्यके तात्पर्यके निश्चायकलिंग ।
१ उपक्रमउपसंहार– आदिअंतकीएकरूपता
२ अभ्यास – वारम्वार पठन ।
३ अपूर्वता – अलौकिकता ।
४ फल – मोक्ष ।
५ अर्थवाद – स्तुति ।
६ उपपत्ति—अनुकूलदृष्टांत ।

विकार ६—१ जन्म ।
२ अस्तिता—पूर्व अविद्यमान का होना ।
३ वृद्धि । ४ विपरिणाम । ५ अपक्षय ॥
विनाश ॥

वेदअंग ६—१ शिक्षा । २ कल्प ।३ व्याकरण । ४ निरुक्त । ५ छंद । ज्योतिष ॥

शमादि ६—१ शम । २ दम । ३ उपरति । ४ तितिक्षा । ५ श्रद्धा । ६ समाधान ।

शास्त्र ६—१ सांख्यशास्त्र । २ योगशास्त्र । ३ न्यायशास्त्र । ४ वैशेषिकशास्त्र । ५ पूर्वमीमांशास्त्र । ५ उत्तरमीमांसाशास्त्र ।

समाधि ६-१ बाह्यदृश्यानुविद्ध समाधि । २ आंतरदृश्यानुविद्धसमाधि । बाह्यशब्दानुविद्धसमाधि । आंतरशब्दानुविद्धसमाधि । ५ बाह्यनिर्विकल्पसमाधि । ६ आंतरनिर्विकल्पसमाधि ।

सूत्र ६—१ जैमिनीयसूत्र । २ आश्वलायनसूत्र २ आपस्तंवसूत्र । ४ बौधायनसूत्र । ५ कात्यायनसूत्र । ६ वैखानसीयसूत्र ।

॥ पदार्थ सप्तविधि ॥७॥

अतलादि ७—१ अतल ॥ २ वितल ॥
३ सुतल ॥ ४ तलातल । ५ रसातल ।
६ महातल । ७पाताल ।

अवस्था ७—चिदाभासकी क्रमते तीन बन्धकी और चार मोक्षकी हेतु दशा ।

१ अज्ञान—"नहि जानता हूँ" इस व्यवहार-का हेतु जो आवरणविक्षेपहेतु शक्तिवाला अनादि अनिर्वचनीयभावरूप पदार्थ सो ।

२ आवरण—"नहीं है । नहीं भासता है" इस व्यवहारका हेतु अज्ञानका कार्य ।

३ विक्षेप-धर्मसहितदेहादिप्रपंच और ताकाज्ञान।

४ परोक्षज्ञान । ५ अपरोक्षज्ञान ।

६ शोकनाश—विक्षेपनाश [भ्रांतिनाश] ।

७ तृप्ति—ज्ञानजनित हर्ष ।

चेतन–७

१ ईश्वरचेतन–मायाविशिष्टचेतन।

२ जीवचेतन–अविद्याविशिष्टचेतन।

३ शुद्धचेतन–निरुपाधिक चेतन।

४ प्रमाताचेतन—प्रमाता जो अन्तःकरण तिसकरि अवच्छिन्नचेतन। प्रमाता चेतन है।

५ प्रमाणचेतन–इन्द्रिय द्वारा शरीरसे बाहिर निकसिके घटादिविषयपर्यन्तपहुंची जो वृत्ति। सो प्रमाण है। तिसकरि अविच्छिन्नचेतन। प्रमाणचेतन है॥

६ प्रमेयचेतन–प्रमेय जो घटादिक विषय तिसकरि अवच्छिन्न [अन्यों से भिन्न किया] चेतन। प्रमेयचेतन है॥

७ प्रमाचेतन–घटादिविषयाकार भई जो वृत्ति सो प्रमा है तिसकरि अवच्छिन्न चेतन वा तिसविषै प्रतिबिंबितचेतन प्रमाचेतन है॥ याहीकोप्रमितिचेतनऔरफलचेतनभी कहते हैं।

द्रव्यादिपदार्थ ७—नैयायिकमतमें जे द्रव्य-आदिसप्तपदार्थ माने हैं। वे॥

१ द्रव्य न्यायमत में (१) पृथ्वी (२) जल (३) तेज (४) वायु (५) आकाश (६) काल (७) दिशा (८) आत्मा (९) मन। ये नव द्रव्य (गुणनकेआश्रयरूप पदार्थ माने हैं। वे॥

२ गुण—न्यायमतमें रूप से आदिलेके संस्कार पर्यन्त २४ गुण मानेहैं। वे॥

३ कर्म—न्यायमतमें (१) उत्क्षेपण [ऊँचे फेंकना] (२) अपक्षेपण [नीचे फेंकना] (३) आकुंचन (४) प्रसारण और (५) गमन। ये पंचविधिकर्म माने हैं॥

४ सामान्य—न्यायमतसे पर (सत्ता) और अपर (घटत्वादिक) इस भेदते द्विविध रीत मानी है। सो॥

५ समवाय—वेतांतमतमें जहां जहां तादा-
त्म्यसंबंध मान्या है तहां तहां न्यायमत में
संबंधविशेष (नित्यसंबंध) मान्या है।

६ अभाव—(१) प्रागभाव (२) प्रध्वंसाभाव
(३) अन्योन्याभाव (४) अत्यता-
भाव और (५) सामयिकाभाव।

यह पंचविधनास्तिप्रतीतिके विषयरूप पदार्थ।

७ विशेष- न्यायमतमें जे परमाणुन के मध्य-
गत अनंतअवकाशरूप पदार्थ माने हैं। वे।

धातु ७—

१ रस-सूक्ष्म (पुण्यपाप)। मध्यम (अन्नका
सार) और स्थूल (मल) भेदते तीन प्रकार के
जो भुक्त अन्नके विभाग होवे हैं। तिनमें से
मध्यम विभाग है। सो।

२ रुधिर। २ मांस।

४ मेद-श्वेतमांस (चर्बी)।

५ मज्जा—अस्थिगत सचिक्कणपदार्थ ।
६ अस्थि । ७ रेत ।
भूरादिलोक७ —१ भूरलोक । २ भुवरलोक ।
३ स्वरलोक । ४ महरलोक । ५ जनलोक ।
६ तपलोक । ७ सत्यलोक ।
मौनादि ७- १ मौन । २ योगासन । ३ योग
४ तितिक्षा । ५ एकांतशीलता । ६ निःस्पृहता
७ समता ।
रूप ७ - १ शुक्ल । २ कृष्ण । ३ पीत ।
४ रक्त । ५ हरित । ६ कपिश । चित्र ।
व्यसन ७ १ तन । २ मन । ३क्रोध । ४विषय
५ धन । ६ राज्य । ७ सेवकव्यसन ।
ज्ञानभूमिका ७-(देखो याग्रंथकी त्रयोदश-
कलाविषै) १ शुभेच्छा । २ सुविचारणा ।
३ तनुमानसा । ४ सत्वापत्ति । ५ असंसक्ति ।
६ पदार्थाभाविनी । ७ तुरीयगा ।

॥ पदार्थ अष्टविधि ॥ ८ ॥

पाश ८-१ दया ॥ २ शंका ॥ ३ भय ॥ ४ लज्जा ॥ ५ निंदा ॥ ६ कुल ॥ ७शील। ८ धन ॥

पुरी ८—१ ज्ञानेन्द्रियपंचक, २कर्मेन्द्रियपंचक। ३ अन्तःकरणचतुष्टय। ४ प्राणादिपंचक ॥ ५ भूतपंचक ॥ ६ काम ॥ ७ त्रिविधकर्म ॥ ८ वासना ॥

प्रकृति ८-१ पृथवी ॥ २ जल ॥ ३ अग्नि। ४ वायु। आकाश ॥

६ मन—यहां मन शब्दकरि समष्टि मनरूप अहंकारका ग्रहण है ॥

७ बुद्धि—यहां बुद्धिशब्दकरि समष्टिबुद्धिरूप महत्तत्त्वका ग्रहण है ॥

८ अहंकार—यहां अहंकारशब्दकरि महत्तत्वते पूर्व शुद्ध अहकार के कारणअज्ञानरूप मूल प्रकृति का ग्रहण है।

ब्रह्मचर्य के अङ्ग ८—

१ स्त्री का दर्शन ॥ २ ॥ स्पर्शन ।
केलिः—चोपड़ आदिकक्रीड़ा
(खेल) ॥
४ कीर्तन ॥ ५ गुह्यभाषण ॥
६ संकल्प-चिंतन (स्मरण)
७ निश्चय ॥ ८ इनका त्याग ॥

इन अष्टमैथुनसे विरति ॥

मद ८-१ कुलमद ॥ २ शीलमद ॥
३ धनमद ।४ रूपमद।५यौवनमद ।
६विद्यामद॥७तपमद॥ ८राज्यमद ।

मूर्तिमद -

१ पृथ्वीमद--अस्थिमांसादिपृथ्वीके तत्वन का अभिमान ।

२ जलमद—शुक्रशोणितआदिक जलके तत्व-नका अभिमान ।

३ तेजमद क्षुधाआदिकतेजतत्वनकी अधिकता

४ पवनमद—चलन (विदेशगमन) धावन आदिक वायुके तत्वोंकरि युक्तता ।

५ आकाशमद काम क्रोधादिक आकाश के तत्वोंकरि युक्तता ।

६ चन्द्रमद—शीतलता रूप चन्द्र के गुणकरि युक्त होना ।

७ सूर्यमद—संताप (क्रोधादि) रूप सूर्य के गुणकरि युक्त होना ।

८ आत्म मद—विद्याधनकुलआदिकआत्मा के संबधिन का अभिमान ।

शब्दशक्तिग्रहणहेतु ८—१ व्याकरण ।
२ उपमान । ३ कोप । ४ आप्तवाक्य ।
५ वृद्धव्यवहार । ६ वाक्यशेष ७ विवरण ।
८ सिद्धपदकी सन्निधि ।

समाधिके अंग ८—१ यम । २ नियम ।
३ आसन । ४ प्राणायाम । ५ प्रत्याहार ।
६ धारणा ७ ध्यान ८ सविकल्पसमाधि ।

॥ पदार्थ नवनिधि ॥६॥

तत्व ६-किसी महात्मा के मत में लिंगदेहके नवतत्व माने हैं वे ।
१ श्रोत्र । त्वक् । ३ चक्षु । ४ जिव्हा ।
५ घ्राण । ६ मन । ७ बुद्धि । ८ चित्त ।
६ अहंकार ।

संसार ६—१ ज्ञाता । २ ज्ञान । ३ ज्ञेय ।
४भोक्ता, ५ भोग्य, ६ भोग, ७ कर्ता,
८ करण, ६ क्रिया ।

पदार्थ दशविधि ॥ १० ॥

नाड़िका और देवता १०—

इडा (चन्द्र) वामनासिकागत चन्द्रनाड़ी ॥ हरि देवता ॥

२ पिंगला [सूर्य] दक्षिणनासिकागत सूर्य-नाड़ी ॥ ब्रह्मा देवता ।

३ सुषुम्णा [मध्यमा] नासिका के मध्यगत-नाड़ी ॥ रुद्र देवता ॥

४ गांधारी [दक्षिणनेत्र] इन्द्र ॥

५ हस्तिजिह्वा [वामनेत्र] वरुण ॥

६ पूर्णा [दक्षिणकर्ण] ईश्वर ॥

७ यशस्विनी [वामकर्ण] ब्रह्मा ॥

८ कुहू [गुदा] पृथिवी ॥

९ अलंबुषा [मेढ़] सूर्य ॥

१० शंखिनी [नाभि] चन्द्र ॥

शृङ्गारादिरस १०–१ शृंगाररस ॥ २ वीररस
३ करुणारस ॥ ४ अद्भुतरस ॥ ५ हास्यरस
६ भयानकरस ॥ ७ बीभत्सरस ॥ ८ रौद्ररस
९ शांतिरस ॥ १० प्रेमभक्ति वा ज्ञानरस ॥

॥पदार्थ एकादशविधि ॥११॥

ज्ञानसाधन ११—
१ विवेक ॥ २ वैराग्य ॥ ३ षट्सम्पत्ति ॥
४ मुमुक्षुता ॥
५ गुरुसंपत्ति—विधिपूर्वक गुरु के शरण जाना ॥
६ श्रवण ॥ ७ तत्वज्ञानाभ्यास ॥ ८ मनन ॥
९ निदिध्यासन ॥
मनानाश—यहां मनशब्दकरि रजतमसे सत्वगुण का तिरस्काररूप मनका स्थूलभाव

कहिये है ताका नाश कहिये ब्रह्माभ्यासकी प्रबलता से रजतम के तिरस्कारकरि जो सत्त्व-गुण का आविर्भाव होवै है। सो।
११ वासनाक्षय।

॥ पदार्थ द्वादशविधि ॥१२॥

अनात्मा के धर्म १२

१ अनित्य। २ विनासी ॥ ३ अशुद्ध।
४ नाना। ५ क्षेत्र। ६ आश्रित।
७ विकारि। ८ परप्रकाश्य। ९ हेतुमान्।
१० व्याप्य-परिच्छिन्न (देशकालवस्तु कृत परिच्छेदवाला)
११ संगी। १२ आवृत।

आत्मा के धर्म १२—

१ नित्य—उत्पत्ति और नाशते रहित।
अव्यय—घटने बढ़ने से रहित।

३ शुद्ध—माया अविद्यारूप मल रहित ।
४ एक—सजातीयभेदरहित ।
५ क्षेत्रज्ञ—शरीररूप क्षेत्र का ज्ञाता ।
६ आश्रय अधिष्ठान ।
७ अविक्रम—अविकारी ।
८ स्वप्रकाश - अपने प्रकाशविषै अन्य (स्वपर) प्रकाशकी अपेक्षा से रहित हुआ सर्वका प्रकाशक ।
६ हेतु—जाले के कारण उर्णनाभिकी न्यांई और नख और रोम [केश] उनके कारण पुरुष की न्यांइ जगत् का अभिन्ननिमित्त (विवर्त) उत्पादन कारण है ।
१० व्यापक—अपरिच्छिन्न (परिपूर्ण)
११ असंगी—सजातीय विजातीय और सम्बन्ध रहित ।
१२ अनावृत—सर्वथा आवरणते रहित ।

ब्राह्मण के व्रत १२—

१ ज्ञान ॥ २ सत्य ॥ ३ शम । ४ दम॥
५ श्रुत ॥ शास्त्राभ्यास ।

६ अमात्सर्य–परके उत्कर्षका असहनरूप जो मत्सर तिसते रहितपना ।

७ लज्जा । ८ तितिक्षा ॥

९ अनसूया–गुणों के विषे दोष का अरोपरूप असूयासे रहितता ॥

१० यज्ञ ॥ ११ दान ॥

१२ धर्य–काम और क्रोध के वेगको रोकना

महत्ताहेतधर्म १२–१ धनाढ्यता ॥

१ अभिजन—कुटुम्ब ॥ ३ रूप ॥ ४ तप ॥

५ श्रुत–शास्त्राभ्यास ।

३ ओज इन्द्रियनका तेज ॥

७ तेज ॥ ८ प्रभाव ॥ ९ बल ॥

१० पौरुष ॥ ११ बुद्धि । १२ योग

॥ पदार्थ त्रयोदशविधि ॥१३॥

भागवतधर्म १३ भगवत्भक्तन के धर्म ।

१ सकाम कर्म के फल का विपरीत दर्शन ।

२ धनगृह पुत्रादिविषै दुःखबुद्धि और चलबुद्धि

३ परलोक विषै नश्वर बुद्धि ।

४ शब्दब्रह्म और परब्रह्मविषै कुशल गुरुपति गमन ।

५ गुरुविषै ईश्वर बुद्धि और निष्कपट सेवा ।

६ परमेश्वरविषै सर्व कर्म समर्पण ।

७ भक्ति वैराग्य सहित स्वरूपानुभवाक्षाघुसङ्ग

८ शौच । तप । तितिक्षा । मौन ।

९ स्वाध्याय । आर्जव (सरलस्वभाव) ब्रह्मचर्य अहिंसा और द्वंद्वसहत्व (शीतउष्ण आदिक द्वंद्वधर्म के सहन का स्वभाव) ।

१० सर्वत्र आत्मा रूप ईश्वर का दर्शन ।

११ कैवल्य (एकाकी रहना) । अनिकेत

(षोडश-
गृह न बांधना) एकांत (विविक्त)
चीरवस्त्र । संतोष ।

१२ सर्वभूतनविषैआत्माकेभगवद्भावकादर्शन और भगवद्रूप आत्माविषै सर्वभूतनकादर्शन

१३ जन्मकर्मवर्णाश्रमादिकरि देहविषैं निर-अभिमान और स्वपरबुद्धिका अभाव ।

॥ पदार्थ चतुर्दशविधि ॥ १३ ॥

त्रिपुटी १४—

ज्ञानेन्द्रियनकी की त्रिपुटी ।

इन्द्रिय	देवता	विषय
अध्यात्म	अधिदैव	अधिभूत
१ श्रोत ।	दिशा ।	शब्द ।
२ त्वचा ।	वायु ।	स्पर्श ।
३ चक्षु ।	सूर्य ।	रूप ।
४ जिह्वा ।	बरुण ।	रस ।
५ घ्राण ।	अश्विनीकुमार	गंध ।

कर्मेन्द्रियकी त्रिपुटी ॥

६ वाक् ।	अग्नि ।	वचन (क्रिया) ।
७ हस्त ।	चंद्र ।	लेनादेना ।
८ पाद ।	वामनजी ।	गमन ।
९ उपस्थ ।	प्रजापति ।	रतिभोग ।
१० गुद ।	यम ।	मलत्याग ।

अंतःकरणकी त्रिपुटी ।

११ मन ।	चन्द्रमा ।	संकल्पविकल्प ।
१२ बुद्धि ।	ब्रह्मा ।	निश्चय ।
१३ चित्त ।	वासुदेव ।	चिन्तन ।
१४ अहंकार ।	रुद्र ।	अहंपना ।

॥ पदार्थ पंचदशविधि ॥ १५ ॥

माया के नाम १५-१ माया । २ अविद्या । ३ प्रकृति । ४ शक्ति । ५ सत्या । ६ मूला । ७ तूला । ८ योनि । ९ अव्यक्त १० अव्याकृत । ११ अजा । १२ अज्ञान ।

१३ तमः। १४ तुच्छा। १५ अनिर्वंचनीया।

पदार्थ षोडशविधि॥ १६॥

कला—१ हिरण्यगर्भ। २ श्रद्धा। ३ आकाश। ४ वायु। ५ तेज। ६ जल। ७ पृथ्वी। ८ दशेन्द्रिय। ९ मन। १० अन्न। ११ वल। १२ तप। १३ मन्त्र। १४ कर्म। १५ लोक। १६ नाम।

इति श्रीविचारचन्द्रदय वेदांतपदार्थ–संज्ञावर्णननामिका शोडशीकला—द्वितीय भागः समाप्तः।

॥ संस्कृत दोहा ॥

श्रीविचार चन्द्रोदय शुद्धां धियं समाप्य।
विचार्यैति परानंदं तत्वज्ञानमवाप्य ॥ १ ॥

षट्दर्शन	१ जगत्	२जगत्कारण	३ ईश्वर	१३ आत्म ४ जीव
पूर्वमीमांसा १	स्वरूप से आदि अनन्त प्रवाहरूप संयोगवियोगवान्	जीवअदृष्टऔ परमाणु	०	जड़चेतनात्मक विभु नाना कर्त्ता भोक्ता
२उत्तरमीमांसा(वेदांत)	नामरूपक्रियात्मक मायाका परिणाम चेतनका विवर्त्त	अभिन निमित्तो पादान ईश्वर	मायावि शिष्टचेतन	अविद्याविशिष्ट चेतन
३ न्याय	परमाणु आरंभित संयोगवियोगजन्य आकृतिविशेष	परमाणु ईश्वरा दिनव	नित्यइच्छाज्ञा-नदिगुणवान् विभु कर्ताविशे	ज्ञानादिचतुर्दशगुणवान् कर्ता भोक्ता जड़ विभु नाना
४ वैशेषिक	न्याय अनुसार	न्याय अनु०	न्याय अनुसार	न्याय अनुसार
५ सांख्य	प्रकृ-परिणामत्रयोविंशतितत्वात्मक	त्रिगुणात्मक प्रकृति	०	असङ्गचेतनविभु नाना भोक्ता
६ योग	प्रकृतिपरिणाम त्रयोविंशतितत्वात्मक	कर्मानुसारप्रकृतियोतन्नियामकईश्वर	क्लेशकर्मविपाक आसयअस-बद्धपुरुषविशेष	असङ्गचेतनविभु नाना कर्त्ता भोक्ता

षट्दर्शन	५ बंधहेतु	६ बन्ध	७ मोक्ष	८ मोक्षसाधन
पूर्वमीमांसा १	निषिद्ध-कर्म	नरकादिदुःखसंबंध	स्वर्गप्राप्ति	वेदविहितकर्म
२ उत्तरमीमांसा (वेदांत)	अविद्या	अविद्या:तत्कार्य	अविद्यातत्कार्यनिवृत्तिपूर्वक परमानन्दब्रह्मप्राप्ति	ब्रह्मात्मैक्यज्ञान
३ न्याय	अज्ञान	एकविंशतिदुःख	एकविंशतिदुःखध्वंस	इतरभिन्नात्मज्ञान
४ वैशेषिक	अज्ञान	एकविंश तदुःख	एकविंशतिदुःखध्वंस	इतरभिन्नात्मज्ञान
५ सांख्य	अविवेक	आध्य त्मादि-त्रिविध दुःख	त्रिविधदुःखध्वंस	प्रकृतिपुरुषविवेक
६ योग	अविवेक	प्रकृतिपुरुषसंयोगाजन्य अविद्यादि-पंचक्लेश	प्रकृतिपुरुषसंयोगाभावपूर्वक अविद्यादिपंचक्लेशनिवृत्ति	निर्विकल्प-समाधि पु.कि विवेक

षट्दर्शन	९ अधिकारी	१० प्रकट-कर्त्ता-आचार्य	११ प्रधान-कांड	१२ वाद	१३ आत्म परिणाम संख्या
पूर्वमीमांसा १	कर्मफलासक्त	जैमिनी	कर्मकांड	आरंभ-वाद	विभुनाना
२उत्तरमीमांसा(वेदांत)	मलविक्षेपदोष रहित प८	वेदव्यास	ज्ञानकांड	विवर्त-वाद	विभुनाना
३ न्याय	दुःखजिह्वासुकुतर्की	गोतम	ज्ञानकांड	आरंभ-वाद	विभुनाना
४ वैशेषिक	दुःखजिह्वासुकुतर्की	कणाद	ज्ञानकांड	आरंभ-वाद	विभुनाना
५ सांख्य	संदिग्ध विरक्त	कपिल	ज्ञानकांड	परिणाम वाद	विभुनाना
६ योग	विक्षिप्तचित्तवा	पतंजलि	उपासना कांड	परिणाम वाद	विभुनाना

षट्दर्शन	१४ प्रमाण	१५ ख्याति	१६ सत्ता	१७ उपयोग
पूर्वमीमांसा १	षट् (६)	अख्याति	जीवजगत्परमार्थ सत्ता	चित्तशुद्धि
२ उत्तरमीमांसा (वेदांत)	षट् (६)	अनिर्वचनीय	परमार्थरूपात्मसत्ता व्यवहारिक और प्रातिभासिकजगत्सत्ता	तत्त्वाज्ञानपूर्वक मो
३ न्याय	प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द (४)	अन्यथा	जीवजगत् परमार्थ सत्ता	मनन
४ वैशेषिक	प्रत्यक्ष अनुमान (२)	अन्यथा	जीवजगत् परमार्थ-सत्ता	मनन
५ सांख्य	प्रत्यक्ष अनुमान शब्द (३)	अख्याति	जीवजगत् परमार्थ-सत्ता	'२५' पदार्थ शोधन
६ योग	प्रत्यक्ष अनुमान शब्द (३)	अख्याति	जीवजगत् परमार्थ-सत्ता	चित्तैकाग्र्य

पुस्तक मन्दिर मथुरा की
प्रचारिक पुस्तकें

रामायण तर्ज राधेश्याम

भगवान राम का चरित्र राधेश्याम की तर्ज में लिखा गया है। इतना सरल तथा लय पूर्ण है कि जिस समय कथा वाचक इसको कथा हारमोनियम तबला के साथ हजारों आदमियों के बीच में कहते हैं उस समय समस्त श्रोतागण मन्त्र मुग्ध के समान हो जाते हैं। मू० ४) रु० डाक व्यय पृथक।

बाल्मीक रामायण केवल भाषा

रामायण की कथा श्री वाल्मीकजी ने संस्कृत में लिखी है उसी का श्लोकबद्ध भाषानुवाद बड़े परिश्रम से योग्य विद्वानों द्वारा किया गया है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल तथा रोचक है थोडे पढ़े लिखे नर-नारी तथा बालक आसानीसे पढ़ समझ सकते हैं। लगभग १२०० पृष्ठ की सुन्दर विलायती कपड़े की पक्की जिल्द कीमत १२) डाक व्यय माफ।

राधेश्याम की तर्ज में श्रीमद्भागवत

वेद और उपनिषदों के सार रूप भक्ति के इस परम तत्व को भगवान वेद व्यासजी ने अपने श्री मुख से वर्णन किया है। इस कराल कलिकालमें इससे अधिक उत्तम ग्रन्थ ऐसा कोई नहीं है जो मनुष्य को सहज ही में संसार सागर से पार उतारने में सहायक हो सके। नन्द नन्दन भगवान वसुदेव नन्दन का पावन चरित्र भक्तोंके मनोमल को धोने का मात्र आश्रय है, प्रस्तुत पुस्तकमें उसी चरित्र का रोचकता पूवक वर्णन हुआ है, संगीत मय सुन्दर स्वरलहरो के पद्यानुवाद ने सोने में सुगन्ध का कार्य किया है। इस कथा को अनेकों कथा वाचक हारमोनियम तथा तबला आदि पर गाकर भी सुनाते हैं आप भी इसे आजही मंगाकर इस अनुपम पद्य सुधा मय पावन चरित्र का पाठ कर हृदय को आनन्दित बनाइये। यह सम्पूर्ण पुस्तक २० भागों में समाप्त हुई है। बीसों भाग [illegible] जिल्द का दाम ६।) पोस्टेज पृथक।

श्रीमद्भागवत भा० टी०—पुस्तकाकार,

२ खण्डों में टीकाकार श्री गोविन्ददासजी विनीत मू० २७) ।

सुखसागर मध्यम साइज—बहुत मोटा अक्षर, सम्पूर्ण १२ स्कन्ध सचित्र साइज २२., २६,, ८ पेजी है। विलायती कपड़े का ठप्पेदार जिल्द मू० १२ पोस्टेज माफ

श्रीमद्भागवद्गीता केवल भाषा

संसार में ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा जिसने भगवद्गीता का नाम न सुना हो महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन अपने बन्धु बांधवों को सामने देखकर युद्ध विमुख हुआ, तब भगवान कृष्ण ने अपने अमूल्य उपदेशों द्वारा अर्जुन को ज्ञानोपदेश दिया हैं वही गीता ज्ञान है। इसका सरल भाषा में १८ अध्याय महात्म्य सहित अनुवाद किया गया है तथा प्रार्थना कीर्तन आदि अनेक आर्तियां भी दी गई हैं बढ़िया कागज पर मोटे अक्षर सुन्दर छपाई की पक्की जि० का दाम १) डाक खर्च अलग। तथा २ १) मोटा टाइप दाम २॥)